सामाजिक अध्ययन
कक्षा - 4
भाग एक

परिचय

कक्षा 6 व कक्षा 7 के लिए पाठ्य सामग्री तैयार करते हुए अब कक्षा 8 का काम शुरू हुआ है। यह कक्षा 8 की सामाजिक अध्ययन की पाठ्य पुस्तक का पहला भाग है। दूसरा व अन्तिम भाग कुछ महीनों में तैयार हो जाएगा। कक्षा 8 की बोर्ड परीक्षा में इन नौ चुनी हुई शालाओं के विद्यार्थी नई पुस्तकों के आधार पर ही परीक्षा देंगे। उनके लिए परीक्षा का तौर तरीका भी दूसरों से फर्क होगा परीक्षा के नए तरीके से वे पिछले दो सालों में परिचित होते आ रहे हैं।

शिक्षकों, बच्चों व अन्य कई लोगों के सघन प्रयास से सामाजिक अध्ययन की पढ़ाई का ढंग बदलने का काम धीरे धीरे आगे बढ़ रहा है। स्कूलों में नियमित अनुवर्तन करते हुए हम एक बार की लिखी पुस्तक को ब कई बार सुधारते है। कक्षा 6 व कक्षा 7 की पुस्तके इसी प्रकार संशोधित हो कर तीन सालों के लिये छापी गई हैं। इस वर्ष यह प्रक्रिया कक्षा आठ की पाठ्य सामग्री के साथ विशेष रूप से होगी। इसलिए आप सब की तरफ से समीक्षा, आलोचना, टिप्पणियां व सुझाव आमंत्रित है।

पुस्तक की सामग्री तैयार करने में हमें इन संस्थाओं व उनमें कार्यरत व्याख्याताओं व छात्रों से बहुत मदद मिली - सागर विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय भोपाल इन्दौर व खण्डवा के महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय।

चित्रांकन में सहयोग दिया राजेश यादव (इटारसी), कैरन (हरदा) व अमृता शोधन (अहमदाबाद) ने।

यह पाठ्य सामग्री "एकलव्य" ग्रुप ने राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद मध्यप्रदेश के सौजन्य से नौ माध्यमिक शालाओं में चल रहे सामाजिक अध्ययन के प्रायोगिक शिक्षण कार्यक्रम के लिये तैयार की है।

एकलव्य ग्रुप
1988

"एकलव्य" के लिए भण्डारी ऑफसेट, भोपाल द्वारा मुद्रित।

विषय सूची

नागरिक शास्त्र

इतिहास

भूगोल

नागरिक शास्त्र

पैसे की कहानी - 1

तरह-तरह से बिन पैसों के लेन-देन होता है, यह तुम ने पिछले साल के पाठ में देखा था । पर ऐसे लेन-देन में कई समस्याएं हैं । यह भी तुम देख चुके हो । यदि रामू को गुड़ के बदले बकरी चाहिए, पर जिसके पास बकरी है, उसे गुड नहीं, कुछ और चाहिए, तो लेन-देन नहीं हो सकता । यदि लोगों के पास पैसे हों तो रामू गुड़ बेच कर मिले पैसों से बकरी खरीद सकता है । सीधे गुड़ के बदले में बकरी न लेकर, पहले वह गुड़ के बदले पैसे लेता है, और फिर पैसों के बदले में बकरी । इस तरह पैसों के माध्यम से लेन-देन कर सकता है ।

पैसों के बदले में आज कोई भी मनचाही चीज खरीद सकता है । जिस भी वस्तु के बदले में कई और चीज मिल जाती हैं, उस वस्तु को लेन-देन का माध्यम कहते हैं । इस तरह पैसा लेन-देन का एक माध्यम है ।

इतिहास में, अलग-अलग लोगों के बीच, कई चीज़ों ने लेन-देन के माध्यम का काम किया है । कई समाजों में अनाज, कौड़ी, मवेशी, सोना, चांदी या अन्य धातु के बदले में ही दूसरी चीज़ें ली जाती थीं । और इस तरह ये चीज़ें लेन-देन का माध्यम रही हैं ।

अनाज के माध्यम से तो आज भी कम मात्रा में चीज़ों का लेन-देन होता है । जैसे गांव में मज़दूरी के लिए अनाज दिया जाता है । मज़दूर अक्सर गांव की दुकान पर अनाज दे कर किराने का सामान - नमक, तेल, साबुन, लेते हैं ।

कम और सस्ती चीज़ें तो अनाज के बदले में आसानी से खरीदी बेची जा सकती हैं । पर जब व्यापार बड़े पैमाने पर और दूर-दूर की जगहों के बीच होने लगता है तो बहुत सारे अनाज की ज़रूरत पड़ती है । इतना अनाज लाने ले जाने में दिक्कत होती है । अनाज बहुत दिनों तक रखा भी नहीं जा सकता । इसीलिए बड़े पैमाने के व्यापार के लिए अनाज अच्छा माध्यम नहीं है ।
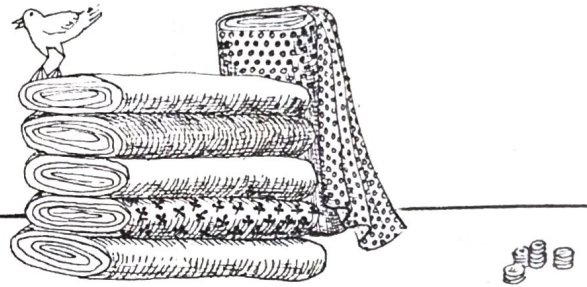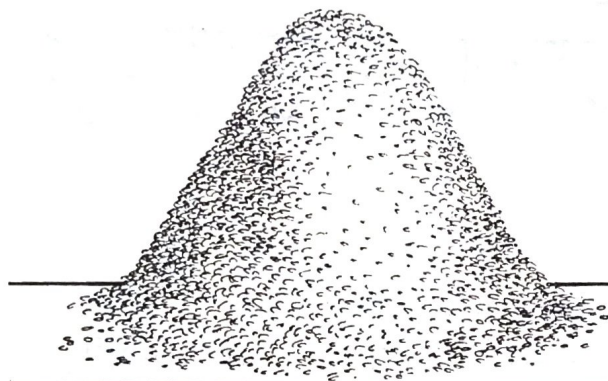
इसलिए काफी समय से कई प्रकार के धातु लेन-देन का माध्यम बने रहेहैं। बड़े पैमाने पर व्यापार के लिए धातु के सिक्केहीलेन-देन का माध्यम बनें ।

सिक्कों का प्रचलन :

व्यापार बढ़ने के साथ-साथ, सोने चांदी और ताबे, कांसे के सिक्कों का प्रचलन फैलने लगा । ये धातु ऐसे हैं जो बहुत समय तक खराब नहीं होते और अनाज की तुलना में कम वज़न के होते हैं, और जगह भी कम घेरते हैं । धातु आसानी से ढाले व मोड़े भी जा सकते हैं ।

भारत में सिक्कों का चलन आज से कुछ 2500 साल पहले शुरू हुआ था ।

सिक्कों की कीमत:

एक सिक्के में कितना अनाज, कपड़ा या कोई अन्य वस्तु मिलेगी- यह कैसे तय होता था ? इन धातुओं की अपनी कीमत होती थी । मानलो एक तोला चांदी और 50 सेर गहूं की कीमत एक है और एक सिक्के में आधा तोला चांदी है । तो एक सिक्के में 25 सेर गेहूं मिलेगा । यदि एक तोला तांबे का सिक्का है और 1 तोला तांबा और 3 सेर गहूं की कीमत बराबर है तो 1 तांबे के सिक्के में 3 सेर गेहूं मिलेगा ।

कम और अधिक मात्रा में चीजें खरीदने के लिए अलग-अलग सिक्के बनाए जाते थे । किसी में एक तोला चांदी होती तो किसी में 1/2 तोला चांदी और 1/2 तोला सोना, तो किसी सिक्के में 1/2 तोला तांबा होता था । इन सिक्कों की कीमत अलग-अलग होती थी । यानी एक सिक्के में कुछ मात्रा में एक वस्तु मिलती तो दूसरे सिक्के में दूसरी मात्रा में वही वस्तु ।

सिक्के के धातु की कीमत ही सिक्के की कीमत होती थी । जितना

उस धातु की कीमत होती, उस सिक्के के बदले में उतनी ही वस्तुएं मिलती थीं। (यदि सोने या चांदी का भाव बदलता था, उन से बनाए गए सिक्कों की कीमत भी बदलती। यानी, 1 सिक्के में कितना अनाज या कपड़ा मिलेगा, यह चांदी सोने या तांबे की कीमत से भी जुड़ा था। आज वस्तुओं की कीमत केवल उनकी अपनी कीमत पर निर्भर है, आधुनिक सिक्कों या नोटों की कीमत पर नहीं।)

कौन से सिक्के में कितनी वस्तु मिलेगी, यह तय करने के लिए व्यापारी या सुनार सिक्कों का वज़न देखते और कसौटी (एक पत्थर जिस पर धातु को घिस कर देखा जा सकता है कि उसमें सोने या चांदी की कितनी मात्रा है) पर परख कर देखते कि उस में कितना सोना या चांदी है।

हर सिक्के को जांचना तो मुश्किल होता था। सिक्कों पर कुछ छापें होते थे, जिन से उनकी पहचान होती थी। हर तरह के कुछ सिक्के परख कर देख लिए जाते थे। इस प्रकार अलग-अलग तरह के सिक्कों की कीमत तय की जाती थी।

कक्षा-6 में तुम ने इतिहास के किस पाठ में सब से पहले सिक्कों के बारे में पढ़ा था?

सिक्कों का चलन कब शुरू हुआ था?

इतिहास के और किन पाठों में सिक्कों के बारे में पढ़ा? सिक्के कैसे होते थे? उन के बारे में जो कुछ याद हो, बताओ।

पुराने ज़माने के सिक्कों पर जारी करने वाले राजाओं की छाप होती थी। अलग-अलग छापों को देख कर हम पता कर सकते हैं कि ये सिक्के किस राजा ने जारी किए होंगे। एक राजा द्वारा जारी किए गए सिक्के उसी के राज्य में चलते थे।

उस समय पूरे भारत में एक ही तरह के सिक्के नहीं चलते थे क्योंकि उस समय कई अलग-अलग राजा और राज्य हुआ करते थे।

सिक्के की कीमत किस तरह जानी जाती थी?

सिक्के कौन जारी करता था?

मुग़लों के ज़माने में व्यापार के बहुत बढ़ जाने से सिक्कों का चलन भी खूब बढ़ गया था । उस समय किस तरह के सिक्के होते थे और कैसे बनाए जाते थे ? उन के बारे में पढ़ें ।

जहां सिक्के बनवाए जाते हैं, उसे टकसाल कहते हैं । मुग़लों के समय में 30-40 टकसाल हुआ करते थे । इन टकसालों में राजा सोने - चांदी के सिक्के तो बनवाता था, पर साथ ही व्यापारी भी सोना-चांदी ले जाकर टकसाल में सिक्के बनवाते थे ।

1 मुहर में 9 रूपए और 1 रूपये में 40 दाम होते थे, मुग़ल ज़माने के सिक्कों की कीमत भी उनके धातु की कीमत से तय होती । यदि चांदी की कीमत गिर जाती तो 1 सोने की मुहर में अधिक चांदी के रूपए मिलते और 1 चांदी के रूपए में कम दाम । साधारण - रोज़मर्रा की जरूरत की चीजें लोग तांबे के दाम में खरीदते थे, थोड़ी महंगी चीजें चांदी के रूपए में और बहुत महंगी वस्तुएं खरीदने के लिए सोने की मुहरों का उपयोग करते थे ।

मुग़लों के जमाने की बात है, सेठ केशवराम एक सेर चांदी लेकर बुरहानपुर के टकसाल पहुंचा । उसने टकसाल मालिक से कहा- "मुझे इस चांदी के रूपए बना दो ।"

टकसाल मालिक ने कहा-"1 तोले से एक रूपए का सिक्का बनता है । पर कुछ हम बनाने के काट लेते हैं ।" (एक सेर में 80 तोला चांदी होता है।) इस प्रकार, उसने केशवराम को 75 रूपए बना कर दिए । गोलाकार के रूपये के सिक्के पर अकबर बादशाह का ठप्पा लगा था, बनने का सन् था 1602। ठप्पे के उल्टी तरफ फारसी और देवनागरी में कुछ
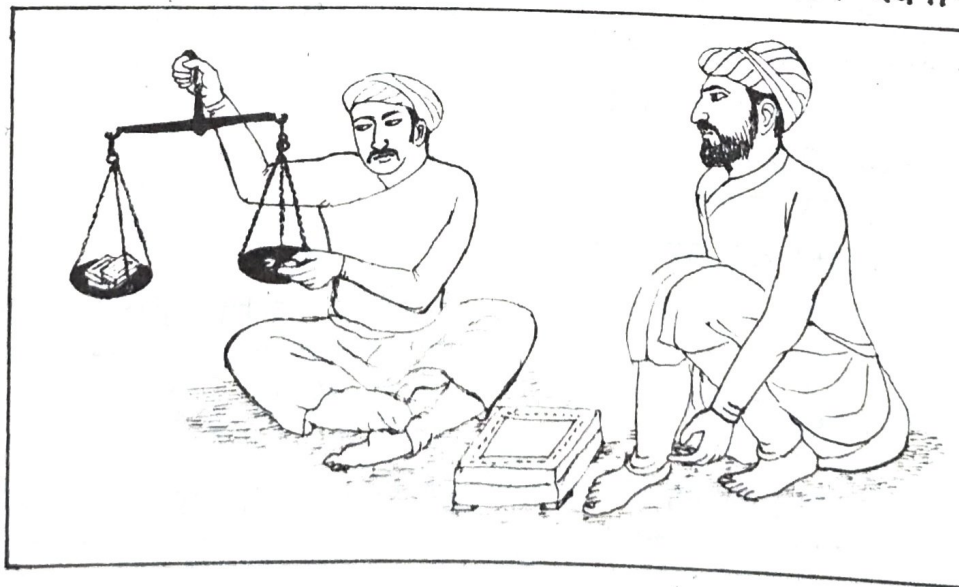
टकसाल में चांदी तौलते हुए

लिखा था।

केशवराम ने टकसाल मालिक से कहा-"आप 5 रूपए रख कर मुझे इनके बदले में दाम दे दीजिए ।" टकसाल मालिक ने उसे 200 दाम दे दिए ।

रूपए और दाम लेकर केशवराम घर लौटा ।

केशवराम दूर-दूर तक व्यापार करता था । दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्र में मुग़लों का राज्य नहीं था । वहां रूपया, मुहर और दाम नहीं चलते थे । वहां पर सोने का हुन और पणम चलते थे । सराफ़ और सुनार रूपए या मुहर के बदले में हुन देते थे और हुन के बदले में रूपए देते थे ।

केशवराम ने 10 मुहर देकर सराफ से उसके बदले में हुन मांगे । सराफ ने उसे 40 हुन दिए । केशवराम ने कहा, "पिछले बार तो मैं 10 मुहर के 50 हुन ले गया था ।" सराफ ने बताया, "अलग-अलग तरह के हुन चलते हैं । पिछली बार तुम बीजापुर वाले हुन ले गए होगे, यह विजय नगर वाले हैं । इनकी कीमत कुछ अधिक है ।

मुग़ल जमाने में किन धातुओं के सिक्के बनाए जाते थे ?

ये सिक्के कहां और किस तरह बनाए जाते थे ?

एक रूपये के सिक्के में कितनी चांदी होती थी ?

एक रूपये में कितने दाम मिलते थे ?

हम ने देखा कि मुग़ल जमाने के आते-आते, व्यापार बहुत बढ़ गया था और सिक्कों का चलन भी खूब

था । इस से पहले भी सिक्कों के माध्यम से दूर-दूर तक व्यापार होता था । व्यापारी लोग सिक्कों से भरे हुए बोरे गाड़ियों या जहाज़ों में एक जगह से दूसरी जगह ले जाते और वहां से माल खरीद कर लाते ।

इस में बहुत परेशानी होती थी। एक तो इतना सारा चांदी-सोना खूब वज़नी होता है । तो उसे इतने दूर ढोने में बहुत मेहनत लगती थी और फिर उस ज़माने में डाकू रास्ते में कारवां या जहाज़ लूट लिया करते थे । उनका भी डर व्यापारियों को लगा रहता था ।

हुण्डी :

मुग़ल काल तक व्यापारियों ने इस समस्या का हल निकाल लिया था । कई जगहों पर बड़े व्यापारियों ने अपनी पेढ़ियां, गद्दी या आफिस बना लिए थे । अब उन्हें हर बार सिक्कों के ढेर एक जगह से दूसरी जगह नहीं ले जाने पड़ते । जिस शहर में उन्हें चीज़ें खरीदनी होतीं, वे उसी जगह के आफिस से पैसे निकाल कर खरीदी कर लेते । उस जगह पर दूसरी

जहाज में सोने के
सिक्के और सामान
जा रहा है।
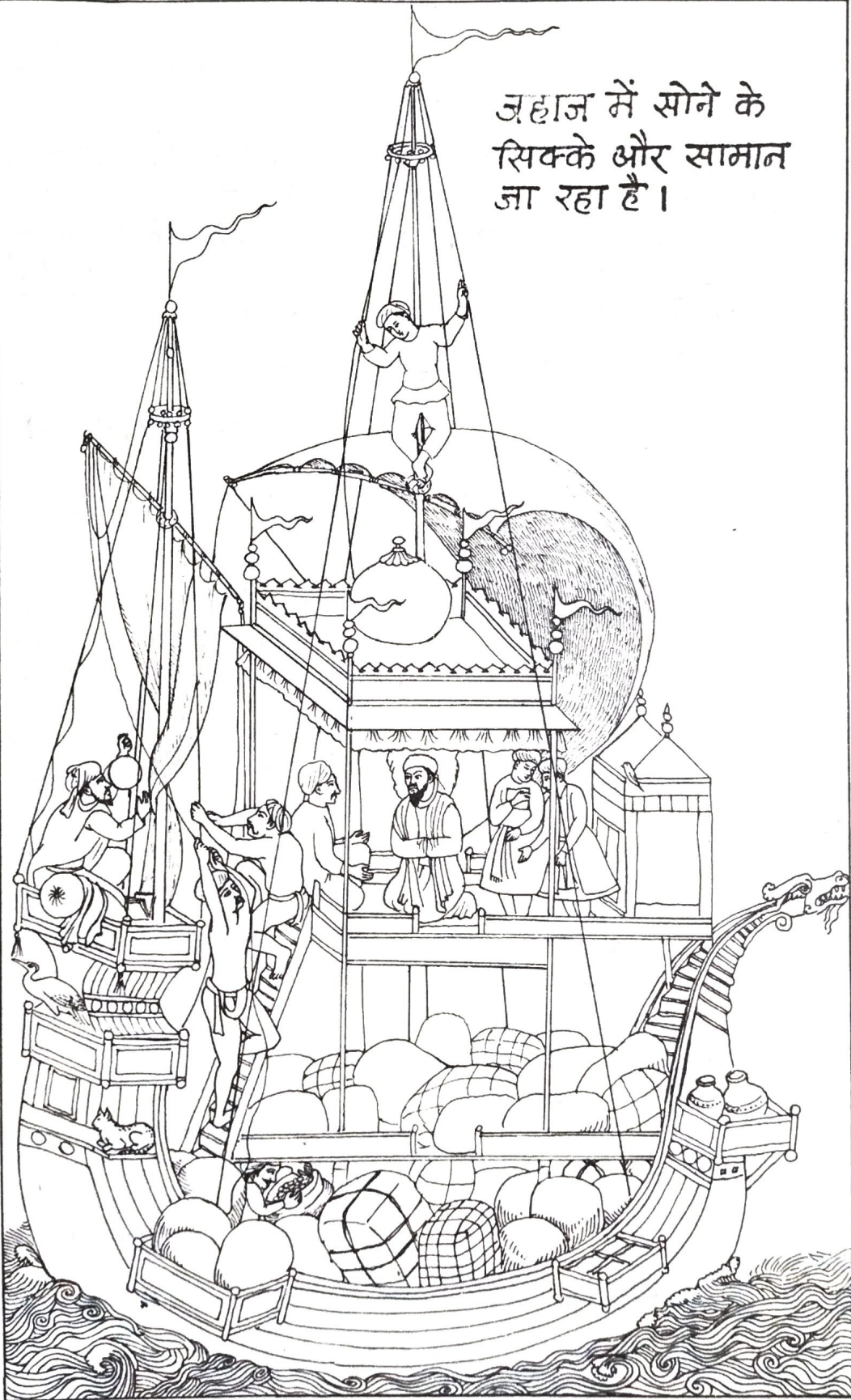
|| श्री गणेशाय नमः ||

१।। भाई अमृतराम देहली को कपूरथला से मिरजामल मंगनीराम का जै गोपाल मालूम होवे । आगे आपको आज दिन रु. ४०००) चार हजार रुपया की एक हुण्डी लिखी जाती है । हुण्डी रखने वालो दीवान शेर अली को हुण्डी को रुपयो देहली में चलने वालो रुपयो में अदा करजो ।

लिखी मिती चैत्र सुदी ५ संवत् १८९५

द: मंगनीराम

चीज़ें बेच कर, वे पैसे उसी आफिस में जमा कर देते ।

।

दूसरे लोग भी व्यापारियों की इन पेढ़ियों का उपयोग करते थे । इसका एक उदाहरण पढ़ो :

<u>हुण्डी से सिक्के एक जगह से दूसरी जगह ले जाने की बचत :</u>

कपूरथला के दीवान शेर अली को देहली जाना था । वे अपने साथ अधिक पैसे नहीं ले जाना चाहते थे । मिरज़ा मल मंगनीराम की एक गद्दी (आफिस) देहली में भी थी । दीवान शेर अली ने कपूरथला में मिरज़ा मल मंगनीराम के यहाँ 4000 रु. जमा किए । मिरज़ा मल ने देहली में अपने मुनीम को पत्र लिखा कि वे दिल्ली में दीवान शेर अली को 4000 रुपए अदा करें। दीवान शेर-अली ने यह पत्र दिल्ली ले जाकर मिर्ज़ामल मंगनीराम के मुनीम को दिया और उससे रुपये ले लिए । इस प्रकार के पत्र को "हुण्डी" कहते हैं ।

हुण्डी बनवा कर ले जाने से दीवान शेर अली को सुविधा हो गई। उन्हें इतने सारे सिक्के कपूरथला से देहली नहीं ले जाने पड़े । यदि मंगनी-राम का मुनीम दीवान शेर अली को हुण्डी के बदले सिक्के नहीं देता तो मंगनीराम पर से लोगों का विश्वास उठ जाता और कोई उस के पास पैसे नहीं जमा करता । (मुग़ल ज़माने में हुण्डियों का चलन बहुत हो गया था । अब व्यापार हुण्डियों के माध्यम से ही अधिक चलने लगा था ।)

<u>हुण्डी और व्यापारी की "साख" :</u>

हुण्डी के चलने के लिए यह ज़रूरी

था कि व्यापारियों में और उनके द्वारा लिखी गई हुण्डियों में लोगों का विश्वास बना रहे । कोई व्यापारी यदि लोगों से पैसे लेकर अपने मनीम के नाम हुण्डी लिखता, और यदि उसका मुनीम रकम का भुगतान नहीं करता तो उस व्यापारी पर से लोगों का विश्वास हट जाता ।

यदि कोई सराफ या व्यापारी उनकी अपनी लिखी गई हुण्डी का भुगतान नहीं करता, तो व्यापारियों और सराफों की पंचायत बैठती और भुगतान करने का प्रबन्ध करती । जिस व्यापारी या सराफ ने हुण्डी का भुगतान न किया हो, उस से और व्यापारी व्यापार करने से मना कर देते और इस तरह उसका धन्धा बंद हो जाता। इसी डर से अधिकांशतः व्यापारी अपनी हुण्डी का भुगतान कर देते थे । इसी से व्यापार में उनकी "साख" बनी रहती और हुण्डी की भी "साख" रहती ।

(किसी की "साख" होना यानी लोग उस पर विश्वास करते हैं ।)

हुण्डी के माध्यम से व्यापार :

हुण्डी एक और तरह से भी उपयोग की जाती थी । जब एक व्यापारी दूसरे व्यापारी से कुछ वस्तुएं खरीदता, वो पैसों में भुगतान करने के बजाए अपने नाम से एक हुण्डी लिख देता था। अब दूसरा व्यापारी जब भी चाहे उससे वो पैसे वसूल कर सकता था या फिर पैसों के बदले में उससे कभी कुछ माल ले सकता था ।

इस तरह जब हुण्डी का चलन बहुत बढ़ गया था तब हुण्डियों के माध्यम से ही व्यापार होने लगा । एक हुण्डी से कई व्यापारियों के बीच खरीदी बिक्री होने लगी ।

यह कैसे होता था, इसका एक उदाहरण है बियावर (राजस्थान) के लाला हीरालाल रानीवाले का । उन्होंने बियावर में कपड़ा बनाने की एक मिल लगाई थी । इस मिल का कपड़ा वे बम्बई के व्यापारियों को बेचते थे । कपड़ा बनाने के लिए रानीवाले दलालों और आढ़तियों के माध्यम से रूई खरीदते थे ।

रानी वाले की मिल में कपड़ा व्यापारी
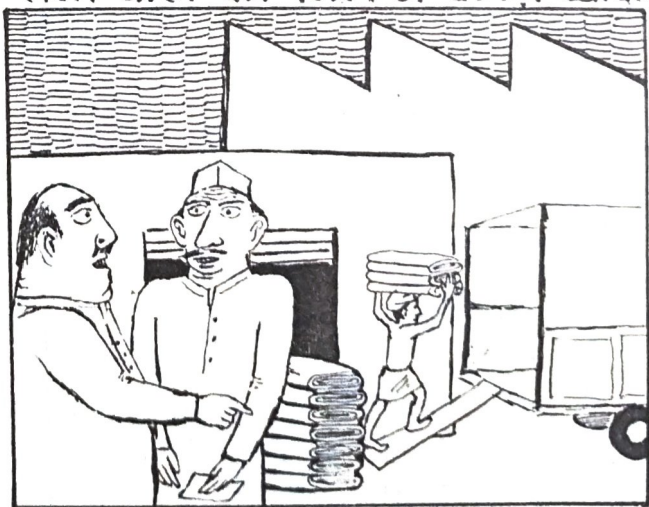
रानी वाले रूई व्यापारी को हुण्डी देते हुए।
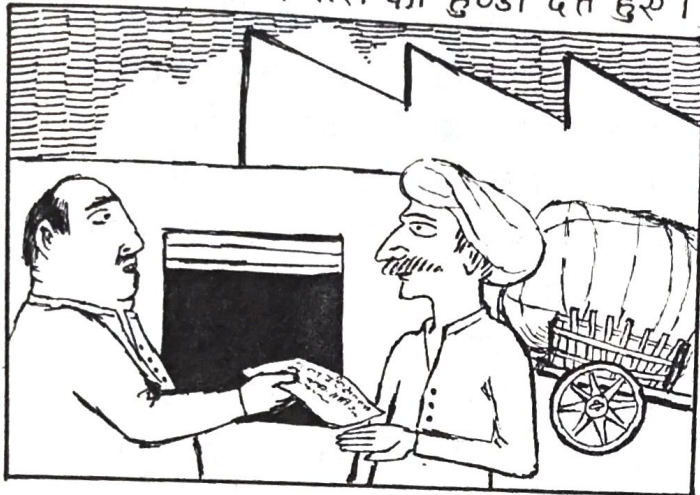
उनसे रूई लेकर बदले में रूपये देने की बजाए, रानीवाले दलालों को हुण्डी लिख देते थे। यह हुण्डी उन व्यापारियों के नाम होती थी जो रानीवाले के मिल का कपड़ा खरीदते थे। बम्बई में रूई बेचने वाले दलाल हुण्डी लेकर बम्बई में ही कपड़ा व्यापारी के पास जाते और उनसे पैसे ले लेते। कपड़ा व्यापारी रानीवाले के हिसाब में से उतने पैसे घटा कर बाकी पैसे रानीवाले को दे देते।

कपड़ा व्यापारी रूई व्यापारी को हुण्डी के पैसे देते हुए

इस उदाहरण में रानीवाले ने रूई वाले व्यापारियों को रूई के बदले में में क्या दिया ?

रूई के व्यापारियों को पैसे किस से मिले ?

रानीवाले की मिल से कपड़ा खरीदने वाले व्यापारियों ने कपड़े के दाम कैसे चुकाए ?

हुण्डी के माध्यम से लेन-देन किस प्रकार होता है उसका एक और उदाहरण पढ़ो :-

बहुत से लोग तीर्थ करने बद्रीनाथ जाते थे। ऋषिकेश से बद्रीनाथ पैदल चलना पड़ता था। वे ऋषिकेश में बाबा काली कमली वाले की "गद्दी" (आफिस) में पैसे जमा कर देते थे। बाबा इन पैसों के बदले में अपने ही नाम पर एक हुण्डी देते थे। ये हुण्डी बद्रीनाथ के रास्ते के सब दुकानदार स्वीकार कर लेते थे और तीर्थ यात्रियों को हुण्डी के बदले में जो भी वस्तु चाहिए, दे देते थे।

जब कमला बद्रीनाथ जा रही थी उसने बाबा काली कमली वाले के यहां 2000 रू॰ जमा किए। और उनसे

काली कमली वाले बाबा की हुण्डी के माध्यम से लेन देन
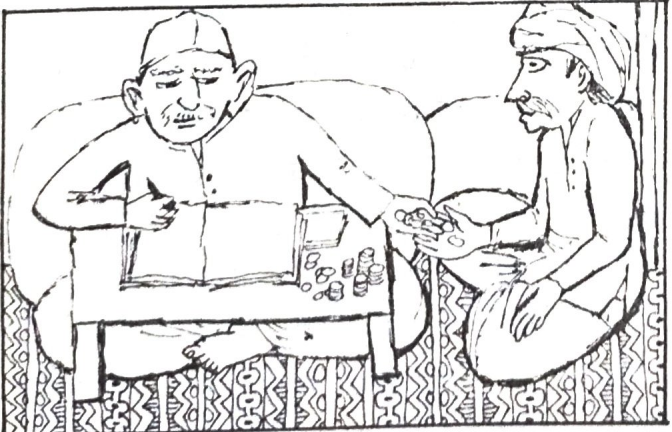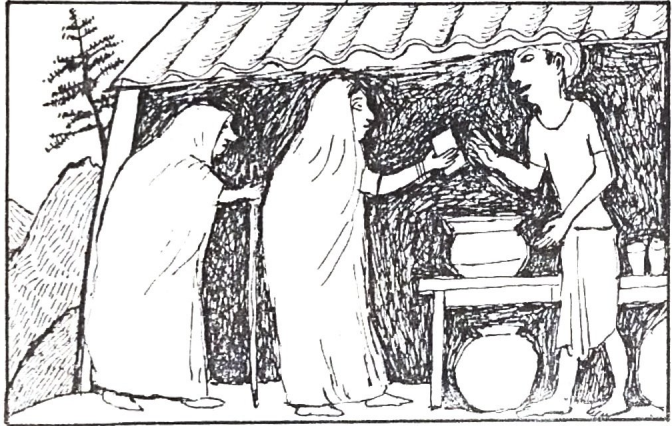
100-100 रु॰ की 20 हुण्डियां ले लीं। रास्ते में पहली रात जहां रुकी, वहां की दुकान पर एक हुण्डी दी और खाना खाया। दुकानदार ने उसके सोने का प्रबन्ध कर दिया। इन सब चीजों के लिए उसने 80 रु॰ लगाए। 100 रु॰ की हुण्डी ले कर 20 रु॰ कमला को वापिस किए। कमला रास्ते में जहां भी रुकती वहां के दुकानदार को हुण्डी देकर अपनी जरूरत की चीजें ले लेती।

इन दुकानदारों के साथ काली-कमली वाले बाबा की "साख" जमी थी। जब दुकानदार ऋषिकेश से दुकान के लिए सामान मंगवाते, तो वे खच्चरों पर सामान लाने वाले को काली कमली वाले बाबा के नाम की हुण्डियां दे देते। ये लोग अपने सेठ को हुण्डी देते और सेठ लोग बाबा से पैसे वसूल लेते।

इस प्रकार कमला को अपने हाथ सिक्के नहीं ले जाने पड़े, बाबा की हुण्डियों से काम चल गया। वापस लौटी तो उसके पास 5 हुण्डियां बची थीं। उसने काली कमली वाले बाबा से इसके बदले में अपने द्वारा जमा किए गए सिक्के वसूल लिए।

कमला ने रास्ते के खर्चे के लिए हुण्डियां

किस से बनवाई ?

इन हुण्डियों का उसने क्या उपयोग

किया ?

दुकानदार ने कमला से हुण्डी क्यों स्वीकार की ?

दुकानदार इन हुण्डियों का क्या करते थे ?

कमला ने बची हुई हुण्डियों का क्या किया ? उसे कितने के सिक्के मिले ?

इस तरह "साख" वाले व्यापारी और सराफ द्वारा लिखी गई हुण्डियां सीमित क्षेत्र में लेन-देन का माध्यम बनने लगीं । इसी सिद्धांत पर आजकल के कागज़ के पैसों ने रूप लिया ।

आजकल के नोट और सिक्के :

तीर्थ यात्रियों ने काली कमली वाले बाबा की हुण्डी के बदले में खाने पीने की चीजें लीं । हम नोटों के बदले में चीजें खरीदते हैं । दोनों ही बस कागज के टुकड़े हैं ।

आजकल कौन-कौन से नोट चलते हैं ? (यानी कितने-कितने रूपयों के) अलग-अलग नोटों को ध्यान से देखो ।

उन पर ढूंढो ये कहाँ लिखा है: मैं धारक को .... रूपये अदा करने का वचन देता हूं ।"

इन नोटों पर किस के हस्ताक्षर हैं ?

ये नोट केन्द्रीय बैंक (भारतीय रिज़र्व बैंक) द्वारा जारी किए जाते हैं । (एक रूपए के नोट को छोड़कर)। आज से कुछ तीस-पैंतीस साल पहले तक ये नोट भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा जारी की गई हुण्डी की तरह थे । जिस के पास भी ये नोट होते, वह रिज़र्व बैंक में जाकर इन नोटों के

बदले में उसी कीमत का सोना या चांदी ले सकता था । यदि किसी के पास 100 रू॰ का नोट है और 1 तोला चांदी 20 रू॰ का है तो 100 रू॰ के बदले में 5 तोला चांदी मिल सकती थी ।

पर आज ऐसा नहीं है । अब कोई नोट के आधार पर बैंक से सोना या चांदी नहीं मांग सकता । फिर नोटों पर वचन छापने का मतलब क्या है ? इसका मतलब केवल यह है कि इन नोटों का आधार सरकार की गारण्टी या प्रत्याभूति है । यह गारण्टी कि इन नोटों से व्यापार चालू रहेगा । कानून के अनुसार कोई भी अपने माल के बदले में ये नोट स्वीकार करने से मना नहीं कर सकता ।

कई बार कुछ दुकानदार पुराने फटे नोट लेने से मना कर देते हैं । तब सरकार की यह जिम्मेदारी होती है कि वे बैंकों से इन पुराने नोटों के बदले में नए नोट दें । यदि तुम्हारे पास कुछ पुराने नोट हों जिन्हें कोई दुकानदार न लेता हो, तो तुम उन्हें किसी भी बैंक में बदलवा सकते हो ।

नोटों के अलावा आजकल सिक्कों का चलन भी है ।

आजकल कितने कितने पैसों के सिक्के चलते हैं ?

इन सिक्कों को ध्यान से देखो । क्या तुम बता सकते हो कि ये किसने जारी किए हैं ? इन सिक्कों के दोनों तरफ क्या बना है ?

सिक्के भी भारत सरकार ही जारी करती है । ये सिक्के सोने-चांदी के नहीं, निकल के बने होते हैं । इन सिक्कों की अपनी कीमत उनके बदले मिलने वाली वस्तुओं की कीमत से कम होती है । यानी 50 पैसे का सिक्का 50 पैसे से कम में बनता

है । इसी तरह नोटों की अपनी कीमत भी उनकी रकम से कम होती है । यानी 20 या 50 रू॰ के नोट में 50 रू॰ का कागज या कोई और वस्तु तो लगती नहीं ।

अब पूरे भारत में एक ही तरह के नोट और सिक्के चलते हैं । अब यह कानून है कि भारत सरकार के अलावा और कोई सिक्के नहीं बना सकता, न नोट छाप सकता है ।

यदि कोई व्यक्ति नोट छापे तो उसे जाली नोट बनाने के जुर्म में गिरफ्तार किया जाएगा और सज़ा होगी । राज्य सरकारें भी अपने नोट या सिक्के जारी नहीं कर सकतीं ।

रूपयें और पैसे भारत में ही काम आते हैं । यदि कोई इण्डोनेशिया, जापान, इंगलैण्ड, फ्रांस या अमेरिका जाए, तो भारतीय रूपये नहीं चलेंगे । इन देशों की सरकारें अपने पैसे बनाती हैं । इनके अलग-अलग नाम हैं ।

जापान	-	येन
इंगलैण्ड	-	पाउण्ड
फ्रांस	-	फ्रैंक
संयुक्त राज्य अमेरिका	-	डालर

जब लोग भारत से दूसरे देश जाते हैं तो अपने देश के पैसों के बदले में दूसरे देश के पैसे लेते हैं । कितने रूपए में कितने दूसरे देश के पैसे मिलेंगे, ये भारत सरकार तय करती है । जैसे एक अमरीकी डालर के लिए लगभग 14 रू॰ देने पड़ते हैं ।

व्यापार को चालू रखने के लिए सबसे जरूरी है कि सभी लोगों को लेन-देन के माध्यम में विश्वास हो । सभी को वस्तुओं के बदले में पैसे (जो आजकल लेन-देन का माध्यम है) स्वीकार करने को तैयार होना चाहिए । आजकल के नोट या सिक्के इस लिए स्वीकार किए जाते हैं क्योंकि उन्हें चालू रखने का सरकार का वचन है और सरकार की साख बनी हुई है । यदि सरकार की "साख" गिरती है, यानी सरकार में लोगों का विश्वास खत्म हो जाता है, तो उस सरकार द्वारा जारी किए गए पैसे भी कोई स्वीकार नहीं करेगा । यदि सरकार न्याय और कानून व्यवस्था नहीं रख पाती या महँगाई रोक नहीं पाती है या पूरी राज्य व्यवस्था ही गिर जाती है, तो उसकी "साख" खत्म हो जाती है और उसके द्वारा जारी किए गए पैसे भी चलना बंद हो जाएँगे ।

अगर लोगों का सरकार पर से विश्वास हट जाए तो सरकार द्वारा जारी किए गए पैसे कोई स्वीकार करने

को तैयार नहीं होगा । ऐसा ही कुछ 1917 में रूस की क्रान्ति के बाद हुआ था । 1917 में रूस के राजा (जिसको ज़ार कहते थे) को क्रान्तिकारियों ने हटा कर समाजवादी सरकार स्थापित की ।

क्रान्ति के बाद कुछ दिनों तक कोई एक लेन-देन का माध्यम नहीं था । क्रान्तिकारियों की साख अभी तक नहीं जमी थी - लोग सोचते कि अगर कल इनको ज़ार की सेना ने हरा दिया, तो इनके द्वारा जारी किए गए पैसे बेकार हो जाएंगे । तो क्रान्तिकारियों द्वारा जारी किए गए पैसे सब लोग नहीं स्वीकार करते । कुछ लोग सोचते कि ज़ार की सेनाएं ज़रूर क्रान्तिकारियों को हरा देंगी । इस लिए वे ज़ार के पैसे इकट्ठे करते, यह सोच कर कि बाद में इन का इस्तेमाल होगा। कुछ लोग इस झंझट में पड़ते ही नहीं, वे अपने माल के बदले ठोस वस्तु ही लेते- जैसे अनाज आदि ।

इस तरह कुछ सालों तक चलता रहा । 1923 तक ही नई सरकार अपनी साख जमा सकी और उसके नोट (जिसे रूबल कहते हैं) सभी जगह स्वीकार होने लगे । और ज़ार के पैसे अब कोई स्वीकार नहीं करता था ।

तो हम देखते हैं कि अगर सरकार पर से विश्वास हट जाए तो उसके नोट नहीं चलते हैं ।

अभ्यास के प्रश्न :

1. अनाज की तुलना में धातु लेन-देन का एक अच्छा माध्यम क्यों है ?
2. पुराने ज़माने में व्यापारी एक राज्य से दूसरे राज्य के बीच व्यापार करने के लिए सिक्कों की अदला-बदली किस तरह करते थे ?
3. सिक्के किस के बने होते थे ? एक सिक्के में दूसरी चीजें कितनी मिलेगी, यह कैसे तय किया जाता था ?
4. सिक्कों के माध्यम से बड़े पैमाने पर व्यापार करने में क्या दिक्कत आती थी ?
5. सिक्कों को एक जगह से दूसरी जगह लाने ले जाने की समस्या व्यापारियों ने किस प्रकार दूर की ?

6. "हुण्डी" क्या होती है ? हुण्डी के दो उपयोग और उनके उदाहरण लिखो ।

7. रमेश के पास मोहनलाल द्वारा लिखी गई हुण्डी है, जो कि मथुरा की उसकी गद्दी के मुनीम के नाम है, मोहनलाल की साख इतनी है कि मथुरा का कोई भी व्यापारी उसके द्वारा लिखी गई हुण्डी पर सिक्के या वस्तु दे सकता है ।

   बताओ रमेश इस हुण्डी का क्या उपयोग कर सकता है ?

   हुण्डी का भुगतान कौन करेगा और किस को ?

8. आजकल हमारे यहां कौन से रूपए पैसे (मुद्रा) चलते हैं ?

9. आजकल के पैसे कौन जारी करता है ?

10. आजकल के सिक्कों और पुराने जमाने के सिक्कों में क्या अन्तर है ?

11. आजकल के नोटों और 100 साल पुराने नोटों में क्या अन्तर है ?

12. आजकल किसी वस्तु के बदले में कोई रूपयों के नोट लेने से मना क्यों नहीं कर सकता ?

बैंक 2

पहले हुण्डी के माध्यम से बड़े पैमाने पर व्यापार होता था। अब नोट और पैसों के अलावा, बड़ी रकम चेक से अदा की जाती है। ये चेक बैंकों के होते हैं। चेक और बैंक हमारी ज़िंदगी का एक हिस्सा बन चुके हैं।

तुमने भी बैंक के बारे में सुना होगा। कभी बैंक गए भी होगे। यदि किसी छात्र को छात्रवृत्ति मिलती है, तो उसका खाता बैंक में होगा। वहां से वह छात्र छात्रवृत्ति निकाल सकता है।

गुरूजी का वेतन भी बैंक में जमा होता है। बैंक में उनके खाते हैं। ज़रूरत पड़ने पर वे इन्हीं खातों से पैसे निकालते हैं।

दुकानदार और व्यापारी, दिन भर में बिक्री से मिले पैसे बैंक में जमा करते हैं। बैंक में उनके भी खाते हैं। जब व्यापारियों को बड़ी रकम की खरीदी करनी हो तो वे नोटों में नहीं, चेक द्वारा भुगतान करते हैं, जब चेक देने वाले व्यापारी की साख अच्छी हो। यदि उस व्यापारी के खाते में पैसे न हुए तो बैंक चेक वापस कर देती है।

लोग बैंकों में पैसे जमा करते हैं। यहां पर पैसे ज्यादा सुरक्षित भी रहते हैं। यदि घर पर रखें तो चोरी का डर लगा रहता है।

बैंक में चौकीदार

साथ ही इन पैसों पर बैंक ब्याज भी देती है । जितने पैसे जमा किए हैं, जमा करने वाले को कुछ सालों बाद उससे अधिक पैसे वापस मिलते हैं । जिनके पास कुछ अधिक पैसे हों, आमतौर पर किसी न किसी बैंक में उनका खाता होता है ।

शिक्षक, लिपिक, दुकानदार, किसान, व्यापारी, अफसर, डाक्टर, वकील-बैंक में सभी के खाते हो सकते हैं ।

चेक के द्वारा लेनदेन :

बैंक में खाता रहने की वजह से कई चीज़ें आसान भी हो जाती हैं । यदि एक व्यक्ति किसी को बड़ी रकम देना चाहता है तो उसके नाम वह "चेक" लिख देता है । नीचे चेक का चित्र दिया गया है । इसमें वह उस व्यक्ति का नाम लिखता है, जिसे वह पैसे देना चाहता है, और यह भी लिख देता है कि कितने पैसे देने हैं । और फिर वह चेक पर हस्ताक्षर कर देता है ।

नीचे दिए गए चित्र में

चेक किसके नाम दिया गया है ?

कितने रुपए का चेक है ?

किस बैंक का चेक है ?

जिसके नाम चेक है, वह चाहे तो उसे बैंक में देकर उसमें लिखी गई रकम ले सकता है । यदि बैंक में उसका खाता है तो वह चेक अपने खाते में जमा कर सकता है । चेक जमा करने से, उसमें लिखी गई रकम उस खाते में जमा हो जाएगी ।

ऐसा होता है चैक

भारत में कई बैंक हैं और उनकी कई शाखाएं हैं :

फूलसिंह का खाता टिमरनी के 'स्टेट बैंक आफ इण्डिया' शाखा में है । वह एक किसान है और उसके पास करीब 20 एकड़ जमीन है । अभी-अभी उसने सोयाबीन बेच कर छगनलाल द्वारा दिया गया चेक अपने खाते में जमा किया है । छगनलाल ने उसे 5073·00 रु• का चेक दिया था ।

छगनलाल के खाते में रु• 40,356·26 थे । उस में से 5073·00 रु• घटा दिए गए । अब उसके खाते में रु• 35,283·26 बचे ।

फूलसिंह के खाते में रु• 7,174·15 थे।उसके खाते में छगन का चेक देने के बाद रु• 5073·00 जोड़ दिए गए । अब उसके पास रु• 12,247·15 हो गए ।

फूलसिंह अपना घर बनवा रहा था । उसे घर के लिए सीमेन्ट खरीदना था । सीमेन्ट के लिए भी उसने व्यापारी (मन्नूलाल) को 8,250 रु• का चेक दिया । मन्नूलाल ने यह चेक अपने खाते में जमा करवा लिया । फूलसिंह के खाते में से 8,250 रु• घट गए और मन्नूलाल के खाते में जुड़ गए ।

बताओ फूलसिंह के खाते में कितने पैसे बचे ?

यदि फूलसिंह छगनलाल द्वारा दिया चेक जमा करने से पहले मन्नूलाल को चेक देता तो क्या होता ?

सीमेन्ट और सोयाबीन की खरीदी बिक्री में क्या कहीं भी खरीददार ने बेचने वाले को नोट दिए ?

क्या किसी बेचने वाले ने चेक के बदले में बैंक से नोट लिए ?

इसी तरह और भी बड़ी मात्रा में खरीदी बिक्री चलती रहती है और पैसे वास्तव में कहीं हाथ नहीं बदलते । बस एक के खाते से रकम कम हो जाती है और दूसरे के खाते में जुड़ जाती है । इससे पैसे वालों को और व्यापारियों को बहुत सुविधा होती है । नोटों की गड्डियां लाने ले जाने की कठिनाई व खतरों से बच जाते हैं ।

चूंकि बैंकों की शाखाएं जगह-जगह पर हैं, कई जगहों के बीच भी

व्यापार और लेन-देन चेक के माध्यम से ही चल सकता है ।

मियादी जमा खाते:

हम अब तक चालू और बचत खातों के बारे में बात कर रहे थे । इन खातों में से समय-समय पर चेक द्वारा पैसे निकाले जा सकते हैं । पर बैंकों में पैसे जमा करने का एक और तरीका है ।

पैसों को एक निश्चित समय तक बैंक में रखा जा सकता है - छ:महीने या उससे अधिक (। साल, दो साल या जितना समय भी रखना चाहो) यह समय या मियाद पूरी होने से पहले, आम तौर पर इन पैसों में से कुछ भी पैसे नहीं निकाले जा सकते हैं । इन जमा पैसों पर ब्याज मिलता है । जब बैंक में एक निश्चित समय तक पैसे जमा रखे जाते हैं - इस खाते को मियादी जमा खाता कहते हैं ।

कई लोग अपने पैसे बचाकर मियादी जमा खाते में रखते हैं । इसकी 'मियाद (समय) पूरी होने पर ब्याज सहित पैसे मिल जाते हैं । यदि मियाद पूरी होने से पहले ये पैसे निकलवाना चाहें तो बहुत कम ब्याज मिलता है । बैंक वाले चाहते हैं कि लोग लम्बे समय तक अपना पैसा मियादी जमा खातों में रखें ।

ऐसा क्यों ?

हम आगे पढ़कर समझें ।

स्टेट बैंक आफ इण्डिया में डकैती:

सुबह तड़के ही शहर में सनसनी फैल गई । बैंक में डकैती हो गई थी । बंदूकों से लैस डाकुओं ने बैंक के चौकीदार पर हमला किया था । चौकीदार के पास बंदूक थी पर 5-7 लोगों के सामने वह कमज़ोर पड़ गया था । चौकीदार भी घायल हो गया था । कई बड़े किसान और व्यापारी घबराए । उनके तो खूब पैसे बैंक में जमा थे । किसी के 50,000, किसी के एक लाख तो किसी के 5 लाख । और कई लोगों के 4-5 हजार रुपए की बचत पूंजी पूरी बैंक में थी ।

बैंक के बाहर खूब भीड़ थी ।

सब सोच रहे थे कि बैंक में जमा उनके पैसे अब उन्हें नहीं मिलेंगे। आमतौर पर सभी का ख्याल था कि उनके द्वारा जमा किए गए सभी पैसे वहां बैंक की तिजोरी में थे।

बैंक के कुछ कर्मचारी और मैनेजर बात कर रहे थे। मैनेजर ने केशियर से पूछा "आज केश (नोट और सिक्के) कितना था ? केशियर ने बताया "करीब बीस हज़ार रु॰।"

राम बिहारी ने उसे बात करते सुन लिया था। वह भौंचक्का रह गया। "यह कैसे हो सकता है ?" वह सोचने लगा। 50,000 रु॰ तो मेरे ही जमा हैं। फिर ये पैसे कहां हैं ?

बैंक में जमा किए गए पैसे कहां जाते हैं :

हां, वास्तव में बैंकों में जमा किया गया पैसा आखिर जाता कहां है ? जो पैसे बैंकों में जमा किए जाते हैं, वे वहीं तिजोरी में बन्द नहीं पड़े रहते। फिर बैंक इन पैसों पर लोगों को ब्याज भी तो देती है। ये ब्याज के पैसे कहां से आते हैं ?

बैंकों में जितना पैसा जमा किया जाता है, जमा करने वाले उसका बहुत

छोटा भाग रोज़ निकालते हैं। इसलिए बैंकों को अन्दाज़ हो गया है कि रोज़ उनके यहां से कितने पैसे निकलेंगे। वे इस मात्रा से कुछ अधिक पैसे अपने पास रखते हैं। बाकी पैसे वे और लोगों को लोन या उधार में दे देते हैं। ऐसे लोन पर बैंक ब्याज लेती है। जो ब्याज बैंक अपने खातेदारों को देती है, उससे अधिक ब्याज वो उनसे लेती है जिन्हें लोन दे रही है। इससे बैंक का भी मुनाफा होता है।

क्या, अब तुम बता सकते हो कि राम बिहारी के पैसे कहां हैं ?

देखें, बैंक ये लोन किस प्रकार देती है।

बैंक द्वारा दिए गए लोन :

धन्ना और बद्री ने लोन की अर्जियां डाली थीं। धन्ना के पास कुछ 10-12 एकड़ जमीन थी। उसे

फसल बोने के समय खाद और बीज के लिए पैसों की ज़रूरत थी । फसल बेचने पर वह ये पैसे लौटा देगा । धन्ना को बस 2000 रु० चाहिए थे । पर बद्री के पास तो 30 एकड़ जमीन थी । उसे बैंक से कर्जा लेने की क्या ज़रूरत आ पड़ी ? बद्री ने ट्यूब वेल के लिए लोन की अर्ज़ी दी थी । वह किश्तों में (5-10 सालों में) ये पैसे लौटाएगा । बद्री को 30,000 रु० का उधार चाहिए था । उसने अपनी ज़मीन बैंक के पास रहन रखी । यदि वह लोन न लौटाए तो बैंक उसकी ज़मीन बेच-कर पैसे वसूल करेगी ।

दोनों की अर्जी मंज़ूर हो गई । दोनों के नाम से बैंक में खाते खुल गए । इन खातों में लोन की रकम दर्ज करा दी गई । अब दोनों अपने-अपने खाते से अपनी ज़रूरतों के लिए पैसे निकाल सकते हैं ।

जिस तरह पैसे जमा करने वालों के, तरह - तरह के खाते होते हैं --
(किसी खाते से समय-समय पर पैसे निकाले जा सकते हैं और किसी खाते से लम्बे समय तक नहीं निकाले जा सकते) उसी तरह, कुछ लोन जल्दी लौटाने के लिए होते हैं और कुछ उधार लम्बे समय में लौटाए जाते हैं ।

बैंक यह देखती है कि उसके पास कितना पैसा लम्बे समय के लिए जमा है (यानी मियादी जमा पत्रों में) और कितना पैसा बचत खातों में । उसी हिसाब से वह लम्बे और कम समय के लिए लोन देती है ।

खेती के लिए (ट्रेक्टर या थ्रेशर
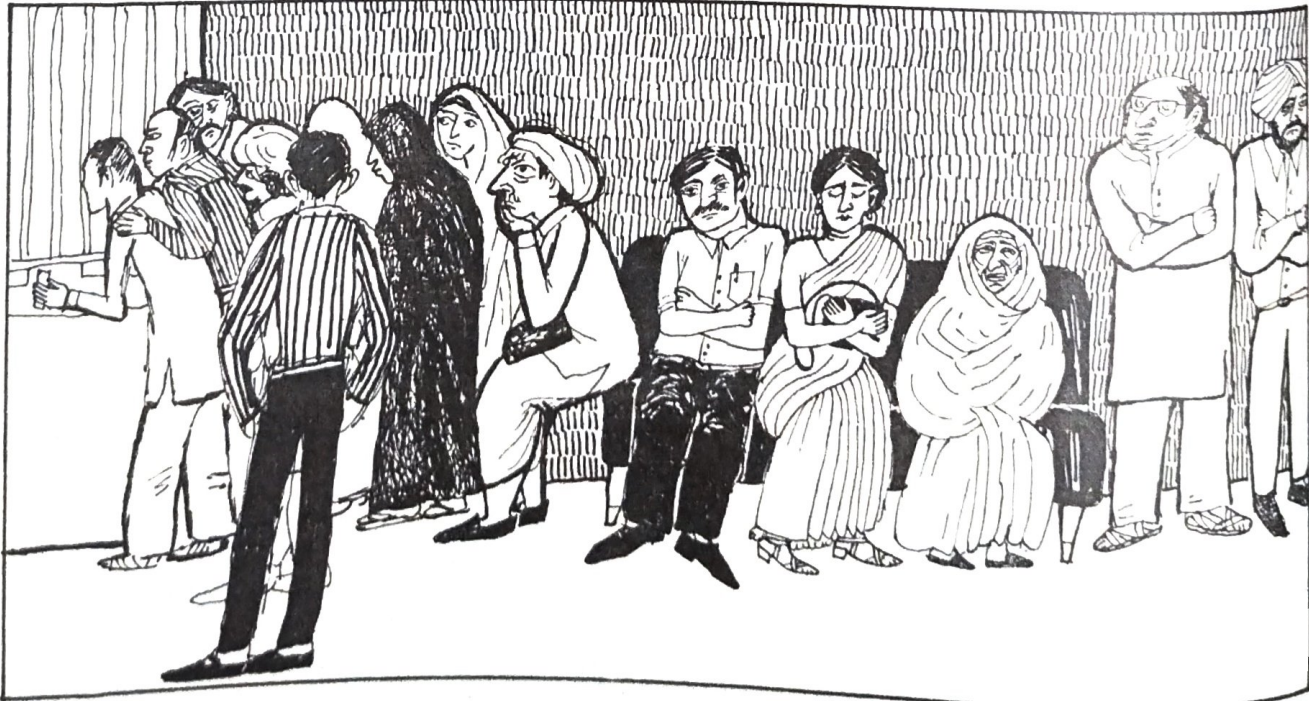
ने या ट्यूब वेल खुदवाने लोगों को एक साथ बहुत सारे पैसों की ज़रूरत पड़ती है। उद्योग लगाने के लिये भी खूब पैसे चाहिए। मशीनों के लिए, कच्चे माल के लिए।

इनसे उत्पादन बढ़ता है और किसानों और उद्योग शुरू करने वालों की आमदनी बढ़ती है। पर अक्सर किसी एक व्यक्ति के पास इतना सारा पैसे जमा नहीं रहता है। समय-समय पर लोगों को कर्ज़ की ज़रूरत पड़ती है। धीरे-धीरे उत्पादन बढ़ने पर ये कर्ज़ ब्याज सहित लौटाए जा सकते हैं।

बैंकों में कई सारे लोगों के पैसे जमा रहते हैं। इन्हीं पैसों का उपयोग और लोगों को लोन या उधार देने में किया जाता है। लोन पर मिले ब्याज से ही बैंक के खातेदारों को ब्याज दिया जाता है।

लोन देने के लिए बैंकों को पैसे कहां से मिलते हैं ?

बैंक में जमा किए गए पैसों का क्या होता है ?

अभ्यास के प्रश्न :

1. बैंक में क्या-क्या होता है ?
2. "चेक" से तुम क्या समझते हो ?
3. जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को चेक देता है, और वह व्यक्ति चेक बैंक में जमा कर देता है तो दोनों व्यक्तियों के खातों में क्या बदलाव आता है ?
4. बैंक में किस तरह के खाते होते हैं ? चालू खाते और मियादी जमा खाते में क्या अन्तर है ?
5. बैंक में जमा किए गए पैसों का बैंक क्या करती है ?
6. बैंक लोन किस प्रकार देती है ?

टैक्स 3

तुमने पिछली कक्षाओं में पंचायत ज़िला प्रशासन और राज्य सरकार के कार्यक्रमों के बारे में पढ़ा है ।याद करो कि वह क्या-क्या कार्य करती हैं और इन से आम नागरिक को क्या फायदा होता है । इनके अलावा केन्द्र सरकार के भी बहुत कार्य हैं जैसे फौज व पुलीस का आयोजन, रेलगाड़ी चलाना, और बहुत से अन्य कार्यक्रमों का आयोजन करना । अपने आस-पास देख कर बताओ कि सरकार द्वारा आयोजित और कौन से कार्यक्रम हैं । पंचायत, ज़िला परिषद, राज्य सरकार व केन्द्रीय सरकार के जितने कार्यक्रम तुम सोच सकते हो ,उनकी सूची बनाओ ।

इन सब के लिए पैसे चाहिए होते हैं । लेकिन ये पैसे सरकार के पास आते कहाँ से हैं ?

जब तुम बाज़ार जाते हो, किताबें खरीदने ,या सिनेमा देखने, या फिर महीने का राशन खरीदने, तुम भी सरकार की आमदनी में कुछ योगदान करते हो ।

यह कैसे ? यह इस तरह होता है कि इन सब वस्तुओं पर सरकार कुछ टैक्स या कर लगाती है और जब भी तुम इनको खरीदते हो, उन पर टैक्स भी भरते हो ।

सरकार की आमदनी का सबसे महत्वपूर्ण ज़रिया है कर(टैक्स)। इस पाठ में हम टैक्स के बारे में पढ़ेंगे -यह कितने प्रकार के होते हैं, इन्हें सरकार पूरे देश के वासियों से कैसे वसूल करती है ? इन टैक्सों से हमारी ज़िन्दगी पर क्या असर पड़ता है ? किस चीज पर कितना टैक्स लगाएं- यह कौन तय करता है?

सरकार कई प्रकार के टैक्स लगाती है। कुछ टैक्सवस्तुओं पर लगाए जाते हैं,

कुछ सम्पत्ति व आमदनी पर ।कुछ टैक्स वस्तुओं के देश के एक भाग से दूसरे भाग ले जाने पर लगते हैं,और कुछ टैक्स सड़कों के इस्तेमाल पर । टैक्स मनोरंजन के साधनों पर भी लगता है जैसे सिनेमा। सरकार इन सब के द्वारा पैसे इकट्ठा करती है ।

ये टैक्स कैसे तय होते हैं ?

हर साल,सरकार अपने टैक्स के प्रस्ताव संसद में प्रस्तुत करती है ।फिर इन प्रस्तावों को लेकर संसद में बहस होती है और यह मंजूर या नामंजूर किए जाते हैं । जो प्रस्ताव संसद मंजूर करती है, वह उस साल के लिए लागू होते हैं। हर साल स्थिति को देखकर ही सरकार टैक्स लागू करती है।जैसे ।1987-88 में भयंकर सूखा पड़ा तो राहत कार्यों पर अधिक खर्च ज़रूरी हो गया ।यह खर्च पूरा करने के लिए सरकार ने इस साल सभी चीज़ों पर टैक्स बढा दिया ।

टैक्स कितने प्रकार के होते हैं

1· आमदनी व सम्पत्ति कर

(ए) आमदनी कर: हर व्यक्ति की कुछ न कुछ आमदनी होती है ।कोई मज़दूरी कर के कमाता है,कोई खेती और कोई व्यापार ।लोगों की आमदनी पर सरकार टैक्स वसूल करती है। आमदनी कर व्यक्ति की आमदनी के अनुसार लागू होता है ।यह कर केवल उन लोगों पर लागू होता है जिनकी पूरे साल की आमदनी रु0 18,000 से ऊपर है । आमदनी कर उन लोगों पर भी नहीं लगाया जाता जिनकी आमदनी खेती से आती है ।लोगों को हरसाल अपनी आमदनी का कुछ हिस्सा सरकार को टैक्स के रूप में देना पड़ता है ।सरकार लोगों की सालाना आमदनी पर इस प्रकार कर लगाती है:

साल में रु0 25,000 की आमदनी पर 7% हिस्सा

यानी कि $\frac{7 \times 25,000}{100}$ = रु0 1750 रुपये आमदनी कर में देना पड़ता है ।

खाली स्थान भरो:

रुपये 30,000 की आमदनी पर 10·8% हिस्सा

यानी __________________ रु. कर देना पड़ता है ।

रुपये 40,000 की आमदनी पर 15·6% हिस्सा

यानी ______________________ रु. कर देना पड़ता है ।

रुपये 50,000 की आमदनी पर 18·5% हिस्सा

यानी ______________________ रु. कर देना पड़ता है ।

रुपये 1,00,000 की आमदनी पर 29·25% हिस्सा

यानी ______________________ रु. कर देना पड़ता है ।

रुपये 1,50,000 की आमदनी पर 36·17% यानी

$\frac{36 \cdot 17}{100} \times 1,50,000$ = 54,250 रु. देना पड़ता है ।

रुपये. 4,00,000 की आमदनी पर 44·81% यानी

$\frac{44 \cdot 8}{100} \times 4,00,000$ = 1,79,250 रु. कर देना पड़ता है ।
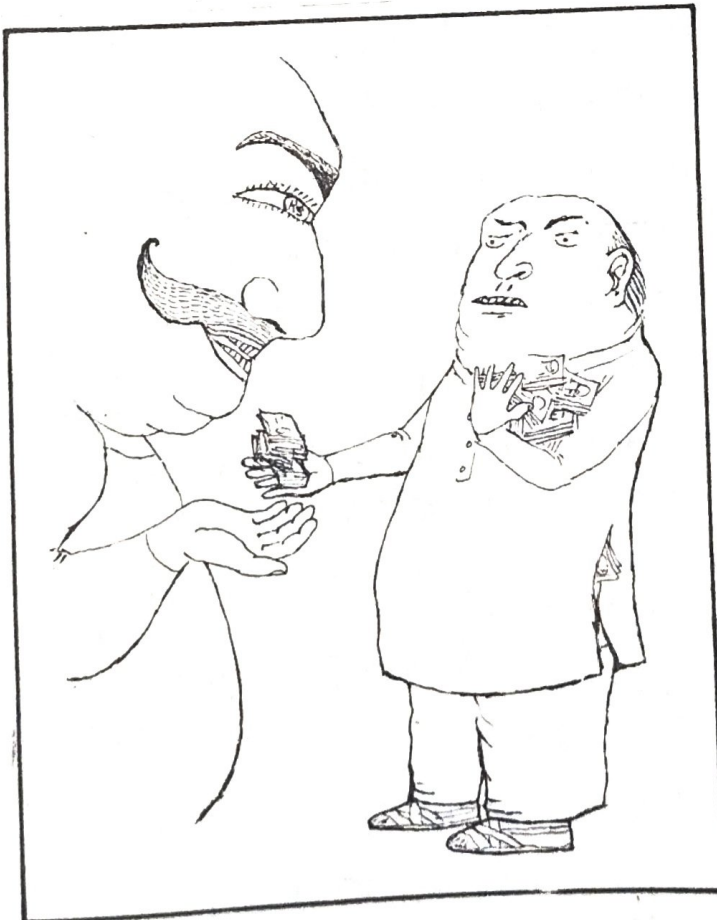
सरकार द्वारा आमदनी कर की वसूली

ऊपर दी गई तालिका में खाली स्थान भरो ।

क्या ज़्यादा आमदनी वाले लोगों को ज्यादा टैक्स देना पड़ता है ?

क्या सभी को अपनी आमदनी का बराबर हिस्सा (यानी कि वही-प्रतिशत) टैक्स में देना पड़ता है ?

(बी) सम्पत्ति कर: कुछ कर व्यक्ति की स्थायी सम्पत्ति-जैसे ज़मीन, मकान, कारखाना आदि पर भी लगता है । यह सम्पत्ति के मूल्य के अनुसार लगता है । इसे उदाहरण से समझो —

अगर किसी व्यक्ति के पास रुपये 75,000 का घर है ,और सरकार हर साल घर के मूल्य का 1.5% टैक्स में लेती है ,तो व्यक्ति को हर साल घर पर कितना टैक्स देना पड़ेगा?

आमदनी व सम्पत्ति कर सरकार की टैक्स से मिली आमदनी का बहुत छोटा हिस्सा है -केवल 15% । यह इसलिए भी है क्योंकि बहुत लोग अपनी आमदनी को ठीक तरह से सरकार को नहीं बताते हैं ताकि उन्हें टैक्स न देना पड़े । यह कानून के खिलाफ है । अगर ऐसे लोग पकड़े जाएं और सरकार को उनकी सही आमदनी मालूम हो जाए तो वह जेल भी जा सकते हैं।

2. वस्तुओं पर कर:

(ए) उत्पादन कर: कुछ कर ऐसे होते हैं जो वस्तुओं के उत्पादन पर लगाए जाते हैं। ये कर सरकार कारखाने के मालिक से वसूल करती है । हर वस्तु पर कुछ न कुछ उत्पादन कर लगता है। उदाहरण के लिए कुछ वस्तुओं पर 1986-87 में उत्पादन कर देखो :

खाद	पर उसके मूल्य का	19.7%	हिस्सा
चीनी	पर उसके मूल्य का	38.6%	हिस्सा
वनस्पति	पर उसके मूल्य का	11.7%	हिस्सा
कोयले	पर उसके मूल्य का	15.2%	हिस्सा

इस तरह हम देखते हैं कि हर वस्तु पर अलग -अलग उत्पादन कर लगता है

(बी) बिक्री कर: यह कर सरकार दुकानदार से वस्तु की बिक्री पर वसूल करती है। जैसे, अगर किसी दुकानदार के पास दवाईयों की दुकान है तो हर दवाई जो दुकानदार बेचता है, उस पर उसे कुछ टैक्स देना पड़ता है। हर वस्तु की बिक्री पर सरकार अलग-अलग टैक्स लगाती है। बिक्री कर के कुछ उदाहरण:

खाद के हर किलो की बिक्री पर उसके मूल्य का 4·3% हिस्सा सरकार कर में ले लेती है

चीनी के हर किलो की बिक्री पर उसके मूल्य का 6·8% हिस्सा सरकार कर में ले लेती है

वनस्पति तेल के हर किलो की बिक्री पर उसके मूल्य का 8·5% हिस्सा सरकार कर में ले लेती है

कोयले के हर किलो की बिक्री पर उसके मूल्य का 7·3% हिस्सा सरकार कर में ले लेती है

इस टैक्स से आम जनता पर क्या असर पड़ता है?

ऊपर हमने पढ़ा कि सरकार तो वस्तु के उत्पादक और दुकानदार से टैक्स लेती है। तो आम जनता का वस्तुओं पर टैक्स से क्या लेना देना है?

जब सरकार उत्पादक से टैक्स लेती है उत्पादक उस टैक्स को वस्तु के दाम में जोड़ कर दुकानदार को बेचता है। जैसे, अगर एक किलो मिल का

आटा उत्पादक को 1.50रू0 का पड़ता है। और यदि सरकार उस पर 50पै0 टैक्स लेती है। तो उत्पादक वह आटा दुकानदार को 2 रू0 में बेचता है। दुकानदार भी टैक्स को खरीद्दार पर ही लाद देता है। अगर उसने 2रू. का आटा उत्पादक से खरीदा और सरकार उस पर 25 पैसे बिक्री टैक्स लगाए, तो दुकानदार उस आटे को 2.25रू. में खरीद्दार को बेचता है

इस तरह खरीद्दार ही, उत्पादन कर और बिक्री कर भार उठाता है।

कुछ ऐसी वस्तुएँ हैं जिनके उत्पादन व बिक्री पर कोई टैक्स नहीं लगता जैसे- सब्जीयां। पर फिर भी, इन वस्तुओं की उपज में जो वस्तुएं लगती हैं जैसे रसायनिक खाद, उन पर तो टैक्स लगता है जो किसान को देना पड़ता है। इस को तुम आगे दिए गए नाटक द्वारा समझो।

नाटक:-

इसमें 6 बच्चे भाग ले सकते हैं।

दो बच्चे दुकानदार बनें

(अ) एक आटा बेचने वाली -

(ब) एक टी0वी0बेचने वाला -

इसको तुम नमक के ढेर लगा कर बना सकते हो। साथ में अगर एक तराजू मिल जाए तो वह भी काम में लाई जा सकती है।

टी0वी0तुम माचिस के डब्बे से बना सकते हो

दो बच्चे खरीद्दार बनें:

1- एक जिसकी आमदनी 200 रू.महीना है

2- दूसरा जिसकी आमदनी 2000 रू0महीना है
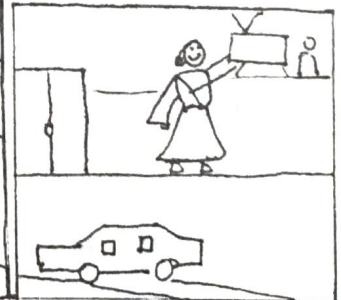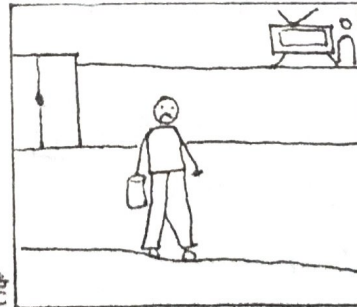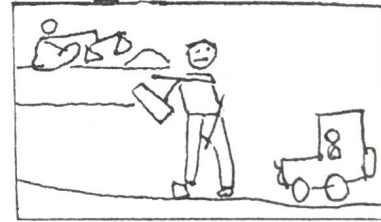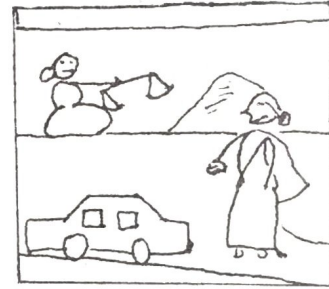
रुपये तुम कागज के टुकड़ों से बना सकते हो
एक जन को 200 रू. दो और दूसरे को 2000 रू.
एक बच्चा सरकारी कर्मचारी बनेगा। उसके पास एक रजिस्टर होगा,
इन सब लोगों के तुम अपने मन से नाम रख सकते हो।

[आटे की दूकान पर:]

(1) बहनजी महीने का राशन खरीदने आया हूँ।
10 किलो आटा देना।

(अ) यह लो (आटा देती हुई) 30 रुपये।

(1)- अर्रे यह क्या? पिछले महीने तो मैंने 27 रुपये का दस किलो लिया था। इस महीने दाम क्यों बढ़ा दिये।

(अ)- क्या करूँ सरकार ने आटे पर टैक्स जो बढ़ा दिया। अब हर किलो आटे के लिए सरकार 50 पैसे टैक्स वसूल करने लगी है पहले सरकार हर किलो पर 20 पैसे ही लेती थी।

(1)- तो क्या यह टैक्स तुम हम से ही वसूलोगी?

अ - बिल्कुल। मेरे लिए तो आटे का दाम 2.50 पैसे प्रति किलो पड़ता है। लेकिन टैक्स भी तो देना पड़ता है। तुम से ही तो वसूलूँगी। लाओ, लाओ, तीस रुपये निकालो

(1) - लो बहन

[2 - आटे की दुकान पर आती है।]

(2) - 30 किलो आटा देना।

(अ) - 90 रुपये मेम साहब।

(2) - यह ले।

[कुछ दिन बीत जाते हैं। फिर दुकानदार महीनेभर का टैक्स भरने बिक्री कर आफिस जाता है।]

स - बोलो, कितनी बिक्री हुई, इस महीने ?

अ - सरकार सौ किलो।

स - तो सरकार का टैक्स भर दो।

अ - जी हाँ सरकार।

अ - ठीक से गिना है न, हर किलो पर 50 पैसे के हिसाब से।

अ - जी हाँ- पूरे 50 रू0 होते हैं।

स - ठीक है। ये लो रसीद।

[टी0वी0दुकान पर]

1- हाय, कितना सुन्दर टी0वी0 सेट है। काश मैं भी इसे खरीद सकता। पर क्या करूं -इतने

और भी तो खर्चे हैं। अभी तो आटा ही लिया है। सब्जी, मिट्टी का तेल, बच्चों की किताबें सब बाकी है। और पूरे महीने का खर्च केवल 170 रू में चलाना है। कैसे गुज़ारा होगा।

2 - [दुकान में आती हुई]- क्या सुन्दर टी0वी0है। अभी तो मेरे पास बहुत पैसे हैं। पूछूं, इसके दाम।

2 -[दुकानदार से]- टी0वी0के क्या दाम हैं ?

ब - 3000 रू।

2 - छ:महीनों से 500-500 रू बचा रही हूं। उससे अगर टी0वी0 ले लूं, तब भी महीने के खर्चे के लिए इस महीने की काफी आमदनी है। चलो, बच्चों को दिवाली के नए कपड़े भी बनवा

दूंगी। इस साल दिवाली तो धूम धाम से मनाएँगे !

[दुकानदार से]- एक टी0वी0 सेट देना ।यह लो 3000 रु

(बी)- यह लो ।

{2} टी·वी· लेकर चली जाती है ।

(बी)- चलो, आज एक टी0वी0 तो बिका ।अब इस पर 1000रु टैक्स भी तो जमा करना होगा ।यह अच्छी बात है-सरकार जितना टैक्स बढ़ाए उतना ही दाम हम बढ़ा सकते हैं ।हमारे मुनाफे में कोई कमी नहीं

टैक्स तो खरीदने वाला ही देता है ।

[यह दुकानदार भी बिक्री कर आफिस जाता है ।]

सरकार- क्यों, कितनी बिक्री हुई ?

(बी)- केवल एक टी0वी0, सरकार ।

सरकार - तो उस पर तो टैक्स भरो ।

[रजिस्टर में देखता है]- हाँ, हर टी0वी0 के 1000रु ।

(बी)- जी हां सरकार, मैं कल सरकारी खजाने में जा कर इसे भर दूंगा

सरकार- ठीक है ।

	मासिक आय	विक्रय
सरकार	1050	
दुकानदार ए	250 रु	
दुकानदार बी	2000 रु	
खरीदार 1	200 रु	30 रु[आटा]
खरीदार 2	2000 रु	90 रु[आटा]
		3000 रु[टी0वी0]

1 सरकार को टी0वी0 के टैक्स से

(1) 200 रु (2) 400 रु0 (3) 1000 रु (4) 700 रु मिले ।

2. सरकार को आटा के टैक्स से

(1) 30 रु (2) 50 रु (3) 14 रु (4) 110 रु मिले।

3. दुकानदार को टैक्स के बाद

(1) 345 रु (2) 160 रु (3) 250 रु (4) 55 रु मिले।

4. अन्त में खरीद्दार 1 के पास बचा

(1) 10 किलो आटा और 170 रु

(2) 15 किलो आटा और 200 रु

(3) 15 किलो आटा और 125 रु

(4) 10 किलो आटा और 20 रु

5. अन्त में खरीद्दार 2 के पास बचा

(1) 770 रु और 10 किलो आटा और एक टी0वी0।

(2) 1075 रु, 15 किलो आटा और 1 टी0वी0।

(3) 50 रु, 10 किलो आटा और 1 टी0वी0।

(4) 1910 रु 30 किलो आटा और 1 टी0वी0।

6. (4) टैक्स का भार अन्त में किस पर पड़ा ?

(ए)- दुकानदारों पर

(बी)- ग्राहक पर

(सी)- सरकार पर।

7. खरीद्दार (1) ने आटे के दुकानदार को टैक्स के कितने पैसे दिये ?

8. खरीद्दार (2) ने आटे के दुकानदार को टैक्स के कितने पैसे दिये ?

9. किस खरीद्दार ने अपनी आमदनी का अधिक हिस्सा आटे पर टैक्स के रूप में दिया ?

वस्तुओं के उत्पादन और बिक्री के कर का किन लोगों पर अधिक असर पड़ता है ?

हमने देखा है कि वस्तु पर उत्पादन व बिक्री कर कारखाने के मालिक और दुकानदार को भरना पड़ता है । पर वे यह टैक्स खरीददारों से ही वसूल करते हैं । इस तरह, इन दोनों करों का बोझ खरीदारों पर ही पड़ता है । वस्तुओं पर करों से सरकार को जो आमदनी मिलती है वह उसकी टैक्स से मिली पूरी आमदनी का 85% हिस्सा है ।

क्या उत्पादन व बिक्री टैक्स का ज़्यादा बोझ अमीरों पर पड़ता है या गरीबों पर ?

यह बात इस पर निर्भर करती है कि कम आय वाले लोग अपनी आय किन चीजों पर खर्च करते हैं और इन पर उन्हें कितना टैक्स देना पड़ता है, और अधिक आय वाले किस प्रकार की वस्तुएं खरीदते हैं और इन पर कितना टैक्स देना पड़ता है ।

ज़्यादा आमदनी व कम आमदनी वाले किस प्रकार की चीजें लेते हैं, उन के बारे में कुछ चर्चा कर

सोचो, अगर किसी व्यक्ति को बहुत सारा पैसा मिल जाए तो वह क्या करेगा ? पहले तो वह अपन खाने, पानी, मकान, दवाईयां आदि का प्रबन्ध करेगा । उसके बाद वह अपनी पसन्द की चीजें खरीदेगा जैसे मोटरसाइकिल, बढ़िया कपड़े, फ्रिज, ज़ेवर आदि । यानी, वह दो प्रकार की वस्तुएं खरीदता है । पहली, अपनी जरूरत को पूरी करने वाली वस्तुएं और उसके बाद अपनी पसन्द की अन्य वस्तुएं ।

वस्तुएं दो प्रकार की होती हैं । एक जो हर रोज़ की ज़िन्दगी चलाने के लिए ज़रूरी हैं जैस अनाज, आटा, तेल, नमक, कपड़ा, दवाई रहने का मकान आदि । इन चीज़ों की सभी को ज़रूरत होती है । इन्हें हम ज़रूरत की वस्तुएं कहेंगे ।

दूसरी प्रकार की वस्तुएं वह होती हैं जो आदमी अपनी जरूरतें

पूरी करने के बाद अपने आराम व मनोरंजन के लिए खरीदता है । जैसे-मोटरगाड़ी ,टी0वी0,फ्रिज , कीमती कपड़े, सिनेमा देखना आदि । इन्हें हम भोग की वस्तुएं कहेंगे ।

चुनों,नीचे दी गई वस्तुओं की सूची में से ज़रूरत की चीजें कौन सी हैं और भोग की चीजें कौन सी ।

मकान ,वनस्पति तेल ,देसी घी,जेवर, कम्बल,रेडियो, रेशमी कपड़े,मिट्टी का तेल,बदाम,सब्जी,दवाई,अनाज, सूती कपड़ा ।

भोग की वस्तुओं को कौन लोग इस्तेमाल करते हैं ? कम आमदनी वाले लोगों के पास इतना पैसा ही होता है कि वह अपनी जरूरतें पूरी कर लें । भोग की वस्तुओं के लिए इतना पैसा ही नहीं होता ।इन भोग की वस्तुओं को तो केवल ज्यादा आमदनी वाले लोग ही इस्तेमाल कर सकते हैं ।

अगर एक व्यक्ति महीने में पांच सौ रुपये कमा रहा है,तो उसकी ज़रूरतें [भोजन,तेल,कपड़ा आदि] ही मुश्किल से पूरी हो पाती है ।परन्तु अगर किसी व्यक्ति की आमदनी महीने मेंचार हज़ार रुपये है ,तो वह अपनी जरूरतों को पूरी कर के, भोग की वस्तुएं भी खरीद सकता है और थोड़ी बचत भी कर लेता है ।

ऐसी स्थिति में अगर ज़रूरी वस्तुओं पर टैक्स बढ़ा दिया गया तो क्या होगा ?

अगर मिट्टी के तेल पर सरकार टैक्स बढ़ा दे, तो उसके दाम बढ़ जायेंगे ।इस से पहले व्यक्ति,जिसकी आमदनी 500 रु महीना है,को या तो कम तेल इस्तेमाल करना होगा या किसी और चीज़ का इस्तेमाल कम करना होगा -जैसे दिन में एक बार ही सब्जी खानी होगी या दूध कम पीना होगा ।इस तरह ,टैक्स बढ़ने से उसे किसी चीज को कम मात्रा में इस्तेमाल करनी होगी ताकि मंहगा हुआ तेल खरीद सके ।

परन्तु दूसरे व्यक्ति जिसकी मासिक आमदनी 4000 रु॰ है, को

ऐसी कोई परेशानी नहीं होगी। वह या तो अपनी बचत का थोड़ा हिस्सा खर्च कर सकता है, या तो भोग की वस्तुओं की खपत थोड़ी कम कर सकता है तो उसकी ज़रूरतें आराम से पूरी हो सकती हैं।

इसलिए जब ज़रूरी चीजों पर टैक्स बढ़ जाता है, तो कम आमदनी वालों को उसे चुकाने में ज्यादा तकलीफ होती है।

अगर भोग की वस्तुओं पर टैक्स बढ़ जाए जैसे शीतल पेय (जैसे गोल्डस्पाट) तो कम आमदनी वाले को कोई फर्क नहीं पड़ेगा क्यों कि वह इन चीजों को इस्तेमाल ही नहीं करता। इस टैक्स का असर ज्यादा आमदनी वालों पर ही पड़ेगा। पर इनको भी यह टैक्स इतना भारी नहीं पड़ेगा क्यों कि अगर वह इनकी खपत थोड़ी कम कर दें और उसकी जगह थोड़ी सस्ती चीज़ें खरीदें जैसे गन्ने का रस आदि तो उन्हें कोई विशेष परेशानी नहीं होगी क्यों कि उनके लिए यह ज़रूरी वस्तु नहीं है।

1. अगर मोटरसाइकिल का कारखाने में बनाने का दाम रुपये 10,000 है, और उस पर 15 % उत्पादन कर लगता है, तो उत्पादक उसे दुकानदार को क्या दाम पर बेचेगा ? इस पर अब 10 % बिक्री कर लगा दिया गया, तो खरीदार को इसकी खरीदी पर कितना देना पड़ेगा? इस में से सरकार को कितनी आमदनी मिली ?

2. अगर माचिस की डब्बी की बनावट का दाम 10 पै. है, और उस पर 143 % उत्पादन कर लगता है तो उत्पादक दुकानदार से कितने पैसे लेगा? अगर इस पर अब दुकानदार को सरकार को 10 % बिक्री कर देना पड़े, तो वह माचिस की डब्बी के क्या दाम लेगा ? इसमें से सरकार को कितनी आमदनी मिलेगी ?

ऊपर दिए गए उदाहरण से हम

देखते हैं कि मोटरसाईकिल जैसी महंगी वस्तु के मूल्य का माचिस के मूल्य से कम हिस्सा कर में लिया जाता है । तो यह जरूरी नहीं है कि महंगी चीज पर सरकार का टैक्स का हिस्सा ज्यादा हो ।

एक वस्तु पर टैक्स बढ़ने से दूसरी वस्तुओं के दामों पर असर :

नीचे दिए गए चित्र को देखो । इसमें दिखता है कि खनिज तेल (वह तेल जो जमीन से निकाला जाए) से कितनी वस्तुएं बनती हैं । खनिज तेल से पेट्रोल ,डीज़ल,मिट्टी का तेल बनता है ।अगर खनिज तेल पर टैक्स लगा दिया जाए तो उसके दाम बढ़ जाएगें ।इस से पेट्रोल,डीज़ल जैसी चीजें और महंगें में बनेंगी । इन्हें ज्यादा दामों में ही बेचा
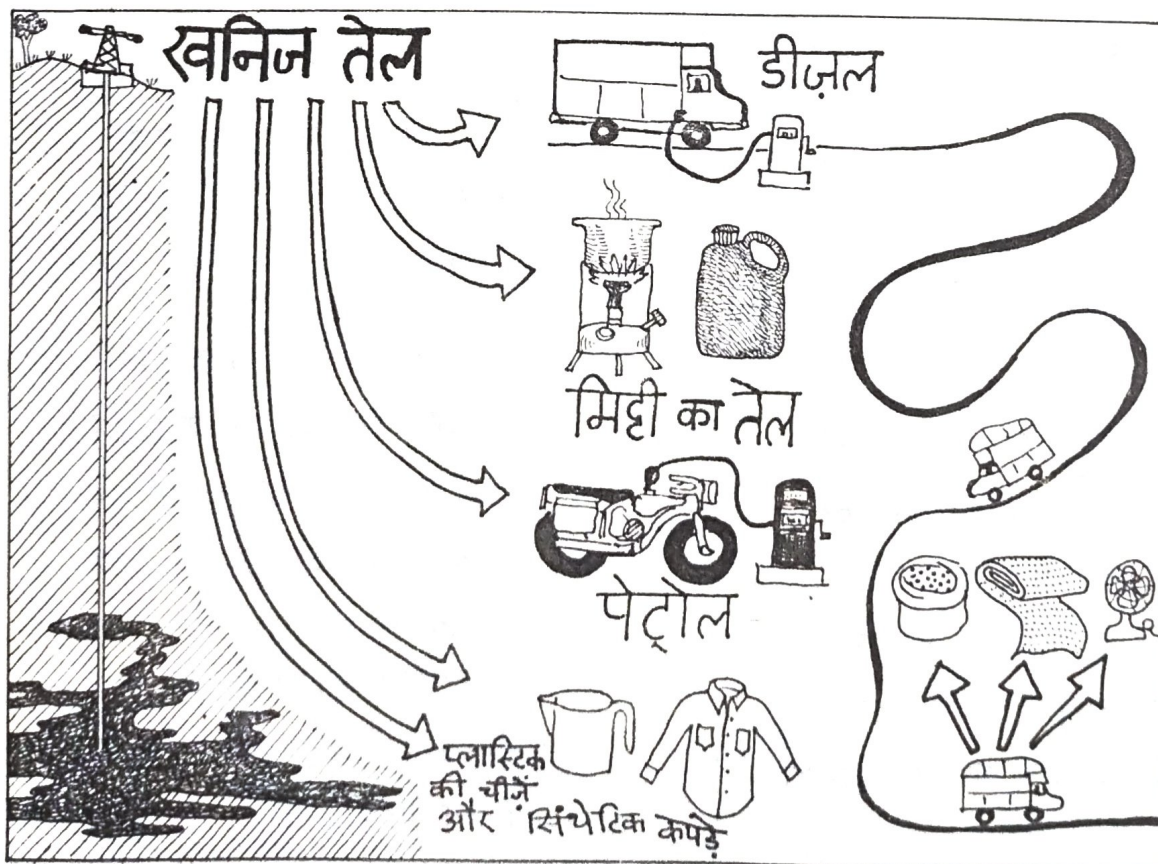
जाएगा।

।इस तरह खनिज तेल पर टैक्स बढ़ने से अन्य वस्तुएं जैसे मिट्टी का तेल, डीजल ,पैट्रोल के दाम भी बढ़ जाते हैं ।

पर पैट्रोल ,डीजल आदि भी अन्य वाहनों को चलाने में उपयोग किए जाते हैं । जैसे चित्र में दिखाया गया है डीजल से ट्रक ,रेल-गाड़ी , ट्रैक्टर, बस,जीप आदि चलती है । पेट्रोल भी मोटरगाड़ी,स्कूटर आदि वाहनों में इस्तेमाल किया जाता है । यह वाहन वस्तुओं को लाने- ले जाने में काम आते हैं ।

डीज़ल के दाम बढ़ जाएं तो क्या होगा ?

फिर ट्रक,जीप आदि वाहनों को चलाना बहुत मंहगा हो जाएगा ।इस से ,जो वस्तुएं ट्रक व रेलगाड़ी से एक जगह से दूसरी जगह ले जाई जाती है,उन के लाने ले जाने का दाम भी बढ़ जाएगा इस से उन वस्तुओं के दाम भी बढ़ेंगे ।

यदि खनिज तेल पर टैक्स बढ़ाने की बजाए सरकार केवल पैट्रोल पर टैक्स बढ़ा दे तो किन वस्तुओं के दाम पर ---------------- असर पड़ेगा ?

यदि मिट्टी के तेल पर टैक्स ---------------- बढ़ा दिया जाए तो किन वस्तुओं का दाम बढ़ेगा ?

इस सब से तुम सोचोगे कि अगर किसी वस्तु पर टैक्स घट जाए,तो उसका दाम गिर जाना चाहिए ।पर ऐसा होना ज़रूरी नहीं है ।जब किसी वस्तु पर टैक्स कम हो जाए और फिर भी उत्पादक उसे पुराने दाम पर ही बेचे,तो उसका मुनाफा बढ़ जाता है ।यह इसलिए होता है कि जो राशि पहले उत्पादक सरकार को टैक्स के रूप में दे रहा था, अब वह उसे

अपने पास ही रख रहा है ।खरीददारों को तो पुराने बढ़े हुए दाम पर वस्तुएं खरीदने की आदत सी हो जाती है ।

इसलिए उत्पादक टैक्स के घटने पर भी आमतौर से वस्तु के दाम या तो कुछ ही कम करेगा या बिल्कुल कम नहीं करेगा ।पर जब टैक्स बढ जाए तो अपने मुनाफे में कमी न हो, इस विचार से वह टैक्स वस्तु के दाम में जोड़कर खरीदार से ही वसूलेगा ।

तो हमने देखा कि सरकार किस प्रकार टैक्स तय कर के ,उसे जनता पर लगाती है और फिर वसूल करती है । इस टैक्स का भार कौन उठाता है वह भी देखा ।

अभ्यास के प्रश्न

1. कर कितने प्रकार के होते हैं ? हर टैक्स के लिए एक-एक उदाहरण दो ।
2. किसी वस्तु पर टैक्स लगने पर उसके दाम कैसे बढ़ जाते हैं ?
3. अगर कोयले पर टैक्स बढ़ गया,तो किन वस्तुओं के दाम बढ़ जायेंगे ।
4. किन वस्तुओं पर टैक्स बढ़ने से कम आमदनी वालों को परेशानी होगी ? किन वस्तुओं पर टैक्स से ज्यादा आमदनी वालों को परेशानी होगी ? सूची बनाओं

अलग - अलग समाज में न्याय के तरीके

इस पाठ में हम अलग-अलग समाज के बारे में बात करेंगे । उनके न्याय करने के तरीके के बारे में पढ़ेंगे । उनकी धारणायें और न्याय की परम्पराओं को समझने की कोशिश करेंगे ।

दूसरे समाज के बारे में हमें पढ़ने से क्या फायदा ? किसी दीवान के बारे में यह कहानी कही जाती है: उनके न्याय दरबार में तरह-तरह के मामले पेश होते । कहीं पारिवारिक झगड़ा, कहीं ज़मीन का झगड़ा...सभी किस्म के केस उनके सामने आते थे । विचार करने के लिए वह अपने पंडित-मोलवियों की मदद लेते ।

कभी-कभी वे हफ्ते भर दरबार में नहीं दिखते । कहा जाता है कि वह फकीर का वेश अपना कर सूफियों या संतों के बीच घूमा करते । जब कभी मौका मिला तो उन के बीच न्याय की बातें या कोई केस का मसला सुना कर बहस छेड़ देते । खूब बहस होती । दीवान गौर से सुफियों और संतों की बाते सुनते । कभी-कभी उनको अपने बारे में गालियां भी सुननी पड़ती । इस तरह उन्हें अलग-अलग राय प्राप्त होती और लोगों की बातें सामने आती ।

इसी तरह, वे कुछ ऐसे फकीरों को मिलने जाते जो अकेले पहाड़ियों में रहते हों । यहां वे न्याय का मामला छेड़ देते । किसी ने पूछा "ये तो समाज से दूर हैं, इन्हें क्या मालूम न्याय और धर्मशास्त्र ?" "बस इसी लिए," दीवान ने कहा । "इतनी दूर हैं कि हमारे विचार इनकी बात-चीत से साफ हो जाते हैं । हमारी विनम्रता और धैर्य कायम रहते हैं ।"

दूसरे समाज के बारे में पढ़ने से हमें यही लाभ होता है । हम तुलना कर सकते हैं । इस से हमारे विचार साफ होते हैं । यदि हम दूसरों को समझने की कोशिश करते हैं तो उनके प्रति सद्भावना कायम रहती है ।

4 परम्परा, न्याय की परम्परा; गुरूजी की मदद से इन पर चर्चा करो और एक-एक वाक्य में उपयोग करो ।

बस्तर के मुरिया समाज :

यह घटना तीस साल पुरानी है - 1958 की बात है । अंतागढ़ इलाके में, बिरसु अपने परिवार के साथ रहता था । शिबू भी उसी गांव में रहता था । बिरसु और शिबू के बीच छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा होता रहता । एक बार की बात है कि बिरसु और शिबू के बीच गंभीर झगड़ा हो गया और बिरसु ने शिबू को कुल्हाड़ी दे मारी । कुल्हाड़ी की चोट से शिबू का देहान्त हो गया। हमें इस बात की की खबर नहीं है कि किस बात पर उनका झगड़ा इतना गंभीर हो गया था ।

यह घटना गांव की पंचायत के सामने आई । बहुत बहस हुई । सभी की राय थी कि बिरसु को शिबू के परिवार की देखभाल करनी चाहिए और वह कुछ समय तक बंधुआ मज़दूर की तरह उस परिवार के लिए काम करे । उसके पाप का प्रायश्चित्त कैसे हो ? इस बात पर कोई एक राय नहीं थी ।

इस बीच ऐसा हुआ कि दो हवलदार गांव पहुंचे । उस जमाने में यातायात की व्यवस्था बहुत कम थी । लोगों को दूर-दूर तक पैदल जाना पड़ता । ये हवलदार नारायणपुर के थाने से चले थे और कई गांवों का दौरा कर के वापिस नारायणपुर लौटने वाले थे । उन्हें पूरा दौरा पैदल करना था ।

जब ये बिरसु के गांव पहुंचे तो उन्हें पंचायत की चर्चा की खबर लगी । हवलदारों ने पंचायत में अपनी बात कही : बिरसु ने अपराध किया है और थाने जाना जरूरी है। उसे जेल की सज़ा भी हो सकती है ।

पंचायत को कोर्ट, कचहरी के बारे में कोई जानकारी नहीं थी । पर उन्हें थाने के बारे में मालूम था, कि वहां कभी-कभी बन्दी रखे जाते हैं । उन्हें लगा कि बिरसु के लिए यह उचित प्रायश्चित्त होगा और हवलदारों की भी बात मानी जायेगी ।

बिरसु को कहा गया कि हवलदारों का सामान लेकर उनके साथ जाये । थाना 30 कि॰मी॰ दूर था । सभी पैदल चल रहे थे । दोपहर के वक्त, वे एक नदी किनारे पहुंचे ।

चित्र 1 हवलदारों को छोड़कर बिरसु नारायणपुर थाने की ओर जा रहा है।

वहां एक गांव में उन्होंने खाना खाया । हवलदारों को नींद लग गई और उनकी थकान इतनी थी कि वे बिरसु के जगाने पर उठने से मना कर दें । बिरसु को चलने की आदत थी । उसने सोचा कि सूरज ढलने से पहले थाना पहुंच जाना चाहिए । वह हवलदारों का सामान लेकर अकेला चल पड़ा ।

नारायणपुर थाने पर बिरसु ने थानेदार को पूरी कहानी बताई । थानेदार की समझ में नहीं आया कि यह अकेला कैसे आया । भाग जाने का ख्याल उसके दिमाग में क्यों नहीं आया । उसने बिरसु की कहानी की रपट लिखी और बिरसु को ही डांटने लगा कि हवलदारों को वहां छोड़ कर क्यों आया ।

जब उसका गुस्सा और आश्चर्य कम हुआ तो उसने बिरसु से पूछा- "तुम भाग क्यों नहीं गये" बिरसु को यह सवाल अजीब सा लगा ।"भाग ? भागता क्यों?" उसने फिर से कहानी सुनाई ।" मैंने गलत काम किया है और मुझे इसकी सज़ा मिलनी चाहिए। प्रायश्चित्त कर, मैं घर लौट जाऊंगा । तब समाज के लोग मुझे अपना लेंगे," बिरसु ने समझाया ।

बिरसु पर हत्या का मुकदमा चला और उसे 6 साल की जेल की सज़ा हुई ।

कुछ वर्ष बाद थानेदार ने एक चिट्ठी अपने अधिकारियों को लिखी, जहां उसने कहा-"...यह सब किस्से और केस रपट पढ़कर आप को कुछ

अजीब सा लगेगा । हत्या के केस बहुत कम हैं, इस इलाके में । पर सभी में गुनहगार स्वयं आकर अपना जुर्म कबूल कर लेते हैं । हमें छान-बीन, सबूत आदि की खोज करनी ही नहीं पड़ती ।"

उन्हीं दिनों की बात है । दूसरे एक गांव में समाज के धान की चोरी हुई थी । पूरे गांव में सन्नाटा सा छा गया । सभी घबराये हुए थे । वहां की एक परम्परा थी कि खेती एक साथ करते थे । जितना धान होता उसे बांट लिया जाता । कोई बहस या मत-भेद हो तो उसका फैसला पंचायत में होता था ।

चोरी करना बहुत गंभीर मामला था। चोरी कर के उस व्यक्ति ने समाज में फूट पैदा की है , ऐसा समझा जाता । सबने मिल कर खेती की और फसल आपस में बांटी । तब किसी ने धान की चोरी की यानी समाज की संपत्ति की चोरी की । यदि चोरी होती रहे तो एक-दूसरे पर विश्वास हट जायेगा ।

यह समाज के खिलाफ बहुत भारी अपराध हुआ । इस अपराध के लिए पंचायत बहुत कड़ी सज़ा देती । उस व्यक्ति को साल भर तक गांव के बाहर रहना पड़ता । यदि बार-बार चोरी करे, तो मृत्यु का दंड भी दिया जा सकता था ।

समाज के विरूद्ध अपराध का खास नाम था "पालो" । पालो का अर्थ है बिलकुल मना । ऐसा समझो कि यदि हत्या पाप था तो चोरी महा पाप। चोरी का अपराध, हत्या से भी गंभीर समझा जाता था।

जब धान का चोर पकड़ा गया ता उसे छ: महीने के लिए समाज से बाहर कर दिया गया । जैसा इन दो किस्सों में पढ़ा, वैसे आज हमारे समाज में न्याय नहीं होता ।

मुरिया समाज में न्याय की मुख्य बातों पर ध्यान देने के लिए इन प्रश्नों पर विचार करें-

बिरसु हवलदारों को छोड़ कर क्यों
____

नहीं भाग गया ?
____

चोरी के अपराध को "पालो" क्यों
____

कहते थे ?
____

हमारे कानून की नजर में कौन सा
____

अपराध , चोरी या हत्या, ज्यादा
____

गंभीर माना जाता है ?
____

वेल्लाल समाज पंचायत का एक फैसला :

बस्तर के मुरिया समाज की न्याय की कुछ परम्पराओं के बारे में तुमने पढ़ा । चोरी, हत्या, मार-पीट सभी गंभीर अपराध है पर चोरी को सब से गंभीर माना जाता है । यह पालो है- बिलकुल मना । अब वेल्लाल समाज पंचायत की कुछ परम्पराओं को देखें ।

यह घटना 11 वीं सदी की है । वेल्लाल जाति के लोग आज तमिलनाडु, प्रदेश में पाये जाते हैं । हमें एक मंदिर के अभिलेख से इस घटना के बारे में पता चलता है ।

एक परिवार में दो भाइयों के बीच झगड़ा हो गया । चिढ़ कर, बड़े भाई ने छोटे को थप्पड़ मारा । छोटे ने गुस्से में बड़े भाई को लाठी दे मारी । लाठी की चोट से बड़े भाई की मौत हो गई । यह मामला जाति पंचायत के सामने लाया गया ।

इस जाति की यह सब से बड़ी पंचायत थी । दूर-दूर से इस जाति के लोग, इस पंचायत में आते । इसका नाम था चित्रामेली पेरूरनाटार ।

लड़कों के पिता द्वारा, इस घटना की कहानी पंचायत को सुनाई गई । पंचों ने पूछा :
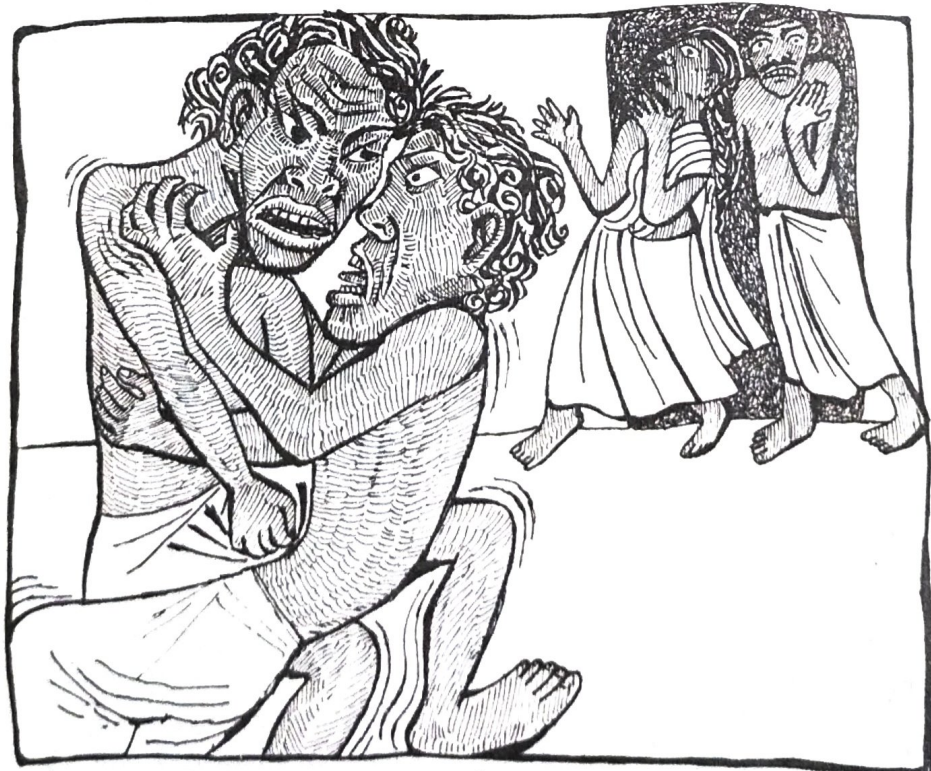
चित्र 2 भाइयों के बीच झगड़ा हो रहा है।

"इन दोनों लड़कों के अलावा क्या तुम्हारी और कोई संतान है? "
"नहीं"।
"क्या तुम्हारे पास कोई संपत्ति है? "
"नहीं"।

इस तरह पूछताछ कर के पंचायत ने स्थिति समझी । फिर कहा -
यह चित्रामेली पेरूरनाटार आदेश देती है कि :

"परिवार पर दुख का समय आ गया है । माता-पिता की देखभाल करने के लिए न ही उनके पास और कोई संतान है न कोई संपत्ति । उनके छोटे लड़के से कहा जाता है कि वह रोज़ भगवान महादेवा के मंदिर में एक दिया जलाये । साथ ही साथ उस से कहा जाता है कि वह अपने माता-पिता की पूर्ण रूप से देखभाल करे । हमारे धर्म के अनुसार उसे इस आदेश का पालन करना होगा ।"

हत्या का अपराध करने पर भी छोटे लड़के को गंभीर सजा क्यों नहीं दी गई ? यदि वर्तमान समय में ऐसी घटना होती तो कैसे फैसला होता ?

आजकल सजा दो ही तरह की है - जेल या ज़ुर्माना ।

पर वेल्लाल समाज पंचायत की परम्परा कुछ अलग थी । हत्या, चोरी मारपीट सभी गंभीर अपराध थे । पर यह बात पहले देखते थे कि अपराध के कारण किसी व्यक्ति का क्या नुकसान हुआ । फिर सोचा जाता कि वह अपराधी इस नुकसान को कैसे पूरा कर सकता है । छोटे लड़के ने भाई को मार कर परिवार को संकट में डाल दिया था । इस लिए परिवार की देखभाल करना छोटे लड़के का पहला फ़र्ज़ था । नुकसान पूरा करने के लिए कभी-कभी अपराधी को दूसरे परिवार, जिसे हानि पहुंची है, के यहां बंदी बन कर भी काम करना पड़ता था ।

वेल्लालों में परिवारिक/ व्यक्तिगत नुकसान पूरा करने के साथ-साथ अपराधी को प्रायश्चित्त भी करना पड़ता था । बुरा काम करने से यह माना जाता था कि उस व्यक्ति की जात गिर गई है ।

क्या बता सकते हो कि छोटे भाई को दिया जलाने के लिए क्यों कहा गया ?

मुरिया समाज और वेल्लाल समाज में

न्याय के विचार क्या मिलते-जुलते दिखे ?

तुमने मुरिया और वेल्लाल समाज पंचायत में चोरी और हत्या के फैसलों के बारे में पढ़ा । चोरी और हत्या जैसे मामले आज की जातिपंचायतों में नहीं शामिल होते । मुरिया और वेल्लाल समाज की पंचायत जाति पंचायत थीं ।

ठाकुर गोंड जाति पंचायत की एक कहानी :

आज रात गोंड ठाकुरों की गंगा थी । एक लड़की की शादी की बात को लेकर उसके बाप ने गंगा उठाई थी । उठाने का मतलब है बुलाना । पूरे गाँव के गोंड परिवारों को खबर दी गई कि रात गंगा होगी । गंगा उठाने वाले ने बीड़ी और सुपारी का इंतजाम किया था । रात दस बजते-बजते घर के सामने लोग जुटने लगे । सभी गोंड थे । सिर्फ चार-पांच दूसरी जाति के लोगों को बुलाया गया था । इन चार-पांच लोगों पर सभी को भरोसा था ।

चित्र 3 'गंगा' में भाग लेने के लिए लोग इकट्ठे हो रहे हैं।

जाति या समाज पंचायत किस तरह से निर्णय लेती है ? वेल्लालों और मुरिया समाज के पंचायत में किस ने भाग लिया और क्या बहस हुई थी ? इस बात का हमें ज्ञान नहीं है।

एक दूसरी पंचायत के बारे में पढ़ते हैं - गोंड ठाकुरों की पंचायत । इस समाज के कुछ लोग, होशंगाबाद जिले के पूर्वी इलाके में रहते हैं ।

जब काफी लोग जुट गए तो गंगा उठाने वाले ने अपनी समस्या रखी । उसने गंगा से सारी बात कही । फिर सब लोग अपने-अपने मत सामने रखने लगे । कोई भी एक-दूसरे से बात नहीं कर रहा था । सभी अपनी बात गंगा को सुनाते थे । सभी गंगा से न्याय की मांग करते थे । औरतों और आदमियों दोनों को बोलने की छूट थी । बच्चे भी वहां बैठे थे । समय कुछ तय नहीं था । बार-बार लगता था कि अब निर्णय हो गया पर फिर कोई नई बात आ जाती और बहस फिर शुरू हो जाती ।

जैसे-तैसे 12-1 बजे रात समस्या का निराकरण हुआ । अब गंगा उठने को थी । तभी एक व्यक्ति ने कहा- "गंगा माई, मैं भी अपनी एक समस्या तुम्हारे सामने रखना चाहता हूं ।" एक बार गंगा बुलाई जाने पर कोई भी अपनी समस्या सुना सकता है । क्योंकि गंगा बार-बार तो बैठती नहीं । गंगा का मतलब है जमघट । लोगों का जमघट । परन्तु किसी उद्देश्य के लिए जमघट । एक ही जाति के लोगों की पंचायत भी कह सकते हैं इसे । कभी-कभी एक ही जाति की दो गंगा भी होती है । तुमने शुरू में पढ़ा कि सभी लोग एक-दूसरे से नहीं बल्कि गंगा से अपनी बात कहते हैं । आखिर गंगा है कौन ? वे सब लोग मिलकर गंगा हैं । अभी इस बात को छोड़कर देखें उस आदमी की समस्या क्या थी ?

उसने कहा "रेवा ठाकुर टोने-टोटके की धमकी से सबको डराता है । इस तरह डराकर वह और लोगों से जबरदस्ती कई चीजें ले लेता है । गंगा रेवा ठाकुर से कहे कि वह ऐसा न करे और उसको सज़ा भी दे ।"

उसका इतना कहना था कि सभी लोग रेवा ठाकुर के टोनों-टोटकों का वर्णन करने लगे । सभी बताने लगे कि रेवा से कितनी परेशानी है । बीच में किसी ने कहा कि रेवा गंगा में नहीं है इसलिए उसकी पीठ पीछे उसके बारे में कहना-सुनना ठीक नहीं । इस पर निर्णय हुआ कि रेवा को बुलाया जाए । एक बच्चे को कहा गया कि वह जाकर रेवा से कहे कि गंगा उसे

बुला रही है ।

यह करीब रात दो बजे की बात है । थोड़ी ही देर में रेवा आ पहुंचा। गंगा को प्रणाम करके बैठ गया । अब रेवा का कच्चा चिट्ठा खुलने लगा । वह बैठा चुपचाप सुनता रहा । सभी ने कहा कि यदि वह अपनी विद्या का उपयोग अच्छे काम के लिए करेगा तो उसकी बहुत इज्जत होगी । पर वह बुरे काम करता है । रेवा का भाई भी गंगा में था । उसने भी बताया कि रेवा सबको बहुत परेशान करता है ।
जब सब लोग बोल चुके तो रेवा ने कहा-"गंगा माई, मैं कोई टोना टोटका जानता ही नहीं । ये सब तो सुनी सुनाई बातें हैं ।"

फिर से सभी लोग बताने लगे । किसी ने बताया कि कैसे रेवा ने टोटके का डर दिखाकर उससे मुर्गा ले लिया, किसी से शराब की बोतल ले ली, किसी से एक पसेरी गुड़ ले लिया, किसी से लाल-सफेद कपड़ा ले लिया ।

रेवा ने फिर भी मानने से इंकार कर दिया । इस पर सभी ने उससे कहा कि तू यदि झूठ बोलेगा तो तुझे गंगा से बाहर कर दिया जाएगा । गंगा से बाहर होना बहुत बुरी बात होती है। फिर उसके घर कोई न जाता, उसके परिवार से कोई शादी-ब्याह का रिश्ता न करता, यहां तक कि उसके घर किसी की मौत होने पर भी कोई न जाता । अब रेवा ने अपने अपराध कबूल कर लिए परन्तु उसने कुछ अपराधों से इंकार कर दिया ।

जिसने शिकायत की थी उसने कहा कि रेवा अभी भी झूठ बोल रहा है । इसलिए उसे गंगा से बाहर कर दिया जाए । यदि उसे गंगा से बाहर नहीं किया गया तो वह खुद इस गंगा में नहीं रहेगा । दूसरी गंगा में चला जाएगा । यह एक नई समस्या खड़ी हो गई । सभी ने बहुत समझाया । सबने कहा कि यदि रेवा को गंगा से निकाल दें तो वह अकेला हो जाएगा । फिर वह गलत लोगों के साथ जाकर और ज्यादा गलत काम कर सकता है । इसलिए उसे गंगा से निकालना नहीं चाहिए बल्कि कुछ और सजा देना चाहिए । रेवा ने स्वीकार किया कि वह अब ऐसा काम नहीं करेगा और जो भी सज़ा दी जाएगी मंजूर करेगा ।

इस पंचायत में सभी लोग अपनी बात खुल कर कहते हैं । उनके विचार गंगा के सामने रखे जाते हैं । हमेशा समस्या सुलझाने की कोशिश रहती है ।

1. गंगा क्या है ? ________

2. गंगा इतनी रात तक क्यों ________

बैठी ?

3. गांगा रेवा ठाकुर के मामले में निर्णय पर कैसे पहुंची ? रेवा ठाकुर ने अपनी गलती क्यों कबूल की ?

4. क्या समस्याओं को सुलझाने का यह एक प्रजातांत्रिका तारीका है ? स्पष्ट करो ।

न्याय के तरीकों पर जाति का प्रभाव :

तुम ने वेल्लाल जाति और गोंड समाज की पंचायतों के बारे में पढ़ा । ये पंचायत कई तरह के मामले उठाते थे । पर ये पंचायत अपनी जाति के लोगों की समस्याओं पर ही चर्चा करते ।

बहुत पहले से ही ऐसी पंचयातें भी होती थीं, जिनमें गांव के कुछ जाति के अधिकांश पुरूषों का प्रतिनिधित्व होता था, पंचायतों में लोग मिलकर फैसला करते थे । पर इन में कुछ दिक्कते भी होती थीं । तुम ने कक्षा-7 में पढ़ा था कि करीब 1000 साल पहले दक्षिण के गांवों में गांव के सभी मामले "मूल पुरूष सभा" या ऊर सभा द्वारा तय किए जाते थे । "मूल पुरूष सभा" में केवल ब्राह्मण हुआ करते थे । "ऊर सभा" में वेल्लाल जाति के प्रमुख परिवार होते थे । दूसरी जाति के लोग इन सभाओं में शामिल नहीं होते थे । गांव से संबंधित या सभी जाति के लोगों से संबंधित गंभीर मामले सभा के सामने पेश किए जाते पर निर्णय लेने वालों में केवल ब्राह्मण या प्रमुख वेल्लाल ही होते थे ।

गांव के पंचायतों में ऊंची जाति के लोगों का नियंत्रण था । अक्सर गांव की पंचायत सब जाति के लोगों को न्याय के मामले में सामान नजर से नहीं देखती थी । यदि क्षत्रिय और शूद्र एक ही तरह का जुर्म करें तो उन्हें दण्ड देने के अलग-अलग नियम थे ।

आजकल कानून बदल गए हैं । ग्राम पंचायत में हरिजनों का होना जरूरी है । केवल एक जाति के लोगों से ग्राम पंचायत नहीं बनती ।

हमारे मौलिक अधिकारों के बारे में हम पिछले साल पढ़ चुके हैं ।

आज यदि ब्राह्मण और शूद्र को एक

ही जुर्म के लिए अलग-अलग दण्ड दिया जाए तो किस मौलिक अधिकार के विरूद्ध होगा ?

6. ग्राम पंचायत और जाति पंचायत में क्या-क्या फ़र्क है ?
पता करो कि ग्राम पंचायत को कौन-कौन से मामलों में न्याय करने के अधिकार हैं ।

अलग-अलग पंचायतों के उदाहरण हमने पढ़े । अब हम कोर्ट-कचहरी की एक अलग व्यवस्था के बारे में पढ़ेंगे ।

यू.एस.ए. (संयुक्त राज्य अमरीका) में न्याय व्यवस्था का एक उदाहरण :

यू.एस.ए. की न्याय व्यवस्था हमारी व्यवस्था से कुछ मिलती-जुलती है । वहां भी अदालत, मैजिस्ट्रेट, पक्ष और विपक्ष के वकील, गवाह आदि होते हैं । एक अन्तर है । गंभीर मामलों में, जैसे डकैती, हत्या आदि में जूरी को बुलाया जाता है । जूरी यानी 9-11 लोगों का न्यायाधीश समूह । अब फैसला केवल न्यायाधीश के हाथ में नहीं रह जाता है । जूरी के सामने केस पेश किया जाता है । क्या कोई भी व्यक्ति जूरी का सदस्य बन सकता है ? हां, जिस भी व्यक्ति को मत देने का हक है वह जूरी का सदस्य बन सकता है । पर सदस्य बनना उसकी इच्छा पर नहीं निर्भर करता । यह उसका कर्त्तव्य है । जब भी सरकार से बुलावा आए उसे अदालत में पेश होना जरूरी है । यह वहां का नियम है । इस ड्यूटी के लिए वह इन्कार नहीं कर सकता । उसके मालिक का फर्ज है कि वह उसे जूरी ड्यूटी के लिए छुट्टी दे । आने-जाने का किराया और ठहरने का खर्च सरकार भरती है ।

जब भी कोई गंभीर केस अदालत में आता है तो सरकार जूरी बुलवाने का प्रबन्ध करती है । उस इलाके की मतदान सूची से कुछ नाम चुने जाते हैं । इनको डाक से आदेश भेजा जाता है कि आप को जूरी ड्यूटी के लिए कोर्ट में आना है, कई लोगों को इस ड्यूटी के लिए बुलाया जाता है और उन में से 9-11 लोगों की जूरी बनती है । यह कैसे होता है, इस केस में देखो :

एक मामला अदालत में आया । एक व्यक्ति पर आरोप लगाया जा रहा है कि उसने दूसरे के यहां चोरी की ।

काले रंग का, गरीब सा दिखता मार्टिन, हैरी के यहां काम करता था। हैरी ने अपने घर के दो कमरों में दफ्तर बनाया हुआ था। मार्टिन यहां कई प्रकार के छोटे-मोटे काम करता जैसे डाक भेजना, टाईप करना फाइल रखना आदि।

छ: महीने पहले मार्टिन ने वेतन बढ़ाने की मांग की थी। हैरी ने मना कर दिया। मार्टिन ने नौकरी छोड़ दी। दो महीने घर पर बैठे रहने के बाद उसे दूसरी जगह नौकरी मिल गई।

अचानक एक दिन हैरी के घर डकैती हुई और हैरी पर जान लेवा हमला हुआ। पुलिस केस बना। पुलिस मार्टिन के घर आई और उसे पकड़ ले गई। मार्टिन ने बहुत समझाने की कोशिश की, उसने अपराध नहीं किया है पर उसकी किसी ने न सुनी।

चित्र 4 न्यायाधीश बीच की ऊंची कुर्सी पर बैठे हैं। जूरी के सदस्य बायीं ओर और हैरी दायीं ओर है। सरकारी वकील सवाल पूछ रहा है और हैरी का वकील मेज पर बैठा है। जज के पास बैठी औरत सभी बातों को लिख रही है। सामने की ओर दर्शक बैठे हैं।

केस अदालत में आया । चूंकि डकैती और जान-लेवा हमले का मामला था, जूरी बुलाई गई । 40 लोगों को आदेश भेजे गये । जब वे निश्चित दिन को अदालत में पहुंचे तो कार्यवाही शुरू हुई जज के सामने दो वकील, पक्ष और विपक्ष के, इन से प्रश्न पूछते । एक-एक कर के बुलाया जाता और दोनों प्रश्न करते जैसे, "क्या आपका मार्टिन या हैरी से कोई संबंध है? या आप इन में से किसी को पहचानते हो ?" जूरी के प्रति दोनों वकीलों की सहमति होनी चाहिये । जूरी में निष्पक्ष व्यक्ति होने चाहिए। जूरी के चुनाव में एक दिन लगा । नौ लोगों की जूरी बनी ।

दोनों वकीलों ने जुर्म के गवाहों से भी प्रश्न पूछे । सरकारी वकील का कहना था कि चूंकि मार्टिन हैरी के यहां काम करता था और उसने नौकरी छोड़ी, इसलिए बदले की भावना से उसने यह अपराध किया है । मार्टिन के वकील ने इसे काटते हुए कहा कि कोई सबूत ही नहीं है, इस गरीब को बेवजह परेशान किया जा रहा है । इस तरह पक्ष और विपक्ष में लम्बी बहस चली और अंत में जूरी के सदस्य निर्णय लेने के लिए पास के एक कमरे में गए । जज का काम है जूरी की मदद करना, जैसे कानूनी जानकारी बताना । इस कमरे में जज नहीं जा सकता, केवल जूरी आपस में बात करते हैं।

जूरी के सदस्यों ने बहुत देर तक विचार किया । आपस में उन्होंने कई बातों का स्पष्टीकरण किया । दोनों

चित्र 5 जूरी के सदस्य आपस में चर्चा करते हुए

पक्षों के गवाहों की सच्चाई पर भी प्रश्न उठाए । आपस में बहस करके, जूरी ने अपना निर्णय जज को बताया। जज जूरी का फैसला सुनाता है ।

जूरी ने इस केस में क्या निर्णय दिया होगा ?

जूरी की प्रक्रिया का उद्देश्य है, कि एक से अधिक व्यक्ति निर्णय करने में शामिल हों । एक व्यक्ति की गलती करने की संभावना ज्यादा होती है और गंभीर केस में यह मुजरिम अभियुक्त की जिन्दगी के साथ खिलवाड़ हो सकता है । समूह का एक और लाभ है कि एक ही विषय पर अलग-अलग विचारों का आदान-प्रदान होता है । इस से बात साफ होती है । अकेले कमरे में, जूरी का आपस में बहस करना इसी लिए जरूरी है । पूरी जूरी को गलत तरीके से फुसलाना मुश्किल बात है । जूरी के चुनाव के समय दोनों वकीलों की कोशिश रहती है कि उनके "पक्ष" से मिलते विचारों के व्यक्ति जूरी में आ जायें । पर हमने देखा कि जूरी के चुनाव में दोनों वकीलों का समर्थन जरूरी है । साथ ही साथ, जज ध्यान रखते हैं कि जूरी के सदस्यों को चुनने का तरीका सही हो, ताकि सभी सदस्य निष्पक्ष हों ।

मामलों को तय करने में जूरी प्रक्रिया को अपनाना महंगा पड़ता है । जूरी का खर्च, लम्बी अवधि तक केस का चलना, इनसे खर्च बढ़ जाता है । जूरी के केस के लिए तारीख तय होते-होते, कभी-कभी छः महीने गुजर जाते हैं । एक बार जूरी को बुलाया जाये तो हफ्ते भर में केस पूरा हो जाता है । पर कुल मिला कर जूरी के केस में दो साल तक लग सकता है। यू॰एस॰ए॰की अदालत में, किसी बिना जूरी वाले केस से तुलना करें, तब यह समय बहुत लम्बा लगता है ।

फिर जब हम अतीत में जूरी द्वारा तय किए गये केसों का फिर से अध्ययन करते हैं, तो कई बार उनकी गलतियां सामने आती है । कई दफा जूरी के सभी लोगों ने गलत तरीके से किसी चीज को समझा है । यानी कि जूरी हमेशा सही होगी, यह नहीं कहा जा सकता ।

1. जूरी पर बैठने का किसको अधिकार है ?

2. सरकार जूरी कब और कैसे बुलाती है ?

3. जूरी का चयन कैसे होता है ?

4. एक ही व्यक्ति, जैसे जज, को निर्णय करने का अधिकार हो तो इससे क्या हानि हो सकती है ?

अभ्यास के प्रश्न :

1. जाति के प्रभाव से पंचायतों के न्याय के तरीकों में क्या दिक्कत पैदा होती है ?
2. यू.एस.ए. में जूरी केस को लम्बा क्यों समझा जाता है ? पता करके उदाहरण सहित बताओ : हमारे यहां केस लम्बे क्यों चलते हैं ?
3. यू.एस.ए. के कोर्ट में जूरी प्रक्रिया होने के कारण एक फायदा है । न्याय प्रक्रिया में लोगों की भागीदारी बढ़ जाती है । इस बात को स्पष्ट करो।
4. तुम्हारे स्कूल के साथियों के साथ कोई झगड़े/समस्या का उदाहरण देकर बताओ कि इसको कैसे सुलझाया जाता है ।

इतिहास

भारत में मुग़ल साम्राज्य की शुरुआत

सन् 1526 - 1556

मुग़लों की तोप

सन् 1526 की बात है । देहली के पास पानीपत नाम की जगह का आकाश अजीब और डरावने धमाकों की आवाज से गूंज उठा । ये धमाके एक ताकतवर और भयावह सेना के धावा बोलने के थे । इस सेना के पास तेज घुड़सवारों के साथ-साथ बारूद के गोले बरसाने वाली तोपें और बंदूकें भी थीं । इन बन्दूकों और तोपों के धमाकों से किसी का भी दिल दहल जाता ।
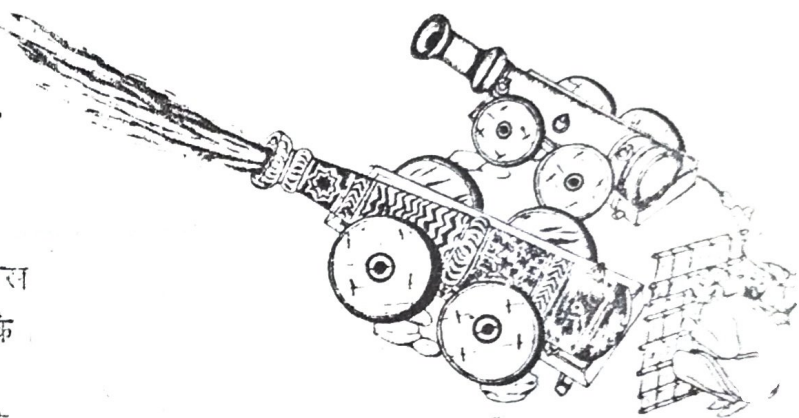
कैसे थे ये नए और भयानक हथियार ? और किन के थे ये हथियार, किन पर इन से धावा बोला गया ? इन हथियारों से लैस सेना थी मुग़ल वंश के बादशाह बाबर की । और उसने इन हथियारों के साथ अफ़ग़ान सुल्तान इब्राहिम लोदी पर हमला बोला था ।

बाबर को आक्रमण करने का बुलावा

इब्राहिम का राज्य वैसे कोई बहुत विशाल राज्य नहीं था । बस देहली और पंजाब का क्षेत्र ही उसके राज्य में था व इसके चारों ओर कई उतने ही छोटे राज्य थे ।

वहां से पश्चिम की ओर राजस्थान में राजपूतों के राज्य थे । इन्हीं में से एक राज्य था मेवाड़ का । मेवाड़ का राजा राणा संग्राम सिंह जो राणा सांगा भी कहलाता था राजपूतों का सबसे ताकतवर राजा माना जाता था । काफी समय से राणा सांगा की नज़र देहली पर थी । वह इब्राहिम लोदी को किसी तरह कमजोर करके मेवाड़ के राज्य को फैलाना चाहता था ।

उधर खुद इब्राहिम लोदी के अपने सूबेदार भी उसे कमज़ोर करना चाहते थे। उनमें से एक, दौलत ख़ान लोदी इब्राहिम का राज्य हड़प जाने की मंशा कर रहा था।

इस स्थिति में राणा सांगा और दौलत खान को काबुल के बादशाह, बाबर, के बारे में पता चला। उन्हें बाबर की ताकतवर सेना और हथियारों की बात भी मालूम पड़ी। यह सब जान कर राणा सांगा और दौलत ख़ान ने बाबर को इब्राहिम लोदी पर आक्रमण करने के लिए निमंत्रण दे दिया। और जब सन् 1526 में बाबर अपनी सेना लेकर आया तो पानीपत में लोदी की सेना के साथ उसका युद्ध हुआ।

<u>तुम्हें क्या लगता है-राणा सांगा और दौलत खां ने बाबर को क्यों बुलाया होगा?</u>

दौलत खान और राणा सांगा के मन में जो भी रहा हो मुग़ल बादशाह बाबर के मन में कुछ और ही सपने तैर रहे थे। वह हिन्दुस्तान में अपना राज्य बनाना चाहता था।

बाबर अफगानिस्तान, ईरान और तुर्किस्तान के क्षेत्र में अपना राज्य नहीं बना पा रहा था। वहां के दूसरे राजाओं की सेना बाबर की सेना से कहीं बेहतर जो थी। बाबर काबुल के अपने छोटे से राज्य में बैठा छटपटा रहा था। क्योंकि वहां उसे और उसकी सेना के लिए पर्याप्त धन नहीं मिल रहा था।

एक विशाल और धनी राज्य की इच्छा में उसकी नज़र अब हिन्दुस्तान पर जम रही थी। राणा सांगा और दौलत ख़ान लोदी की योजना के अनुसार हिन्दुस्तान का धन लूट कर उसकी काबुल लौट जाने की कोई विशेष इच्छा नहीं थी।

इसलिए सन् 1526 में पानीपत के मैदान में जब बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच युद्ध छिड़ा तो देखना यह था कि किसके मन की योजना सफल होती।

<u>पानीपत की लड़ाई :</u>

इब्राहिम लोदी की सेना बाबर की सेना से बड़ी तो थी पर उसके पास बंदूकों और तोपों जैसे घातक हथियार नहीं थे। तब तक हिन्दुस्तान में इन हथियारों का ख़ास चलन ही नहीं हुआ था। फिर बाबर को लड़ाई की कई ऐसी तरकीबें भी आती थीं जो हिन्दुस्तान के राजा नहीं जानते थे। ईरान और तुर्किस्तान के राजाओं से हार-हार कर बाबर ये तरकीबें सीख गया था। वह लोदी की सेना पर सामने से तोपों से आक्रमण करता और
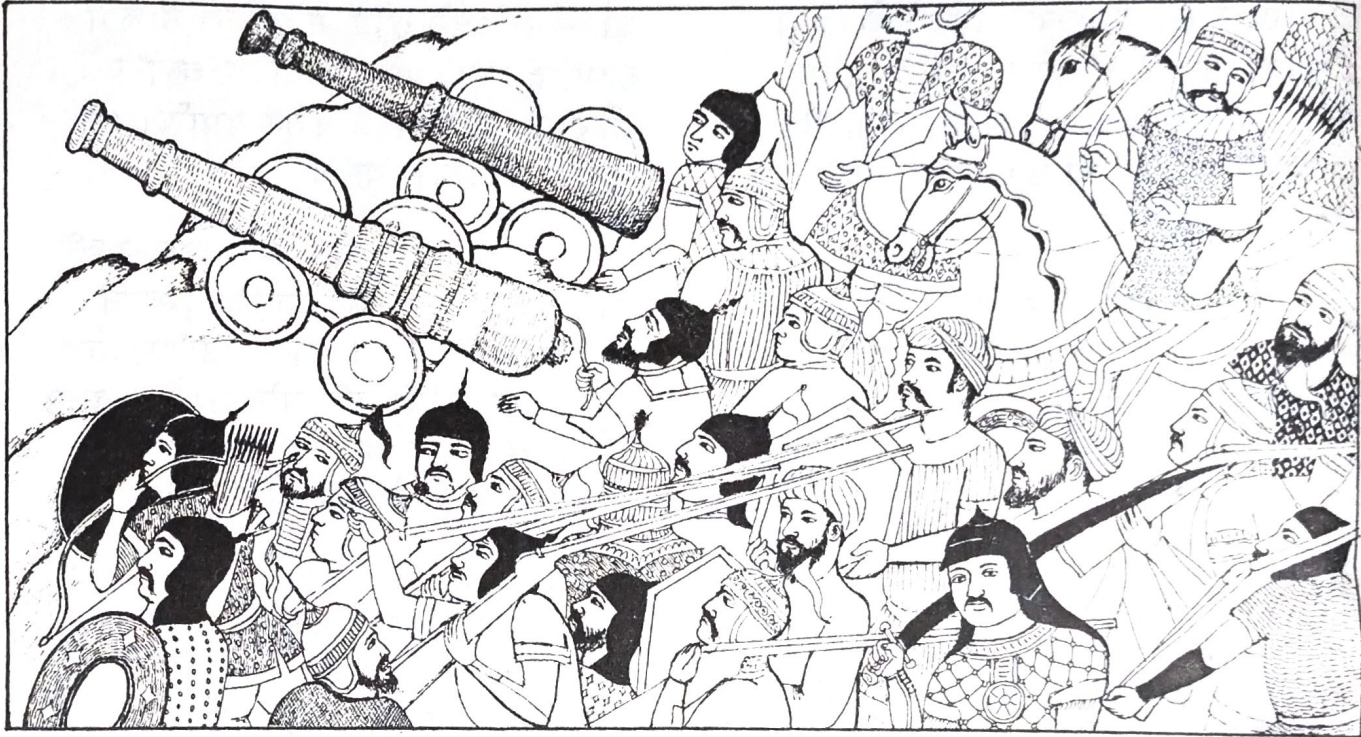
बाबर की सेना: इस सेना के पास क्या क्या हथियार हैं ? सैनिकों ने अपने शरीर के बचाव के लिए क्या किया है ? सब सैनिक क्या एक सी वर्दी पहने हैं ?

उसी समय अपने घुड़सवारों की पलटन को शत्रु की सेना पर पीछे से हमला बोलने के लिए भेज देता । बीच में फंस कर इब्राहिम लोदी की विशाल सेना तहस-नहस हो गई और लड़ाई के अंत में इब्राहिम लोदी मारा गया । इस विजय के साथ बाबर ने अपना हक देहली और आगरा पर जमा दिया ।

पानीपत की लड़ाई से बाबर क्या चाहता था ?

राणा सांगा और दौलत खान लोदी क्या चाहते थे ?

विजय के बाद

1526 में मई के महीने में विजयी मुगल सेना ने इब्राहीम लोदी की राजधानी आगरा में प्रवेश किया । उस समय क्या हुआ इसका जीता-जागता वर्णन बाबर ने खुद अपनी किताब में लिखा । इस किताब में- जिसका नाम 'बाबर नामा' है, बाबर ने अपनी आत्मकथा लिखी। बाबर नामा में लिखा यह वर्णन पढ़ो ।

"आगरा के खजाने का विवरण :

12 मई शनिवार को खजाने[1] की जांच और उसका बंटवारा शुरू हुआ । हुमायूं[2] को खजाने से 10 लाख प्रदान किए गए । इसके अतिरिक्त एक खजाना इस बात का पता लगाए बिना कि इसमें क्या है और लिखे बिना उसी तरह हुमायूं को दे दिया गया । कुछ बेगों[3] को दस लाख और कुछ को 7, 8 तथा 6 लाख प्रदान किए गए । जितने लोग सेना में थे - अफगान, हजारा, अरब, बिलोच[4] इत्यादि, उन्हें उनकी श्रेणी के अनुसार खजाने से नकद इनाम दिए गए । समरकन्द, खुरासान, काशगर, तथा इराक में जो बहुत से संबंधी थे, उन्हें भी बहुमूल्य उपहार भेजे गए ।"

जब इस तरह इब्राहिम के ख़ज़ाने का बंटवारा हो गया तो बाबर के कई अमीर काबुल वापिस लौटना चाहते थे । उनमें भारत में रहने की कोई इच्छा न रही । भारत में राज्य बनाने की बात अब उन्हें इतनी आकर्षित नहीं कर रही थी । उन्होंने लौटना क्यों चाहा और बाबर ने उन्हें क्या जवाब दिया, बाबर की पुस्तक से ही पढ़ो।

"बाबर की सेना में असंतोष :

"जब हम आगरा पहुंचे तो ग्रीष्म ऋतु थी । वहां के समस्त निवासी भय के कारण भाग खड़े हुए थे । न तो हमारे लिए और न हमारे घोड़ों के लिए चारा मिलता था । गांव वालों ने हमसे शत्रुता एवं घृणा के कारण चोरी तथा डकैती शुरू कर दी थी । मार्गों पर यात्रा न होती थी । ख़ज़ाने के बटवारे के बाद हमें अभी इतनी फुर्सत न मिली थी कि हर एक परगने तथा स्थान में शक्तिशाली आदमी भेज सकते । इसके अलावा उस वर्ष बहुत ज्यादा गर्मी पड़ रही थी । विषैली हवा ने लोगों को गिरा कर ढेर कर दिया और बहुत बड़ी संख्या में वे मरने लगे ।

इस कारण अधिकांश बेग तथा अच्छे-अच्छे नौजवान भी हिन्दुस्तान में ठहरने के लिए तैयार न थे । यहां तक कि बहुत से लोगों ने लौटने की तैयारी कर ली थी ।

यदि वे ऐसा करते हैं तो मुझमें इतनी योग्यता और समझदारी है कि

---

1. इब्राहिम लोदी का खजाना ।
2. बाबर का बेटा
3. दरबारियों या उच्च अधिकारियों
4. बाबर की सेना में इन कबीलों के लोग थे ।

मैं समझ लूं कि उनके वापिस जाने के आग्रह में कहां तक विद्रोह की भावनाएं थीं और कहां तक ईमानदारी थी। लेकिन मैं अपने उद्देश्य को पूरा होते हुए देख चुका हूं। जब मैंने एक बात का दृढ़ संकल्प कर लिया है तब फिर उससे मुंह मोड़ने तथा अन्य प्रकार से कार्य करने में क्या आनन्द ?

"यह बड़ी ही विचित्र बात है कि इस अन्तिम बार जब हमने काबुल से प्रस्थान किया तो कुछ ऐसे लोगों को बेग बना दिया था जिनकी सेवाएं बड़ी थोड़ी थीं। मुझे उनसे यह आशा थी कि यदि मैं आग और पानी में भी प्रवेश करूंगा [5] और निकल आऊंगा तो यह लोग निःसंकोच मेरे साथ वहां प्रवेश करेंगे और निकल आएंगे और मैं जहां भी जाऊंगा वे मेरा साथ देंगे। मुझे यह आशा न थी कि वे मेरे दृढ़ संकल्प के विरुद्ध कुछ कहेंगे। मुझे यह आशा भी न थी कि वे किसी ऐसी बात तथा महान कार्य से पीछे हटेंगे जिसके विषय में सबसे सलाह कर ली गई थी और जिसके बारे में सभी सहमत थे।"

---

[5] संकटों और कठिनाइयों में कूदना
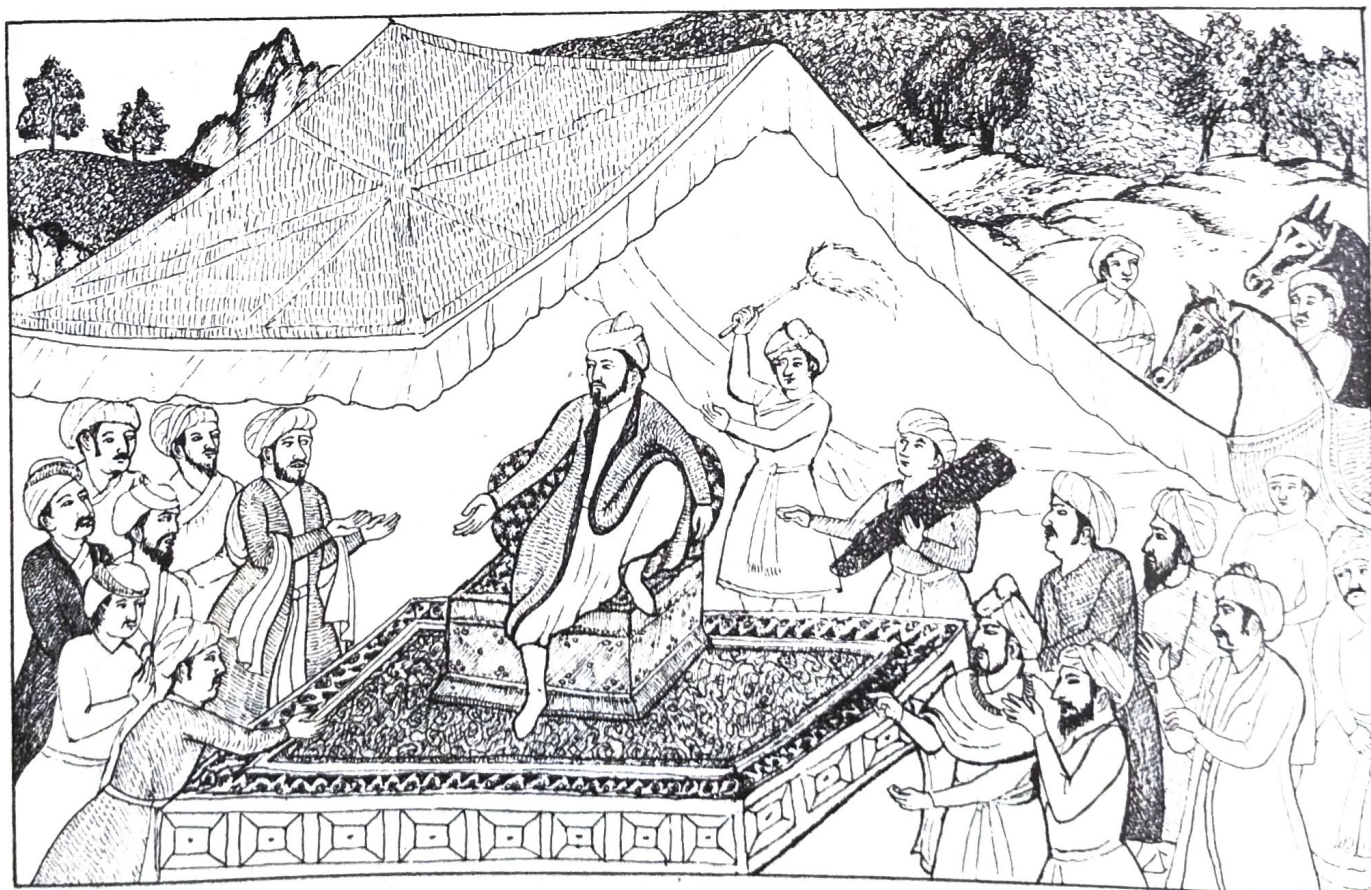
बाबर और उसके बेग - काबुल लौटें या नहीं ?

"

परामर्श गोष्ठी का आयोजन :

जब मुझे अपने आदमियों के इस असंतोष एवं असमंजस का पता लगा तो मैंने समस्त लोगों को परामर्श के लिए बुलवाया । मैंने कहा -

'कई वर्षों से संघर्ष, कठिनाईयां, लम्बी चौड़ी यात्रा, अपने आप तथा अपनी सेना को रणक्षेत्र में झोंक कर एवं घोर युद्ध के बाद हमने ईश्वर की कृपा से शत्रुओं की इतनी बड़ी संख्या को इस आशय से परास्त किया है कि ऐसे विस्तृत प्रदेश तथा राज्यों को अपने अधिकार में कर लें । अब आज क्या हुआ है कि उस देश को जिसे प्राणों की बाजी लगा कर विजय किया है अकारण छोड़ कर चले जाएं ? क्या हमारे भाग्य में यही लिखा है कि हम हमेशा काबुल में दरिद्रता के कष्ट भोगते रहें ? अब आज से मेरे किसी हितैषी को ऐसी बात न करनी चाहिए किन्तु जिस किसी में शक्ति नहीं है और उसने जाना निश्चय कर लिया है तो फिर उसे रुकना भी नहीं चाहिए ।"

लोगों के हृदय में इस प्रकार की तर्क तथा विचार-पूर्ण बातें बिठाकर मैंने किसी प्रकार उन्हें इस असमंजस से मुक्त करा दिया ।"

यहां बाबर के अपने ही शब्दों में उसकी आप-बीती पढ़ कर हमें इस बात का आभास मिला कि किसी विजेता के सामने नई जगह पर राज्य बनाने में कैसी कठिनाईयां और खतरे खड़े हो जाते थे । और इन कठिनाईयों के बावजूद कैसे बाबर ने अपने दृढ़ मनो-बल से नए राज्य की स्थापना की ।

ये कठिनाइयां कौन-कौन सी थी ?

क्या तुम सूची बनाकर बता सकते हो कि पानीपत में विजयी होने के बाद भी मुगलों के सामने कौन-कौन सी कठिनाईयां और खतरे थे ?

बाबर का वर्णन पढ़ते हुए हमारा ध्यान इस बात पर भी जाता है कि किसी विजेता को सिर्फ हारे हुए लोगों से ही परेशानी नहीं होती थी । शायद सबसे बड़ी परेशानी तो इसी बात से होती थी कि उसके साथ के लोग ही उसका साथ अच्छी तरह निभायेंगे भी या नहीं । अपने ही लोगों का साथ अगर कमजोर पड़ने लगे तो युद्ध में विजयी होने पर भी कोई राजा क्या कर लेगा ?

बाबर के अमीरों ने हिन्दुस्तान पर विजय तो पा ली, मगर यहां की

परेशानी व मुश्किलों को देखकर उनका दिल छोटा होने लगा । वे जीते हुए राज्य को छोड़कर वापिस लौटना चाहते थे । बाबर अपने बेगों की इस कमज़ोरी पर निराश तो हुआ, लेकिन हताश नहीं हुआ । वह किसी भी तरह हर मुश्किल को हल करने का रास्ता ढूंढता रहा । अगर बाबर भी अपना जी हार जाता तो हो सकता था कि वह काबुल लौट जाता ।लेकिन उसने ऐसा नहीं किया ।

एक बन्दूकची

आखिर हिन्दुस्तान बाबर को क्यों इतना ललचाता था ? और उसके अमीरों को यहां किस बात की तकलीफ थी ? इनके पीछे कुछ भौगोलिक कारण भी थे । जहां बाबर का राज्य था- आफ़गानिस्तान में - वह पहाड़ी इलाका है । वहां की मिट्टी उपजाऊ नहीं है और वहां वर्षा भी बहुत कम होती है । इस कारण से अफगानिस्तान का अधिकांश हिस्सा रेगिस्तान ही है। हिन्दुस्तान में इससे उल्टी स्थिति है- यहां पर गंगा जमुना का लम्बा-चौड़ा मैदान है जिस पर उपजाऊ मिट्टी और पानी की सुविधा के कारण घनी बस्तियां हैं और तरह-तरह की फसलें होती हैं । इस कारण हिन्दुस्तान संपन्न था । एक धनी और संपन्न राज्य का सपना देखने वाला बाबर आखिर हिन्दुस्तान छोड़कर काबुल क्यों लौटता ?

हां यह जरूर था कि पहाड़ों के कारण काबुल की जलवायु भारत की तुलना में ठंडी थी । हिन्दुस्तान की गर्मी बर्दाशत करना मुग़लों के लिए बेहद मुश्किल बन पड़ा था । पर गर्मी के बावजूद बाबर की भारत की उपजाऊ भूमि पर अधिकार जमाने की इच्छा कमजोर नहीं पड़ी ।सोचो अगर तुम बाबर की जगह होते या होती तो क्या तुम भी ऐसा ही करते या करती ?

राणा सांगा और अफगानों से पुनः लड़ाई ।

तुम्हें याद होगा कि बाबर को राणा सांगा और कुछ अफगान अमीरों ने बुलाया था । जब उन्होंने देखा कि बाबर लूट पाट करके काबुल नहीं लौटा और हिन्दुस्तान में रह जाने की तैयारी कर रहा है तो उन्हें अपनी योजना विफल होती दिखी । उन्होंने तय किया कि इससे पहले कि बाबर यहां अपना शासन पक्का कर ले, उसे खदेड़ देना ही ठीक होगा । इसके लिए उन्होंने अफगानों और राजपूतों की एक विशाल सेना तैयार की और आगरा की तरफ बढ़े । कानवा नाम की जगह पर उनकी टक्कर बाबर की सेना से हुई और भीषण युद्ध हुआ ।

मगर इस बार भी बाबर विजयी रहा - एक बार फिर उसकी तोपों व बन्दूकों ने उसे जिता दिया ।

हिन्दुस्तान पर अपना अधिकार जमाने के लिए, इसके बाद भी बाबर को कई युद्ध लड़ने पड़े । लगातार लड़ाईयों और भारत की गर्मी के कारण बाबर की सेहत दिन-ब-दिन बिगड़ती गई । और पानीपत की लड़ाई के चार साल बाद ही सन् - 1530 में उसकी मृत्यु हो गयी ।

:: हुमायूँ बादशाह बना और राज्य गंवाया ::

बाबर के बाद उसका बेटा हुमायूँ बादशाह बना । राज्य संभालते ही उसे बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, क्योंकि हिन्दुस्तान का धनी राज्य हाथ लगते ही मुग़ल अमीरों (बेगों) की एकता खत्म होने लगी ।

हुमायूँ का भाई उसका राज्य हड़पने की कोशिश में लगा हुआ था । दूसरे अमीर भी मनमानी करना चाहते थे । दूसरी तरफ अफगानों की समझ में आने लगा कि अगर वे असल में एक जुट न हुये तो उन्हें अपना राज्य वापिस नहीं मिलेगा । उन्हें यह भी समझ आया कि तोपों और बन्दूकों को अपनाये बिना वे जीत नहीं सकते।

शेर शाह ने ऐसा चांदी का रूपया जारी किया

वे शेर खान सूरी नामक सरदार के नेतृत्व में एक हो गए ।

उधर पश्चिम में गुजरात का सुल्तान भी हुमायूँ को भारत से भगाना चाहता था । शेर खान और गुजरात का सुल्तान, दोनों तोप और बन्दूकों का उपयोग करने लगे । इन दोनों ने मिलकर हुमायूँ पर दबाव डाला ।

हुमायूँ के अपने अमीर उसका साथ नहीं दे रहे थे । शेर खान और हुमायूँ के बीच कई युद्ध हुए और अन्त में 1540 में हुमायूँ हार गया । वह राजस्थान और सिन्ध में दर-दर भटकता हुआ ईरान जा पहुंचा । वहां ईरान के बादशाह ने उसकी मदद की ।

इधर देहली में शेर शाह (शेर खान का नया नाम) बादशाह बना । शेर शाह ही वो बादशाह था जिसने "रूपया" नाम का चांदी का सिक्का चलाया । उसने अपने साम्राज्य में कर इकट्ठा करने के तरीके में बहुत सुधार किया और यातायात के लिए सड़कों और सरायों का निर्माण किया । पांच साल राज्य करने के बाद सन् 1545 में शेर शाह का देहांत हो गया ।

हुमायूं फिर लौटा :

शेर शाह के राज्य में भी वही समस्यायें उठने लगीं जो उन दिनों के जमे-जमाये राज्यों में उठती थीं। अपना राज्य सुदृढ़ होते देखकर उसके अमीर भी अधिक से अधिक धन और शक्ति के लिए आपस में और बादशाह से लड़ने लगे। ये बातें शेर शाह के बेटे के समय में होने लगीं।

हुमायूं को इसी मौके का इंतजार था। उसने इस बीच ईरान के बादशाह के सहारे काबुल पर अपना अधिकार जमा लिया था।

सन् 1555 में हुमायूं ने एक बार फिर आपस में लड़ते हुए अफगानों को हराकर देहली और आगरा पर कब्जा कर लिया। लेकिन अगले ही साल सन् 1556 में उसकी मृत्यु हो गयी। उस समय उसका बेटा अकबर केवल 13-साल का था और वो देहली में नहीं, पंजाब में था। अफगानों ने मौके का लाभ उठाकर मुगलों को भगाकर देहली व आगरा पर फिर से कब्जा कर लिया।

उधर पंजाब में हुमायूं की मृत्यु की खबर पाते ही प्रमुख अमीर बैराम खान ने ईंटों का तख्त बनाकर अकबर का राज्याभिषेक कर दिया। अकबर बिन राज्य का बादशाह बन गया।

ऐसी मुश्किल स्थिति में बैराम खान ने राज्य की बागडोर संभाली। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए सभी मुग़ल अमीर अकबर और बैराम खान के साथ रहे - आखिर किसी भी किस्म का मतभेद मुग़लों के लिए घातक सिद्ध हो सकता था।

बैराम खान के नेतृत्व में मुगलों ने अफगानों को हराकर देहली और आगरा पर फिर से अधिकार जमाया।

मगर दो तीन साल बाद मुग़ल अमीर भी फिर से मनमानी करने लगे। तब अकबर ने बैराम खान को हटाकर खुद अपने राज्य का काम काज संभालना शुरू किया। उसने कैसे अपनी समस्याएं सुलझाईं, यह अगले पाठ की कहानी है।

तो यह रही मुग़ल साम्राज्य बनने की कहानी। कितनी ही बार लड़ाईयां, संघर्ष और हार-जीत देखने के बाद मुग़ल यह साम्राज्य बना पाये। मुग़ल, राजपूत, अफगान, गुजरात का सुल्तान ये सभी ऐसा एक राज्य बनाने की भरसक कोशिश करते रहे और अंत में सफलता मुग़लों को ही मिली।

क्या तुम सोच सकते हो इस सफलता के पीछे क्या कारण रहा होगा।

अभ्यास के प्रश्न :

1. बाबर किस वंश का राजा था ? उसकी सेना में क्या ख़ासियत थी ? उसने दिल्ली के राजा पर कब हमला किया और, कहाँ ?

2. दिल्ली सल्तनत के टूटने के बाद भारत में कई सारे छोटे-छोटे राज्य थे जो आपस में लड़ते रहते थे । इन राज्यों की आपसी लड़ाई का बाबर के आक्रमण से क्या संबंध था ?

3. अफ़गानिस्तान में बाबर संतुष्ट क्यों नहीं था ?

4. आगरा के खजाने को बाबर ने किस किस के बीच बांटा ? हुमायूं को सबसे बड़ा हिस्सा मिलने के क्या कारण रहे होंगे ? समरकन्द, खुरासान आदि जगहों पर आगरा के खजाने में से उपहार क्यों भेजे गए ?

5. बाबर के प्रति राणा सांगा का व्यवहार एक सा रहा था या बदला, कारण समझाओ ।

6. हिन्दुस्तान का राज्य हड़पने की कोशिश में मुगलों को अफ़गान राजाओं से कई बार टक्कर लेनी पड़ी । मुगलों और अफ़गानों की टक्कर के दो उदाहरण लिखो ।

:: प्रमुख मुग़ल बादशाह ::

बाबर	सन्	1526 - 1530
हुमायूं	सन्	1530 - 1555
अकबर	सन्	1556 - 1605
जहांगीर	सन्	1605 - 1627
शाहजहां	सन्	1628 - 1658
औरंगज़ेब	सन्	1658 - 1707

अकबर और उसके अमीर

2

सन् 1556-1605

जब अकबर राज्य का कार्य भार संभालने लगा तब उसकी उम्र केवल सत्रह वर्ष थी । उस समय मुग़ल साम्राज्य भी बहुत छोटा था और ऐसे राज्यों से घिरा था जिनसे खतरा हो सकता था । ऐसे में अकबर ने तय किया कि अपने साम्राज्य को सुदृढ़ बनाने के लिए आसपास के राज्यों को हराकर उन्हें अपने राज्य में मिलाना जरूरी है ।

इस उद्देश्य से अकबर ने अपने प्रमुख अमीरों को मालवा के सुल्तान बाज बहादुर, और गढ़ा मंडला की रानी दुर्गावती के खिलाफ लड़ने भेजा । दोनों राज्य मुगल सेनाओं से हार गए और मुगल साम्राज्य में मिला लिए गए । बाज बहादुर को मुगल अमीर बना दिया गया । रानी दुर्गावती युद्ध में मारी गई और मंडला का राज्य कुछ समय बाद उस के बेटे को सौंप दिया गया ।

मगर अकबर के सामने एक नई समस्या खड़ी हो गई । जिन अमीरों ने मालवा और मंडला पर विजय पाई थी वे अकबर की तरफ वफादारी दिखाने की बजाय अपना ही स्वार्थ

बादशाह अकबर बन्दूक चलाना सीख रहा है । पीछे बैराम खान खड़ा है

पूरा करने लगे । उन्होंने लूट का माल बादशाह को न सौंपकर खुद रख लिया । इसके लिए अकबर ने दोनों अमीरों को दंडित तो किया मगर उसने देखा कि दूसरे अमीर भी, इन दोनों की तरह मनमानी करना चाहते थे । वे बादशाह से दबकर नहीं रहना चाहते थे और स्थिति यहां तक पहुंची कि कई बातों में वे अकबर का विरोध भी करने लगे ।

अमीर कौन थे :

अमीर उन लोगों को कहा जाता था जिनके पास सेना होती थी और जिन्हें बादशाह ने जागीरें दीं थीं। जागीर में कई गांव और शहर दिये जाते थे। अमीर अपनी जागीरों का प्रशासन करते थे और वहां से मिली लगान को खुद रख लेते थे।

उन दिनों केवल 51 अमीर होते थे। इनमें से कुछ ईरान के थे पर अधिकांश अमीर तुरान नाम के क्षेत्र से आए हुए थे, जो कि तुर्किस्तान में है। मुगल बादशाहों के पूर्वज भी तुरान के ही थे। कई तुरानी अमीरों का तो अकबर के खानदान से रिश्ता भी था।

इस वजह से तुरानी अमीर अपने आप को मुग़ल बादशाह के बराबर का मानते थे और वे अकबर से दबकर नहीं रहना चाहते थे। वे चाहते थे कि वे अपनी-अपनी जागीर को मन-मुताबिक भोगें, और उन्हें पूरी छूट हो कि वे अपनी जागीर में जैसा चाहें वैसा व्यवहार करें।

पर अकबर को यह बात बिलकुल पसन्द नहीं थी। वह नहीं चाहता था कि पूरे साम्राज्य में बादशाह के बराबर कोई और हो। वह चाहता था कि उसका हुक्म सब पर चले और सब पर उसकी निगरानी रहे।

अमीरों को अपनी जागीर की लगान में से कुछ हिस्सा बादशाह के लिए देना पड़ता था। पर अधिकांश अमीर यह पैसा हड़प जाने की कोशिश करते रहते थे। अकबर अपने अमीरों से बादशाह के हिस्से के पैसे मांगने लगा और उन पर तरह-तरह की पाबन्दियां लगाने लगा। उसने कई ऐसे नियम बनाये जिससे सारी शक्ति बादशाह के हाथ में केन्द्रित होने लगी अमीरों का बनना-बिगड़ना बादशाह के ऊपर निर्भर हो गया। अमीर अपनी जागीर में क्या करेगा या नहीं, इस पर बादशाह निर्णय लेता था। अमीर को बादशाह के कहने पर चलना पड़ता था।

इसीलिए कुछ इतिहासकार कहते हैं कि अकबर शक्ति का केन्द्रीकरण करना चाहता था। गुरूजी से पूछो केन्द्रीकरण शब्द का क्या अर्थ है।

1562-67 के बीच विद्रोह :

तुरानी अमीरों को अकबर की यह चालें बिल्कुल भी सहन नहीं हुईं। कई अमीरों ने अकबर के खिलाफ विद्रोह किये। अमीर अपनी सेना लेकर अकबर पर हमला करने लगे। अब अकबर क्या करता ?

स्थिति को देखकर अकबर ने इस समस्या का एक हल ढूंढ निकाला। उसके साथ ईरानी अमीर भी थे। उसने ईरान से आए अमीरों को बढ़ावा

दिया और उन्हें कई नए पद दिये। ईरानी अमीरों ने खुश होकर अकबर को पूरा सहयोग दिया। इन ईरानी अमीरों की सहायता से अकबर तुरानी अमीरों के विद्रोहों को कुचलने में सफल हुआ।

तुरानी विद्रोह का कारण था -----
उसे दबाने के लिए अकबर ने ------

हिन्दुस्तानी अमीर बनाने की कोशिश:

राज्य मजबूत बनाने में एक कठिनाई थी कि अमीर राजा की बराबरी करते थे और उसके बस में रहने से कतराते थे। इसके अलावा अकबर के सामने एक दूसरी समस्या भी थी जो धीरे-धीरे बहुत गम्भीर हो गई।

वह खुद काबुल से आया था और उसके अमीर ईरान व तुरान के थे। बाहर से आए लोग आसानी से किसी जगह अपना शासन मजबूत नहीं बना सकते थे - क्योंकि उस जगह के ताकतवर लोग विरोध करते थे।

अकबर यह समझता था कि जब तक हिन्दुस्तान के शक्तिशाली और महत्वपूर्ण लोग उसका राज्य नहीं स्वीकार करेंगे, तब तक मुग़ल राज्य को हमेशा उन लोगों से खतरा बना रहेगा। उन दिनों हिन्दुस्तान में दो तरह के लोग बहुत महत्वपूर्ण थे- एक, राजपूत राजा, दूसरे जमीन और सम्पत्ति वाले मुसलमान परिवार जो कई सदियों से भारत में रह रहे थे। इन्हें शेखजादा कह कर बुलाया जाता था। अकबर चाहता था कि ये महत्त्वपूर्ण हिन्दुस्तानी परिवार उसके साथ आ जाएं।

अजमेर की दरगाह में अकबर

भारतीय मुसलमान सूफी सन्तों को बहुत मानते थे। अकबर उनकी दरगाहों पर जाने लगा।

उन्हें जीतने के लिए उसने कई शेखजादों को अपने दरबार में पद दिये व उन्हें अपना अमिर बनाया। लेकिन जहां तक राजपूत राजाओं की बात थी, अकबर ने पाया कि वे

उसके अमीर बनना पसंद नहीं करते थे । उनकी तो इच्छा यह थी कि वे स्वतंत्र रहकर अपने राज्यों में शासन करें ।

अकबर ने सोचा कि अगर वह राजपूत राजाओं को अपने दरबार में शामिल करना चाहता है तो उसे लोगों को यह दिखाना पड़ेगा कि वह हिन्दुओं के साथ कोई भेदभाव नहीं करता और सचमुच हिन्दुस्तान के लोगों के साथ मिलकर राज्य चलाना चाहता है ।

उन दिनों हिन्दुओं पर दो विशेष कर लगाए जाते थे - जिजिया और तीर्थस्थानों की यात्रा करने पर कर । अकबर ने सन् 1562 में यात्रा कर हटा दिया और 1564 में हिन्दुओं से जिज़िया लेना भी बंद कर दिया ।

कुछ राजपूत राजा अकबर की इस बात से प्रभावित हुए और उसकी सेवा में आ गए । उन में से एक था राजा भाड़ामल । वह आमेर का राजा था (यह जगह जयपुर के पास है) । अकबर ने राजा भाड़ामल को अपना मनसबदार (अधि-कारी) बना लिया । (आगे चल कर भाड़ामल का बेटा भगवानदास और पोता मानसिंह भी मुगल राज्य के मनसबदार बने ।)

अकबर ने राजा भाड़ामल को उसके सहयोग के बदले में कई रियायतें दीं । उसने भाड़ामल को आमेर का राज्य लौटा दिया और कहा कि उसके वंशजों से भी आमेर कभी नहीं छीना जाएगा ।

अकबर ने सभी राजपूत राजाओं के सामने यह प्रस्ताव रखा कि अगर वे उसके अधीन हो जाते हैं तो वह उनका राज्य लौटा देगा ।

तुम्हें शायद याद आ रहा हो कि बहुत पुराने समय में राजा समुद्र-गुप्त ने भी दूसरे राजाओं के प्रति यही नीति अपनाई थी ।

अकबर ने राजपूतों को और भी कई विशेष लाभ दिए । उसने कहा कि राजपूत राजाओं को मुगल राजा की तरफ से दूर-दूर के इलाके जीतने व उनका शासन संभालने के लिए भी भेजा जाएगा । इसके बदले उन्हें हिन्दुस्तान में दूसरी जगहों पर अलग से जागीरें भी दी जाएंगी । अकबर की उम्मीद थी कि इन रियायतों से आकर्षित होकर राजपूत राजा उसका विरोध करना छोड़ देंगे और उसकी सेवा में आ जाएंगे ।

हिन्दुस्तान के लोगों के साथ मिल कर राज्य चलाने की अपनी इच्छा को ज़ाहिर करने के लिए अकबर ने कुछ

अकबर के महल में एक हिन्दू रानी की जचकी हुई है । खुशी मनाने वालियों में राजपूत व तुर्की महिलायें शामिल हैं ।

और महत्त्वपूर्ण कदम उठाए । उसने राजा भाड़ामल की बेटी मणिबाई से शादी की । शादी के बाद मणिबाई को हिन्दू धर्म खुल कर मानने की इजाजत दी । आमतौर पर लड़की को ससुराल वालों के रीतिरिवाज़ मानने पड़ते हैं । अकबर के पहले जो सुल्तान व बादशाह हुए थे, उन्होंने जब हिन्दू राजाओं की लड़कियों से विवाह किया था, तब उन औरतों को इस्लाम धर्म स्वीकार करना पड़ा था । लेकिन अकबर ने अपनी हिन्दू पत्नियों को अपने पुराने धर्म मानने की आज़ादी दी ।(मणिबाई के अलावा अकबर ने कई और राजपूत स्त्रियों से शादी की थी)

अकबर ने हिन्दुओं के प्रति भेदभाव मिटाने के लिए जो कदम उठाए उन्हें रेखांकित करो ।

दो शब्दों के अर्थ पढ़ो -

उदार- जो दूसरे की इच्छा व विचार को समझने और अपनाने की कोशिश करे ।

कट्टर- जो सिर्फ अपनी इच्छा व विचार पर अटल रहे ।

अकबर तुम्हें कैसा राजा लग रहा है-

उदार या कट्टर ?

अकबर ने राजपूत राजाओं को कौन

से विशेष लाभ दिए- सूची बनाओ ।

अकबर ये कोशिशें क्यों कर रहा था-

जो तुम्हें समझ में आया लिखो ।

अब आओ, देखें कि अकबर की यह कोशिशें सफल हुईं या नहीं ।

अकबर ने राजपूतों पर युद्ध छेड़ा :

अकबर के व्यवहार से अधिकांश राजपूत राजा आकर्षित नहीं हुए । वे मुग़लों के अधीन हो कर नहीं, स्वतंत्र रह कर राज्य करना चाहते थे । अन्त तक वे इसी कोशिश में जूझते रहे । राजपूतों को मुग़लों के अधिकारी बनने में कई लाभ दिख रहे थे, पर ये स्वतंत्र राज्य के लाभ से अधिक तो न थे ।

राजपूत राजाओं का यह रुख जानकर अकबर ने तय कर लिया कि अब तो हथियारों के बल पर ही उन्हें झुकाना होगा । उसने एक-एक कर के महत्त्वपूर्ण राजपूत राजाओं को युद्ध में हराने की ठानी ।

सन् 1568 में मेवाड़ की प्रसिद्ध राजधानी और मजबूत किले चित्तौड़-गढ़ पर हमला कर के अकबर ने उसे जीत लिया। मेवाड़ का राजा उदयसिंह हार कर भी मुग़लों के सामने झुकना नहीं चाहता था । वह बच निकला और दूसरी जगह जा कर फिर से लड़ने की तैयारी करने लगा ।

मुग़लों की सेना ने चित्तौड़ में प्रवेश किया और राजपूतों के हजारों सैनिक मारे गए । राजपूत महिलाओं ने आग में कूद कर अपने प्राण त्याग दिए और इस तरह शत्रु के हाथ में पड़ने से अपने को बचा पाईं ।

उन दिनों राजपूतों में यह प्रथा थी । जब यह साफ हो जाता कि हारना निश्चित है तो किले में औरतों को कमरों में बंद कर के आग लगा दी जाती या आग जला कर औरतों को उसमें कूद जाने को कहा जाता । इसी के साथ सब राजपूत आदमी किले के फाटक खोल कर बाहर निकल आते और शत्रु की सेना से भिड़ते हुए जान गंवाते थे । इसे जौहर करना कहा जाता था । चित्तौड़गढ़ जाने पर आज भी उन स्थानों को देखा जा सकता है जहां जौहर किए गए ।

रणंथभोर के किले पर
मुग़ल सेना का आक्रमण:-
ऐसा चित्र उस समय के
चित्रकार ने बनाया।
पहाड़ी पर तोप
चढ़ाना जरूरी था।
तभी तो गोला ऊंची
दीवारों को पार कर
किले के अन्दर पहुंचेगा।
मुश्किल मुकाबला
लगता है क्योंकि
तीन तोपें काफी
नहीं पड़ रहीं।

बड़ी कठिनाई से
एक और तोप
पहाड़ी पर कैसे
चढ़ाई जा रही
है देखो।

चित्र के निचले कोने
में सेना का डेरा
भी दिख रहा है।

चित्तौड़ का राजा उदयसिंह और उसके बाद उसका पुत्र राणा प्रताप अन्त तक मुग़लों से लड़ते रहे । हल्दी-घाटी के युद्ध के बारे में तुमने जरूर सुना होगा जिसमें राणा प्रताप मुग़ल सेना से हारे थे । इस हार के बाद भी राणा ने जी नहीं हारा और मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिए लड़ता रहा ।

चित्तौड़ की विजय के बाद जोधपुर और रणथंभोर के राजपूत राज्यों पर भी मुग़लों का अधिकार हो गया । रणथंभोर किले पर जो आक्रमण हुआ उसका चित्र देखो । दूसरे चित्र में दिखाया है कि रणथंभोर का राजा सुजान सिंह हाड़ा अकबर की हुकूमत स्वीकार कर रहा है ।

राजपूत राजा आखिर समझ गए कि वे मुगलों की टक्कर नहीं ले सकते। दूसरी तरफ अकबर उन्हें अपने साथ शामिल करने के बदले में कई विशेष लाभ दे रहा था । इसलिए अब एक के बाद एक बहुत से राजपूत राजा मुग़लों की सेवा में आने लगे और मुग़ल मनसबदार बने ।

मुग़ल बादशाह और छोटे राजाओं के बीच आखिर समझौता हो गया ।

राजपूतों के अलावा अन्य हिन्दू भी अकबर के ऊँचे मनसबदार बने । जैसे टोडरमल (जिसे अकबर ने "राजा" की उपाधि दी) और बीरबल ।

रणथंभोर के पराजित किले से निकल कर राजपूत राजा अकबर की हुकूमत स्वीकारते हुए ।

अकबर की राजपूत नीति से दूसरे अमीरों को परेशानी :

जैसे-जैसे शेखज़ादा और राजपूत अकबर के अमीर बनते गये वैसे-वैसे ईरानी व तूरानी अमीर परेशान होने

लगे । शुरू में अधिकांश अमीर तुरानी या ईरानी होते थे । बादशाह को जो भी करना हो उनके सहयोग से ही कर सकता था ।

मगर अब स्थिति बदल गयी थी । अगर तुरानी व ईरानी अमीर विरोध भी करें तो बादशाह हिन्दुस्तानी अमीरों की सहायता से अपनी इच्छा की पूर्ति कर सकता था । इस कारण तुरानी व ईरानी अमीरों में असंतोष बढ़ रहा था । उन्हें लग रहा था कि राजपूतों की वजह से उनकी शक्ति छिन रही है ।

अब अकबर इन अमीरों को शांत करने के लिए कुछ उपाय ढूंढने लगा । पर वह अपने राज्य में न तो राजपूतों की स्थिति कमज़ोर करना चाहता था और न ही तुरानी-ईरानी अमीरों की ताकत पहले जैसी हो जाने देना चाहता था । उसने सोचा कि अगर वह हिन्दुओं के खिलाफ कुछ बातें करे तो शायद तुरानी ईरानी अमीर सन्तोष कर जाएं । वह सन् 1575 से हिन्दुओं के खिलाफ बोलने लगा । उस ने हिन्दुओं पर जिज़िया कर फिर से लागू कर दिया । उसने अपने कुछ अधिकारियों को यह आदेश भी दिया कि वे हिन्दुओं को मूर्ति पूजा करने से रोकें ।

अकबर की धार्मिक नीति में क्या कोई परिवर्तन आया दिखता है ? स्पष्ट करो

ईरानी-तुरानी अमीरों का विद्रोह :

अकबर ने हिन्दुओं के साथ भेद-भाव किया लेकिन इस सब का तुरानी व ईरानी अमीरों पर कुछ असर नहीं पड़ा । सन् 1580 में इन लोगों ने अकबर के खिलाफ ज़बर्दस्त विद्रोह किया । दोनों दिशाओं में विद्रोह भड़का - काबुल में भी और बंगाल में भी ।

अकबर क्या करता तो ईरानी तुरानी अमीर सन्तुष्ट होते ?

इस बार अकबर ने हिन्दुस्तानी अमीरों की सहायता से तुरानी व ईरानी अमीरों के विद्रोह को कुचला । राजा मानसिंह और भगवान दास ने काबुल का विद्रोह दबाया और टोडरमल ने बंगाल में विद्रोह खतम किया । अकबर को अब कोई खतरा नहीं रहा । एक बार फिर राज्य में उसकी शक्ति को कम न किया जा सका ।

ज़रा सोच कर बताओ -

1575 में अकबर ने जिज़िया वापिस

लागू किया था। फिर भी राजपूत अमीरों ने उसका साथ दिया।

वे अकबर से असन्तुष्ट क्यों नहीं हुए ?

सुलह कुल :

1580 के विद्रोह ने अकबर पर गहरा असर छोड़ा। उसे लगा कि हिन्दुओं से भेद-भाव करने के आदेश हटा लेने चाहिए क्योंकि उनसे ईरानी तुरानी अमीर तो खुश नहीं हुए और व्यर्थ में हिन्दुओं को ठेस पहुंची।

अब अकबर के धार्मिक व्यवहार में फिर एक बड़ा बदलाव आया। 1580 में ही उसने हिन्दुओं पर लगाया गया जिज़िया कर फिर से हटा दिया।

उसने अपने दरबार से धर्म की देखरेख करने वाले अधिकारी को भी हटा दिया क्योंकि वह हिन्दुओं के खिलाफ था।

अकबर ने सब धर्मों के संतों, मंदिरों, मदरसों व मठों को दान देना शुरू कर दिया। पहले केवल मुसलमान संतों, विद्वानों व मस्जिदों को दान दिया जाता था। पर 1580 के बाद अकबर ने दूर-दूर के मंदिरों व मठों को भी दान दिया।

1575 में अकबर ने ज़िजिया क्यों लगाया ? 1580 में क्यों हटा दिया ?

वैसे अकबर को दूसरे धर्मों में बहुत रुचि भी थी। कहा जाता है कि वह रात भर धार्मिक विचारों में डूबा रहता था और जो भी धार्मिक व्यक्ति आए उससे चर्चा करता था।

उसने अपने राजमहल के पास की मस्जिद में एक इबादत खाना (यानी ईश्वर की पूजा का घर) बनवाया था। उसने इस्लाम के प्रमुख विद्वानों यानी मौलवियों को बुला कर इबादत खाना में धर्म की चर्चाएं कीं। उसने मौलवियों से कहा -"मेरा एक ही उद्देश्य है। सच्चाई का पता लगाना। धर्म के सही सिद्धांतों को उजागर करना।"

पर अकबर ने पाया कि मौलवी आपस में बहुत गाली गलौच व झगड़े करने लगते थे। इस कारण उसका मन ऊब गया। सन् 1580 से उसने दूसरे कई धर्मों के विद्वानों व संतों को चर्चा के लिए इबादत खाना में बुलाना शुरू किया। हिन्दू पंडित, सूफी सन्त, गुजरात के जैन मुनि, पारसी विद्वान और ईसाई धर्म के पादरी भी अकबर के निमन्त्रण पर चर्चा करने गए। ईसाई पादरी पुर्तगाल देश के उन व्यापारियों के साथ आया करते थे

जो भारत से माल खरीदने आने लगे थे।

इन चर्चाओं से अकबर के मन पर बहुत असर पड़ा। उसका दरबारी व मंत्री अबुल फ़ज़ल भी अपने विचारों से अकबर को प्रभावित करता था। (अबुल फ़ज़ल ने ही अकबर के शासन पर किताबें लिखीं जिन्हें पढ़ कर हम आज उस समय के बारे में बहुत कुछ जान पाते हैं।)

अकबर के मन में धर्म के प्रति एक नया विचार बन गया। उस समय का एक इतिहासकार बदायुनी लिखता है "इन चर्चाओं के फलस्वरूप बादशाह के मन में पत्थर की लकीर की तरह यह धारणा बन गई कि सब धर्मों में अच्छे लोग होते हैं। अगर सच्चा ज्ञान सब धर्मों में प्राप्त हो सकता है तो यह कहना ठीक नहीं है कि एक ही धर्म में सच्चाई है बाकी धर्म झूठे हैं।"

इन्हीं विचारों से प्रेरित हो कर अकबर ने एक नई नीति अपनाई-सुलह कुल-यानी सब के बीच सुलह - की नीति। "संपूर्ण रूप से शांति", सब धर्मों व संप्रदायों के बीच शान्ति की नीति।

वह मानने लगा कि बादशाह किसी एक धर्म के लोगों का नहीं बल्कि पूरे राज्य के सारे लोगों का है। उसे किसी विशेष धर्म के लोगों

अकबर के कहने पर रहीम ने रामायण का फारसी में अनुवाद किया। उस पुस्तक में यह चित्र बना हुआ है। यह कौन सा दृश्य है?

के प्रति पक्षपात नहीं करना चाहिए। बादशाह का यह कर्त्तव्य है कि वह सब लोगों को अपने काम और रीति-रिवाजों का शान्ति से पालन करने दे।
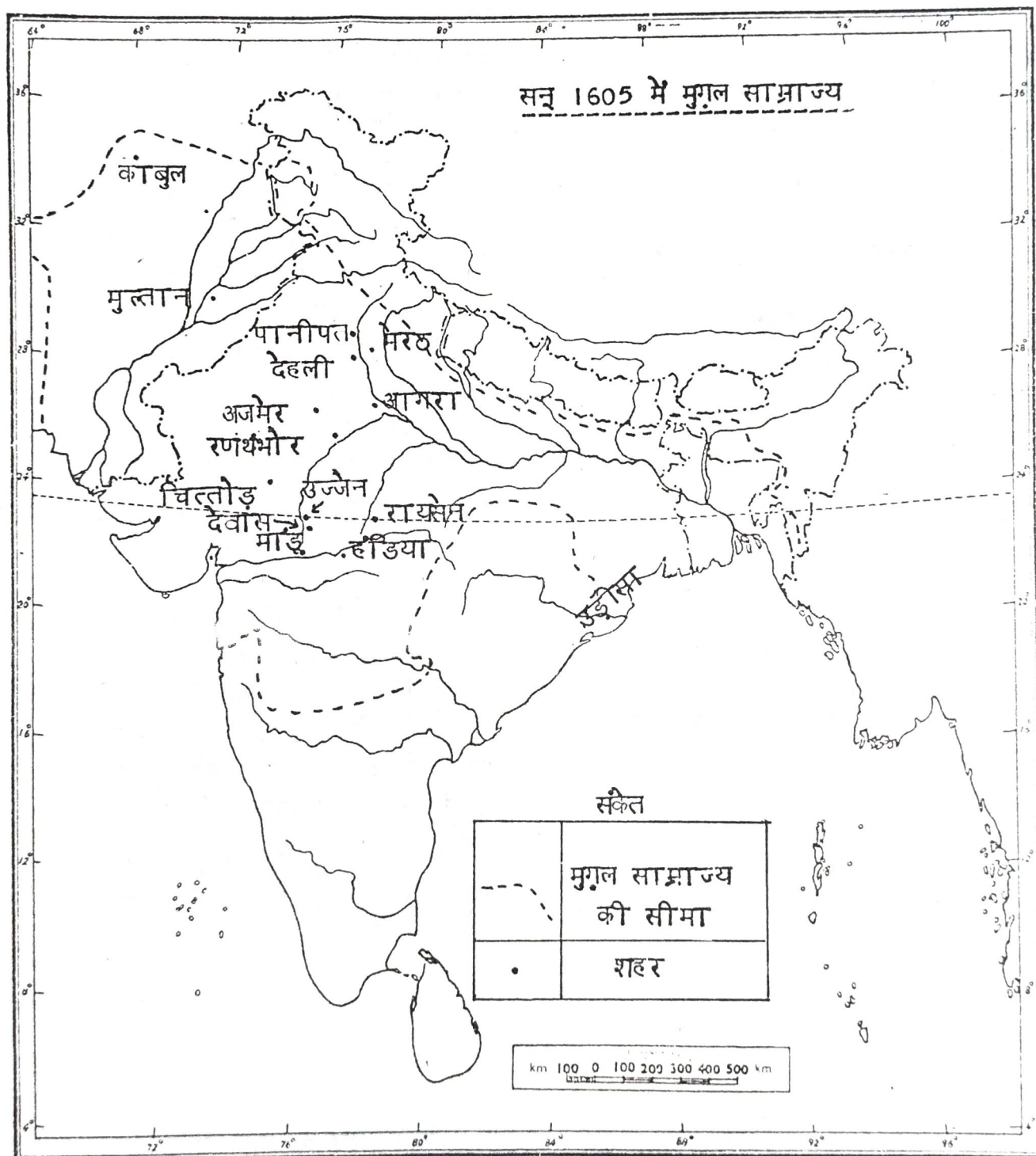
Based upon Survey of India map with the permission of the Surveyor General of India.
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.

इसी नीति का पालन करते हुए अकबर ने गोहत्या पर रोक लगा दी । अपने राजमहल में उसने हिन्दू, पारसी आदि धर्मों की कुछ रीतियाँ माननी शुरू कर दीं । उसने अलग-अलग धर्मों के मुख्य ग्रन्थों का फारसी भाषा में अनुवाद करवाया- गीता, महाभारत, अथर्ववेद, बाइबल, कुरान, पंचतंत्र, सिंहासन बत्तीसी व विज्ञान की भी कई पुस्तकें फारसी में अनुवाद की गईं ताकि फारसी बोलने वाले मुसलमान उन्हें पढ़ कर समझ सकें ।

इस्लाम धर्म की कई ऐसी बातों को उसने छोड़ दिया जो उसे ठीक नहीं लगीं ।

अकबर की सुलह कुल नीति से मुग़ल साम्राज्य को बहुत फायदा हुआ। तुम्हें याद होगा कि अकबर के अमीरों में सब धर्मों के लोग थे । उन सब को मिल कर राज्य का कामकाज चलाना था । राज्य के अधिकतर छोटे अधिकारी व कर्मचारी हिन्दू ही थे । भारत के अधिकतर किसान, कारीगर व जमींदार हिन्दू थे । व्यापारी वर्ग के लोग हिन्दू, जैन या पारसी धर्म मानते थे ।

इतने बड़े राज्य के लिए इन सब लोगों का समर्थन चाहिए था । सब तरह के लोगों के मन को बादशाह के प्रति खींचना जरूरी था । तभी राज्य का काम ठीक से और शान्ति से चल पाता । इस कारण भी अकबर ने एक उदार धार्मिक नीति को अपनाना जरूरी समझा । इसी नीति को अकबर के बाद आने वाले मुग़ल बादशाहों ने भी अपनाया ।

हमने देखा कि कैसे अकबर ने अलग-अलग तरीकों को अपनाकर अपने राज्य में सारी शासन-शक्ति को अपने हाथ में इकट्ठा किया । इसी शक्ति के बल पर उसने पूरे उत्तर भारत को अपने राज्य में मिला लिया । उसने बिहार, बंगाल, उड़ीसा, गुजरात तक अपने साम्राज्य को फैलाया ।

अभ्यास के प्रश्न :

1. जब अकबर बादशाह बना तब अमीरों में किस तरह के लोग थे ? अकबर ने अपने शासन काल में और किस तरह के लोगों को अमीर बनाया ?

2. तुरानी अमीर क्या चाहते थे और अकबर क्या चाहता था- छांटकर अलग-अलग लिखो -

क- अमीर को बादशाह के समान अधिकार मिले ।

ख- जागीर से इकट्ठे हुए पैसे का कुछ अंश बादशाह को भी मिले ।

ग- अमीरें अपनी जागीरों का संचालन बादशाह के नियमों के अनुसार करे ।

घ- बादशाह अमीरों के कहने पर चले ।

ङ- सारी शक्ति बादशाह में केन्द्रित रहे ।

3. राजपूत राजाओं को अपने अमीर बनाने के लिए अकबर ने उन्हें कौन-कौन सी रियायतें दीं ?

4. <u>सही गलत बताओ :</u>

क- अकबर ने जो रियायतें दीं - उससे प्रभावित होकर राजपूत राजा उसके अमीर बनने के लिए तैयार हो गये ।

ख- राजपूत राजा अकबर से मिली रियायतों के बावजूद उसके अमीर नहीं बनना चाहते थे, क्योंकि वे स्वतंत्र रूप से राज्य करना चाहते थे ।

5. राजपूतों और भारतीय मुसलमानों के अमीर बनने से ईरानी और तुरानी अमीर परेशान क्यों हो गये - अपने शब्दों में समझाओ ।

6. अकबर ने 1563 में जिज़िया कर समाप्त किया लेकिन 1575 में जिज़िया कर को फिर से लागू किया और 1580 में उसने उस कर को फिर से हटाया । इस तरह वह बार-बार अपनी नीति बदलता रहा । इसके पीछे क्या कारण हो सकता था - क्या तुम समझा सकते हो ?

7. नीचे अकबर की नीतियों के बारे में दो विचार दिये गये हैं- दोनों विचार कुछ हद तक सही हैं । मगर तुम्हें इनमें से कौन सा विचार सबसे सही लगता है, कारण सहित समझाओ ।

- अकबर उदार विचारों का था । इसलिए उसने उदार धार्मिक व राजनैतिक नीतियों को अपनाया ।

- अकबर ने रानैतिक कारणों से उदार धार्मिक नीति अपनाई ।

मुग़ल साम्राज्य के अमीर

चित्र-1 मुग़ल साम्राज्य के एक बड़े अधिकारी का है । ऐसे बड़े अधिकारियों को "अमीर" कहा जाता था । जब भी अमीर एक जगह से दूसरी जगह जाते थे, वे इसी तरह जाते थे ।
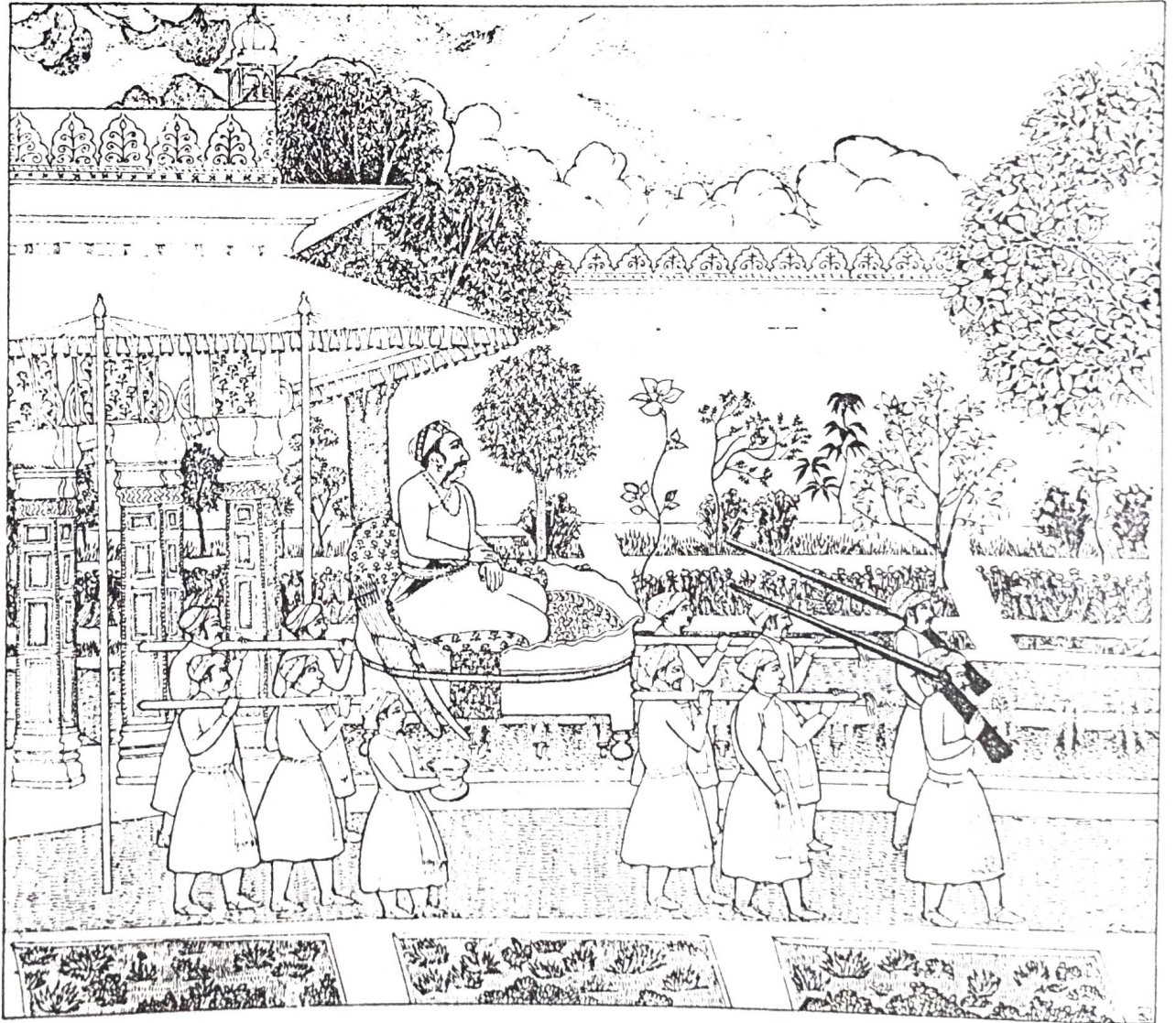
इस चित्र को देखकर मुगल अमीरों के बारे में तुम्हारे मन में क्या-क्या बातें आती हैं ? लिखो ।

पूरे मुग़ल साम्राज्य में लगभग 500 ऐसे अमीर थे । इनके अलावा हजारों छोटे अधिकारी भी थे । अमीर और छोटी अधिकारी दोनों को <u>मनसबदार</u> कहा जाता था । मनसब का अर्थ है पद । जिनको भी साम्राज्य में सरकारी नौकरी (पद) मिलती थी उन्हें मनसबदार कहा जाता था । वे ही साम्राज्य में कानून लागू करने, लगान इकट्ठा करने, विद्रोह को दबाने, युद्ध पर लड़ने आदि के काम संभालते थे ।

उन दिनों मुग़ल अमीरों को जितनी तंख़्वाह मिलती थी, उतनी दुनिया के किसी भी देश के अधिकारियों को नहीं मिलती थी । एक अमीर को कम से कम हर महीने 8000 रूपये से लेकर 45000 रूपये तक मिलते थे । यह भी ध्यान रखो कि उन दिनों चीजों की कीमतें भी कितनी सस्ती थीं । तब तक रूपये में लगभग 40 किलो गेहूं मिल जाता था । इससे तुम अन्दाज लगा सकते हो कि अमीरों को कितना वेतन मिलता होगा ।

चलो पता लगायें कि मुग़लों के समय में कोई मनसबदार कैसे बनता था - उसे मनसब पाने के लिए क्या करना पड़ता था ? यह भी जानें कि मुग़ल मनसबदारों और आजकल के अधिकारियों में क्या समानता और क्या अन्तर है । इन बातों को समझने के लिए एक अमीर की जीवनी पढ़ें । इस अमीर का नाम था- बक़र खान । वह बादशाह जहांगीर के समय में रहता था ।

<u>अमीर बक़र खान की जीवनी</u> :

बक़र खान के पूर्वज ईरान देश से आये हुये थे । उसके पिता रहमत खान, अकबर के मनसबदार रहे थे और अब जहांगीर के समय में भी वे मनसबदार थे । अन्य मनसबदारों की तरह उनका भी एक जगह से दूसरी जगह तबादला होता रहता था ।

एक बार रहमत खान की पोस्टिंग इंडिया में हुयी । उस वक्त तक उनके दो बेटे असफ खान और बक़र खान बड़े हो चुके थे । रहमत खान को अपने बेटों की थोड़ी चिन्ता होने लगी थी । वे सोचते, "पता नहीं बेटों को बादशाह की नौकरी मिलेगी कि नहीं ।" यह जरूर था कि वे और उनके पिता बादशाह की सेवा में रहे हैं । पर मनसबदार के

बेटों को विरासत में मनसब नहीं मिलता था- पिता के बाद पुत्र को मनसब नहीं मिल जाता था । यह तो बादशाह की मर्जी पर था कि वे किसे मनसबदार बनाते हैं और किसे नहीं ।

एक दिन रहमत खान उज्जैन के लिए निकले । जाने से पहले वे एक संदूक में कुछ गहने, सोने की मोहरें (सिक्के) और कुछ ज़री के कपड़े रखवाने लगे । बकर खान ने पूछा- "पिताजी आप यह सब उज्जैन किस लिए ले जा रहे हैं ?" उन्होंने कहा -"बेटे मैं उज्जैन में मालवा सूबे (प्रान्त) के सूबेदार अब्दुल्लाह खान से मिलने जा रहा हूं । मैं उनसे गुज़ारिश करूंगा कि वे तुम दोनों भाईयों की बादशाह जहांगीर से सिफारिश कर दें । सिफारिश वे यूं ही नहीं करेंगे - उन्हें कुछ पेशकश (भेंट) देनी पड़ेगी । इसीलिये ये कीमती चीज़ें ले जा रहा हूं ।"

उन दिनों मुग़लों ने अपना साम्राज्य पन्द्रह सूबों यानी प्रांतों में बांटा था । उनमें से एक सूबा था मालवा जिसकी राजधानी थी उज्जैन । सूबे का सबसे बड़ा अधिकारी सूबेदार कहलाता था ।

सूबेदार जैसे बड़े अमीरों की सिफारिश पर ही बादशाह नए मन-सबदारों की नियुक्ति करते थे । इसीलिए बकर खान के पिताजी सूबेदार अब्दुल्लाह खान से मिलने गये ।

सूबेदार साहब सिर्फ बड़े लड़के बकर खान की सिफारिश करने को राजी हुये । उन्होंने बादशाह के नाम एक चिट्ठी लिखी जिसमें बकर खान की खूब तारीफ की और यह भी बताया कि उसके पिता रहमत खान एक वफादार मनसबदार हैं । सूबेदार ने बादशाह जहांगीर से सिफारिश की कि बकर खान को एक छोटा मनसब (पद) दिया जाये तो उचित होगा ।

आगरा में चिट्ठी सबसे पहले मीर बख्शी के हाथ पहुंची । मीर बख्शी ही वो अधिकारी था जो मनसबदारों की नियुक्तियों के बारे में देखरेख करता था । अगले दिन बादशाह जहांगीर जब दरबार में बैठे थे तो मीर बख्शी ने उनके सामने मालवा के सूबेदार की चिट्ठी पढ़ी ।

चिट्ठी सुनकर बादशाह ने मालवा के सूबेदार की सिफारिश को मंज़ूरी दे दी और अपने मीर बख्शी से कहा-"आप बकर खान को एक छोटे मनसब पर नियुक्त कीजिये । उसे 100 घुड़सवारों की पलटन रखने की भी जिम्मेदारी दीजिये ।"

चित्र-2

जहांगीर का दरबार

इस चित्र में जहांगीर के मनसबदारों को भी दिखाया गया है । बादशाह के दरबार में कोई भी व्यक्ति बैठ नहीं सकता था । इसलिए सारे मनसबदार खड़े हैं । इस चित्र में एक पुर्तगाली पादरी को भी देखो ।

मीर बख्शी से पूछ-ताछ करके बादशाह ने बकर खान को मालवा सूबे के कस्बे रायसेन का कोतवाल नियुक्त किया ।

कुछ दिनों बाद एक शाही फरमान (आदेश) जारी हुआ जिसमें सारी बातें लिखी थीं । बकर खान के पास जब फरमान पहुंचा तो वह बहुत खुश हुआ । आखिर वह भी मनसबदार बन गया था ।

पद, वेतन और जिम्मेदारी :

दो तीन दिन बाद जब बकरखान मालवा के सूबेदार के पास गया तो वे बोले-" तुम्हें एक छोटा मनसब मिला है । अगर तुम अच्छा काम करोगे तो तुम्हारे पिताजी की तरह या मेरी तरह ऊंचे मनसब तुम्हें भी मिलेंगे ।

बकर खान ने सूबेदार से अपनी तनख्वाह के बारे में पूछताछ की । सूबेदार ने बताया कि उसे 5000 रूपये महीने मिलेंगे । पर कोतवाल के काम के साथ-साथ बादशाह के लिए 100 घुड़सवार तैयार रखना भी उसकी जिम्मेदारी है । इसके लिए उसे अलग से 1500 रूपए दिए जाएंगे ।

बकर खान की जमानत :

सूबेदार ने बकरखान से पूछा- "अच्छा यह बताओ-तुमने अपना जमानतदार किसे बनाया है ?" बकरखान ने कहा -" सेठ हुकुमचन्द मेरी भी जमानत दे देंगे । वे पिताजी के जमानतदार हैं । मुझे अच्छी तरह जानते भी हैं ।"

उन दिनों मुगल मनसबदारों को वेतन लेने से पहले किसी धनी और जाने-माने व्यक्ति से अपनी जमानत दिलवानी पड़ती थी । अगर मनसबदार वेतन के पैसे लेकर भाग गया या उसने अपना काम ठीक से नहीं किया तो बादशाह उसके जमानतदार (जमानत देने वाले) से पैसे वसूल करके राज्य का नुक्सान भर सकता था । इसी कारण बकर खान ने उज्जैन के सेठ हुकुमचन्द से अपनी जमानत भरवा ली ।

इस प्रकार वेतन पाने के लिए एक शर्त तो पूरी हुयी । अब एक और शर्त भी बची थी- बकर खान को बादशाह के लिए 100 घुड़सवार रखने थे ।

हां । उन दिनों हर मनसबदार को, चाहे वह छोटे से छोटा हो या बड़े से बड़ा, कुछ घुड़सवार सैनिकों को रखना पड़ता था । किसी को दस तो किसी को 100 तो किसी और को 5000 घुड़सवारों की टुकड़ी रखनी पड़ती थी । इनका उपयोग वे अपने काम में करते थे और जरूरत पड़ने पर बादशाह की सेवा में ले जाते थे ।

बकर खान के पिता भी तो मनसबदार थे सो वे भी कुछ घुड़सवार रखते थे । बकरखान ने अपने पिता के घोड़ा-व्यापारी से मुलाकात की और उसकी सहायता से 200 घोड़े खरीदे । अपने पिता के सैनिकों से
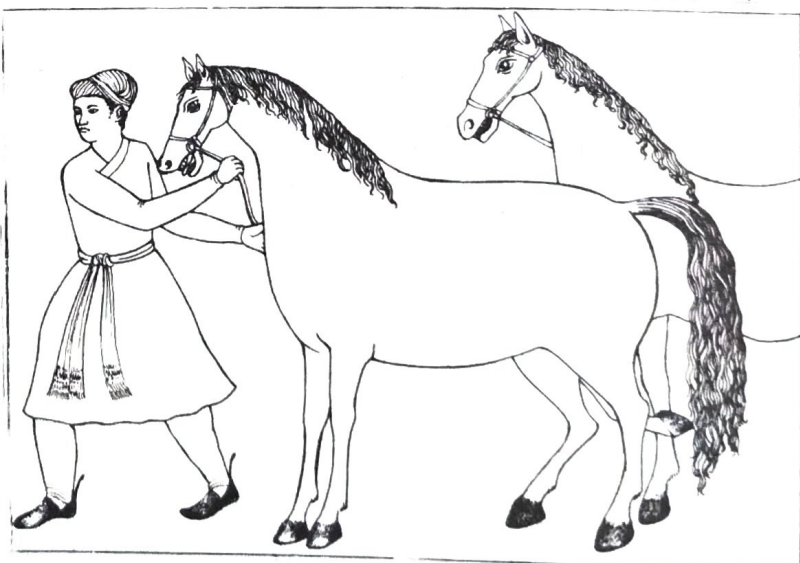
चित्र-3 घोड़े खरीदना

कहकर ही उसने उनके गाँव से और आदमी बुलवाये । इस तरह 100 जवानों को नौकरी में रखकर उसने अपनी सेना की टुकड़ी बनाई ।

यह सब खर्चा उसने सेठ हुक्मचन्द से उधार लेकर किया क्योंकि उसे अभी वेतन नहीं मिला था ।

क्या आजकल भी सरकारी अधिकारियों को अपने सैनिक रखने पड़ते हैं ?

क- मुग़लों के समय अधिकारियों की पद पर नियुक्ति के बारे में ये वाक्य लिखो -

1. मुग़लों के समय सब अधिकारियों को .... नियुक्त करता था ।

2. बादशाह अपने बड़े अमीरों की .... पर नए अधिकारियों को नियुक्त करता था ।

ख- मनसबदारों को वेतन में से बादशाह के लिए क्या करना पड़ता था ?

ग- क्या सही है -

- मनसबदार का पद उसके बाद उसके पुत्र को मिल जाता था ।
- मनसबदार जीवन भर एक जगह एक पद पर नहीं रहता था ।

बकर खान ने कोतवाली संभाली :

जब सेना की टुकड़ी तैयार हुयी तो बकर खान अपनी नियुक्ति का शाही फरमान (आदेश) लेकर रायसेन पहुंचा । फरमान में लिखा था -

"बकर खान को कस्बा रायसेन का कोतवाल नियुक्त किया जा रहा है । सारे कस्बे के प्रमुखों और शहर के निवासियों को उसका हुक्म मानना होगा ।

कोतवाल बकर खान को गुमाश्ताओं की मदद से पूरे कस्बे का ब्यौरा इकट्ठा करना है । कितने मकान हैं, उनमें कौन-कौन रहता है, कितने व्यापारी और कितने कारीगर हैं, कितने सैनिक तथा दरवेश (संत) हैं । कोतवाल

को हर मोहल्ले के मुखिया से रोज की घटनाओं का विवरण लेना चाहिए अलग से कुछ जासूसों को नियुक्त करना चाहिए । साथ ही उसे शहर के मेहतरों को नियुक्त करना चाहिए जिन्हें रोज़ घरों को साफ करने के साथ वहां होने वाली बातों को कोतवाल को बताना होगा ।
कोतवाल को रोज़ रात को कस्बे का दौरा करना चाहिये और चोर डाकुओं को पकड़ कर लाना चाहिए। फिर उन्हें काज़ी (न्यायाधीश) के सामने पेश करके काज़ी के आदेश पर दण्ड देना होगा ।"

बकर खान रायसेन पहुंचते ही कोतवाली गया और अपना काम संभालने लगा ।
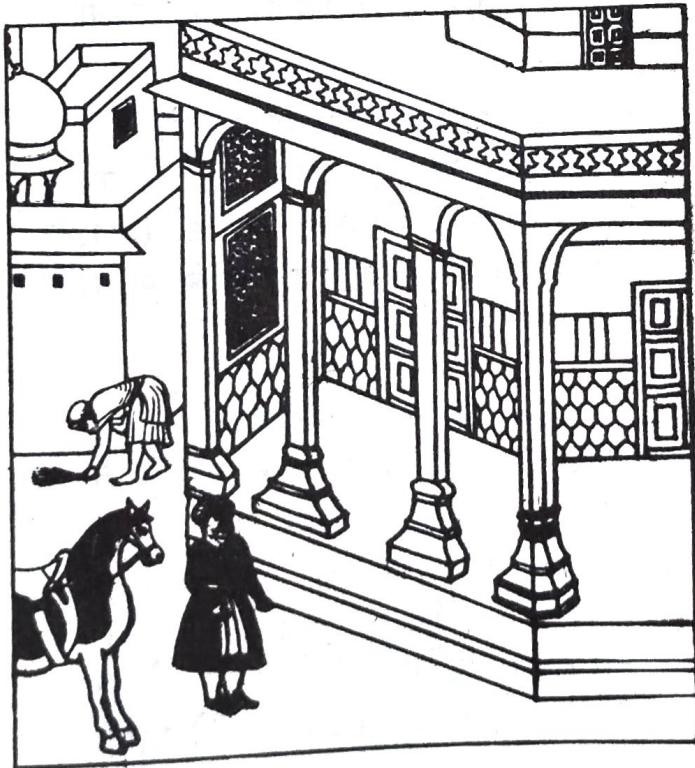
चित्र-4 रायसेन की कोतवाली

कुछ महीने इस तरह गुज़र गये । धीरे-धीरे बकर खान का पैसा खत्म हो रहा था । यह पैसे उसने सेठ हुक्मचंद से उधार में लिये थे । अब सेठ भी अपने पैसे वापिस मांग रहा था । बकर खान को अभी तक उसका वेतन नहीं मिला था ।

बकर खान ने अपने एक आदमी को आगरा भेजा । वह वहां शाही दीवान के दफ्तर के चक्कर लगाता रहा क्योंकि वेतन का इन्तज़ाम वहीं से होता था । आखिर शाही दीवान ही पूरे साम्राज्य की आमदानी और खर्च का हिसाब रखता था ।

बकर खान को जागीर मिली :

मुग़लों के समय में अधिकारियों को तनख्वाह आमतौर पर जागीर के रूप में दी जाती थी । जागीर का मतलब है- किसी भी क्षेत्र के लोगों से बादशाह का सारा कर वसूल करके अपने पास रखने का हक ।

बकर खान की तनख्वाह 5000 रुपये थी । घुड़सवारों के लिए उसे 1500 रुपये भी मिलते थे । यानी उसकी मासिक तनख्वाह 6500 रुपये बनती थी । इस तरह साल भर में उसे 78000 रुपये मिलते । मालवा के 40 गावों से 78000 रुपये बादशाह को लगान में मिलते थे ।

ये 40 गांव बकर खान की जागीर बना दिये गये । अब बादशाह ने आदेश दिया कि उन 40 गांवों का सारा लगान बकर खान वसूल करके अपनी तनख्वाह के बदले में रख लेगा । जिन्हें जागीर मिलती थी उन्हें जागीरदार कहते थे । इस तरह बकर खान जागीरदार बन गया ।

जागीर का आदेश :

जब बकर खान को जागीर का आदेश मिला उसमें इस प्रकार लिखा था ।

"शाही फरमान जारी किया जाता है कि सूबा मालवा के परगनाह देवास के 40 गांव बकर खान को इस वर्ष सन् 1610 के रबी से जागीर में दिये जा रहे हैं । बकर खान को इन गांवों से कर इकट्ठा करके अपनी जिम्मेदारियां पूरी करनी चाहिए ।

परगनाह देवास के चौधरी, मुखिया और पटवारियों तथा किसानों को इस फरमान के अनुसार बकर खान को अपना जागीरदार समझना चाहिए। उन्हें उसके गुमाश्ताओं के आदेशों का पालन करना चाहिये और सारा लगान जिम्मेदारी से और कम किए बिना बकर खान को देना चाहिए ।

बकर खान की जिम्मेदारी होगी कि वह अपनी जागीर में किसानों को किसी प्रकार से परेशान न करे । उनसे निर्धारित करों के अलावा एक कौड़ी भी अधिक न ले । उसे अपनी जागीर में खेती फैलाने का भरपूर प्रयत्न करना चाहिए । अपनी जागीर में सड़कों की मरम्मत और सरायों की देखभाल भी जागीरदार की जिम्मेदारी होगी ।"

परगनाह (यानी तहसील) देवास रायसेन से काफी दूर था । जब बकर खान को जागीर का आदेश मिला तो वह तुरन्त देवास जाने की तैयारी करने लगा ।

उसके सामने एक समस्या थी । देवास के गांवों से लगान कैसे इकट्ठा करे ? आखिर वह खुद हर गांव में जाकर लगान तो नहीं वसूल कर सकता था । बकर खान एक ऐसे विश्वासपात्र आदमी को ढूंढने लगा जो उसके लिए गांव में जाकर लगान इकट्ठा करेगा । कुछ दिनों में उसे एक ऐसा व्यक्ति मिला । वह था रायसेन के ही एक व्यापारी का बेटा, बनारसीदास । बनारसीदास ने बकर-खान को जमानत के रूप में दो हजार रुपये दे दिये ताकि अगर वह हिसाब में गड़बड़ी करे तो उस रकम को जब्त किया जा सके । इस तरह बकर खान ने बनारसीदास को अपनी जागीर के गांवों से लगान वसूल कर लाने के लिए रखा । वह बकर खान का आमिल (एजेन्ट) नियुक्त हुआ ।

स्थानीय अधिकारी :

कुछ दिनों बाद बकर खान, बनारसीदास के साथ देवास की ओर चला । देवास हंडिया सरकार (यानि जिले) में पड़ता था । हंडिया शहर में ही सारे बड़े-बड़े अधिकारी रहते थे । इस कारण वे दोनों पहले हंडिया गये ।

हंडिया पहुंच कर बकर खान सबसे पहले सरकार के दीवान से मिला । उसे दीवान को भेंट में कुछ रुपये देने पड़े । दीवान ही उस क्षेत्र के सारे लगान का हिसाब रखता था और साथ ही लगान की वसूली की देखरेख भी करता था । दीवान ने उन 40 गांवों का पूरा ब्योरा बकर खान और बनारसीदास को दिया । जानकारी देने के बाद उसने कहा- याद रखो, जितना निर्धारित कर है उतना ही वसूल करना । मुझे किसानों से किसी प्रकार की कोई शिकायत नहीं मिलनी चाहिए । हां इन गांवों में से 10 गांव क्षिप्रा नदी के पश्चिम में हैं । वहां के जमींदार जरा अखड़ते हैं । उनसे लगान वसूल करने के लिए उन्हें डराना धमकाना पड़ेगा । वे ऐसे नहीं मानेंगे । तुम जाकर फौजदार से कहो कि वे तुम्हारी मदद के लिए एक सेना की टुकड़ी दें । जब इन 10 गांव में जाओगे तो फौजदार की सेना के साथ जाना ।"

फौजदार भी एक अधिकारी होता था । उसका काम था अपने सरकार (जिला) में कानून और व्यवस्था बनाये रखना, कोई विद्रोह हो तो उसका मुकाबला करना और जागीरदारों को लगान वसूल करने में सहायता करना ।
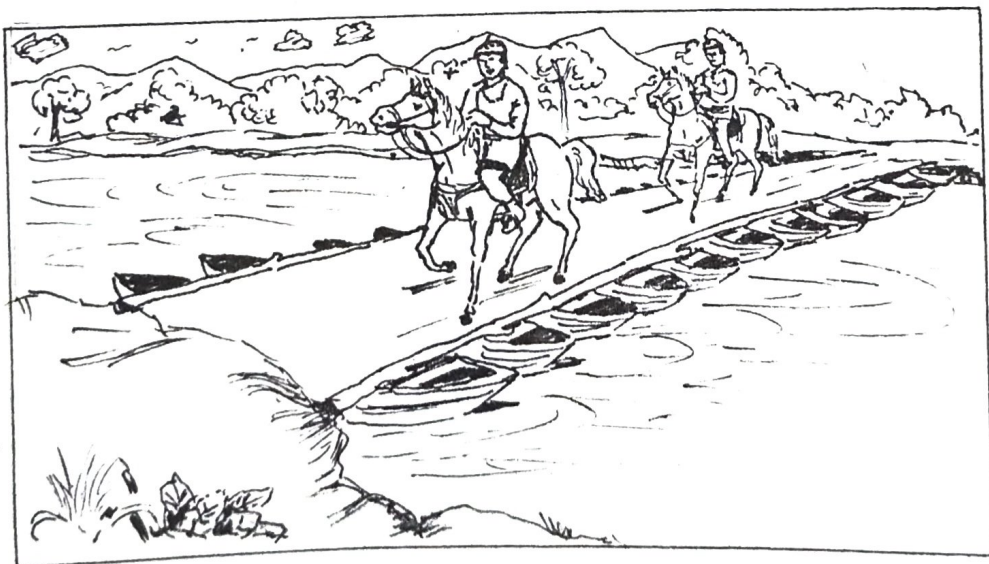
मनसबदार और उसका आमिल देवास की ओर चले ।
रास्ते में नावों पर बने पुल से एक नदी पार की ।

बकर खान और उसका आमिल बनारसीदास हंडिया से देवास पहुंचे जहां जागीर के गांव थे। उन्होंने गांवों के सारे चौधरी, पटैल, जमींदार और पटवारियों को बुलवाया और उनको शाही आदेश दिखाया। बकर खान बोला-बनारसीदास मेरा आमिल है। वह मेरी तरफ से कर इकट्ठा करेगा। आप लोग उसे पूरी सहायता देवें।

बनारसी-दास लगान किसके लिए इकट्ठी कर रहा था- बादशाह के लिए या जागीरदार बकर खान के वेतन के लिए ?

सेना का निरीक्षण :

एक दिन आगरा से मीर बख्शी का आदेश आया। दो महीने बाद बकर खान को अपनी सेना लेकर आगरा बुलाया गया था। वहां उसकी सेना का निरीक्षण होना था।

तुम्हें याद होगा कि हर मनसबदार को कुछ निश्चित घुड़सवार रखने होते थे। बकर खान को 100 घुड़सवार रखने थे। बादशाह देखना चाहते थे कि मनसबदार घुड़सवार रख रहे हैं या नहीं। इसलिए साल दो साल में मनसबदारों की सेना का निरीक्षण होता था जिसमें उनके घोड़ों पर दाग़ या मुहर लगाई जाती थी। साथ ही उनके सैनिकों का हुलिया लिखकर आगरा में दर्ज किया जाता था। अगर निरीक्षण में मनसबदार अपनी पूरी सेना नहीं ले आता तो दंड के रूप में उसके मनसब में कमी की जाती थी।

बकर खान भी अपनी सेना लेकर आगरा पहुंचा। वहां बादशाह ने खुद मीर बख्शी के साथ सेना का

चित्र

घोड़ों पर दाग़ लगाया जा रहा है।
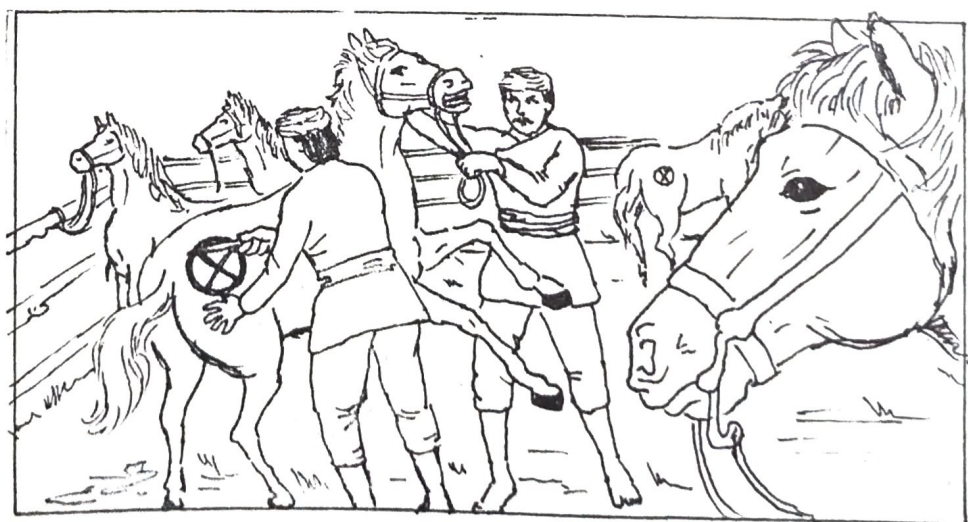
निरीक्षण किया । तभी घोड़ों पर दाग़ लगाये गये और सवारों का हुलिया दर्ज हुआ ।

आमिल लगान के साथ आया :

निरीक्षण कराके जब बकर खान रायसेन लौटा तो वहां उसका आमिल बनारसीदास इंतजार कर रहा था । वह देवास से लगान वसूल करके आया था । बनारसी ने बताया कि उस वर्ष 1500 रूपये कम वसूल हुए । चार गांव के लोगों ने लगान नहीं दिया । जब आमिल फौज के साथ वहां गया तो सारे गांव वाले जंगल भाग गये । घरों में एक घड़ा तक नहीं मिला । यह सुनकर बकर खान परेशान हो गया । उसने पूछा - "तुम कैसे आमिल हो - अपना काम पूरा नहीं कर पाये ।" उसे लग रहा था कि आमिल झूठ बोल रहा है । मगर आमिल दीवान और फौजदार से चिट्ठी ले आया था ।

बकर खान ने उससे कहा-"जाओ, जाकर उन गांव वालों को मनाओ ताकि कम से कम अगली फसल में वहां से कुछ मिले ।" जो रूपये आमिल लाया था उससे बकरखान ने अपने कर्जे चुकाये और सैनिकों का वेतन दिया । बाकी के पैसे उसने अपने खर्चे के लिए रख लिए ।

तरक्की और तबादला :

इस बीच सूबेदार की सिफारिश पर बकर खान का मनसब बढ़ा दिया गया । साथ ही उसका तबादला भी हो गया । अब उसे पंजाब में मुल्तान का फौजदार बना दिया गया ।

जब बकर खान मुल्तान पहुंचा तो उसकी जागीर का भी तबादला दिया गया । अब तरक्की के कारण उसका वेतन बढ़कर 7000 रूपये हो गया था । पुरानी जागीर के उन 40 गांवों का लगान अब उसके वेतन से कम पड़ने लगा था । इसलिए उसे मेरठ परगनाह जागीर में मिला जिसका लगान उसके नए वेतन के बराबर था ।

अब फिर से बकर खान ने एक नए आमिल को नियुक्त किया, उसके साथ मेरठ गया और पहले की तरह लगान वसूल करने की व्यवस्था की ।

मुग़ल साम्राज्य में सारे मनसबदारों का हर साल-दो साल में तबादला हो जाता था । विशेषकर उनकी जागीरों का तबादला जरूर होता रहता था । इसके पीछे एक महत्वपूर्ण कारण था । मुग़ल बादशाह नहीं चाहते थे कि उनके बड़े अधिकारी किसी एक क्षेत्र में अपनी ताकत और धाक जमा लें । अगर कोई मनसबदार कई वर्ष एक ही जगह रहे तो क्या

होगा ? वह मनसबदार वहां के ताकतवर और प्रमुख परिवारों से रिश्ता बना लेगा । उनकी सहायता से वह बादशाह के खिलाफ विद्रोह भी कर सकता था । इसे रोकने के लिए मनसबदारों का लगातार तबादला किया जाता था ।

बकर खान के भी कई तबादले हुए । कभी मुल्तान कभी आगरा कभी अवध उसे जाना पड़ा । साथ-साथ उसकी तरक्की भी होती गयी । 1627 तक आते-आते वह उड़ीसा सूबा का सूबेदार बन गया । तब वह एक बहुत बड़ा मनसबदार बन चुका था। उसकी तंख्वाह अब तीस हजार रूपये प्रति माह हो गई थी । उसे 5000 घुड़सवार रखने पड़ते थे - सो उनके लिए अलग से हर महीने 80000 रूपये भी मिलते थे ।

क- इन लोगों का क्या काम था-

1. जागीरदार का आमिल
2. सरकार का दीवान
3. फौजदार

ख- आज के अधिकारियों और मुग़लों के समय के अधिकारियों की तुलना करो - उनमें तुम्हें किन बातों में समानताएं दिखीं व किन बातों में फर्क दिखा - स्पष्ट करो-

- नियुक्ति का तरीका
- निश्चित वेतन
- वेतन पाने का तरीका
- वेतन का रूप
- तबादला
- सेना रखने की जिम्मेदारी

ग- मुग़लों के हर अधिकारी पर बादशाह कई तरह से निगरानी रखता था, तुम्हें मनसबदार पर निगरानी के क्या उदाहरण दिखे -

मुग़ल अमीर का घर बार :

तीस हजार रूपये हर महीना और वह भी ऐसे समय में जब एक रूपये में 40 किलो गेहूं मिले ! इतने रूपयों का क्या करता होगा बकर-खान ! चलो जरा उसके घर बार को झांक कर देखें ।

बकर खान एक विशाल महल में रहता था । मगर बाहर सड़क से उसका महल नहीं दिखता था, ऊंची-ऊंची दीवारों से जो घिरा हुआ था ।

बाहरी दीवार में एक दरवाजा था जिसमें 20-30 पहरेदार पहरे देते रहते थे । अन्दर एक विशाल बाग था जिसके बीच में बकर खान का महल था। बाग के बीच से संगमरमर की बनी नहर थी जिसमें से ठंडा पानी बहता रहता था । जगह-जगह सुन्दर फव्वारे भी थे । नहर के दोनों तरफ चलने के लिए रास्ते थे और उसके बाद चौकोर घास के मैदान जिसके अन्त में फूलों की क्यारियां और कतार में खड़े पेड़ थे ।

बकर खान का महल अधिकतर पत्थर का बना था । उसमें अनेकों बड़े कमरे थे । पूरे कमरे में जमीन पर कीमती कालीनें बिछी रहती थीं ।

दीवारों में आले थे जिनमें चीन और ईरान से आये प्याले, सुराहियां रखे रहते थे । दीवार सुन्दर तराशे हुए पत्थरों की बनी थी । बकर खान का खास कमरा- संगमरमर का बना था जिसमें कीमती रंगीन पत्थरों को गाढ़कर सुन्दर चित्र बनाये गये थे । छत चांदी और सोने से रंगी गयी थी । गर्मी के मौसम में ठंडक के लिए जमीन के नीचे कमरे बने थे ।

बकर खान की चार बीवियों

एक मुग़ल अमीर के महल में उसकी पत्नियां

के लिए भी अलग-अलग घर बने थे। प्रत्येक बीबी की सेवा में 40-50 गुलाम रहा करते थे ।

बकर खान और उसकी पत्नियों को कीमती हीरे-मोती के जवाहरात का खास शौक था । दूर-दूर के व्यापारी ये चीजें बेचने आये दिन आते रहते थे । सुन्दर और कीमती कपड़ों और लिबासों की बात ही अलग थी । वे एक दिन पहना कपड़ा दूसरे दिन नहीं पहनते थे ।

महीन से महीन मलमल के कपड़े, रंग बिरंगे रेशमी कपड़े, सोने-चांदी के ज़री के कपड़े- उनकी आम पोषाकें थीं ।

उनका भोजन भी उन दिनों का सबसे मंहगा भोजन था । शराब

ईरान से और बर्फ कश्मीर से लायी जाती थी । उनके अपने बगीचे भी थे जिनमें देश विदेश के फल उगाये जाते थे ।

उन दिनों के अन्य अमीरों की तरह बकर खान को भी अजीबो-गरीब जानवर व पक्षी पालने का शौक था । ऊंट, हाथी और घोड़ों के अलावा कई शेर, चीते, हिरन, शाहबाज़, रंग-बिरंगे तोते और मोर उसके महल में पलते थे । जानवरों को आपस में लड़ा कर लड़ाई देखना उनके लिए मनोरंजन का एक तरीका था ।

बकर खान के महल के पास ही उसका कारखाना भी था । मगर आजकल के कारखाने जैसा नहीं था । उसमें बकर खान और उसके परिवार के उपयोग के लिए तरह-तरह की चीजें बनती थीं । कपड़े, कालीन, सोने-चांदी के गहने लकड़ी की चीजें ये सब उनके अपने कारखाने में बनती थीं । इन्हें बेचा नहीं जाता था । ये चीजें सीधे बकर खान के घर में उपयोग की जाती थीं । इन कारखानों में शहर के मशहूर कारीगरों को अक्सर जबरदस्ती लाकर काम करवाया जाता था ।

एक लाख रूपये जागीर से वसूल करने होते थे । इस काम के लिए बकर खान के कई सारे आमिल थे । इन आमिलों के काम पर निगरानी रखने, इकट्ठे किए पैसों का हिसाब लिखने आदि काम के लिए महल में कई मुन्शी और नौकर भी होते थे ।

इतना बड़ा घर बार, इतने सारे नौकर चाकर, इन सब में इतना खर्च होता था । फिर समय - समय पर बादशाह, शाहजादों और बड़े अधिकारियों को कीमती भेंट भी देनी पड़ती थी ।

अपने ऊपर धन खर्च करने के अलावा बकर खान जैसे मनसबदार लोगों की सुविधा की चीजें बनवाने में भी कुछ धन खर्च करते थे ।

अपनी इस ऊंची तनख्वाह में से बकर खान ने अपनी जागीर के आम लोगों के लिए दो मस्जिदें बनवाईं । उसने यात्रियों के ठहरने के लिए एक सराय भी बनवाई ।

तो यह रही बकर खान के जीवन की एक झलक । मुग़ल साम्राज्य के सैकड़ों अन्य अमीरों का जीवन इस प्रकार बीतता था ।

अभ्यास के प्रश्न :

1. बकर खान को सरकारी नौकरी कैसे मिली ? क्या आज भी सरकारी नौकरी उसी तरह मिल सकती है ?

2. मनसबदारों की जमानत कौन देता था ? जमानत क्यों ली जाती थी ? क्या आज भी ऐसा होता है ?

3. बकर खान को गांवों से लगान लेने के बदले में जागीर के प्रति क्या जिम्मेदारी निभानी थी ?

4. बकर खान ने अपना आमिल किस काम के लिए नियुक्त किया ? उसने उससे जमानत में पैसे क्यों लिए ?

5. हंडिया के दीवान और फौजदार से बकर खान को क्या मदद मिली ?

6. बकर खान अपनी जिम्मेदारियां पूरी करता है या नहीं - इसकी निगरानी कौन-कौन रखता था और किस तरह से ?

7. जब बकर खान की तरक्की की गई तो उसकी जागीर क्यों बदली गई ?

8. अगर तुम्हें बकर खान का घर बार देखने का मौका मिलता तो तुम्हें जो-जो दिखता - उस पर 6 वाक्य लिखो ।

9. तुमने कक्षा-7 में भोगपतियों के बारे में पढ़ा था । राजा अपने अधिकारियों को वेतन के बदले गांव भोग करने को देता था । भोग के गांव से वे मनचाहे कर वसूल सकते थे और इच्छानुसार शासन चलाते थे। आमतौर पर भोग के गांव उसी अधिकारी व उसके वंशजों के पास रहते थे ।

   मुग़ल राज्य के जागीरदारों और भोगपतियों के बीच तुम्हें क्या अन्तर और क्या समानताएं दिखती हैं ?

   भोगपति या जागीरदार, दोनों में से किस पर राजा का ज्यादा नियंत्रण रहता था ?

गांव और घर :

चित्र - 2

जहांगीर के दरबार में एक चित्रकार था- गोवर्धन । उसने ऐसा चित्र बनाया । एक गांव के बाहर सेना का डेरा डला है । डेरे में कुछ लोग एक चलते फिरते गवैये के गायन का रस ले रहे हैं । कुछ दूरी पर दिख रहा गांव- क्या आज के गांवों जैसा दिखता है ?

आओ ऐसे किसी गांव में भीतर जा कर देखें ।
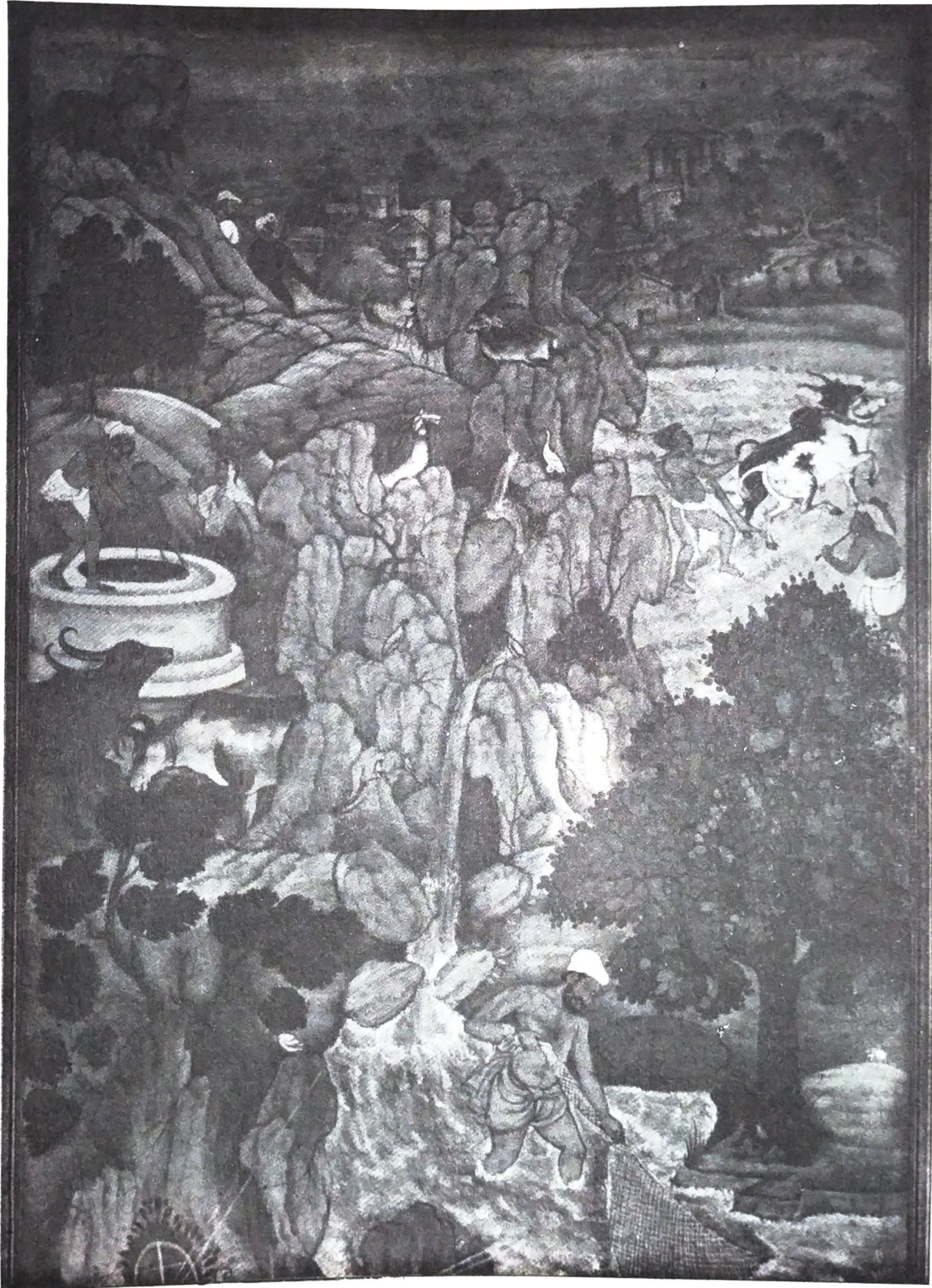
चित्र 3: यह चित्र जगन्नाथ नाम के चित्र-कार ने बनाया था। खेत, कुंआ, मछेरा, हल चलाते किसान और पीछे की तरफ कुछ ऊंचे मकान। ये मकान किसके होंगे?

गांव में धनी लोग थे और निर्धन भी ।

एक साधारण किसान के घर का चित्र बिचित्र नाम के चित्रकार ने बनाया । ये घर किन चीजों से बना है ?

चित्र -4
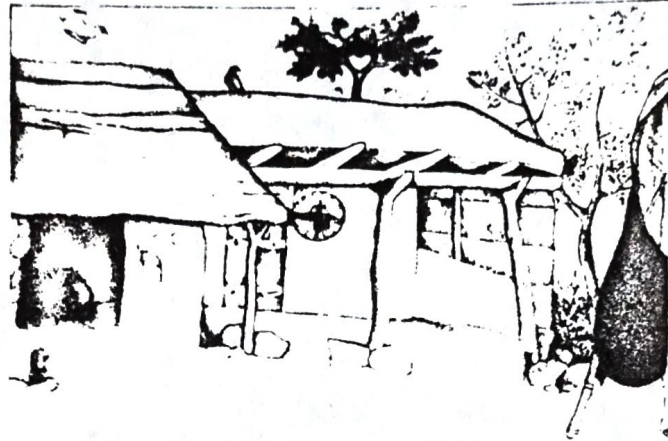
आम किसानों के ऐसे ही कच्चे घर होते थे । युद्ध, अकाल, सूखे, अत्याचार के मारे भागने वाले किसान इन्हें पल में छोड़ कर भागते और पल में नई जगह पर फिर से बना लेते ।

भोजन :

अब आम किसानों की झोपड़ियों के अन्दर की झलक लें । मिट्टी के बने थोड़े से बर्तन मिलते क्योंकि तांबा या पीतल महंगा था और अल्युमीनियम व स्टील का तो चलन ही नहीं हुआ था ।

मिट्टी के उन बर्तनों में कभी मूंग और चावल की खिचड़ी पकती और और कभी बाजरे या ज्वार की रोटी सिकती । खाने के साथ में थोड़ी सी सब्जी और घी भी हो जाता । उन दिनों दूध अधिक होता था इस-लिए घी सस्ता था । घी के अलावा तिल और सरसों का तेल भी उपयोग में लाया जाता था ।

तब मूंगफली नहीं होती थी इसलिए उसका तेल भी नहीं मिलता था । तब बहुत सी वो सब्जियां भी नहीं होती थीं जिन्हें तुम आज खाते हो । मुग़ल काल तक भारत में आलू, कद्दू, टमाटर, मटर, हरी-मिर्च, अमरूद, सीताफल - उगते ही नहीं थे । ये सब दक्षिण अमेरिका की

सब्जियां व फल हैं जो मुग़ल काल के अन्त में यूरोप के व्यापारी भारत लाए ।

कपड़े और पहनावा :

चित्र 4 को ध्यान से देखो तो उसकी दीवार पर एक चरखा टंगा दिखेगा । उन दिनों घर-घर चरखा चलने लगा था । तुम जानते हो कि तुर्की-ईरानी लोगों के साथ चरखा भारत आया । अकबर व जहांगीर के समय तक चरखे का उपयोग लोगों ने खूब अपनाया । महिलाएं घर-घर सूत कात लेती थीं और गांव का जुलाहा कपड़ा बुन देता था । इस समय के पहले भारत के लोग कम कपड़ा पहनते थे पर, चरखे के चलन के बाद ज्यादा मात्रा में कपड़ा पहना जाने लगा ।
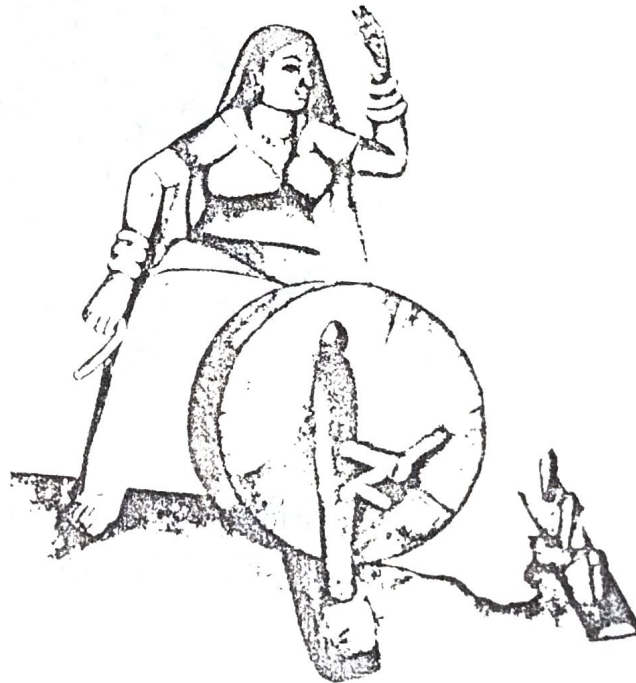
चित्र-5 एक किसान औरत सूत कात रही है ।

गांव के लोगों के चित्र मिस्किन नामक चित्रकार ने बनाए । लोग लोग कई तरह के कपड़े पहने दिख रहे हैं. । ग्वाले, किसान, जोगी, बच्चे, औरतें व अन्य कई लोग हैं। जो बहुत गरीब थे और जो बहुत गरीब नहीं थे, वे लोग इन चित्रों में अलग-अलग पहचान में आ रहे हैं । चित्र ध्यान से देख कर पहचानो ।(अगले पृष्ठ पर देखो ।)

खेतीबाड़ी :

आज की तरह मुग़ल काल में भी खेती की सबसे बड़ी समस्या सिंचाई थी । उन दिनों लोगों को तालाब, नहर और कुंओं से काम चलाना पड़ता था । आज जैसे मोटर पंप या बिजली तो नहीं थी । इस कारण सिंचाई थोड़ी ही जमीन पर हो पाती थी । अधिकतर असिंचित जमीन थी ।

इसमें मुख्यत: बारिश(खरीफ)की फसल उगायी जाती थी ।

रासायनिक खाद, दवा, नए बीज- इनके न होने से उत्पादन भी आज की तुलना में बहुत कम होता था, मगर उन दिनों भारत में जितना उत्पादन होता था उतना शायद यूरोप के देशों या किसी भी अन्य देश में नहीं होता था ।

भारत के मैदानों की मिट्टी अत्यधिक उपजाऊ है । इसका फायदा किसान बड़ी मेहनत और सूझबूझ से उठाकर साल में दो-दो फसल लेते थे । उन दिनों यूरोप के किसान प्रत्येक खेत से तीन साल में एक बार या दो बार ही फसल ले पाते थे क्योंकि वहां की मिट्टी कम उपजाऊ है । इस कारण यूरोप के खेतों का उत्पादन भारत के मैदानों के उत्पादन से बहुत कम था ।

भारतीय किसान हर साल दो फसल तो लेते ही थे - साथ ही इतनी विभिन्न किस्म की फसलें उगाते थे कि यूरोपीय यात्री जो उन दिनों भारत आये, दंग रह जाते थे । एक ही गांव में खरीफ में 15 तरह की फसलें और रबी में 10 तरह की फसलें उगायी जाती थीं । इनके अलावा फल और सब्ज़ियां थीं । उन दिनों शायद ही किसी और देश में इतनी विविध तरह की फसलें एक ही गांव में उगायी गयी हों ।

भारत की संपन्नता जिसकी विश्व भर में चर्चा थी- उसका यही आधार था ।

मगर इतना सब उगाने के बावजूद किसान बहुत गरीब थे । बहुत से बच्चे कुपोषण के कारण मौत के शिकार होते थे । हमेशा आम लोगों के सिर पर भूख मंडराती रहती थी ।

जब पर्याप्त वर्षा होती और फसल भी अच्छी होती थी तो किसान किसी तरह गुजारा कर लेते थे । लेकिन वे कठिन दिनों के लिए कुछ भी नहीं बचा पाते थे । इसलिए जब बारिश कम हो जाती और भू-जल सूख जाता और फसल न उग पाती तो किसानों के पास गुज़ारा करने के लिए कुछ भी नहीं होता था । तब हजारों की संख्या में लोग भूख और महामारी के शिकार हो जाते । तब ऐसी हालत होती थी कि लोग घास व जंगली-पेड़ों के पत्ते खाने लगते । यहां तक कि अपने आप को और अपने बच्चों को धनी लोगों के हाथ बेच देते थे । तब लोग खाने की तलाश में अपने गांव छोड़कर दर-दर भटकते थे- इस प्रकार सैकड़ों गांव वीरान हो कर उजड़ जाते थे । कभी-कभी ऐसे भयंकर अकाल का विवरण मिलता है जब मनुष्य, मनुष्य को खाने पर उतर आये थे ।

यह है दास्तान मुग़ल काल के किसानों की- सारी संपन्नता उनके खेतों में पैदा होती थी और सारी दरिद्रता उन्हीं के घरों में बसती थी।

तुम सोच रहे होगे- कि यह कैसे - इतनी सारी फसल जो वे उगाते थे- उसका क्या होता था ?

खेती की उपज का एक बहुत बड़ा हिस्सा लगान और करों के रूप में किसानों के हाथों से छिन जाता था । अकबर के समय में उनसे फसल का एक तिहाई भाग लिया जाता था- पर, समय के साथ, लगान का बोझ बढ़ता गया और सन् 1700 तक आते-आते किसानों की आधी उपज लगान में जाने लगी । तुम सोच सकते हो कि लगान देने के बाद व अगली फसल के लिए बीज का अनाज बचाने के बाद, किसानों के घर में कितना बचता होगा जो वे चैन से गुजारा भी कर सकें ?

आओ उन दिनों का एक गांव घूम कर देखें । गांव के हालचाल जानें ।

:: एक गांव की कहानी ::

गांव करारिया, सूबा आगरा

अब अनाज नहीं रूपये में देना है लगान :

सूबा आगरा में बसा था गांव करारिया । गांव तो छोटा ही था- यही कुछ अस्सी-पचासी किसानों के घर थे । चार पांच कारीगरों के घर भी थे । अधिकतर किसान जाट जाति के थे मगर कुछ गूजर भी किसानी करते थे ।

सन् 1580 की बात थी । खरीफ की फसल खेतों में लहलहा रही थी - बाजरा, ज्वार मूंग, मोठ, तिल और कोदों ।

उन्हीं दिनों पास के कस्बे, बयाना से घुड़सवारों का दल गांव में आया । आते ही वे सब जमीन्दार सूरज देव जाट के घर पहुंचे । कुछ ही देरे में पूरे गांव में खबर फैली कि ये लोग किसानों पर कर (लगान) तय करने आये हैं । और हर किसान का खेत नापेंगे ।

जमीन्दार के घर गांव के पटेल और पटवारी को बुलवाया गया । ये लोग गांव के प्रमुख और संपन्न किसान थे जो लगान इकट्ठा करने में भी मदद करते थे ।
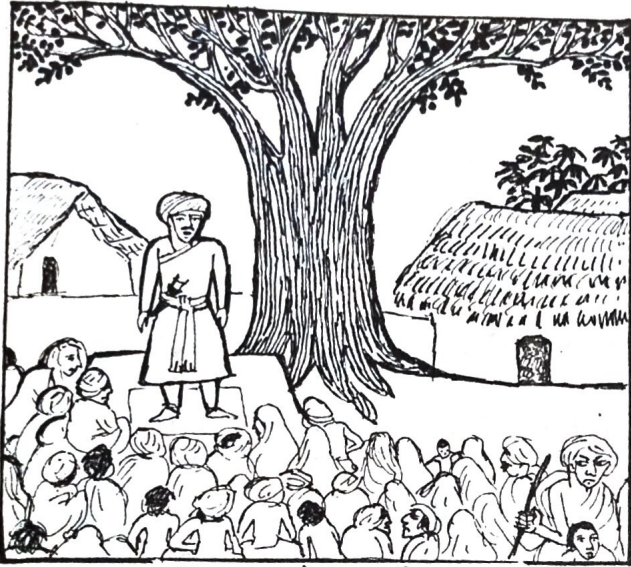
चित्र- चौपाल में चर्चा

शाम को पंचायत बुलायी गयी और पटेल के घर के सामने चौपाल में सब गांव वाले इकट्ठा हो गये।

बयाना से आया कर निर्णय करने वाला अधिकारी पूरण-मल बोला- हम लोग यहां अकबर बादशाह के मंत्री मुज़फ्फर खान और राजा टोडर मल के आदेश से आये हैं। बादशाह ने पूरे साम्राज्य में कर तय करने और वसूल करने की व्यवस्था को बदला है।

"इस वर्ष से आप लगान में अनाज नहीं, बल्कि पैसे देंगे।"

यह सुनते ही लोगों में खुसुर-फुसुर फैल गई। कुछ देर बाद एक किसान उठकर बोला- मगर अब तक तो हम अनाज में ही लगान देते आये हैं- कटाई पर जागीरदार का आमिल लगान का हिस्सा ले जाता था। खलिहान में ही अनाज बांट लेते थे। अब हम पैसे कहां से लायेंगे?

पूरण मल बोला- आप लोग बयाना में अपनी फसल बेचकर उस पैसे से लगान दीजिये।

एक और किसान ने पूछा- हमें कैसे पता चलेगा कि कितने पैसे लगान में देना है?

पूरण मल ने जवाब में कहा-"हरेक फसल के लिए अलग-अलग दर होगी। अगर ज्वार बोया तो प्रति बीघे पर दो रूपये देना होगा। अगर पांच बीघे ज्वार बोया है तो दस रूपये देना होगा।"

किसी ने कहा-"एक बीघे में मुश्किल से पांच-छः रूपये का ज्वार होता है, तो आप लगान में फसल का एक तिहाई भाग वसूल करेंगे।"

ज़मीन्दार सूरज देव बोला-"हां, पहले भी तो फसल का एक तिहाई ही देते थे। अब भी उतना ही देना है। मगर अनाज में नहीं, पैसों में।"

एक किसान बोला-"हमने सुना था कि अकबर बादशाह अच्छे हैं तो सोचा शायद लगान कम करेंगे, अब तो मुसीबत बढ़ा दी।"

किस में बदलाव किया गया - लगान

की मात्रा में था लगान के रूप में ?

क्या तुम बता सकते हो कि आजकल किसान लगान में कितना देते हैं ?

जमीन्दार और पटेल को रियायत :

रात को ज़मीन्दार के घर में पूरण मल के साथ चर्चा चल रही थी। चौधरी, पटेल, और पटवारी भी थे।

जमीन्दार कह रहा था-"बहुत कुछ बदल दिया है आप लोगों ने, पर यह बताइए - हम तो पहले की तरह फसल का एक चौथाई हिस्सा ही लगान में देंगे न ? कहीं ऐसा तो नहीं कि जमीन्दार, पटेल, पटवारी से भी एक तिहाई फसल लगान में लेने लगो- तो हमारी कोई इज्जत न रह जाए गांव में।"
पूरण मल ने उन्हें आश्वस्त किया-" नहीं-नहीं, आप लोग तो एक चौथाई ही दीजिए।"

उन दिनों यही व्यवस्था बन गई थी। गांव में सब लोग एक हिसाब से लगान नहीं देते थे।

किसको ज्यादा कर देना पड़ता था- आम किसानों को या ज़मीन्दार और पटेल को ?

क्या आज छोटे-बड़े किसान एक ही दर से लगान देते हैं ?

गुरूजी के साथ चर्चा करो कि रूपयों में लगान देने से किसानों को क्या फायदा और नुक्सान होगा ?

किसान बंजारों को अनाज बेच आये :

उस वर्ष गांव के सारे किसान गाड़ियों में अनाज लादकर बयाना ले गये। आसपास के बहुत से गांव के किसान भी अपना अनाज ले आये थे। बयाना में उससे पहले कभी इतना सारा अनाज बिकने नहीं आया था। इतना सारा अनाज खरीदने के लिए उस वर्ष व्यापारी भी नहीं थे। हफ्ते भर बाद कहीं बंजारों का झुण्ड बयाना पहुंचा।

उन दिनों बंजारे ही अनाज का व्यापार करते थे। तीस चालीस बंजारों का झुण्ड, 200-300 बैलों के साथ जगह-जगह घूमते रहते थे। गांवों से अनाज, शक्कर व गुड़ खरीद-कर दूर-दूर के शहरों में जाकर बेचते थे। वे हिमालय के पहाड़ों से शुरू करके, खरीदते बेचते खम्भात, बंगाल और दक्षिण भारत तक जाते थे।
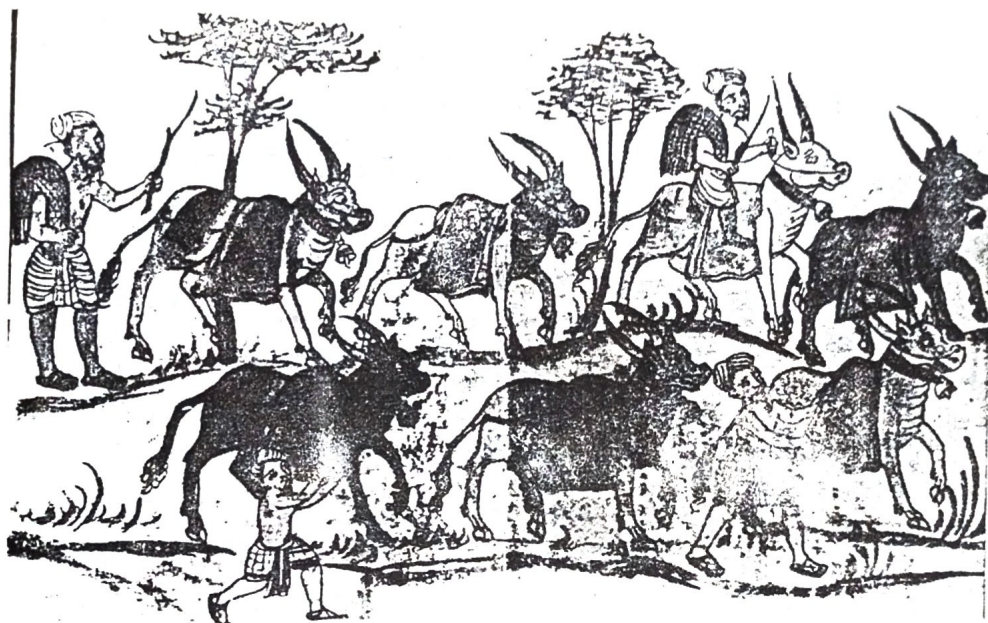
चित्र-8 बंजारों की टोली

इन्हीं बंजारों के हाथ सब किसान अपनी-अपनी फसल बेच आये। कुछ अनाज के बदले में बंजारों से नमक ले आए और बाकी अनाज के बदले में पैसे ले कर लौटे- लगान जो देना था।

बंजारे नमक कहां से लाते होंगे ?

लगान की वसूली :

कुछ दिन बाद जागीरदार का आमिल गांव में आ पहुंचा।

क्या तुम्हें याद है आमिल कौन था

और वह क्या काम करता था ?

आमिल जमीन्दार सूरज देव जाट के घर गया और उनसे कहा कि वे गांव वालों से लगान जमा करके रखें। आमिल ने बताया- "आपके गांव में कुल 1000 बीघे पर खरीफ की फसल बोयी गयी है। कुल मिला कर 17000 रूपये इकट्ठा करके रखिए। मैं अपने जागीरदार के दूसरे गांवों में भी चक्कर लगाकर आता हूं। दस दिन में लौटूंगा तो आप से रूपये ले लूंगा।"

जमीन्दार सूरजदेव जाट ने पटवारी और पटेल को बुलाया और उनसे किसानों से लगान इकटठा करने को कहा। पटवारी बोला-" अगर कोई देने से इन्कार कर दे तो ?" जमीन्दार बोले- मेरे दो घुड़सवार और चार सिपाही आपके साथ चलेंगे- देखते हैं किस की हिम्मत है मना करने की।"

लगान इकट्ठा करने में तीन-चार दिन लग गए। कुछ किसानों के खेत में ओले गिर गए थे तो उनसे

लगान नहीं मिल सकी । जब जागीरदार का आमिल लौट कर आया तो जमीन्दार सूरजदेव ने उसे हिसाब समेत इकट्ठी की लगान की रकम थमा दी ।

आमिल चलने को हुआ तो सूरजदेव ने उसे याद दिलाया । तब आमिल ने लगान की रकम में से दस प्रतिशत पैसे निकाल कर सूरजदेव के हाथ दिए । यह सूरजदेव ज़मीन्दार का मालिकाना था । गाँव वालों से लगान इकट्ठी करवाने के बदले में ज़मीन्दारों को यही मालिकाना दिया जाता था ।

तुम्हें ज़मीन्दार किस की सहायता करता नज़र आया ?

अगर ज़मीन्दार न होते तो जागीरदार के आमिल को लगान वसूली के लिए क्या-क्या करना पड़ता ?

1. 2.

ज़मीन्दार की सहायता के लिए जागीरदार उसे क्या देता था ?

वो फसल उगाओ जो ऊँचे दाम बिके :

जब से करारिया गाँव के लोग बयाना में फसल बेच कर लगान के पैसे जुटाने लगे, तब से खेती-बाड़ी में कई और बातें बदलने लगीं । किसानों को बाजार में व्यापारियों से पता चलने लगा कि कौनसी चीजें ज्यादा बिकेंगी और ज्यादा ऊँचे दामों में बिकेंगी । उन दिनों गुड़, शक्कर, तेल, रूई, गेहूं और नील की माँग बहुत थी । बाकी चीजें तो तुम जानते ही, आओ तुम्हें नील के बारे में बताएं । यह फसल कपड़े रंगने का नीला रंग बनाने के काम आती थी । बंगाल और गुजरात और यहां तक कि यूरोप के बाजारों में कपड़े बनाने वालों की तरफ से नील की बहुत माँग थी ।

करारिया गाँव के लोगों ने वो फसलें उगानी शुरू कीं जो बाजार में अच्छी बिकें । गन्ना, गेहूं, कपास, नील, तिल्ली वे उगाने लगे । पर इन फसलों को सिंचाई खूब लगती है । सब किसानों के पास न पक्के कुंए थे न मोठ रहट का इन्तजाम । तो जाहिर है कि साधन संपन्न किसान ही ज्यादातर ये फसलें उगा पाए और उन्होंने ही बाजार में इन्हें बेच कर मुनाफा भी कमाया ।

साधारण किसान इस प्रकार तरक्की न कर पाए । कभी बाजार में फसल के अच्छे दाम नहीं मिले तो उनके पास इतने पैसे भी नहीं बनते

थे कि लगान भर सकें । तब उन्हें महाजन से कर्जा ले कर लगान चुकाना पड़ता था ।

खेत बिन बोए न रहे :

एक बार कर्जे के मारे तीन किसान परिवारों ने तय किया कि वे करारिया गाँव छोड़ कर दूसरी जगह चले जाएँगे । उन्होंने सुन रखा था कि उस जगह का आमिल नए आकर बसने वालों को लगान में छूट दे रहा है । वह उन्हें हल-बैल खरीदने के लिए भी तकवी (उधार के पैसे) दे रहा है ।

इन तीन परिवार के लोगों ने जब जाने का फैसला किया तो अपने गाँव के पटेल को बताने गए । पटेल त्योरियाँ चढ़ा कर बोला, "बहुत अच्छी बात है । पर तुम लोगों के नाम से इस गाँव में बीस बीघा जमीन है । उसका लगान कौन भरेगा ? जागीरदार का आमिल तो पूरे पैसे माँगेगा चाहे खेतों में फसल हुई हो या नहीं । तुम लोगों ने ज़मीन छोड़ कर भागना क्या मज़ाक समझ रखा है ।"

किसानों ने जवाब दिया - "मगर ज़मीन के साथ हम क्या करें ? हमारे पास न हल-बैल हैं न बीज हैं । पूरी किसानी उधार पर चल रही है - खाने के लिए कुछ बचता नहीं ।"

यह सुन कर पटेल की आवाज़ कड़क उठी - "जाओ देखें कैसे गाँव से भागते हो । मैं ज़मीन्दार के सिपाहियों को भेजकर तुम्हें पकड़वा लाऊँगा । फिर कारागार में भूखों मरोगे ।"

इस धमकी से किसान डर गए । चुपचाप अपने घर लौट आए । एक महीना ही बीत पाया था कि उनमें से एक परिवार रातों-रात गाँव से भाग निकला और खूब खोजबीन के बाद भी उसका पता न चला ।

गाँव के पटेल ने लोगों को जाने से रोका । उसने ऐसा किस के भले के के लिए किया ?

ज़मीन्दार सिपाही रखते थे । इन सिपाहियों के काम के बारे में तुम अब तक क्या समझ पाए ?

मुग़लों के समय में ज़मीन बहुत खाली पड़ी थी । जो जितनी चाहे जमीन जोत सकता था । इसी कारण दुख-दर्द के मारे किसान गाँव छोड़ कर

दूसरी जगह पर खेती करने की आशा में अक्सर चले जाया करते थे । इस बात से बादशाह के अधिकारी, जागीरदार व ज़मीन्दार सभी परेशान रहते थे । वे तो यही चाहते थे कि उनके इलाके में ज्यादा से ज्यादा किसान आ कर बसें और ज्यादा से ज्यादा जमीन पर खेती करें । इसी लिए वे नए आए लोगों को जमीन देते थे और लगान में छूट भी ।

वे अपने इलाके से भाग कर जाते हुए किसानों को रोकने की भी भरपूर कोशिश करते थे । अगर वे किसान को भागने से न रोक पाए तो किसी दूसरे को उसके खेत जोतने के लिए दे देते थे ताकि फसल हो और लगान पूरी भरी जा सके । हाँ, यह जरूर था कि अगर जमीन का मालिक लौट आता था तो उसे उसकी जमीन वापिस मिल जाती थी । पर उसकी ग़ैर-हाजिरी में उसके खेत बिन बोए नहीं पड़े रह सकते थे । क्योंकि अगर ऐसा होता और लगान पूरी न मिलती तो जागीरदारों, ज़मीन्दारों और बादशाह का काम कैसे चलता ? बकर खान जैसे अमीरों का क्या होता ? क्या इस स्थिति की कोई बात आज भी देखने को मिलती है ?

शासन करने वाला वर्ग :

मुग़ल साम्राज्य में दिन ब दिन बकर खान जैसे बड़े अमीरों की संख्या बढ़ रही थी । अकबर का शासन जब शुरू हुआ तो केवल 51 बड़े अमीर थे । यह संख्या लगातार बढ़ती गई और सन् 1700 में 500 से ज्यादा बड़े अमीर हो गए ।
आखिर इन सबका खर्चा कहाँ से निकलता ?

यही कारण था कि धीरे-धीरे करारिया व अन्य गांवों से हर बार कोई न कोई नया कर वसूल करने की कोशिश की जाने लगी । जागीरदार इसी प्रयास में रहते कि कैसे ज्यादा से ज्यादा लगान वसूल किया जाए ? वे कभी यह कोशिश करते कि पटवारी का भुगतान उन्हें न करना पड़े और इस काम के पैसे किसानों से ही वसूल कर लिए जाएं तो कभी जमीन की नपाई के नाम पर किसानों से कुछ वसूलने की कोशिश करते ।

करारिया में भी कर बढ़े :

सन् 1665 की बात होगी । करारिया गांव राजा जय सिंह को जागीर में दिया हुआ था ।

खरीफ की फसल कटते ही राजा जय सिंह का आमिल लगान वसूल करने गांव पहुंचा । उसने जाते ही ज़मीन्दार से कहा - इस बार एक नया लगान लिया जाएगा । पटवारी का भत्ता किसान देंगे, जागीरदार नहीं देगा ।"

यह सुनते ही ज़मीन्दार भड़क उठा । बोला-" यह कैसे हो सकता है ? जिस तरह आप किसानों से कर ले रहे हैं उनके पास खाने के लिए भी नहीं बचता है । स्थिति यह बनती जा रही है कि हम किसानों से वो कर तक वसूल नहीं कर पा रहे हैं जो हमेशा से हमारा हक रहा है । आप जाइए अपने जागीरदार को बता दीजिए- इस गांव के लोग यह नया कर नहीं देंगे ।"

ज़मीन्दार ने आमिल का विरोध किस के भले के लिए किया ?

पंचायत में भी किसानों ने आमिल को बहुत सुनाया और कहा कि आसपास के क्षेत्र में कोई यह नया कर नहीं देता तो वे क्यों दें ? इतना सब सुन कर भी आमिल अटल रहा और यह धमकी देते हुए लौटा कि अगर करारिया से पटवारियों को कर नहीं मिला तो फौज लाकर तबाही मचा देगा ।

अगले दिन पंचायत में गांव वालों ने तय किया कि वे शिकायत करने राजा जय सिंह के पास आगरा जाएंगे। उन्होंने आसपास के कई गांव के लोगों को साथ कर लिया और करीब 20 लोग आगरा पहुंचे ।

जागीरदार से शिकायत

राजा जय सिंह के आलीशान महल में किसानों ने अपने हालात सुनाए । एक किसान बोला-"महाराज पिछले साल मेरे खेत में पचास मन धान उगा । 25 मन आमिल लगान में ले गया । ज़मीन्दार ने अलग से सात मन ले लिए । फिर पिछला बकाया बता कर आमिल ने पांच मन और ले लिए । इसके ऊपर गांव के महाजन ने दो मन वसूल कर लिए क्योंकि पिछले

साल मुझे उससे बीज के लिए उधार लेना पड़ा था । अब इस वर्ष एक नया कर लगाया जा रहा है । हम कहां से देंगे और देंगे तो खाएंगे क्या ?"

इस तरह की बातें सुन कर जागीरदार कर हटाने को मंजूर हो गए और कहा कि वे आमिल को मना कर देंगे । किसान राहत की सांस लेकर गांव को चले ।

पर अगले ही वर्ष राजा जयसिंह का तबादला हुआ और एक नया जागीरदार आया । उसके आमिल ने फिर से नया कर वसूलने की कोशिश की । जब ऐसा हुआ तो करारिया गांव के 40 परिवार गांव छोड़कर दूसरे गांव चले गये । अब आमिल बहुत परेशान हो गया । अगर किसान नहीं लौटे तो रबी की फसल कोई नहीं बोएगा । फिर लगान में कमी होगी । उसने जागीरदार को खबर की । जागीरदार ने जवाब दिया कि भागने वालों को किसी भी तरह ढूंढकर वापिस ले आओ । आमिल ने गांव में जाकर पटेल और ज़मीन्दार से पूछताछ की कि किसान कहां भागे होंगे । फिर उसने अपने आदमियों को पास के 20 गांवों में भेजा पता लगाने ताकि वे किसानों को मना कर लाएं । तीस एक परिवारों को खोजकर मनाया भी गया । मगर दस परिवार के लोग जाने कहां जाकर बस गये । वे अपने गांव वापिस नहीं लौटे ।

बादशाह से फरियादें :

इस तरह देहली, आगरा, बयाना और आसपास के गांवों में स्थिति लगातार बिगड़ती गयी। सब तरफ जागीरदारों और उनके आमिलों की ज्यादतियां बढ़ गई थीं । कई गांव के किसान फरियाद लेकर बादशाह औरंगजेब के पास भी पहुंचे । बादशाह ने उन्हें वादा तो किया कि उनकी रक्षा की जायेगी - मगर वह अपने जागीरदारों के खिलाफ कुछ नहीं करना चाहता था । उसने केवल अपने अधिकारियों के नाम कई फरमान जारी किये कि गैर कानूनी करों को वसूल न किया जाये । किसी भी हालत में किसान से आधी उपज से अधिक न ली जाये, उन्हें खेती बढ़ाने में सहायता दी जाये । मगर कोरी बातों को कौन मानने वाला था ?

ज़मीन्दारों का विद्रोह :

इस बीच करारिया गांव में खबर पहुंची कि मथुरा के पास गोकुल जाट नामक एक ज़मीन्दार ने बादशाह के खिलाफ विद्रोह कर दिया है और आसपास के गांव के किसान उसके साथ हो लिए हैं । करारिया गांव का ज़मीन्दार भी उनके साथ होने की

बात सोचने लगा- मगर उसे डर भी था- आखिर मुग़ल सेना का सामना कैसे करें। कुछ ही दिन बाद यह खबर आयी कि युद्ध में गोकुल जाट मारा गया।

इस तरह समय बीतता गया। कहीं एकाध ज़मीन्दार विद्रोह करते, कहीं गांव वाले गांव छोड़कर भाग जाते, और कहीं विद्रोही जमीन्दारों के साथ हो जाते।

किसानों को तो मुग़ल शासन (यानि जागीरदार और बादशाह) से यह शिकायत थी कि उनसे हद से ज्यादा लगान लिया जाता है। पर ज़मीन्दारों को भी मुग़ल शासन से क्या यही शिकायत हो सकती थी?

तुम जानते हो कि ज़मीन्दारों को किसानों से कम लगान देनी पड़ती थी। उन्हें लगान में से एक हिस्सा भी मिलता था। उल्टे वे खुद किसानों से कई तरह की वसूलियां अलग करते थे। पुराने समय के भोगपतियों की तरह (इनके बारे में तुम कक्षा-7 में पढ़ आए हो) ज़मीन्दार समय-समय पर किसानों से उनके घर पर, ढोर पर, शादी ब्याह पर, यात्रा पर, त्योहार पर- कई कर वसूल करने के आदी थे।
फिर ज़मीन्दारों ने मुग़ल शासन की खिलाफत क्यों की?

इस प्रश्न पर विचार करो-

अगर मुग़लों का शासन न होता तो क्या ज़मीन्दारों को ज्यादा लाभ मिलता?

इस विषय में कुछ वाक्य लिखो।

किसानों नें मुग़ल शासन से लड़ने वाले ज़मीन्दारों का साथ दिया, क्या यह उनके हित में था? समझा कर बताओ।

गोकुल जाट के मरने के 14 साल बाद फिर एक विद्रोह की लहर चली। करारिया गांव से कुछ 30 किलोमीटर दूरी पर सिनसिनी नाम के गांव के ज़मीन्दार ने सन् 1683 में विद्रोह कर दिया उसका नाम था राजा राम जाट। उसने किसानों से वसूल किया लगान जागीरदार को देने से इन्कार कर दिया क्योंकि वह अपना स्वतंत्र राज्य बनाना चाहता था।

करारिया और आसपास के गांवों में हलचल मची थी। खबर थी कि जागीरदार नवाब खान ए जहान सिनसिनी की तरफ बढ़ रहा है। आमेर के राजा बिशन दास ने भी

किसान विद्रोह में शामिल होने निकल पड़े ।

अपनी सेना खान ए जहान की सहायता के लिए भेजी है ।

इस बीच एक दिन करारिया गांव में सिनसिनी से कुछ किसान आ पहुंचे । करारिया गांव में भी उनके रिश्तेदार थे । उनके यहां वे आकर रहे । उसी दिन शाम को उन्होंने सारे गांव वालों को बुलाया और उन्हें सिनसिनी और राजा राम जाट की बातें बताई । उन्होंने कहा-"अब की बार तो हम इन जागीरदारों के दांत खट्टे कर के ही रहेंगे । चाहे कोई नवाब आये या आमेर का राजा । आप लोग भी हमारी मदद कीजिए ।" एक किसान ने कहा, "हमें मुग़लों की फौज़ से लड़ने के लिए नौजवान चाहिये । आपके गांव से अगर दस नौजवान भी इकट्ठे हों तो बहुत सहायता होगी ।"

तुरन्त भीड़ में से एक आवाज आई-"मैं तैयार हूं । मैं सिनसिनी चलूंगा मुग़ल फौज़ से लड़ने ।" इतने में कई और आवाज़ें उठीं, "हां, मैं भी", "हां, मैं भी चलूंगा"। इस तरह 22 लोग तैयार हुए। उसी रात को वे गांव से अपनी-अपनी पोटलियां बांधकर और अपनी-अपनी तलवारें और भाले लेकर चले ।

इस तरह पन्द्रह बीस दिन गुज़र गये । एक दिन सिनसिनी जाने वालों में से एक लड़का घोड़े पर हांफते हुए करारिया आ पहुंचा । वह गांव के

बीच खड़े होकर चीख-चीखकर बोलने लगा- "सुनो-सुनो, गांव वालों, सुनो, हमने कैसे नवाब खान ए जहान और आमेर राजा बिशन दास की सेनाओं को हराया । सुनो हमने कैसे जागीर-दारों और फौजदारों को भगाया ।" गांव वाले इकट्ठे हुए तो उसने पूरी बात बतायी । राजा राम जाट की सेना ने नवाब खान ए जहान के दो हमलों को पीछे कर दिया था । नवाब की बुरी हालत हो गयी थी और वो भाग खड़ा हुआ था ।

गांव में खुशी और आश्चर्य की लहर चल गयी । क्या मुग़लों की फौज को जाट किसानों ने हराकर भगा दिया ! यह कैसे हो सकता है ? सब लोग ज़मीन्दार को मनाने उसके घर की ओर चले, कि वो भी राजा राम जाट के साथ हो जाये ।

तो इस तरह शुरू हुआ करारिया गांव वालों का विद्रोह । इस विद्रोह और कई ऐसे विद्रोहों की वजह से मुग़लों का शासन लड़खड़ाने लगा । उन्हें लगान मिलना बंद होने लगा । एक-एक रुपये वसूल करने के लिए उन्हें लड़ना पड़ा ।

"सुनो हमने नवाब खाने - जहान की फौज को हराया"

अभ्यास के प्रश्न :

1. मुग़लों के समय में यूरोप की खेती और भारत की खेती में क्या फर्क था ?

2. पूरणमल बयाना में करारिया गांव क्यों आया था ?

3. लगान लेने की नई व्यवस्था में क्या बातें बदलीं और क्या बातें पहले जैसी रहीं - सूची बनाओ ।

4. करारिया गांव का ज़मीन्दार सूरज देव जाट जागीरदार के आमिल की किस प्रकार से मदद करता था ?

5. बाज़ार में फसल बेचने से करारिया के संपन्न किसानों पर क्या असर पड़ा और साधारण किसानों पर क्या असर पड़ा ?

6. करारिया के पटेल ने गांव छोड़ कर जाने वाले तीन किसानों को किस तरह रोका और क्यों ?
मुग़ल काल में अगर कोई किसान गांव खेत छोड़ कर चला जाता था तो उसकी ज़मीन का क्या किया जाता था ?

7. जागीरदार, ज़मीन्दार अपने इलाके में ज्यादा से ज्यादा किसानों को क्यों बसाना चाहते थे ? इसके लिए वे क्या-क्या कोशिशें करते थे ?

8. ज़मीन्दार किसानों से क्या लेते थे ? जब जागीरदार ज्यादा कर लेने लगे तो ज़मीन्दार को परेशानी क्यों हुई ?

9. किसान अपनी समस्याएं सुलझाने की कई कोशिशें करते थे । तुमने इन कोशिशों के क्या उदाहरण पाठ में देखे ?

10. क- राजाराम जाट ने किसके खिलाफ विद्रोह किया और क्यों ?
ख- अगर राजाराम जाट नवाब खाने जहान से हार जाता तो, क्या करारिया गांव का ज़मीन्दार विद्रोह में शामिल होता ? तुम्हें क्या लगता है- कारण सहित बताओ ।

बादशाह औरंगज़ेब का समय 5

सन् 1658-1707

सन् 1658 में बादशाह शाहजहान बुरी तरह से बीमार पड़ गया। सब लोग यह मानने लगे कि बादशाह की कुछ ही दिनों में मृत्यु हो जायेगी। शाहजहान के चार पुत्र थे- दारा, औरंगज़ेब, शुजा और मुराद। चारों भाई खुद बादशाह बनना चाहते थे। आगरा में शाहजहां ने बड़े बेटे दारा को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। मगर उसके बाकी तीन बेटों ने इस बात को नहीं माना। सब अपनी-अपनी सेना लेकर तख्त हथियाने के लिए आगरा की ओर चल दिये। भाइयों के बीच कई युद्ध हुए और अंत में औरंगज़ेब सफल रहा।

औरंगज़ेब को साम्राज्य के अधिकतर अमीरों का समर्थन प्राप्त था। वह प्रमुख राजपूत राजाओं और अमीरों को अपने साथ करने में भी सफल रहा था। उसकी सेना भी अन्य भाइयों की सेनाओं की तुलना में मजबूत थी और औरंगज़ेब खुद एक कुशल सेनापति था। इन्हीं कारणों से वह युद्ध जीत पाया।

अपने पिता शाहजहान के जीते जी औरंगजेब ने अपने आप को बादशाह घोषित कर लिया। उसके बाद शाहजहान को अपनी मृत्यु तक 12 वर्ष कैद में रहना पड़ा।

विद्रोह और जागीरदारों की समस्यायें:

हर बादशाह की तरह औरंगजेब को भी कई समस्याओं से जूझना पड़ा। क्या तुम अन्दाज लगाकर सोच सकते हो कि उसके सामने क्या समस्याएं रही होंगी? एक बड़ी समस्या तो किसानों और जमींदारों की तरफ से थी। तुम जानते हो आगरा और बयाना के आसपास के किसान और जमीन्दार विद्रोह करने लगे थे। इस तरह के छोटे बड़े कई विद्रोह साम्राज्य में जगह-जगह होने लगे।

1672 में हरयाणा में सतनामी नाम के लोगों का विद्रोह हुआ। सतनामी संप्रदाय के लोग अधिकतर किसान और कारीगर थे। ये लोग धर्म या जाति के भेद-भावों को नहीं मानते थे। हिन्दू हो या मुसलमान, ब्राह्मण हो या भंगी उनके लिए समान थे। वे किसी भी प्रकार के अत्याचार का कड़ा विरोध करते थे।

एक बार मुग़ल राज्य के एक अधिकारी ने सतनामी किसानों को अपमानित कर दिया तो गांव वालों ने उसकी पिटाई कर दी । अब मुग़ल सेना किसानों को सबक सिखाने आ पहुंची । सतनामी किसानों और कारीगरों ने उसका जम के मुक़ाबला किया । पर, मुग़लों ने अनेक राजपूत राजाओं की मदद से सतनामियों को हरा दिया ।

साम्राज्य के उत्तर पश्चिम में अफ़ग़ान कबीले रहते थे । वे इस्लाम धर्म के रोशनिया संप्रदाय के विचारों को मानते थे । कबीले मुग़लों से स्वतंत्र होकर अपना स्वतंत्र राज्य बनाना चाहते थे । 1667 से 1675 के बीच कई कबीलों ने मिलकर मुग़लों से टक्कर ली । शुरू में वे मुग़लों की बड़ी-बड़ी सेनाओं को भी हरा पाये । मगर आपस के मतभेदों के कारण उनकी एकता में फूट पैदा हो गई और मुग़ल बादशाह अफ़ग़ान कबीलों पर फिर, से अपना अधिकार जमा पाये । इस विद्रोह को कुचलने में भी राजपूतों ने औरंगज़ेब को खूब सहायता दी ।

पंजाब में कई किसान, कारीगर और व्यापारी सिक्ख धर्म को मानते थे । उनके गुरू तेग़ बहादुर गांव-गांव में जाकर लोगों के बीच अपने धर्म का प्रचार करते थे । इससे शासन को डर बन गया कि कहीं किसान भड़क न जाएं । तेग़ बहादुर के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने के लिए औरंगज़ेब ने उन्हें देहली लाकर बन्दी बना लिया । कुछ समय बाद देहली में उन्हें मार डाला गया । इसके बाद उनके पुत्र गुरू गोविन्द सिंह ने सिक्खों की सेना बनायी और वे पंजाब के राजाओं से टक्कर लेने लगे । ये राजा मुग़ल राज्य के अधीन थे । औरंगज़ेब ने इन राजाओं की पूरी मदद की, और सिक्खों को दबा के रखा । मगर आगे आने वाले समय में सिक्ख फिर से एक बड़ी सेना के साथ मुग़लों का मुक़ाबला करने लगे ।

ये औरंगज़ेब के समय में होने वाले कुछ बड़े विद्रोह थे । मगर इनके अलावा कई और छोटे-छोटे विद्रोह भी हुए ।

मुग़लों के खिलाफ हुए विद्रोहों के जो कारण नज़र आते हैं लिखो । विद्रोहों को कुचलने में औरंगज़ेब को किन-किन की मदद प्राप्त हुई ?

जागीरों की कमी :

विद्रोह के कारण आए दिन युद्ध होता रहता । इसलिए परेशान होकर किसान अपने गांव खेत छोड़कर भाग जाते थे । नतीजा यह हुआ कि

लगान की वसूली में कमी होने लगी ।

कई जगहों पर किसान खुद जागीरदारों के खिलाफ विद्रोह कर रहे थे । जागीरदारों की अपनी जागीर के गांवों से ही लगान वसूल करना मुश्किल हो जा रहा था । उनकी आमदनी इन कारणों से घटने लगी थी ।

दूसरी तरफ राज्य में जागीरदारों की संख्या बढ़ रही थी । पर अब उनके लिए पर्याप्त जागीरें नहीं थीं । इतने सारे ऊंचे पद के जागीरदारों को वेतन में बड़ी-बड़ी जागीरें देने के लिए राज्य में गांव शहर कम पड़ने लगे थे । जो थे उनसे भी लगान कम मिल रही थी ।

जागीरों की कमी के कारण जागीरदारों में असंतोष और तनाव बढ़ने लगा । औरंगज़ेब कहता था- "मेरी स्थिति एक ऐसे वैद्य जैसी है, जिसके पास एक अनार है और सौ बीमार व्यक्ति हैं । वह उस एक अनार को किस-किस को दे ।"

इस कथन में, अनार यानी क्या ?

और बीमार यानी क्या ?

समस्या का एक हल
जागीरों में खेती बढ़ाना :

इस स्थिति से बचने का एक विकल्प था जागीरों के अन्दर ही खेती बढ़ाना । आखिर इसी तरह जागीरदारों की आमदनी बढ़ सकती

शिकार पर औरंगज़ेब

थी । औरंगज़ेब ने खेती के सुधार के लिए कई फरमान जारी किए । उनमें से एक है गुजरात के दीवान के नाम फरमान : यह 1669 में जारी किया गया था । इस फरमान का कुछ अंश पढ़ो ।

"हर आमिल को किसानों के प्रति हमेशा सहानुभूति दिखानी चाहिये । उसे किसानों के हालातों की पूछताछ करनी चाहिए, और उन्हें खेती बढ़ाने के लिए प्रेरित करना चाहिये ताकि हर खेती लायक ज़मीन पर खेती हो सके ।

अगर वे खेती की स्थिति में होते हुए भी खेती नहीं कर रहे तो आमिल को उन पर जोर ज़बरदस्ती और पिटाई का उपयोग करना चाहिये । अगर उनके पास हल बैल नहीं तो उन्हें सरकार की तरफ से तकाबी (उधार) दिया जाना चाहिए ।"

मगर उस समय के दस्तावेजों को पढ़कर लगता है कि इस तरह के फरमानों का खास असर नहीं पड़ा । खेती-बाड़ी में बढ़ोत्तरी नहीं हुई । बादशाह औरंगज़ेब का यह प्रयास खेती बढ़ाने में असफल रहा ।

औरंगज़ेब के इस फरमान का उद्देश्य

यहां लिखो -

"मुग़ल काल के गांव" पाठ में तुमने

किसानों की स्थिति समझी ।

किसानों के उद्देश्य और बादशाह

के उद्देश्य क्या मिलते-जुलते लगते हैं ?

दूसरा विकल्प

राज्य बड़ा करना :

औरंगज़ेब के सामने जागीर की कमी से निपटने के लिए एक और विकल्प था । वह था अपने साम्राज्य का विस्तार करना-दूसरे राज्यों को अपने राज्य में मिला लेना ।

मुग़ल साम्राज्य के पूर्व में अहोम राज्य था । 1663 में औरंगज़ेब के एक अमीर-मीर जुमला ने अहोम राजा को हराकर उसके राज्य को मुग़ल साम्राज्य में मिला लिया । मगर कुछ ही वर्षों में अहोम राजा मुग़ल सेना को अपने राज्य से भगा पाया और फिर से स्वतंत्र हो गया।

दक्षिण भारत में मुगल साम्राज्य का विस्तार :

औरंगज़ेब के समय में दक्षिण में दो महत्वपूर्ण राज्य थे-बीजापुर और गोलकुण्डा । इन दोनों राज्यों को सन् 1686-7 में औरंगज़ेब ने हरा
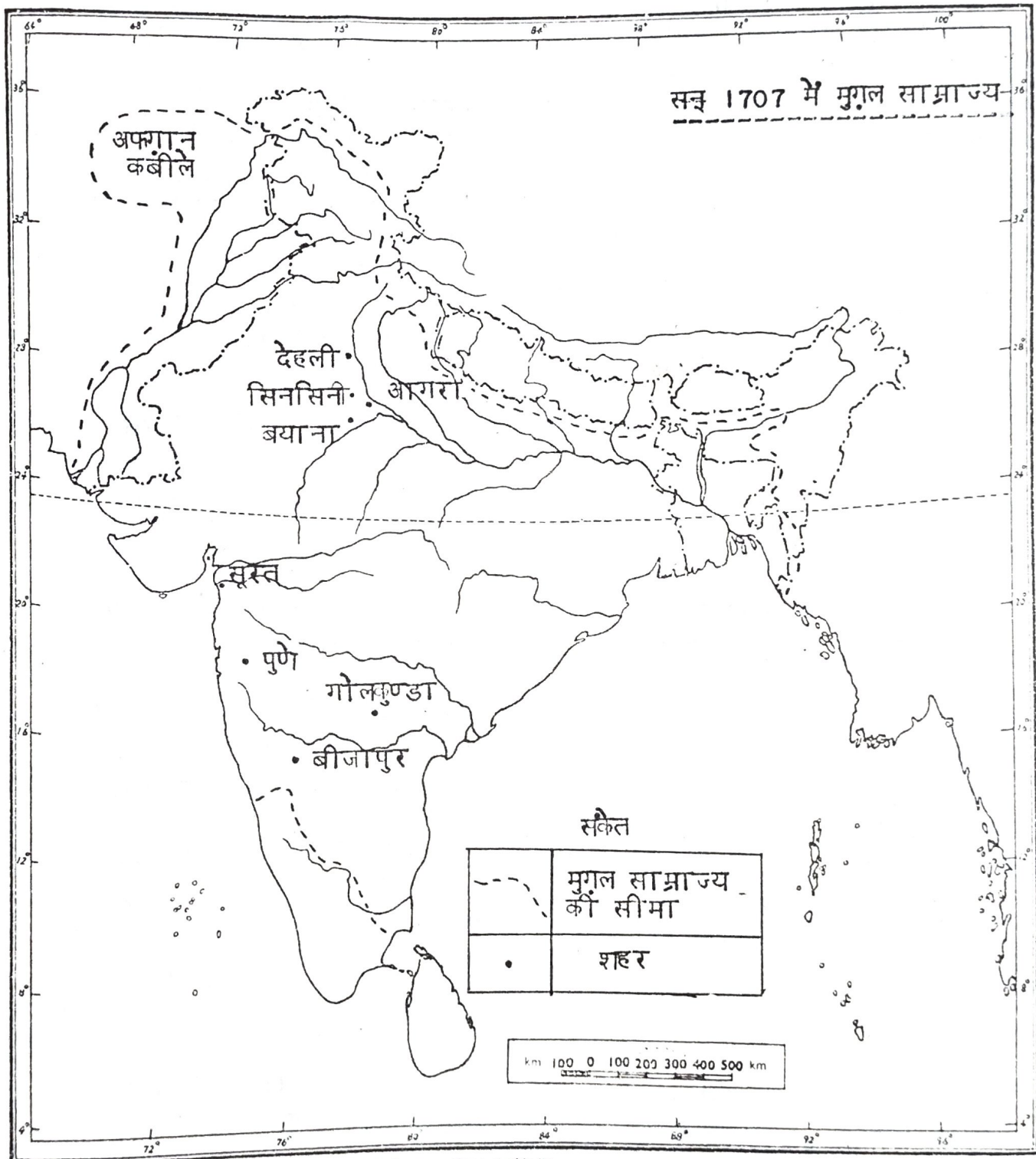
Based upon Survey of India map with the permission of the Surveyor General of India.

The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.

कर मुग़ल साम्राज्य में मिला लिया । इस प्रकार मुग़ल साम्राज्य अफगानिस्तान से लेकर तमिलनाडु तक फैल गया । इस समय मुग़ल साम्राज्य अपनी शक्ति और विस्तार की चरम सीमा पर पहुँच गया ।

नक्शे में देखो सन् 1707 में मुगल साम्राज्य कहाँ से कहाँ तक फैला था ?

मगर दक्षिण भारत पर विजय पाकर भी जागीर की समस्या का हल न मिला ।

ये राज्य इतने ताकतवर थे कि सिर्फ सेना के बल पर उन्हें हराया न जा सका ।

दक्षिण के राज्यों को हराने के लिए उन राज्यों के प्रमुख सेनापति व अधिकारियों को ऊँचे पद व जागीरें दी गयीं । ये अमीर मुग़लों के साथ हो गये और इस प्रकार औरंगज़ेब बीजापुर और गोलकुण्डा जैसे ताकतवर राज्यों को हरा पाया ।

अब जितना लगान उन दो राज्यों से मिलता उतना ही वहाँ के अमीरों व अन्य नये अमीरों पर खर्च होने लगा । इस प्रकार नये राज्य जीत कर मुगलों को बहुत फायदा नहीं हुआ

राज्य का विस्तार करके भी जागीर की समस्या हल क्यों नहीं हुई — अपने शब्दों में कहो ।

शिवाजी और मराठे :

दक्षिण भारत में औरंगज़ेब को एक और ऐसी ताकत से भिड़ना पड़ा जिसे जीतना उसके लिये आसान न था ।

ये थे महाराष्ट्र और कर्नाटक क्षेत्र में रहने वाले लोग मराठे ।

वे अच्छे सैनिक थे और उन्हें बीजापुर, गोलकुण्डा व मुग़ल राज्य की सेनाओं में भर्ती किया जाता था ।

उन दिनों मुग़लों और दक्षिण के राज्यों के बीच लगातार युद्ध चलता रहा जिस कारण गाँवों की लूटपाट होना सामान्य हो गया । इन सेनाओं के डर से मराठे किसान गाँव छोड़कर भाग जाते और खुद किसी न किसी राज्य की सेना में भर्ती हो जाते थे ।

एक मराठा सैनिक था शाहजी भोंसले। उसका बेटा था शिवाजी ।

शाहजी ने शिवाजी को अपनी एक जागीर-पुणे दे रखी थी ।

शिवाजी 18 साल की उम्र से ही एक सेना इकट्ठी करने लगा । वह आस-पास के ज़मींदारों के किलों पर हमला बोल कर उनके किलों को लूट आता था । धीरे-धीरे उसने कई किलों को अपने कब्ज़े में कर लिया ।

साथ-साथ उसकी सेना भी बढ़ती गयी । सैकड़ों मराठा किसान लूट और तनख्वाह की आशा में शिवाजी के साथ हो गये ।

अब शिवाजी अपनी सेना के साथ कभी मुगल साम्राज्य के गाँव व शहरों को लूटता तो कभी बीजापुर और गोलकुण्डा राज्य को । एक बार शिवाजी ने मुग़ल साम्राज्य के सबसे धनी और सम्पन्न शहर सूरत पर हमला बोला और वहाँ से करोड़ों रुपयों का माल लूट कर ले भागा ।

इसके बाद औरंगजेब के एक बड़े अमीर राजा जय सिंह ने शिवाजी के साथ एक संधि या समझौता किया । जय सिंह ने शिवाजी को आगरा भेजा ।

शिवाजी औरंगज़ेब से मिलने आगरा गया मगर औरंगज़ेब ने उसका उचित सम्मान नहीं किया

शिवाजी

और जेल में डाल दिया । शिवाजी जेल से भाग कर महाराष्ट्र लौटा । अब वह एक स्वतंत्र राज्य स्थापित करने की कोशिश में लग गया ।

सन् 1674 में उसने अपने आपको एक स्वतंत्र राज्य का राजा घोषित किया और अपना राज्याभिषेक भी करवा लिया । इसके बाद भी शिवाजी लगातार दक्षिण में और मुग़ल साम्राज्य पर हमला बोल कर लूट-पाट करता रहा ।

शिवाजी ने अपनी छोटी-सी सेना के बल पर कई बार मुग़लों की विशाल सेनाओं को हराया ।

ऐसी बड़ी सेनाओं से लड़ने का उसके पास एक निराला तरीका था । वह दुश्मन से सीधे न लड़ कर उस पर

अचानक हमला करके क्षति पहुंचाता और भाग जाता था । उसकी सेना बड़ी तेजी से एक जगह से दूसरी जगह पहुंच पाती थी, जबकि मुग़ल सेना बड़ी लम्बी चौड़ी होने के कारण धीरे-धीरे चलती थी । बार-बार अचानक हमले करके शिवाजी मुग़ल सेना को थका कर फिर सीधे टक्कर लेकर उन्हें हराता था ।

शिवाजी ने महाराष्ट्र में अपना राज्य बनाया और किसानों से लगान इकट्ठा करने की व्यवस्था की। इसके साथ-साथ वह मुग़ल राज्य व दक्षिणी राज्यों के कई हिस्सों से लगान वसूल करने लगा । इस विशेष लगान को चौथ कहते थे । जिस क्षेत्र के लोग चौथ देना मान जाते थे उस क्षेत्र में शिवाजी लूटपाट नहीं करता था । बाकी क्षेत्रों पर वह लगातार हमला करके, लूटपाट करके धन इकट्ठा करता था ।

यह धन मराठा सेनापतियों यानी सरदारों के बीच बांट दिया जाता था । ये सरदार ही शिवाजी के राज्य के अलग-अलग हिस्सों पर शासन करते थे । गांव में लोग पहले ही मुग़ल जागीदारों को लगान देते परेशान हो गये थे । अब उन्हें इन मराठा सरदारों को हर साल चौथ देनी पड़ रही थी यानी जितनी लगान वे मुगलों को देते थे, उसका एक चौथाई और उन्हें अब मराठों को देना पड़ता था ।

सन् 1680 में शिवाजी का निधन हुआ । उसके बाद उसका बेटा शंभाजी राजा बना मगर औरंगज़ेब ने उसे हरा कर मार डाला और उसके बेटे को बंदी बना लिया । पर इस सब के बाद भी वह मराठों की ताकत को खत्म न कर सका । शिवाजी, उसके बेटे और पोते के न होते हुए भी सारे मराठा सेनापति व सरदार अपने-अपने इलाकों से मुग़लों पर हमला करने लगे । इन हमलों का सामना करते-करते मुग़ल सेना थक गयी । इन्हीं मुकाबलों के दौरान औरंगज़ेब के जीवन का अन्त भी हो गया ।

मराठों के बारे में छह महत्वपूर्ण वाक्य रेखांकित करो ।

चौथ क्या थी - (क) अपने राज्य के किसानों से ली गयी लगान ।
(ख) दूसरे राज्य के _ किसानों से ली गयी लगान ।

मुग़ल साम्राज्य में धार्मिक स्थिति और औरंगज़ेब की भूमिका :

अपने देश के इतिहास में औरंगज़ेब धार्मिक कट्टरता और दूसरे धर्मों को सहन न करने के लिये प्रसिद्ध है । उसके शासनकाल

में दरबार से दूसरे धर्मों के रीति-रिवाज हटाये गये, कई मंदिर तोड़े गये और जिज़िया लगाया गया । औरंगज़ेब की इस कट्टर नीति के क्या कारण थे और इसका क्या महत्व था - इसे समझने के लिये हमें मुग़ल साम्राज्य की धार्मिक स्थिति को समझना होगा और राजनैतिक स्थिति को भी।

तुमने दूसरे पाठ में पढ़ा था कि बादशाह अकबर ने सब धर्मों के बीच क्या समानताएं पायी थीं और वह सब धर्मों का समान आदर करने लगा था । साथ ही अकबर ने अपने दरबार में कई धर्मों से अलग अलग रीति-रिवाज अपनाये थे । मुग़ल दरबार में कई ऐसे हिन्दू व मुसलमान थे जो सब धर्मों की समानता में विश्वास करते थे । ऐसे लोग इस समानता को समझने के लिये विभिन्न धर्मों का गहराई से अध्ययन करने लगे थे । औरंगज़ेब का भाई दारा भी इनमें से था । उसने वेदों और उपनिषदों का फारसी भाषा में अनुवाद करवाया ताकि सब लोग उनका अध्ययन कर सकें ।

दारा ने उपनिषदों व मुसलमान सूफी संतों के विचारों में समानता पायी और इस पर उसने एक पुस्तक भी लिखी । उसका कहना था कि वेदों और कोरान के विचार एक -

चित्र : यह चित्र करीब सन् 1650 में बनाया गया था । इसमें क्या दिखाया गया है ? इस चित्र में किस बात का उदाहरण मिलता है ।

दूसरे के विरुद्ध नहीं बल्कि एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं ।

इस तरह की बातें तो पहले से कई सूफी संत व भक्त संत कहते आ रहे थे । अक्सर सूफी संत व जोगी एक साथ रहते और एक-दूसरे से विचारों का आदान-प्रदान करते ।

परम्परावादियों का विरोध :

कबीर, नानक, दादू दयाल जैसे कई संत हुए जो अपने आपको हिन्दू या मुसलमान नहीं मानते थे । वे परम्परावादी पंडित और मौलवियों दोनों के खिलाफ थे । इन संतों ने लोगों के बीच सब धर्मों से

लिये गये, मिले-जुले विचार रखे। ये विचार किस तरह के थे - तुम हिन्दी की पुस्तक में इन संतों के दोहे पढ़ कर समझो।

इन सब बातों की वजह से आम लोगों में भी धर्म और रीति-रिवाज के मामलों में आपसी लेन-देन होने लगा। लोगों के बीच यह विचार फैलने लगा कि अल्लाह और ईश्वर एक ही है। मुसलमानों ने हिन्दुओं से योग, संतों का आदर करना जैसी कई बातें अपनायी, जबकि हिन्दुओं ने भी मुसलमानों से एक-ईश्वरवाद, पीरों का आदर करना सब लोगों की समानता जैसी बातों को अपनाया।

मगर परम्परावादी पंडित व मौलवी कबीर और नानक जैसे संतों का विरोध करते रहे। वे नहीं चाहते थे कि हिन्दू व मुसलमान अपनी रूढ़ीवादी परम्पराओं से हट कर नयी बातें अपनायें।

मुग़ल दरबार में मौलवियों का महत्वपूर्ण स्थान था। इनमें से कई परम्परावादी मौलवी इस बात पर जोर दे रहे थे कि हिन्दू व इस्लाम धर्म अलग-अलग हैं और इस्लाम धर्म ही सबसे श्रेष्ठ धर्म है। वे यह मानते थे कि मुसलमानों को दूसरे धर्मों की किसी बात को अपनाना नहीं चाहिये इन मौलवियों को शायद यह डर था कि धर्मों के बीच लेन-देन से इस्लाम धर्म में इतनी नयी बातें आ जायेंगी कि इस्लाम की पुरानी परम्परा नष्ट हो जायेगी और उसके साथ उनका महत्व भी कम हो जायेगा।

परम्परा से लगाव के अलावा मौलवियों के डर में उनका स्वार्थ भी जुड़ा था। वे यह नहीं चाहते थे कि बादशाह दूसरे धर्म के लोगों को दान दे। वे चाहते थे कि सारा दान मौलवियों को ही प्राप्त हो।

वे मुग़ल बादशाहों से यही मांग करते रहे कि हिन्दुओं को साम्राज्य के ऊँचे पदों से हटा दें। उन पर जिज़िया कर लगायें और मंदिरों में मूर्ति पूजा बंद करा दें।

परम्परावादी मौलवियों और पंडितों में क्या समानता थी?

क्या समाज के सारे हिन्दू व मुसलमान लोग अपने धर्म को अलग-अलग रखना चाहते थे?

औरंगज़ेब:

औरंगज़ेब को परम्परागत इस्लाम धर्म में गहरा विश्वास था। वह एक सच्चे मुसलमान का जीवन बिताना चाहता था और बहुत

सादगी का जीवन जीता था । उसे लोग जिन्दा पीर (संत) कहते थे । उस पर परम्परावादी मौलवियों का गहरा असर भी था । औरंगज़ेब भी चाहता था कि भारत में परम्परावादी इस्लाम धर्म बना रहे और दूसरे धर्मों से मिल-जुलकर खो न जाये । इस कारण उसने परम्परावादी मौलवियों को अपने दरबार में बढ़ावा दिया ।

औरंगज़ेब अपने राजकाज के काम में भी इस्लाम धर्म के नियमों का पालन करना चाहता था । उसने अपने राजमहल और दरबार में उन सारे रीति-रिवाजों का पालन बंद करा दिया जो इस्लाम धर्म के अनुसार नहीं थे । जैसे, बादशाह का रोज झरोखे में आकर लोगों को दर्शन देना, बादशाह आदि को सोने-चांदी से तौलना ।

मुग़ल दरबार में मौलवी

इन रीति-रिवाजों को अकबर और अन्य बादशाहों ने अलग-अलग धर्मों से अपनाया था ।

औरंगज़ेब के धार्मिक विचारों पर एक मुख्य वाक्य रेखांकित करो ।

मुग़ल साम्राज्य का संकट और औरंगज़ेब की नीतियां :

बादशाह बनने के 10 साल बाद औरंगज़ेब ने एक आदेश दिया कि उन सारे मन्दिरों को जिन्हें हाल ही में बनाया गया हो, तोड़ डाला जाये और केवल पुराने मंदिरों को रहने दिया जाये । उसने उन मंदिरों को भी नष्ट करने का आदेश दिया जहां पर मुसलमान हिन्दू धर्म का अध्ययन करने आते थे ताकि वे ऐसा नहीं कर सकते थे । इस प्रकार औरंगज़ेब के शासनकाल में अनेक प्रसिद्ध मन्दिर तोड़ डाले गये ।

बादशाह बनने के 21 साल बाद सन् 1679 में औरंगज़ेब ने हिन्दुओं पर जिज़िया कर फिर से लागू किया । किसानों, व्यापारियों और कारीगरों ने इसका कड़ा विरोध किया ।

औरंगज़ेब की इन कट्टर नीतियों से बहुत से अमीर खुश नहीं थे । वे समय-समय पर औरंगज़ेब को समझाने की कोशिश करते थे कि

यह नीति साम्राज्य के हित में नहीं है ।

उसके दरबार के कई मुसलमान अमीर भी उसकी धार्मिक नीति का समर्थन नहीं करते थे । औरंगज़ेब के सबसे प्रमुख अमीरों में महाबत खान भी था। उसने बादशाह को चिट्ठी लिख कर अपना विरोध प्रकट किया । उसने लिखा कि औरंगज़ेब की नीतियां न धर्म के लिए अच्छी हैं और न ही साम्राज्य के लिए ।

पर औरंगज़ेब अपनी नीतियों पर अटल रहा। उसके मरने के बाद ही जिजिया फिर से हटाया गया ।

औरंगज़ेब की इन नीतियों का क्या कारण हो सकता है ? कुछ इतिहासकार कहते हैं कि वह कट्टर था इसलिए उसने मंदिर तोड़े और जिज़िया लगाया । पर अगर ऐसा था तो उसने बादशाह बनते ही ये कदम क्यों नहीं उठाये ? अपने शासन के 10-20 साल बाद ही उसे क्या जरूरत महसूस हुई कि उसने हिन्दुओं के खिलाफ कुछ कट्टर नीतियां अपनाईं ?

इस प्रश्न पर विचार करने से हम समझ पाते हैं कि औरंगज़ेब धीरे धीरे कई संकटों से घिरता जा रहा था । तुम इन संकटों के बारे में पाठ के शुरू में ही जान चुके हो । जगह-जगह विद्रोह, जागीरों की कमी, अमीरों में असंतोष, मराठों से परेशानी- औरंगज़ेब इन सब समस्याओं का हल नहीं निकाल पा रहा था ।

इस संकट की स्थिति में औरंगज़ेब ने कोशिश की कि उसे राज्य के अधिक से अधिक लोगों का समर्थन व सहयोग मिले ।

राज्य में कई लोग- मौलवी, अमीर व अन्य लोग, परम्परावादी मुसलमान थे । राज्य के संकट के समय में उनको अपने साथ करने के लिए औरंगज़ेब ने हिन्दुओं के खिलाफ कुछ कदम उठाना तय किया । उसने जिज़िया लगाया व मंदिर तुड़वाये ।

पर हिन्दु लोगों का समर्थन भी उसे चाहिए था । वह ख़ासतौर से राजपूतों और मराठों को अपने साथ करना चाहता था । उसने बहुत बड़ी संख्या में मराठों को अपने शासन में पद दिये । उसने राजपूत अमीरों को भी खूब तरक्की दी । उन्हें साम्राज्य के महत्वपूर्ण पद दिए। राजा जय सिंह और महाराजा जसवंत सिंह उसके सबसे निकट सलाहकारों में से थे । औरंगज़ेब के शासन-काल में अमीरों में हिन्दुओं की संख्या लगातार बढ़ती गयी । अकबर के समय में कुल 22 हिन्दू अमीर थे और शाहजहान के समय में कुल 98 जबकि औरंगज़ेब के समय में कुल 182 हिन्दू

अमीर थे । उसके सब अमीरों में एक तिहाई अमीर हिन्दू थे ।

शायद ऐसे ही राजनैतिक कारणों की वजह से औरंगज़ेब ने कई मंदिरों व मठों को ज़मीन व पैसे दान में दिया । उज्जैन के महाकाल मंदिर और चित्रकूट के राम मंदिरों में ऐसे दान के फरमान आज भी देखे जा सकते हैं ।

क्या तुम्हें अकबर और औरंगज़ेब के बीच कुछ समानता नज़र आ रही है ? स्पष्ट करो ।

मुग़ल साम्राज्य का टूटना :

औरंगज़ेब ने जो नीतियां अपनाईं क्या उनसे किसानों की समस्या का हल हो सकता था ?

क्या जागीर की समस्या का हल हो सकता था ?

मंदिर तोड़ने या उन्हें दान देने से न किसानों व जमींदारों के विद्रोहों में कमी आई न ही ज़ागीरों की संख्या बढ़ी ।

औरंगज़ेब के राज्यकाल के अन्त तक आते-आते जागीरों की कमी बहुत बढ़ गई थी । अमीरों को जागीर मिलना ही मुश्किल होता जा रहा था । बड़ी कोशिश से नियुक्ति के दो-चार वर्ष बाद ही जागीर मिल पाती थी । जब उनका तबादला होता तो फिर नई जागीर मिलने में साल-दो-साल लग जाते थे ।

अब जागीरदार यही कोशिश करने लगे कि उनका तबादला न हो और जो जागीर उन्हें एक बार मिल गई है वह उनके हाथ से चली न जाये । वे यह भी चाहते थे-उन्हें अपनी जागीर से मनमानी लगान इकट्ठी करने की छूट मिले । इस स्थिति में अमीर बादशाह के आदेशों का उल्लंघन करने लगे ।

दूसरी तरफ जो जमींदार सफलता से विद्रोह कर पाये वे स्वतंत्र राज्य बनाने की कोशिश में लग गये । राजाराम जाट के भतीजे चूरामन जाट ने भरतपुर में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना कर ली ।

मुग़लों के सूबेदार भी अपने-अपने सूबों में स्वतंत्र होने की कोशिश करने लगे । दक्षिण में हैदराबाद, पूर्व में अवध व बंगाल, और भोपाल में भी स्वतंत्र राज्य बन गये ।
मराठों ने भी अपना एक स्वतंत्र राज्य बना लिया ।

इस तरह औरंगज़ेब के मरने के कुछ ही वर्ष बाद मुग़ल साम्राज्य टूट-टूटकर विघटित हो गया ।

अभ्यास के प्रश्न :

1. औरंगज़ेब के सामने बड़ी समस्याएं थीं - विद्रोह और जागीर की कमी । इन समस्याओं को समझाने के लिए कुछ वाक्य लिखो ।

2. जागीर की कमी की समस्या दूर करने के लिए औरंगज़ेब ने क्या-क्या उपाय किए ? इन उपायों का क्या असर हुआ ?

3. शिवाजी की सेना मुग़लों की सेना को किस तरह हरा पाती थी ?

4. शिवाजी के राज्य को धन कई तरह से मिला था ।
   1. अपने राज्य के गांव से लगान 2. 3.
   सूची पूरी करो ।

5. सही विकल्प चुन कर वाक्य पूरे करो -
   क- आम हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे की धार्मिक बातें अपनाते ....थे/नहीं थे ।
   ख- सूफ़ी सन्त व जोगी कहते थे कि ईश्वर और अल्लाह...... .... एक हैं/अलग-अलग हैं ।
   ग- बादशाह अकबर ने अपने दरबार में ....के रीति-रिवाज़ लागू किए । इस्लाम धर्म के/कई धर्मों के
   घ- दारा का विचार था कि कोरान और वेदों की बातें एक दूसरे ....के विरुद्ध हैं/से मिलती जुलती हैं ।
   ङ- परंपरावादी मौलवी इस्लाम और हिन्दू धर्म की बातों के मेलजोल ....से खुश थे/नाराज थे ।
   च- परंपरावादी पंडित इस्लाम और हिन्दू धर्म की बातों के मेल जोल से ....खुश थे/नाराज थे ।

6. औरंगज़ेब ने हिन्दुओं के खिलाफ कुछ कदम उठाए और पक्ष में भी- दोनों बातों के दो-दो उदाहरण लिखो । इन बातों का कारण समझाओ ।

7. औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य किस तरह टूटा अपने शब्दों में बताओ ।

मुग़ल काल में व्यापार की दुनिया 6

मुग़लों के समय अपने देश के गाँव, बादशाह के दरबार और जागीरदार के महल की झलकें तुम देख चुके हो । आओ, अब उन दिनों के खेतों और मैदानों का फैलाव पार करते हुए समुद्र के किनारे पहुंचें । वहां जीवन की और ही रंगत थी । चित्र में देखो -- दूर तक बिछी रेत के बाद खुले चौड़े समुद्र के शुरू होने की रेखा है -- जिस पर सधे हैं मल्लाहों के पैर और ऊपर तने हुए उनके हाथ नाव किनारे लगा रहे हैं ।

यह बंगाल की खाड़ी का तट है जिस पर व्यापारी सौदा तय करने के लिए उतरने को हैं - टोप और पतलून पहने यूरोप के व्यापारी; उनके लिए पालकी आ रही है । वह भारत के किसी व्यापारी से माल खरीदेंगे और बेचेंगे ।

क्या यह व्यापारी भी चित्र में

दिख रहा है ?

इतनी दूर यूरोप से आए यह
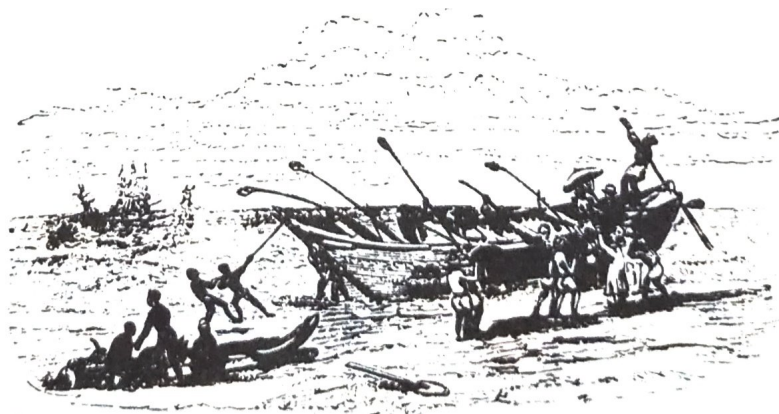
व्यापारी इस छोटी-सी नाव में नहीं आए हैं । उनका जहाज समुद्र के किनारे से कुछ दूर खड़ा है, जहाँ लंगर डालने के लिए गहरा पानी है । वह जहाज यूरोप से रवाना होने के बाद एक लम्बा सफर तय करके भारत पहुँचा है । इस जहाज को दरअसल और आगे जाना है । यह यूरोप से चला था इन्डोनेशिया पहुँचने के लिए । जहाज पर आने वाले व्यापारी इन्डोनेशिया से दालचीनी, लौंग, इलायची, काली-मिर्च जैसे मसाले खरीदना चाहते हैं । इनकी यूरोप में बहुत माँग है क्योंकि वहाँ यह मसाले नहीं होते । पर भोजन (माँस) को स्वादिष्ट बनाने व सड़ने से बचाने के लिए मसालों की जरूरत बहुत है ।

इंडोनेशिया में मसाले उगने के कारण तुमने इंडोनेशिया के पाठ में समझे थे । याद करके बताओ ।

पर इंडोनेशिया से मसाले खरीदने से पहले यूरोप से आए - व्यापारी और कई तरह के लेनदेन करते हैं । ये अफ्रीका से सोना - चाँदी व हाथी दाँत खरीद चुके हैं, और अब भारत में सोना चाँदी देकर सूती व रेशमी कपड़े खरीदेंगे । कपड़ों के अलावा नील, शक्कर, मसाले भी यहाँ से खरीदेंगे । इसी खरीदारी के लिए यह जहाज भारत के तट पर आ रुका है । यह छोटी-छोटी नावें ही जहाज पर जा कर सोना चाँदी उतारेंगी और तट पर लायेंगी । सौदा होने के बाद इन्हीं नावों में कपड़ा लादा जाएगा और जहाज़ तक पहुँचाया जायेगा । इस सब में बहुत काम रहता है और तभी चित्र में इतने मजदूर भी दिख रहे हैं ।

भारत का तट और बन्दरगाह :

जहाज बिल्कुल तट पर खड़े नहीं हो पाते और यह व्यापार के काम में एक कठिनाई है । जहाज वहीं ज़मीन के पास तक आ सकते हैं, जहाँ खाड़ियां हों।

पर ऐसी खाड़ियाँ भारत के समुद्र तट पर बहुत कम हैं । इस-लिए जहाज खुले चौड़े समुद्र में ही खड़े रहते हैं और कई बार आँधी तूफान में टूट-फूट भी जाते हैं । जब ऐसा होता है तो जहाज का मालिक या उसका आदमी नरसपुर जैसे कुछ बन्दरगाहों पर जाकर जहाज़ की मरम्मत करवाता है या ज़रूरत हो तो नया जहाज़ भी बनवाता है । ऐसे कुछ बन्दरगाहों पर जहाज़ बनाने के कुशल कारीगर हैं, जिनका काम व्यापारियों और जहाज़ वालों के बीच मशहूर है ।

भारत के समुद्र तट पर जो मुख्य बन्दरगाह थे उनके नाम मानचित्र में से जानो ।(पृ. ४१, ५२)

कुछ ऐसे बन्दरगाह भी हैं जिन तक पहुंचने के लिए जहाज़ समुद्र से होते हुए नदी के मुहाने के अन्दर आ जाता है । जहां तक नदी इतनी गहरी होती है कि जहाज उस पर चल सके, वहां तक जहाज़ जाता है। फिर छोटी नावों में ही माल उतारकर बन्दरगाह तक पहुंचाया जाता है ।

नदियों पर बने बन्दरगाहों में सूरत, हुगली और मसूलिपटनम बहुत प्रसिद्ध हैं । ये ताप्ती, हुगली और कृष्णा नदियों पर बने हैं ।
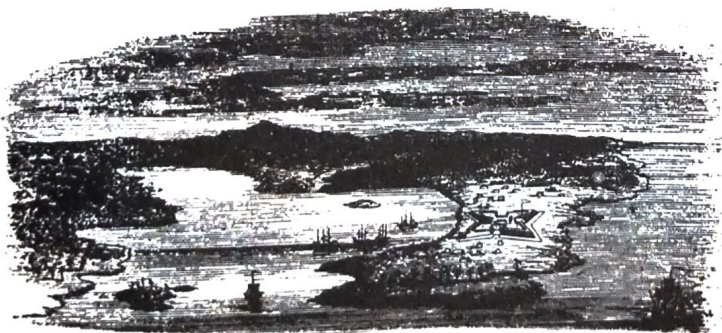
त्रिकोणमले खाड़ी में जहाज़

वैसे अधिकतर नदियां तो समुद्र के पास आकर फैल जाती हैं और इस तरह उथली हो जाती हैं । नदी की धाराओं में जगह-जगह मिट्टी और रेत भी जमा हो जाती है । इसीलिए नदियों के रास्ते जहाज़ अन्दर आने में बहुत कठिनाई होती है । तभी छोटी नावों का काम पड़ता है और हर बन्दरगाह पर बहुत सारी छोटी नावें देखने को मिलती हैं ।

सीधा तट और मुहाने पर उथली नदियां - इनसे जहाजों को सुविधा होती है या कठिनाई ?

बन्दरगाह के अन्दर सैर :

आओ, ज़रा एक बन्दरगाह की सैर करके देखें, वहां कैसे माल आया है, कैसे बिकने भेजा जा रहा है ।

समुद्र से ताप्ती नदी में प्रवेश करने के बाद जैसे-जैसे सूरत की तरफ बढ़ें तो किनारे पर बीच बीच में मछुआरों के गांव पड़े । फिर आया वह गांव जहां मुग़ल राज्य के अमीरों के जहाजों के ठहरने का स्थान बना है । यहीं सारी बरसात ये जहाज इन्तज़ार करते ठहरे रहते हैं कि मौसम साफ

हो तो समुद्र पार की यात्रा शुरू करें । नदी पर और आगे

सूरत के सबसे धनवान व्यापारी मुल्ला अब्दुल गफूर के जहाजों का डेरा है । और उसके बाद आता है फ्रांसीसी जहाजों का डेरा, फिर तुर्की व्यापारियों के जहाजों का डेरा और फिर जाकर हॉलैण्ड के व्यापारियों के जहाजों का डेरा । नदी के किनारे बने इन डेरों को पार करते हुए हम सूरत शहर पहुंच गए हैं जिसके किले की दीवार नदी के किनारे किनारे बनी है । किला पार करते हुए हम शाही चुंगी घर पर उतरे - जहा व्यापारी अपने माल पर चुंगी नाम का कर चुकाते हैं । मुग़ल बादशाह को यहा से अच्छी आमदनी हो जाती है । जितना अधिक व्यापार हो उतनी अधिक चुंगी इकट्ठी होगी सो मुग़ल बादशाहों की व्यापार बढ़ोत्तरी में रुचि जरूर है ।

चुंगी घर के सामने सड़क पार कर के मुग़लों की शाही टकसाल है जहा विदेशी व्यापारी सोना-चांदी देते हैं, और मुग़ल राज्य में चलने वाले सिक्के ढलवा लेते हैं । इन्हीं सिक्कों से तो वे मुग़ल राज्य के अन्दर माल खरीदेंगे । टकसाल के साथ ही लगा है दरिया महल, जो कि बन्दरगाह की देखरेख करने वाले उच्च अधिकारी का निवास स्थान है ।

अब चलो इन इमारतों के पीछे फैले लम्बे चौड़े मैदान पर पहुंचे । यहां मैदान पर दूर-दूर से चल के आए, थके-हारे काफिले, कपड़ों के थान और नील के बोरों का अपना बोझ हल्का कर रहे हैं । हर सौदागर ने अपना तंबू मैदान पर तान रखा है और माल की खरीद फरोख्त तेज़ी से बढ़ने लगी है । शाही चुंगी घर के अधिकारी मैदान में दौरे पर निकले हैं और माल की जांच करते हुए उस पर अपनी मुहर

व्यापार की सुविधा के लिए जो-जो चीजें बनी देखीं उन्हें रेखांकित करो ।
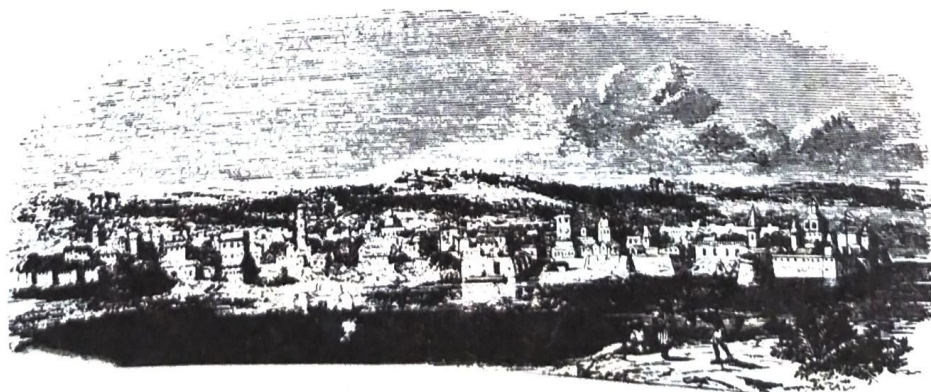
सूरत का एक दृश्य
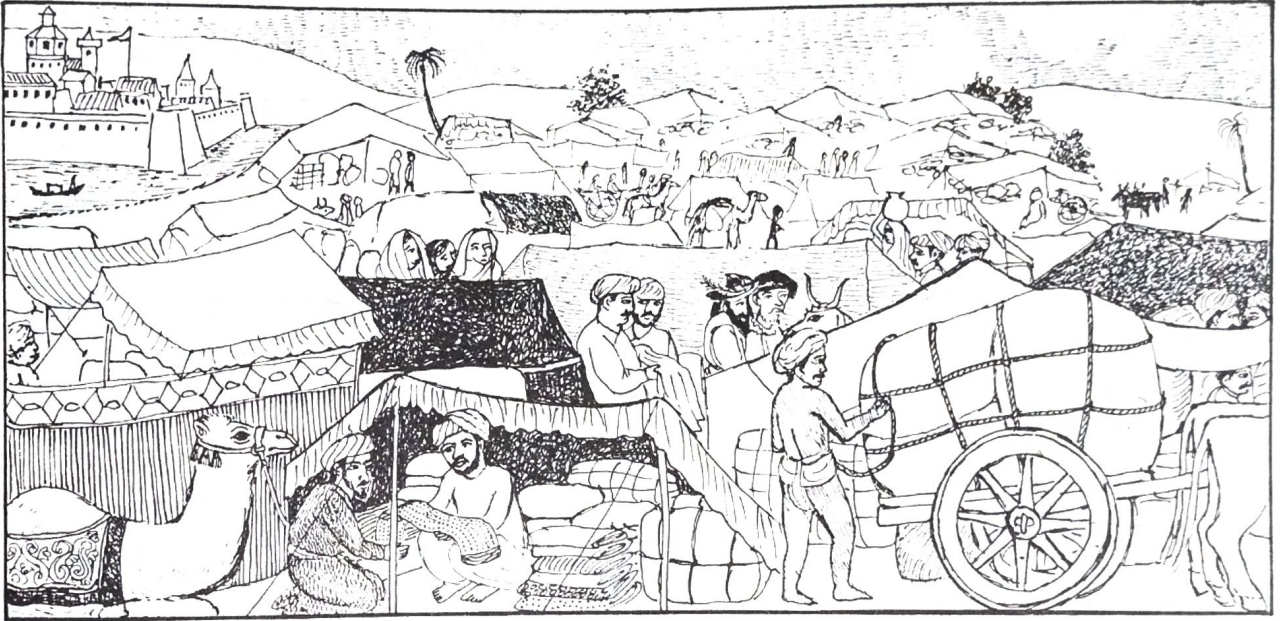
सूरत के मैदान में बाजार लगा है ।

लगाते जाते हैं यानी माल पर कर मिल गया है और व्यापार के लिए आगे जा सकता है ।

सूरत का एक गुजराती व्यापारी काफिले के पास खड़ा अपने आदमी को फटकार रहा है । आदमी बयाना से नील खरीद कर बैल गाड़ियों के काफिले पर लदवा कर लाया है । सूरत पहुंचने में उसे 20 दिन की देरी हो गई थी और बेचारा बहुत थका हुआ, परेशान सा पहुंचा है कि मालिक की फटकार सुननी पड़ रही है । आदमी समझाता है, "बैलगाड़ियां मिलने में देर हुई, मालिक! मैं आगरे में चौधरी उदयराम की गद्दी के सामने दस दिन तक चक्कर लगाता रहा । उनकी सारी बैल - गाड़ियां बाहर गई हुई थीं । फिर लखनऊ से 20 गाड़ियों का काफिला लौटा । इतने में अपना काम कहां पूरा होता है । सो इन्तजार में और पांच दिन लग गए । बुरहानपुर से 60 गाड़ियों का काफिला वापिस आया । तब जाकर गाड़ियों का पूरा इंतज़ाम होता नज़र आया । पर सेठ ने पहले ही किसी डच व्यापारी को गाड़ियां देने का वादा किया हुआ था - मेरे लाख फुसलाने पर भी न माना । दो दिन और इन्तज़ार किया "- "बस बस ! बहुत सुन ली तुम्हारी राम कहानी" मालिक भुनभुनाया । उसके माल को आने में देरी हो गई थी सो दूसरों

का माल पहले ही बिक चुका था और वो भी ऊँचे दामों में । अब उसे दाम ऊँचे नहीं मिल पाएँगे वह जान गया था ।

"अरे कासीदों (यानी उस समय के डाकिये जो दौड़कर चिट्ठी जगह जगह पहुँचाते थे) की कोठी उदयराम की बगल में ही है । ज़रूरी हरकारा (चिट्ठी) भेजते तो बीस दिन में आगरा से यहाँ आ जाता । पैसे ज्यादा लगते तो क्या, मुझे मालूम रहता न कि माल आ रहा है । मैं यहां सौदा तय करके रखता ।"

चलो इनका झगड़ा छोड़ें और दूसरी तरफ कान लगाएं । डच व्यापारियों के तंबू से कुछ आवाज़ें आ रही हैं - "हां, अन्दर यात्रा के किस्से सुनाए जा रहे हैं कि कैसे दिन भर की धूल और हवा में सफर करते हुए रात को किसी शहर की सराय में शरण मिलती थी - और कभी-कभी सराय पूरी भरी मिली तो आम के बगीचे में ही रात काटनी पड़ी, कैसे अब रास्ते में पड़ने वाले नालों पर मुग़ल अधिकारियों ने अच्छे पक्के पुल बना दिए हैं तो सफर आसान हो गया है, कैसे रास्ते भर डाकुओं का भय बना रहा और इस डर से दो बार रास्ता बदल कर सफर में वे आगे बढ़े और इस कारण सूरत पहुंचने में कुछ दिनों की देरी हो गई ।

इतने में हमें कुहनी मारते हुए दो पारसी व्यापारी बातों में मशगूल, पर फुर्ती से चलते हुए निकले । एक अपनी उंगली पर गिनागिना कर कह रहा था "हर शहर से निकलते समय चुंगी दो, सड़कों के लिए कर दो, सरायों और पुलों के लिए कर दो, गाड़ी में जुते ऊंट, बैल और अपने घोड़े रास्ते में घास चरते हैं तो चराई कर दो, पर जनाब अभी छुटकारा कहां मिला है - अभी नावों के लिए कर देंगे, बन्दरगाह के इस्तेमाल का कर देंगे, माल जहाज पर चढ़वाने का कर देंगे, माल बेचने का कर देंगे । यह सब मुग़लों के राज्य को चुकाया और समुद्र पर पहुंच जायेंगे तो पुर्तगालियों का राज्य शुरू हो जायेगा। उनसे व्यापार के पास नहीं खरीदेंगे तो हमारे जहाज लूट लिये जायेंगे । इसलिए चुपचाप पुर्तगालियों को रकम अदा कर ही दो । इसको दो, उसको दो, बड़ा ताज्जुब है कि हम लोगों के पास भी कुछ बच जाता है ।" वे ठहाका लगा कर आगे बढ़ जाते हैं ; (तो जाहिर है उनके पास काफी कुछ बचता होगा) और हमारा ध्यान उनका पीछा करने से हट कर उस ओर जाता है जहां कुछ भगदड़ सी मची हुई है ।

अरे, अरे -मज़दूरों को लेकर दो व्यापारी भिड़ पड़े हैं । "इनसे मैंने तय किया है।" "नहीं इनसे मैंने तय किया है ।" हां भई - बरसात खत्म हो गई है । नवंबर का महीना है -

जहाज अब जल्दी भर-भरा कर समुद्र पर होना चाहिए सो मज़दूरों के लिए भगदड़ मची है ।

चलो वापिस ताप्ती के तट पर चलें - ठंडी खुली हवा में सांस लें । रास्ते में एक बूढ़े काज़ी अपनी सफेद दाढ़ी जोर-जोर से सहलाते और गुस्से में बुदबुदाते मिले । उनके पास 40 मल्लाह (नाव चलाने वाले) और उनका तन्डेल (सरदार) मायूस सूरत लिए खड़े थे । काजी की आवाज कांपती हुई निकली "गरीबी है तो क्या बेवकूफी करोगे .....।"

हमने पूछा तो पता चला कि मल्लाहों का तन्डेल फकीर मुहम्मद अपनी बिरादरी के 40 लोगों को ले कर अब्दुल गफ्फूर के पास काम मांगने गया था । अब्दुल गफूर का जहाज लाल सागर को सफर करने को तैयार हो रहा था। मल्लाहों की जरूरत उसे थी ही । उसने फकीर मुहम्मद और उसके आदमियों को नौकरी पर रख लिया । नौकरी की शर्तें जब तय हो गई तो गफूर ने फकीर मुहम्मद को शर्तें दर्ज कराने काजी के पास भेजा । इसे करारनामा लिखवाना कहते थे । बाकी शर्तें तो साधारण थीं - कि तन्डेल को महीने के 10रु॰ मिलेंगे और दो मन चावल, 8 सेर घी, 1 मन दाल मिलेगी व बाकी मल्लाहों को 5 रु॰ महीने, एक मन चावल, आधा मन दाल व 4 सेर घी मिलेगा और 2 साल तक वे सब अब्दुल गफूर के जहाज पर काम करेंगे । पर, इन शर्तों से हट कर एक शर्त और थी जिसे सुन कर काजी चौंके थे। अब्दुल गफूर ने मल्लाहों के सामने शर्त रखी थी कि समुद्र पर वे उसके जहाज की रक्षा करेंगे और अगर डाकुओं-लुटेरों ने जहाज लूट लिया और वे न बचा पाए तो सूरत में उनका घर-सामान- परिवार सब अब्दुल गफूर के हवाले हो जाएगा । मल्लाह ये शर्त भी मान गए थे । काजी के चौंकने पर जब उन्होंने अपनी गरीबी की दुहाई दी तो काजी बड़बड़ाए थे -"गरीबी है तो क्या बेवकूफी करोगे .....। और उन्होंने ऐसा अन्याय भरा करारनामा दर्ज करने से साफ इन्कार कर दिया था । ये और बात है कि अगले दिन फकीर मुहम्मद व उसके बिरादरी वालों ने उन्हीं शर्तों में अब्दुल गफूर का जहाज जा कर संभाल लिया ।

तो इस तरह दुख दर्द गुस्से और ठहाके के सिलसिले के बीच व्यापार का काम चलता रहता है और आखिरकार सब तैयारियां हो जाती हैं और जहाज समुद्र को निकल पड़ते हैं ।

मुगलों के समय में परिवहन, डाक

यात्रा, करवसूली के अनुभव तुमने पढ़े।

ये आज के व्यापारियों के अनुभवों
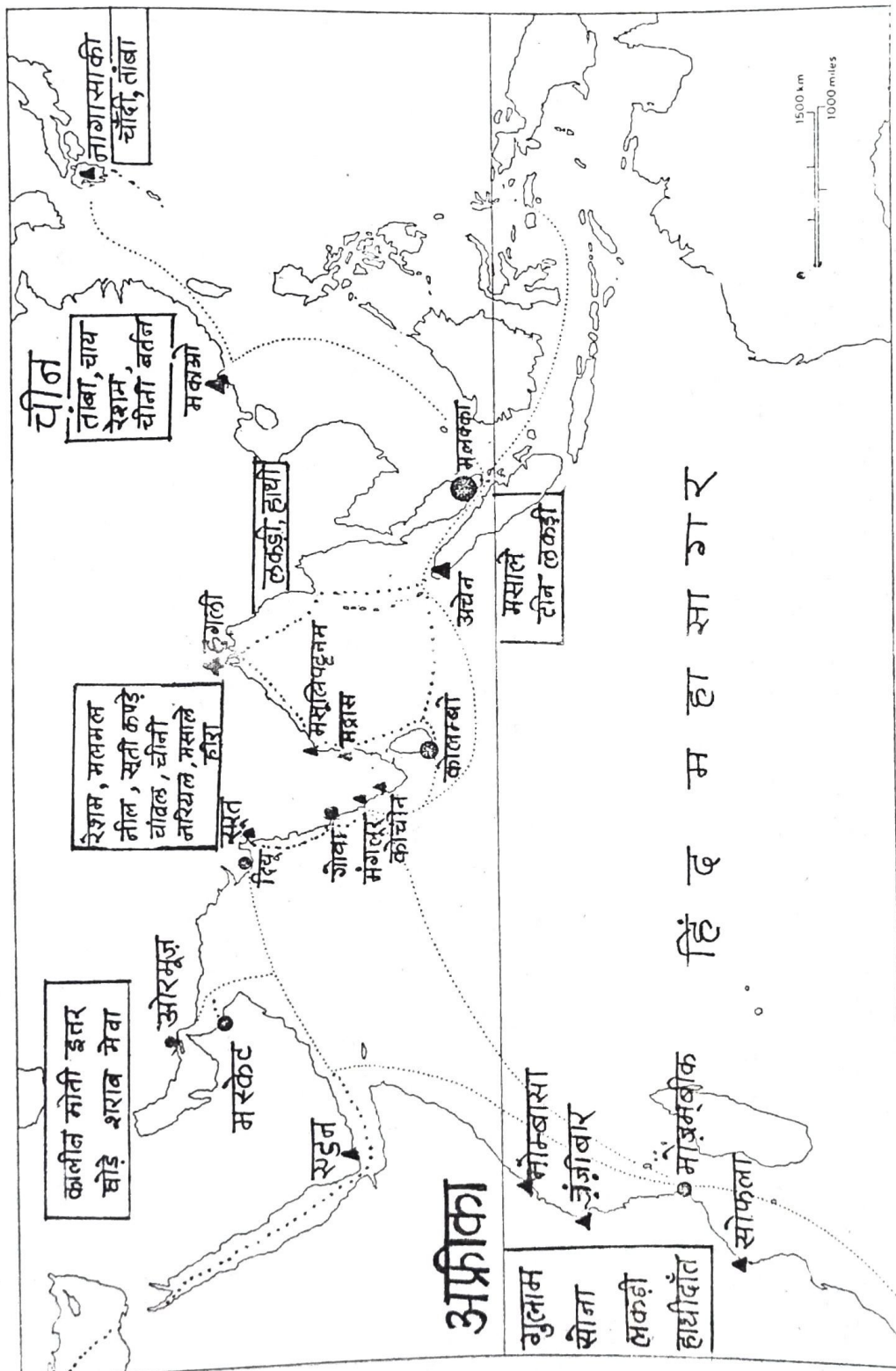
संकेत

- पुर्तगालियों का किला
- ▲ अन्य बन्दरगाह
- ------- समुद्री मार्ग

से कैसे मिलते-जुलते हैं - इस पर चर्चा करो ।

काज़ी के मल्लाहों की क्या बात बेवकूफी भरी लगी और क्यों ?

इन्डोनेशिया जाने के लिए हवा की दिशा पश्चिम से पूरब की होनी चाहिए, सो अप्रैल मई के महीने का इन्तज़ार करके जब सही दिशा में मान्सून की हवा बहने लगती, तब जहाज चल पड़ते हैं । इंडोनेशिया पहुंच कर यूरोप के व्यापारी भारत से लाया गया कपड़ा बेचेंगे और उसके बदले में मसाले खरीद लेंगे । मसालों से भरा जहाज यूरोप लौटने के लिए फिर सही दिशा में हवा बहने का इंतज़ार करेगा । अक्टूबर-नवम्बर में उत्तर-पूर्व से पश्चिम की तरफ हवा चलने लगेगी - तब जहाज पश्चिम दिशा का रुख ले कर यूरोप को रवाना होगा ।

इन्डोनेशिया में कम दाम पर खरीदे मसाले यूरोप में बहुत ही ऊँचे दामों पर बिक जाते थे और इस व्यापार में लगे लोग हाथों हाथ माला-माल हो जाते । शुरू में यूरोप के लोगों के लिए भारत के कपड़ों का व्यापार उतना महत्वपूर्ण नहीं था जितना इंडोनेशिया के मसालों का व्यापार । इस व्यापार में दौलत बहुत थी, इस लिए इस व्यापार को हथियाने की फिराक में रहने वाले लोग भी बहुत थे ।

हिन्द महासागर पर पुर्तगालियों का राज्य बना :

हिन्द महासागर, जिस पर से व्यापार होता था, पर कई लोगों की निगाहें थीं ।

इस मानचित्र में देखो कि हिन्द महासागर के पास के महाद्वीपों में किन चीज़ों का व्यापार होता था । सागर में जहाजों के चलने के रास्ते किन बन्दरगाहों से होते हुए निकलते थे ।

इन्हीं रास्तों पर वे जहाज चलते थे, जिनसे माला-माल हुआ जा सकता था । इन बन्दरगाहों और रास्तों पर अगर किसी का कब्जा हो जाये तो पूरा व्यापार उनके हाथ में आ सकता था ।

यूरोप के कई देश - फ्रांस, इंगलैण्ड, हालैण्ड, पुर्तगाल आदि- हिन्द महासागर के व्यापार पर अपना अधिकार जमाने की कोशिश में रहे । पर सन् 1492 से सन् 1600 के बीच पुर्तगाल देश के व्यापारियों ने यह कर दिखाया ।

नक्शे में देखो पुर्तगालियों ने हिन्द महासागर को घेरने वाले पूरे समुद्र तट पर जगह-जगह कब्जा कर के अपने किले बना लिए थे। ये किले जहाज चलने के सारे रास्तों पर निगरानी रख पाते थे।

इस तरह पुर्तगालियों ने हिन्द महासागर पर अपना राज्य बनाया। पानी पर राज्य? हां। हुकुम था कि इस सागर पर सिर्फ पुर्तगाली जहाज व्यापार करेंगे। उनकी इज़ाज़त बग़ैर दूसरा कोई व्यापारी अपना जहाज इस सागर से नहीं ले जाएगा। पुर्तगालियों की इज़ाज़त मोटी रकम दे कर 'पास' के रूप में खरीदनी पड़ती थी।

किसी की हिम्मत थी टक्कर लेने की? सेना सिर्फ जमीन पर पैदल या हाथी घोड़े पर चलने वाली नहीं होती। सेना समुद्र पर भी होती है - जहाजों पर तैनात रहती है। जिन पर बन्दूकें और तोपें जमीं होती हैं।

पुर्तगालियों से टक्कर लेने वाले अरब, गुजराती व अन्य व्यापारियों के जहाज कितनी ही बार उनकी नौ-सेना (नाव पर सेना) द्वारा लूटे गए और गोलाबारी से डूबे। जिन
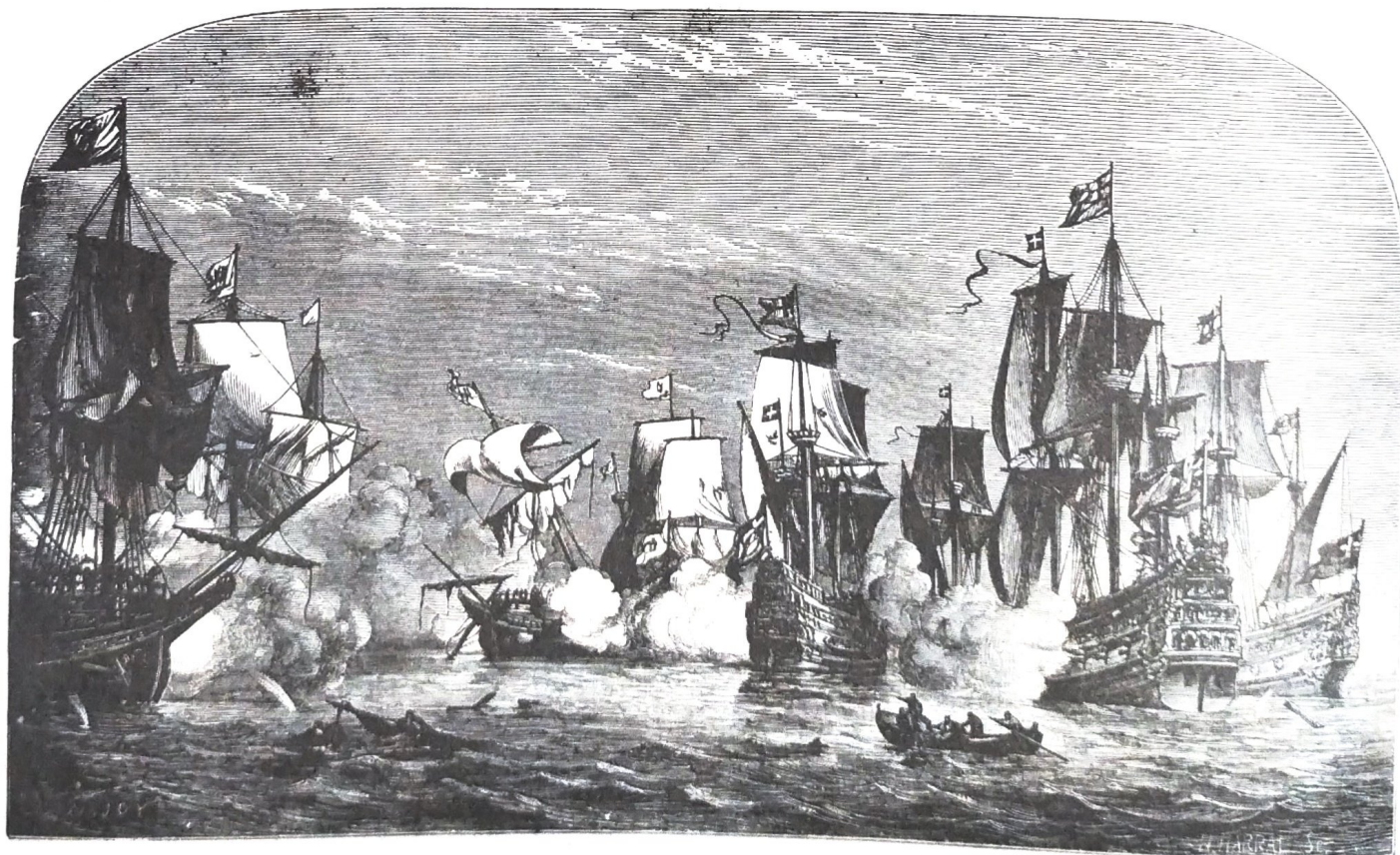
सन् 1612 में सूरत के पास समुद्र में पुर्तगाली व अंग्रेजी जहाज़ों के बीच लड़ाई

बन्दरगाहों पर दूसरे व्यापारियों का माल उतरता चढ़ता था वे बन्दरगाह पुर्तगालियों की नौ सेना ने तबाह किए । उनके मुकाबले की नौ सेना किसी की न थी । हिन्दुस्तान के तो किसी भी राजा ने नौ सेना तैयार करने की तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दिया था । मुग़ल बादशाहों ने भी नहीं । पुर्तगालियों से परेशान होकर भी कोई उन्हें खदेड़ न सका ।

इंडोनेशिया पर डच लोगों का राज्य :

कुछ वर्षों बाद हॉलैण्ड देश के लोग - जो डच कहलाते थे - ने पुर्तगालियों को भी मात कर दिया। उन्होंने पुर्तगालियों को हरा कर इण्डोनेशिया पर अपना राज्य ही बना डाला और इस तरह वहां उगने वाले मसालों पर उनका एकछत्र अधिकार बन गया ।

भारत में यूरोप के व्यापारियों की होड़ :

भारत में दूसरे यूरोपीय देश के व्यापारी पुर्तगाली लोगों के हाथ से व्यापार छीनने की कोशिश करते रहे । समय के साथ पुर्तगाली नौ-सेना और किलों की ताकत अंग्रेज, डच, और फ्रांसीसी लोगों के मुकाबले के कारण कमजोर पड़ गई । उसके बाद भारत में यूरोप के यह सभी लोग व्यापार हथियाने की होड़ में लगे रहे । कुछ समय तक किसी एक का भारत के व्यापार पर अधिकार नहीं जम सका ।

यूरोप के सभी देशों के व्यापारी हमेशा इसी कोशिश में लगे रहते थे कि वे भारत में कम से कम कीमत दे कर सामान खरीद सकें । फिर वे इस सामान को यूरोप में अधिक से अधिक दाम पर बेच कर खूब मुनाफा कमा सकें । उन्होंने पाया कि सूरत, मसूलीपटनम जैसे बड़े बन्दरगाहों पर जो सामान बिकने लाया जाता है वह महंगा मिलता है । इसलिए यूरोप के व्यापारी अन्दर गांव-गांव में अपना आदमी या एजेन्ट भेज कर सीधे कारीगरों से माल खरीदने की कोशिश में रहते ताकि सस्ता माल मिले ।

पर गांव-गांव से माल लाने में उनके आदमी को कई तरह के कर चुकाने पड़ते थे । यूरोप के व्यापारियों को ये कर बहुत अखरते । इन्हें चुकाने में बहुत पैसे खर्च हो जाते थे और माल की कीमत बढ़ जाती थी । यह बात गुरूजी से समझो ।

इन व्यापारियों ने व्यापार का अधिक से अधिक लाभ उठाने का एक और तरीका अपनाया। वे बादशाहों
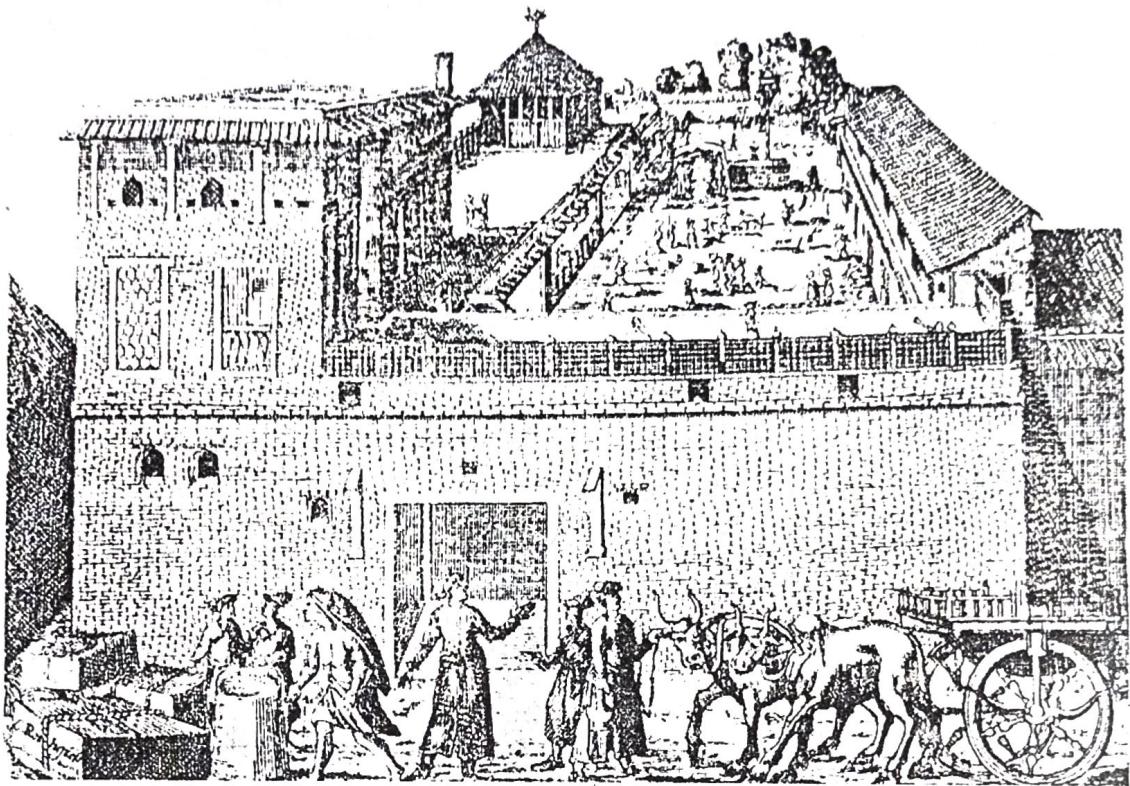
सूरत में अंग्रेजों का गोदाम व दफ्तर

व राजाओं के पास अपने-अपने दूत भेजते और भारत में खुल कर व्यापार करने की इज़ाज़त मांगते । व्यापारियों के दूत कुछ करों को न देने की छूट मांगने लगे । इसके बदले में वे बादशाहों व राजाओं को बहुमूल्य भेंट पेश किया करते थे । बहुत बार उन्हें करों की छूट मिल जाया करती थी । शायद राजाओं के मन में यह आशा रहती थी कि करों में छूट देने से उनके राज्य में ज्यादा व्यापार आकर्षित होगा और राज्य खूब फलेगा-फूलेगा । इससे और अधिक कर मिलेगा ।

करों में बढ़ोतरी की उम्मीद के अलावा हिन्दुस्तान के राजाओं के मन में यूरोपीय व्यापारियों की तरफ से एक धमकी का असर भी था । पुर्तगाली नौ सेना का मुकाबला दूसरे यूरोपीय देशों की सशक्त नौ सेनाएं ही कर सकती थीं और हिन्दुस्तान के जहाजों को पुर्तगालियों के खतरे से सुरक्षा की जरूरत थी । अंग्रेज़ फ्रांसीसी व डच कहते व्यापार की छूट दोगे तभी हम जहाजों की सुरक्षा की गारण्टी देंगे । नहीं तो मौका मिलने पर उन्हें लूटा व डुबोया जाएगा ।

यूरोपीय देशों द्वारा व्यापार के लाभ पर कब्जा करने से संबंधित पांच महत्वपूर्ण वाक्य रेखांकित करो ।

इस स्थिति का फायदा उठाकर यूरोप के व्यापारियों ने हिन्दुस्तान में व्यापार का खूब लाभ लूटा । उन्हें कई कर न देने की छूट मिली, ज़मीन खरीद कर उन्होंने अपने गोदाम, घर, बन्दरगाह बनाए और अपने-अपने किले भी बनाए । इन व्यापारियों ने आगे जाकर किस तरह भारत में अपना राज्य बना लिया, यह तुम अगले पाठ में पढ़ोगे ।

अभ्यास के प्रश्न :

1. यूरोप के व्यापारी इंडोनेशिया जाकर मसाले खरीदने से पहले अफ्रीका और भारत के बन्दगाहों पर क्यों रुकते थे ?
2. बन्दरगाहों पर छोटी नावों का बहुत महत्व था । इसके कुछ कारण समझाओ ।
3. मुग़लों के समय में व्यापारी अगर माल एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाना चाहे तो उसकी क्या व्यवस्था थी ?
4. डाक से खबर पहुंचाने की क्या व्यवस्था थी ?
5. जहाज चलाने का काम कौन लोग करते थे ? उन्हें इस काम के बदले में क्या मिलता था ?
6. पुर्तगालियों ने हिन्द महासागर अपना राज्य किस तरह बनाया ? इसका उन्होंने क्या फायदा उठाया ?
7. पुर्तगालियों को भारत के राजा हरा कर भगा क्यों नहीं पाए ?
8. भारत के राजाओं ने यूरोपीय देश के व्यापारियों को किस तरह की सहायता दी ?
   उन्होंने यूरोपीय व्यापारियों को सहायता क्यों दी ?

भूगोल

पाठ-1 वायुमंडल

तुमसे यदि कोई पूछे कि वायु कहाँ है, तो तुम कहोगे- हमारे आसपास, कमरे में, बाहर, बर्तन, अलमारी, हर जगह वायु है । वायु को बहते हुए भी हम देखते हैं - पेड़ों के पत्ते, टहनियाँ हिलने लगती हैं, कपड़े उड़ने लगते हैं । बहती हुई वायु को हम पवन कहते हैं ।

इसी वायु में हम साँस लेते हैं, ज़रा भी वायु कम हुई और हम घुटन महसूस करने लगते हैं । तुमने कभी सोचा कि यदि वायु न होती तो क्या होता ? तब पवन नहीं बहती, दिन निकलने पर तापमान खूब बढ़ जाता, रात होने पर एकदम से ठंडा हो जाता । तभी हम कहते हैं कि पृथ्वी वायु के आवरण में लिपटी है । इसे हम पृथ्वी का वायुमंडल कहते हैं ।

कितनी हवा ?

कितनी हवा है पृथ्वी के चारों ओर ? हम अगर पृथ्वी से ऊपर उठने लगें तब भी क्या हमें उतनी ही हवा मिलेगी जितनी धरती के निकट? दरअसल लगभग आधी हवा पृथ्वी से 7 किलोमीटर की ऊंचाई तक होती है । पृथ्वी से लगभग 6 कि•मी• की ऊंचाई तक ही इतनी हवा मिलती है कि मनुष्य का जीवन संभव है, उससे ऊपर वायु इतनी कम हो जाती है कि मनुष्य जीवित नहीं रह सकता । बहुत कम ही सही पर थोड़ी हवा तो धरती से 400 कि•मी• की ऊंचाई तक मिलती है ।

शायद तुमने ऊँचे पहाड़ पर चढ़ने वालों, चाँद पर पहुंचने वालों के चित्र देखे हों, उनकी पीठ पर आक्सीजन का सिलिंडर बंधा रहता है जिससे वे साँस लेते हैं । ये लोग अपने साथ आक्सीजन का सिलिंडर क्यों ले जाते हैं ? पृथ्वी से जैसे-जैसे हम ऊपर उठते हैं हवा की कमी होती जाती है तभी तो लोग आक्सीजन का सिलिंडर ले जाते हैं कि आवश्यकता पड़ने पर उसमें साँस ले सकें ।

वास्तव में पृथ्वी के खिंचाव या गुरुत्वाकर्षण के कारण वायु उसके चारों ओर लिपटी है इसी कारण उसके निकट अधिक है और ऊपर की ओर कम होती जाती है । क्योंकि ऊपर की ओर पृथ्वी

का खिंचाव या गुरूत्वाकर्षण भी कम होता जाता है। क्या तुम सोच सकते हो कि पृथ्वी का खिंचाव नहीं होता तो वायु कहां जाती ?

वायु क्या है ?

हवा में कई गैसें मिली हैं। इनमें दो मुख्य हैं, नाइट्रोजन (जो हवा का लगभग 78 प्रतिशत है), आक्सीजन (यह हवा का लगभग 21 प्रतिशत है)। आक्सीजन और नाइट्रोजन के अलावा हवा में एक प्रतिशत अन्य गैसें होती हैं।

बताओ जब हम सांस लेते हैं तो इनमें से कौन सी गैस हमारा शरीर ग्रहण करता है?

वायु में धरती से निकली वाष्प भी मिलती रहती है। फिर धूल के कण भी हवा में तैरते रहते हैं।

सूची बनाओ, वायु में क्या-क्या होता है।

वायु मंडल का अर्थ है ....

धरती से .... कि॰मी॰ ऊंचाई पर जाने तक इतनी वायु मिलती है कि हम सांस ले सकें।

धरती के पास वायु अधिक क्यों है यह बात बताने वाले वाक्य को रेखांकित करो।

मौसम :

दिन में हवा गर्म हो जाती है, रात को ठंडी। कभी पवन बहती है, कभी वायु शांत हो जाती है। फिर कभी बादल आते हैं, वर्षा होती है, ओस गिरती है। जाड़े में सुबह कोहरा पड़ जाता है। कभी आंधी आती है, कभी उसके साथ ओले गिरते हैं। वायु-मंडल के इस प्रतिदिन के परिवर्तन या थोड़े समय के परिवर्तन को हम मौसम कहते हैं। मौसम रोज़ बदलता रहता है। तुम रोज टी॰वी॰ पर मौसम का हाल सुनते हो और पिछले 24 घंटों के मौसम का भारत का मानचित्र देखते हो, कहां कितना तापमान रहा, कहां धूल भरी आंधी आई, कहां वर्षा हुई। फिर अगले रोज मौसम का हाल जानने को उत्सुक रहते हो। कितनी ही बार तुमने कहते सुना होगा आज मौसम कितना सुहाना है! लेकिन दूसरे दिन बादल आए, तेज पवन बहने लगी, फिर पानी बरसा, तो लोगों ने कहा- "आज मौसम खराब हो गया।" यानी मौसम रोज़ बदलता रहता है।

जलवायु :

जिस जगह तुम रहते हो वहां जाड़े की ऋतु.... महीनों में होती है, फिर मार्च से जून तक .... ऋतु रहती है फिर वर्षा होती है। तुम अपने पिताजी माँ या किसी बुजुर्ग से पूछोगे तो वे बतायेंगे कि प्रति वर्ष उन्होंने यही ऋतुएं देखी हैं। ऐसा कभी नहीं होता कि जाड़े की ऋतु मई-जून में हो जाए और वर्षा ऋतु दिसम्बर-जनवरी में पहुंच जाए। तो साल भर जैसी ऋतुएं होती हैं, लगभग वही प्रति वर्ष होती है। इसे तुम अपने निवास स्थान की जलवायु कहोगे।

तुम यदि काश्मीर जाओ तो वहां अक्टूबर-नवम्बर से मार्च तक तेज जाड़ा पड़ता है। इस ऋतु में कई बार वर्षा होती है, बीच-बीच में हिमपात होता है। ऐसी ऋतु में वहां के लोग कई महीने गर्म कपड़े पहने रहते हैं। घरों को गर्म रखने के लिए आग जलाते हैं। फिर बसंत ऋतु आती है, चारों तरफ हरियाली हो जाती है, फूल खिलते हैं, खेत बोए जाते हैं। गर्मी में हमारे प्रदेश जैसी तेज गर्मी काश्मीर में नहीं होती। वहां गर्मी में भी रात में गर्म कपड़ा पहनना ओढ़ना पड़ता है।

काश्मीर में प्रति वर्ष लगभग यही ऋतुएं होती हैं। यह वहां की जलवायु है।

1) आज रिमझिम पानी बरसा, हल्की ठंड थी, फिर शाम को बादल उठ गए, हल्की धूप निकल आई।

2) चार महीने से ठंड के कारण बाहर निकलना घूमना नहीं हो पा रहा है। खेत भी जोते नहीं गए, मार्च में खेत जोत कर बोए जायेंगे, मई-जून में अगर हर साल जैसी वर्षा हुई तो फसल अच्छी होगी।

ऊपर के वाक्यों में से चुनो कौन सा मौसम और कौन सा जलवायु बताता है।

इस तरह हम कह सकते हैं कि मौसम का परिवर्तन थोड़े समय में होता रहता है। जबकि किसी जगह की जलवायु हर साल वही रहती है। हां यह जरूर है कि पृथ्वी पर सब जगहों की जलवायु अलग-अलग होती है।

अलग-अलग तरह की जलवायु और उसका असर

याद करो तुमने इंडोनेशिया, जापान, ईरान, फ्रांस, टुन्ड्रा प्रदेशों की अलग-अलग जलवायु के बारे में पढ़ा

है । टुन्ड्रा में तो साल भर हिम जमी रहती है, खेती नहीं हो सकती । क्या तुम्हें याद है कि वहां लोग क्या खाते हैं ?

ईरान में बहुत से लोग घास के लिए जानवरों को लेकर घूमते रहते हैं, बताओ वहां की जलवायु सूखी है कि अधिक वर्षा वाली ? इंडोनेशिया में रबर और चाय खूब होती है, वहां की जलवायु कैसी है जो इनको उगने में मदद करती है ?

याद करो जब मेरी-क्यन ज़िम्बाबवे पहुंचे तो जाड़े की ऋतु थी । वे कौन से महीने थे ? क्या ज़िम्बाबवे में प्रति वर्ष मई-जून में ही जाड़े की ऋतु होती है ?

दक्षिणी नाइजीरिया की जलवायु में तेल पाम, नारियल, और रबर होता है । क्या उत्तरी नाइजीरिया में इन फसलों के लिए उपयुक्त जलवायु नहीं होती ?

अभ्यास के प्रश्न

1. पृथ्वी के चारों ओर की वायु हमारे किस काम आती है ?
2. पृथ्वी के चारों ओर वायु का आवरण न होता तो क्या होता ?
3. लगभग आधी हवा निचले .... कि॰मी॰ की ऊंचाई तक है । .... कि॰मी॰ की ऊंचाई तक इतनी हवा है कि मनुष्य सांस ले सके ।
4. पृथ्वी के चारों ओर हवा का आवरण क्यों लिपटा है ? हवा उड़ कर शून्य में क्यों नहीं जाती ?
5. हवा में क्या है ?　1.　2.　3.　4.　5.
6. तुम जहां रहते हो वहां के एक दिन के मौसम का वर्णन करो ।
7. तुम जहां रहते हो वहां की जलवायु की मुख्य चार बातें बताओ ।

:: वायु दाब और पवन ::

धरती पर हवा का बोझ या वायु दबाव

कल आँधी आई, पवन इतनी तेज कि लगता था, हम उड़ जायेंगे, कई पेड़ टूट गए, घरों में धूल भर गई। लेकिन आज सुबह से हवा बिल्कुल शांत है। तुमने कभी सोचा कि हवा में क्या परिवर्तन हुआ कि आँधी आई या तेज पवन चली और क्यों हवा शांत हो गई ?

धरती के चारों ओर वायु का जो आवरण लिपटा है इसका बोझ या दबाव भी तो धरती पर है। हम इसे महसूस नहीं करते न ये जान पाते हैं कि कब दबाव कम है कब अधिक। जब तक यह दबाव सब जगह समान है तब पवन नहीं चलती, शांत रहती है। लेकिन जब किसी स्थान पर हवा का दबाव कम हुआ तो उस स्थान से पवन चलने लगती है. जहाँ हवा का दबाव ज्यादा है। हवा के अधिक दबाव के स्थान से कम दबाव के स्थान की तरफ हवा चलने लगती है जिससे दोनों स्थानों के बीच हवा के दबाव का अन्तर न रहे। जब ऐसा हो जाता है तब हवा शांत हो जाती है। हवा .... की ओर से......

.... की ओर चलेगी। क्या

चित्र 1 में तीर का निशान ठीक बना है ?

प्रयोग -।

एक गिलास में ऊपर तक पानी भर के एक कागज से उसे ढाँक लो। फिर गिलास को उलट दो। धीरे-धीरे अपना हाथ हटा लो। अब देखो क्या कागज और पानी गिरा ?

कौन सी चीज इन्हें दबाए है ?

चित्र- 1
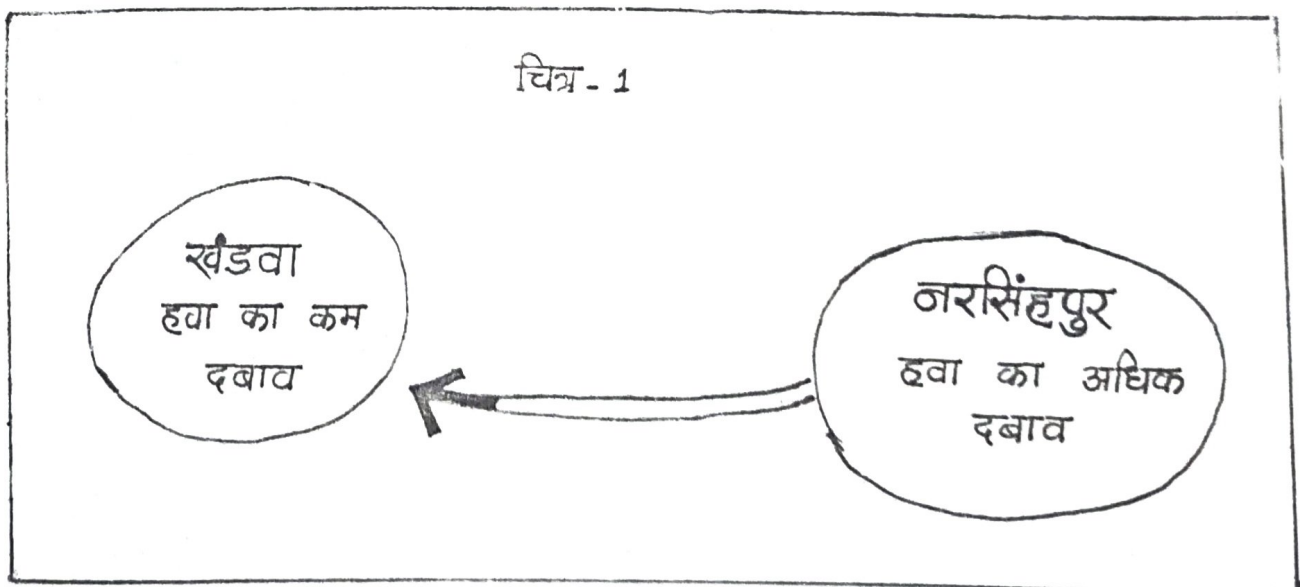
तुम साइकिल के ट्यूब में हवा भरते हो, वह इतना कड़ा हो जाता है कि साइकिल और तुम्हारा बोझ उठा लेता है ।

बताओ ट्यूब में तुमने हवा का दबाव

अधिक किया या कम ?

ट्यूब का नोजल खोल दो तो तेजी से हवा बाहर निकल गई । सोच कर बताओ ऐसा क्यों हुआ ?

यानी ट्यूब के अन्दर हवा का दबाव अधिक था और बाहर कम, तो हवा अधिक दबाव वाले ट्यूब से बाहर-जहां हवा का दबाव कम है-निकल गई ।

यही बात पवन के चलने के साथ भी हुई । नरसिंहपुर में हवा का दबाव अधिक है तो वहां से पवन खंडवा की ओर चलने लगी जहां दबाव कम है ।

प्रयोग -2

एक फुग्गे में हवा भरो फिर उसे छोड़ दो,

हवा निकल गई ? फुग्गे में हवा का दबाव

अधिक/कम था ? यदि एक फुग्गे में हवा

भरकर एक नली के सहारे दूसरा फुग्गा
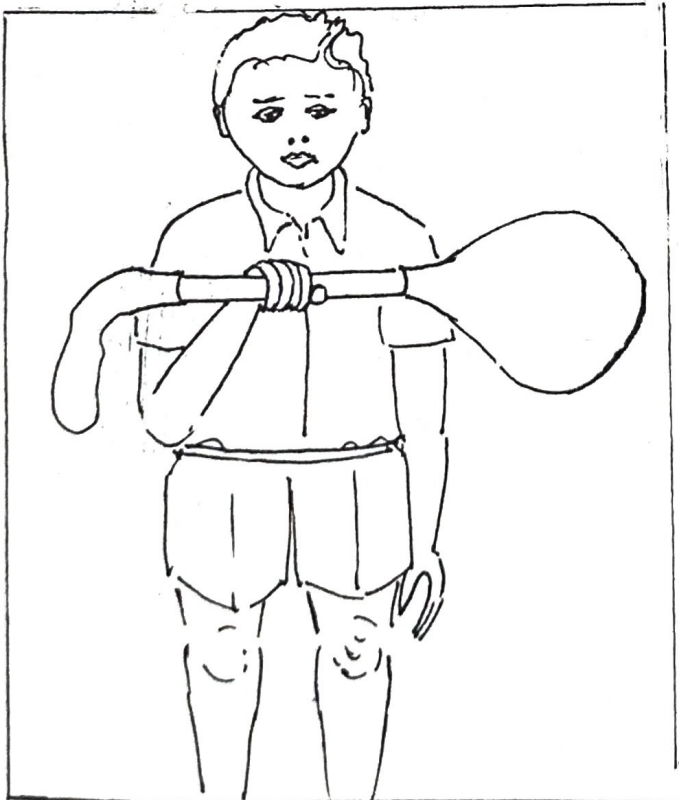
चित्र- 2 अ
नली के द्वारा दूसरा फुग्गा जोड़ा
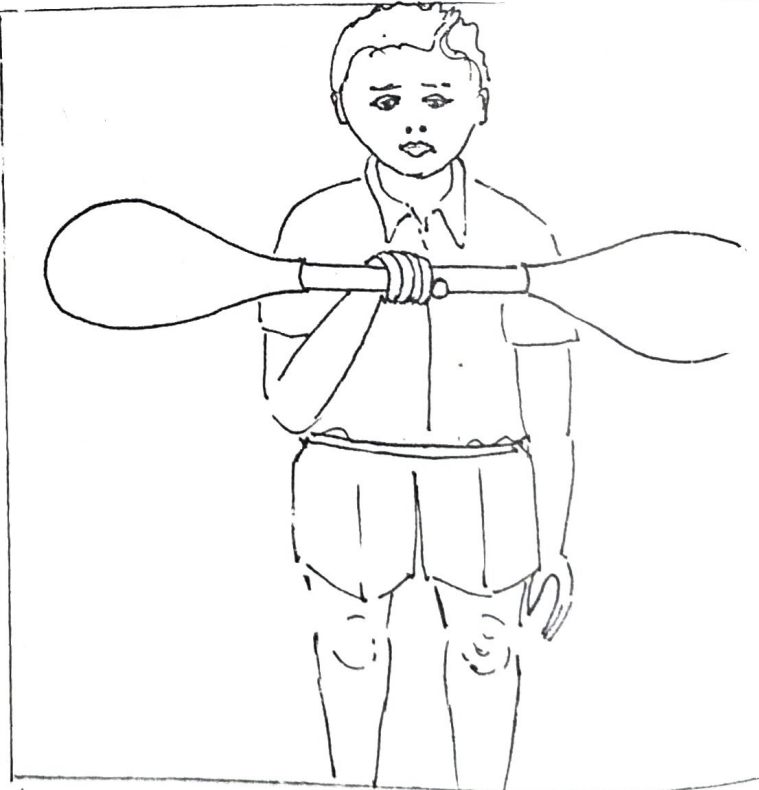
चित्र- 2 ब पहले फुग्गे की कुछ हवा दूसरे फुग्गे में चली गई

जोड़ दो तो क्या हवा पहले फुग्गे से दूसरे फुग्गे में जायेगी ? क्यों ? क्या सारी हवा पहले फुग्गे से दूसरे में चली जायेगी ? नहीं न ?

इन प्रयोगों से तुमने क्या दो बातें समझीं ?

1. धरती के ऊपर हवा का दबाव है ।
2. जहां हवा का दबाव अधिक है वहां से कम दबाव की ओर हवा चली जाती है ।

हवा का कम दबाव/अधिक दबाव :

वायु के दबाव या वायु दाब के घटने-बढ़ने के कई कारण हो सकते हैं, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण कारण तापमान का अन्तर है । दो प्रदेशों के बीच वायु दाब का जितना अधिक अन्तर है पवन उतनी तेजी से चलती है । जब वायु दाब में अन्तर समाप्त हो जाता है तब हवा भी शांत हो जाती है ।

क्या तुमने कभी ध्यान दिया है कि तापमान का हवा पर क्या असर पड़ता है ? तुमने कहीं आग लगी देखी होगी । होली के दिन कूड़ा, लकड़ी, झाड़ी, पत्ते इकट्ठा करके होली जला देते हैं, तब उसे ध्यान से देखो । आग की लपटों के साथ राख, जले पत्ते आदि ऊपर दूर तक उड़ते जाते है, फिर दूर कहीं जा गिरते हैं । सोचो ऐसा क्यों हुआ ? आग के कारण हवा गर्म हुई वह हल्की होकर ऊपर उठने लगी और उसके साथ राख, पत्ते आदि भी ऊपर तक उड़ गए । जब ऊपर पहुंच कर हवा फैली और ठंडी हुई तो ठंडी होने के कारण हवा भारी होकर नीचे उतरने लगी ।

यही बात हम धरती पर हवा गर्म होने पर देखते हैं ।

खाली स्थान में भरो - हल्की/भारी

* गर्म हवा ....होती है ।
* ठंडी हवा............होती है ।

मानो धरती पर दो प्रदेश हैं एक गर्म और एक ठंडा । गर्म प्रदेश के ऊपर की हवा गर्म होकर ऊपर उठने लगती है तो वहां हवा का दबाव कम हो जाता है है । ऊपर जाकर वह फैलती है और ठंडी होकर भारी हो जाती है और नीचे उतरने लगती है। जहां वह उतरती है वहां हवा का दबाव बढ़ता है। ठंडा प्रदेश होने के कारण वहां पहले ही हवा ठंडी और भारी है तो वहां एक अधिक वायु दाब का क्षेत्र बन जाता है । अब स्थिति क्या बनी -

1. एक ओर कम वायु दाब वाला गर्म प्रदेश ।
2. दूसरी ओर अधिक वायु दाब वाला ठंडा प्रदेश ।

जहां वायु दाब का अन्तर हुआ

चित्र- 3 तापमान तथा वायुदाब का अन्तर एवं हवाओं का चलना
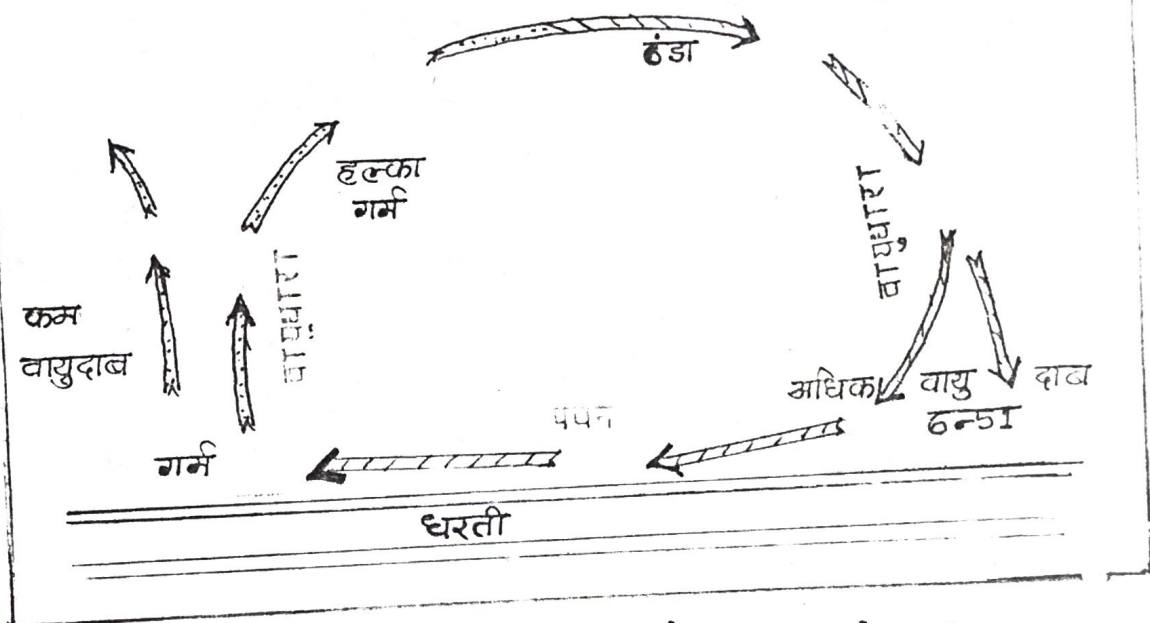
पवन चलने लगती है ।

चित्र3 देखकर बताओ -

पवन ....वायु दाब के क्षेत्र से
..............वायु दाब की ओर
बहने लगी है ।

अधिक वायु दाब के क्षेत्र में तापमान
कम/अधिक है ।

इसके विपरीत कम वायु दाब के क्षेत्र
में तापमान कम/अधिक है ।

दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं,
कि ठंडे प्रदेश की ओर से गर्म प्रदेश की
ओर पवन बहने लगी ।

इसीलिए लोग कहते हैं कि यदि कहीं तापमान बढ़ा (यानी गर्मी हुई) तो वायु दाब कम हुआ और यदि कहीं तापमान घटा (यानी ठंड हुई) तो वायु दाब बढ़ा ।

समुद्री और स्थलीय हवाएं :

तापमान और वायु दाब के अन्तर से चलने वाली हवाओं का अच्छा उदाहरण हम तटीय प्रदेशों में देख सकते हैं ।

जो लोग समुद्र के तट पर जैसे- बम्बई में रहते हैं वे बताते हैं कि दोपहर के बाद समुद्र की ओर से हवा चलने लगती है। इसे समुद्री हवा या "सी ब्रीज़"
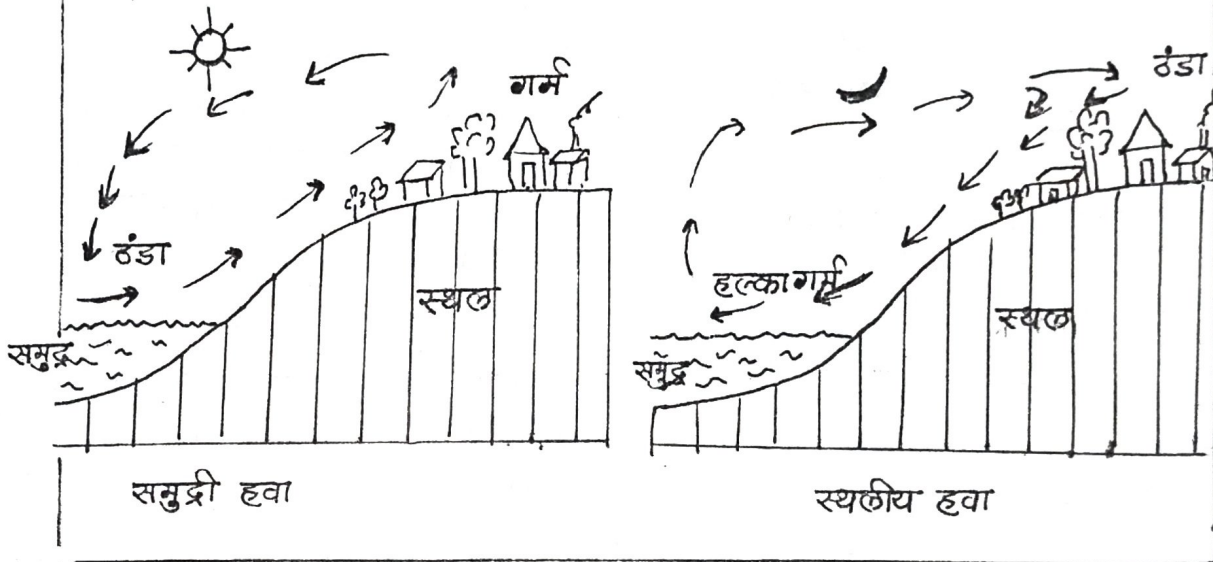
कहते हैं । चित्र में देख कर बताओ कि उस समय –

1. कौन सा हिस्सा अधिक गर्म हुआ ?

स्थल/जल

कौन से हिस्से का वायु दाब कम

हुआ ? स्थल/जल

हवा की दिशा होगी –

जल की ओर से/स्थल की ओर से

रात को जब स्थल ठंडा हो जाता है तब तट के निकट का समुद्र उतना ठंडा नहीं होता । स्वाभाविक है तब समुद्र के ऊपर की हवा भी गर्म रहती है ।

1. चित्र में देखो तब पवन स्थल से जल

की ओर चलने लगती है । इसे

स्थलीय पवन कहते हैं । बताओ अब

तापमान स्थल पर कम/अधिक है ।
----

2. उसकी तुलना में समुद्र पर तापमान

कम/अधिक है ।

वायु दाब स्थल पर ....है,

वायु दाब जल पर ....है ।

हवा की दिशा............वायु दाब

के क्षेत्र से ....के क्षेत्र की ओर होगी ।

इस तरह समुद्री तटीय क्षेत्रों में रात्रि के समय पवन की दिशा स्थल से समुद्र की ओर हो जाती है ।

दक्षिणी पश्चिमी मानसूनी हवाएं :

तुमने कक्षा-7 में "वर्षा आई नदी बही" पाठ में भारत में गर्मी में हवा की दिशा और वर्षा की बात पढ़ी थी । गर्मी के महीनों में तुम टी॰वी॰ पर भी देखते हो कि भारत के एक बड़े भाग में दिन का अधिकतम तापमान 40° से के ऊपर चला जाता है । स्वाभाविक है कि भारत का भू भाग गर्मी में खूब तप जाता है । गर्म हवाएं ऊपर उठने लगती हैं । इस समय यदि तुम वायु दाब का मानचित्र देखो तो साफ हो जायेगा कि भारत पर वायु दाब भी बहुत कम है ।

उसकी तुलना में हिन्द महासागर, बंगाल की खाड़ी और अरब सागर स्थल के समान गर्म नहीं हुए, वहां वायु दाब भी अधिक है ।

तब सागरों की ओर से भाप भरी हवाएं चलती हैं और भारत पर आकर खूब वर्षा करती हैं । यही मानसूनी हवाएं हैं ।

अभ्यास के प्रश्न :

1. पवन क्यों चलती है ? वायु दाब का उससे क्या संबंध है ?
2. गर्मी में पंजाब में कम वायु दाब और मध्य प्रदेश में अधिक वायु दाब का क्षेत्र है। बताओ पवन की दिशा किस राज्य की ओर होगी ।
3. तापमान बढ़ने पर वायु दाब .... होगा । कम/अधिक
   तापमान घटने पर वायु दाब .... होगा । कम/अधिक
4. कहीं आग जलाने पर हवा के साथ राख, जले पत्ते आदि ऊपर क्यों उड़ जाते हैं ?
5. समुद्र के निकट दिन में पवन जल की ओर से चलती है ऐसा क्यों है ?
6. दक्षिणी पश्चिमी मानसून हवाएं चलने के लिए आवश्यक है कि -
   अ- भारत का स्थल खूब तप जाये ।
   ब- भारत का स्थल खूब ठंडा हो जाये ।

स- भारत के स्थल पर अधिक वायु दाब हो ।
द- भारत के स्थल पर कम वायु दाब हो ।

इनमें से गलत बातों को काट दो ।

7. दक्षिणी पश्चिमी मानसून हवाएं चलने के लिए आवश्यक है कि भारत के स्थल की तुलना में हिन्द महासागर पर वायु दाब अधिक हो । ऐसा क्यों है ?
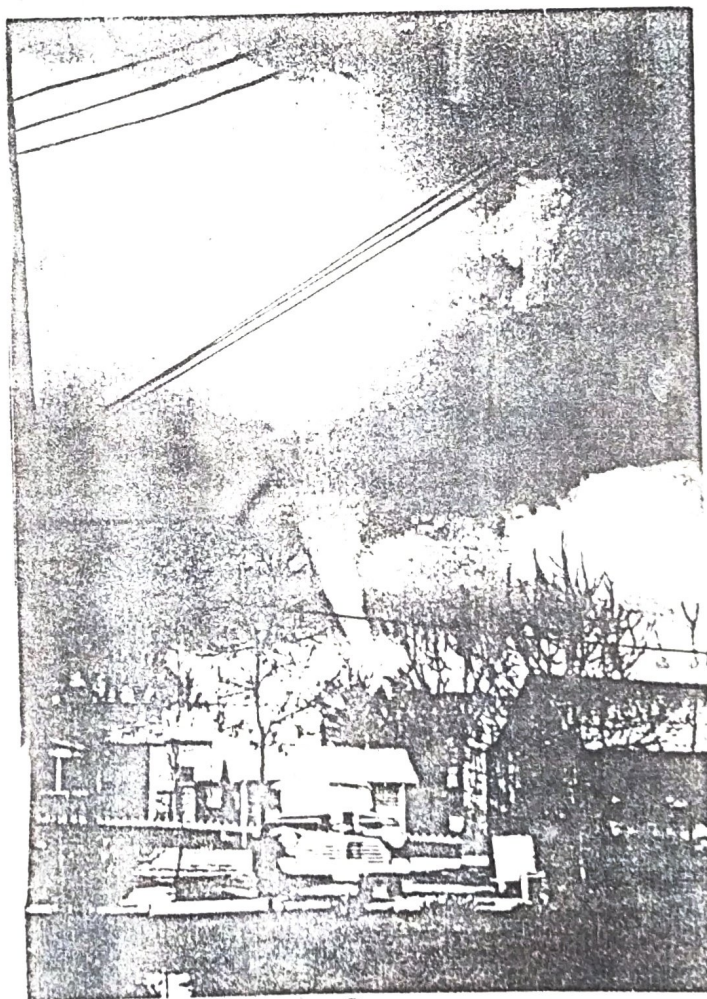
टोरनेडो नामक आंधी

पाठ-2 गर्मी और तापमान

पृथ्वी को गर्मी और प्रकाश सूर्य से मिलते हैं । तुमने महसूस किया होगा कि सुबह सूर्य के निकलने के बाद गर्मी बढ़ती है । शाम को सूर्य के अस्त होने के बाद ठंडा होने लगता है । इसी प्रकार सूर्य के निकलने पर ही उजाला होता है, दिन होता है ।

तुम पृथ्वी पर जितना भी जीवन देखते हो वह सब सूर्य से मिली गर्मी के कारण ही है । पेड़ पौधे उगते-बढ़ते हैं, पशु-पक्षी, यहां तक कि मनुष्य का जीवन चक्र भी इसी गर्मी से चलता है । कभी किसी पौधे को कई दिन कमरे में रख कर देखो कुछ दिनों बाद उसका रंग पीला पड़ने लगेगा, वह मुरझाने लगेगा । यही नहीं, पृथ्वी पर हवाओं का चलना, बादलों का बनना, वर्षा का होना, यहां तक कि समुद्री जलधाराओं का चलना भी सूर्य की गर्मी के कारण है ।

हवा का गर्म होना :

हवा सीधे सूर्य की किरणों से गर्म नहीं होती, सूर्य की किरणें वायु मंडल को पार कर धरती पर आ जाती हैं, उनसे सीधा वायु मंडल गर्म नहीं हो पाता । पहले सूर्य की गर्मी से धरती गर्म होती है तब उससे निकली गर्मी से चारों ओर की हवा गर्म होती है । सुबह सूर्य की किरणें हवा पर भी पड़ती हैं लेकिन तुमने देखा होगा कि उस समय हवा ठंडी रहती है । दोपहर तक जब धरती गर्म हो जाती है और उससे गर्मी निकलने लगती है, तब हवा को गर्म करती है । तभी तो धरती के निकट की हवा गर्म होती है तथा ऊपर की ओर ठंडी होती जाती है । आगे तुम इस विषय में विस्तार से पढ़ोगे ।

सही वाक्य पहचानों :

हवा सूर्य की गर्मी से सीधे गर्म होती है ।

हवा धरती के गर्म होने पर उसकी गर्मी से गर्म होती है ।

कितनी गर्मी :

तुम अपने शरीर को छूकर देखो, गर्म लगता है ? बुखार आने पर तो तपने लगता है । आग पर पानी रखो तो धीरे-धीरे गर्म होने लगता है, फिर खौलने लगता है । घड़े में पानी रखो, फिर छुओ तो ठंडा लगता है ? और ठंडा करने पर पानी जम जाता है या बर्फ बन जाता है । इस तरह हम रोज़ कई चीजों में गर्मी को बढ़ते और कम होते देखते हैं । ठंड भी इसी तरह बढ़ती घटती है । ठंड या गर्मी कम है या ज्यादा है या बहुत ज्यादा है इस बात को जब नाप कर बताया जाता है तो उसे तापमान कहते हैं । इस मापन के लिए आजकल सेल्सियस पद्धति अपनाई जाती है ।

तुम किसी डॉक्टर के पास जाओ तो थर्मामीटर देख सकते हो, जिससे शरीर का तापमान पता चलता है । बुखार आने पर शरीर का ताप कितना बढ़ गया, डाक्टर यह पता कर लेते हैं (थर्म = ताप, मीटर = पैमाना) तुम थर्मामीटर विज्ञान की किट में देख सकते हो ।

हवा की गर्मी की मात्रा नापने के अलग थर्मामीटर होते हैं पास के किसी मौसम के केन्द्र में जाकर देख सको तो देखो । वहां प्रतिदिन सुबह-शाम हवा का तापमान नोट किया जाता है ।

सेल्सियस थर्मामीटर के अनुसार मनुष्य का औसत तापमान 37° सेल्सियस रहता है । पानी जब 100° से. तक गर्म हो जाता है तब खौलने लगता है । इसके विपरीत जब पानी का तापमान 0° से. हो जाता है तब

पानी की बर्फ जम जाती है । तापमान 0° से. के नीचे भी चला जाता है तब उसे -5° से. या -10° से. कहते हैं ।

सोचकर बताओ कि यदि दिन का तापमान 40° से. हो जाये तो हमें सर्दी लगेगी या गर्मी ?

किसी बहुत ठंडी रात में पत्तों पर गिरी ओस बर्फ के कणों में बदल गई बताओ तापमान कितना गिर गया ?

पृथ्वी पर अधिकतम तापमान 58° से. रिकार्ड किया गया जो लिबिया में अजीजिया नामक स्थान का था तथा न्यूनतम - 60.5° से. रिकार्ड किया गया जो रूस में वरखोयोस्क नामक स्थान का था । तुमने ध्रुवीय प्रदेशों के बारे में पढ़ा था कि वहां इतनी ठंड होती है कि कई महीने बर्फ जमी रहती है । बताओ वहां का तापमान 0° से. के ऊपर रहेगा या नीचे ?

तुमने ईरान के रेगिस्तान के बारे में में पढ़ा था कि वहां गर्मी में कई महीने तेज गर्मी पड़ती है, गर्म हवाएं चलने लगती हैं, धरती जलने लगती है।

बताओ, उस समय वहां का तापमान 37° से. मनुष्य के औसत तापमान से ऊंचा रहेगा या कम ?

भारत में तापमान का वितरण :

यह तो तुम जानते हो कि भारत में किसी भी दिन सब जगहों का तापमान एक सा नहीं होता। हर दिन कहीं तापमान ज्यादा होता है, कहीं कम। भारत में अनेक स्थानों के तापमान के आंकड़े इकट्ठे किये जाते हैं, तब पता चलता है कि किन-किन स्थानों पर समान या एक जैसा तापमान है। नक्शे में समान तापमान वाली जगहों को एक रेखा से जोड़ते हैं। इस रेखा को समताप रेखा कहते हैं।

तुम टी.वी. पर खबरों के प्रसारण के अन्त में मौसम का हाल सुनते हो। उसमें भारत की उन सब जगहों को दिखाया जाता है जहां उस दिन सबसे अधिक तापमान था। इन जगहों को नक्शे पर एक समताप रेखा से जोड़ कर दिखाया जाता है। इससे तुम्हें पिछले दिन अधिकतम गर्म प्रदेशों और अन्य प्रदेशों के तापमान की जानकारी मिल जाती है।

भारत के जाड़े के तापमान का मानचित्र दिया गया है। इसे ध्यान से देखो और बताओ ?

1. किन राज्यों में न्यूनतम (सबसे कम) तापमान है ? इनको घेरे हुए कितने 0° की समताप रेखा है ?

2. भारत में अधिकतम तापमान कितना है और किस राज्य में है ? तमिलनाडु और केरल को घेरे हुए कितने 0° समताप की रेखा है ?

3. उत्तर के राज्यों की तुलना में ये प्रदेश गर्म क्यों है, कोई कारण सोच सकते हो ?

4. मोटे तौर पर दक्षिणी हिस्सों से उत्तर की ओर तापमान कम होता जाता है या ज्यादा होता जाता है ?

5. उत्तर के राज्यों में दक्षिण की तुलना में अधिक ठंड क्यों है, कोई

कारण सोच सकते हो ?

6. कुंजी में विभिन्न तापमान की पेटियों को अलग-अलग चिन्हों से दर्शाया गया है । पानचित्र में उन तापमान पेटियों को दिए गए चिन्हों से दर्शाओं ।
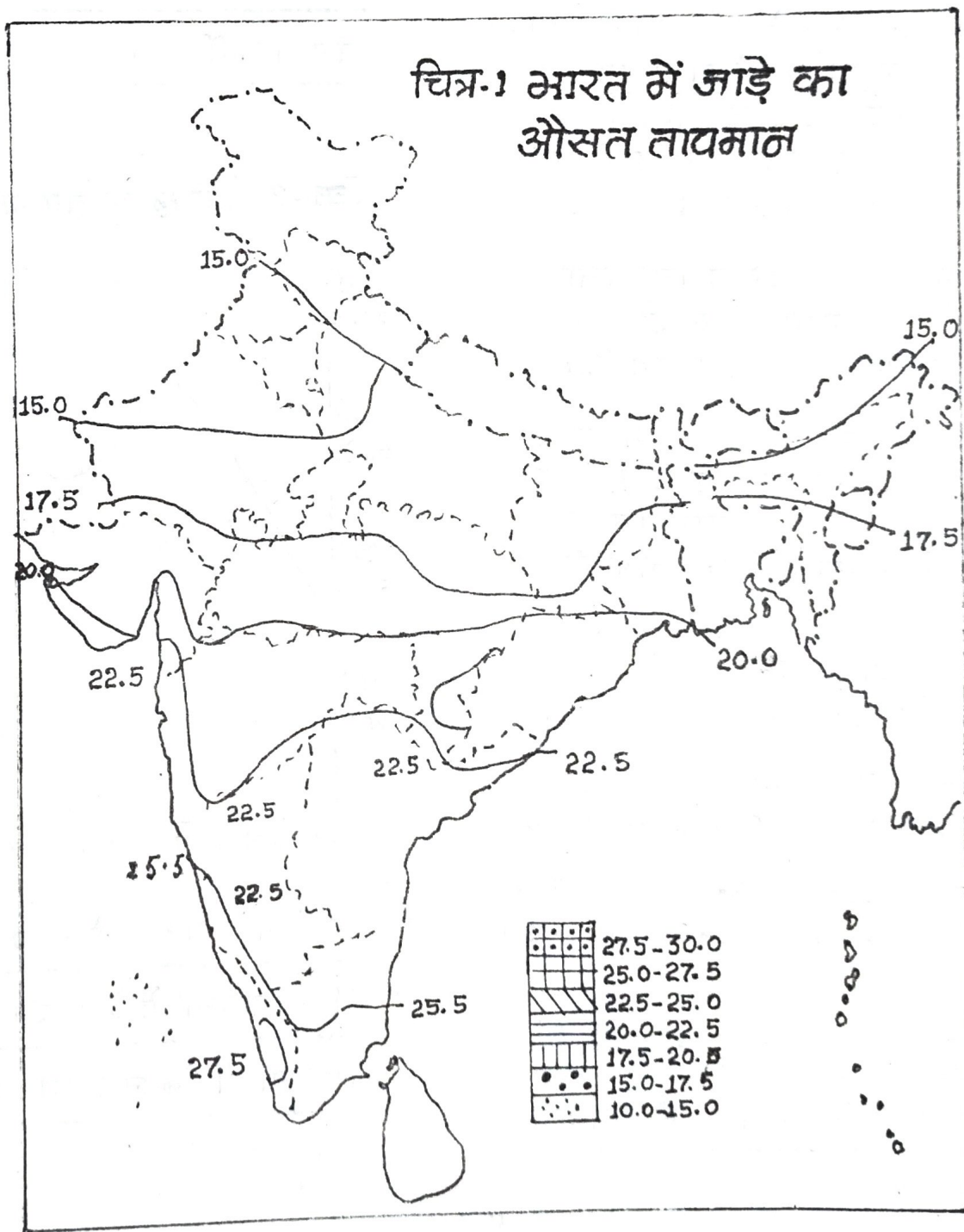
तापमान का रेकार्ड :

संसार में अब सैकड़ों स्टेशन बनाए गए हैं जहां सुबह-शाम तापमान नापा जाता है तथा उसका रेकार्ड रखा जाता है। फिर उस जगह के कई साल के तापमान की सहायता से औसत तापमान की गणना की जाती है। तब पता चलता है कि पृथ्वी पर कौन सी जगह कितनी गर्म है या कितनी ठंडी है।

तुमने गणित में औसत निकालना सीखा होगा। गुरूजी से समझो कि "औसत तापमान" का क्या अर्थ है।

नीचे भोपाल का हर महीने का औसत तापमान दिया गया है। दैनिक (यानी हर दिन के) तापमान की सहायता से औसत मासिक तापमान निकाला गया है।

भोपाल का औसत मासिक तापमान सेल्सियस में

ज॰	फ॰	म॰	अ॰	म॰	जू॰
16•8	21•3	25•0	29•7	32•6	31•6

जु॰	अ॰	सि॰	अ॰	न॰	दि॰
31•5	25•9	25•8	25•4	22•1	18•6

1• क्या तुम देखकर बता सकते हो, कि भोपाल में किन महीनों में तापमान नीचा रहता और किन महीनों में कुछ ऊंचा ?

2• तो कौन से महीने सर्दी के हुए और कौन से गर्मी के ?
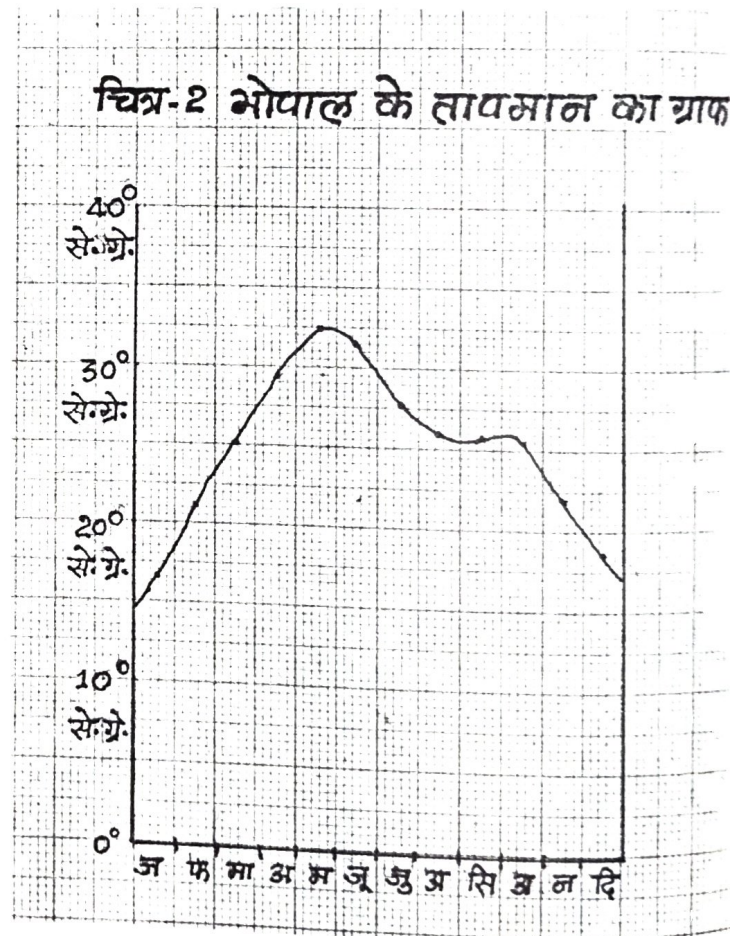
3• सबसे कम और सबसे अधिक तापमान किन महीनों में है ? इन दोनों महीनों में कितने डिग्री तापमान का अन्तर है।

बम्बई का औसत मासिक तापमान

डिग्री से॰ग्रे॰ में –

ज॰	फ॰	म॰	अ॰	म॰	जू॰
23•9	24•1	26•2	28•1	29•6	28•7
जु॰	अ॰	सि॰	अ॰	न॰	दि॰
27•3	27•0	27•0	27•9	27•2	25•4

शिमला का औसत मासिक तापमान

डिग्री से॰ग्रे॰ में –

ज॰	फ॰	म॰	अ॰	म॰	जू॰
5•5	5•5	10•1	15•0	18•0	20•0
जु॰	अ॰	सि॰	अ॰	न॰	दि॰
18•1	18•0	16•6	10•1	10•1	11•1

अब भोपाल के तापमान की तुलना बम्बई और शिमला के तापमान से भी करो । तुम इन आंकड़ों को ग्राफ पर भी बना सकते हो तब तापमान का परिवर्तन और स्पष्ट दिखने लगता है ।

1• क्या बम्बई के तापमान में गर्मी सर्दी के महीने दिखते हैं जिन्हें हमने भोपाल के तापमान में पहचाना है ?

2• अब बम्बई के तापमान की तुलना शिमला से करो । क्या यह स्थान बम्बई से अधिक ठंडा है ?

3• क्या शिमला में जून जुलाई का महीना उतना ही गर्म है जितना बम्बई में ?

4• दिसम्बर-जनवरी में शिमला में क्या भोपाल से अधिक ठंडा रहता है ?

5• शिमला में सबसे कम और सबसे अधिक तापमान किन महीनों में है ? शिमला का तापमान इन महीनों में भोपाल और बम्बई के तापमान से कम रहता है या अधिक ?

6• अब तय करो इन तीनों नगरों में सबसे ठंडा स्थान कौन सा है ? सबसे अधिक गर्मी कहां होती है ?

7· भोपाल, बम्बई तथा शिमला के ग्राफ देख कर बताओ कि इन नगरों के सबसे ठंडे महीने और सबसे गर्म महीने के बीच तापमान का कितना अन्तर है ?

सबसे अधिक अन्तर किस नगर में है ?

किस नगर में गर्मी और सर्दी के तापमान के बीच सबसे कम अन्तर है ?

यह नगर समुद्र के किनारे है । समुद्र के जल का ऐसा प्रभाव पड़ता है कि यहां तापमान न बहुत ज्यादा हो पाता है न बहुत कम । इसलिए आमतौर पर समुद्र के किनारे जलवायु एक जैसी रहती है, न बहुत ठंडी न बहुत गर्म । इसे सम जलवायु कहते हैं ।

ऊंचाई और तापमान :

तुमने पृथ्वी की सतह पर तापमान में होने वाले अन्तर को समझा । यह भी पढ़ा था कि वायु को गर्मी सीधे सूर्य से नहीं मिलती, बल्कि धरती से मिलती है । यही कारण है कि यदि हम हम धरती से ऊपर उठें तो तापमान कम होता जाता है । धरती से औसतन प्रत्येक 1 कि॰मी॰ ऊपर उठने पर 6 ° से॰ तापमान कम होता है । जो लोग पहाड़ों
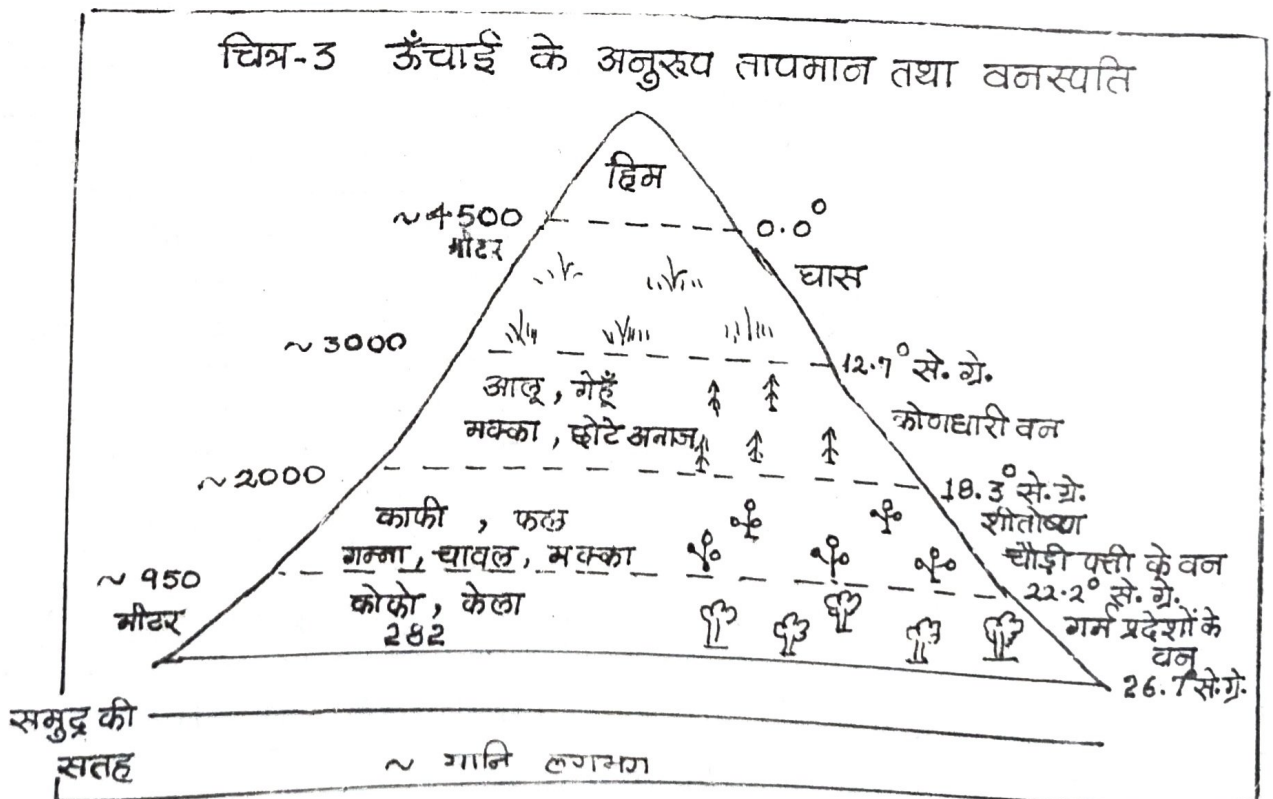
पर गए हैं वे बताएंगे कि जैसे-जैसे ऊपर चढ़ते हैं तापमान गिरता जाता है, सर्दी महसूस होती है । तुम जानते हो कि हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर तो कम तापमान के कारण साल भर हिम जमी रहती है, वहां वर्षा के स्थान पर हिमपात होता है ।

हिमालय की ऊंची चोटियों पर अत्यधिक ठंड के कारण कुछ नहीं उगता । उससे निचले ढलानों पर गर्मी का मौसम आने पर मुलायम घास उगती है । तब इन चरागाहों में लोग जानवरों को चराने पहुंच जाते हैं । उसके निचले ढलानों पर नुकीली पत्ती के वन उगते हैं । उसके नीचे ठंडे प्रदेशों में पाए जाने वाले चौड़ी पत्ती के वन मिलते हैं ।

ऊपर दिए गए चित्र में ऊंचाई के अनुरूप तापमान तथा वनस्पति दर्शाई गई है, उसको समझकर नीचे की तालिका भरो

ऊंचाई	तापमान	फसलें	वनस्पति

ऊपर का चित्र गर्म प्रदेशों में पाए जाने वाले पहाड़ों के लिए दिया गया है । गर्म प्रदेशों में अगर पहाड़ और ऊंचे हिस्से हों तो वहां लाभ भी अधिक मिलता है । ऊंचाई की ठंड का लाभ उठाकर वे सब फसलें पैदा कर ली जाती हैं जो साधारणत: गर्म प्रदेशों में नहीं होती - जो ठंडे प्रदेशों की फसलें हैं ।

हिमालय की निचली ढलानों पर, विशेषकर पश्चिम बंगाल तथा आसाम में चाय के बगान हैं । हिमाचल प्रदेश और कश्मीर में ठंडे प्रदेशों के फल जैसे, सेब, खुबानी, आलूबे, नाशपाती तथा मेवे जैसे अखरोट, बादाम आदि होते हैं । ये फल बहुत बड़ी मात्रा में चंडीगढ़ दिल्ली, लखनऊ, कलकत्ता आदि बड़े नगरों में बहुतायत से बिकने आते हैं ।

लगभग 1200-2000 मीटर की ऊंचाई के बीच हिमालय पर अनेक स्थानों में सब्जियाँ जैसे मटर, गोभी, फलियां, बंदगोभी, गाजर, टमाटर आदि पैदा किए जाते हैं । गर्मियों में जब ये सब्जियां गंगा के मैदान के नगरों में नहीं मिलती, हिमालय से पहुंच जाती हैं और ऊंचे दामों में बिकती है ।

हिमालय के उन हिस्सों में जहां बस्तियां बसी हैं, अनाज भी पैदा किया जाता है । वहां मिट्टी उपजाऊ है सीढ़ीनुमा खेत बनाकर अनाज पैदा किया जाता है । लगभग 1000-2000 मीटर की ऊंचाई

तक गेहूं और चावल की खेती होती है । कई जगह जहां सिंचाई के साधन हैं गर्मी में चावल और उसी खेत में जाड़े में गेहूं होता है ।

हिमालय की अन्य महत्वपूर्ण फसलें मक्का और आलू हैं । यह यहां के लोगों का भोजन है । आलू तो कुछ स्थानों पर इतना होता है कि गंगा के मैदान के बाजारों को भी जाता है ।

इस तरह भारत जैसे गर्म प्रदेश को वे कई चीजें मिल जाती हैं जो ठंडे देशों में उगती हैं । यह लाभ हमें इसीलिए मिलता है कि जैसे-जैसे पृथ्वी से जगह की ऊंचाई बढ़ती है, ठंडी जलवायु होने लगती है ।

अभ्यास के प्रश्न

1. यदि हमें धरती पर सूर्य की गर्मी नहीं मिलती तो क्या होता ? चार बातें बताओ ।
2. मनुष्य के शरीर का औसत तापमान कितना रहता है ? पृथ्वी पर अधिकतम तथा न्यूनतम तापमान कितना रेकार्ड किया गया ?
3. कितने तापमान पर पानी खौलने लगता है, और कितने तापमान पर जम जाता है ?
4. प्रत्येक किलोमीटर की ऊंचाई पर कितना तापमान घटता है ?
5. हिमालय की ऊंची चोटियों पर हिम जमी रहती है, निचले ढलानों पर वन उगते हैं, ऐसा क्यों है ?
6. गर्म देशों को पहाड़ों से क्या लाभ मिलता है ? भारत के उदाहरण से चार बातें बताओ ।
7. चित्र-4 में भारत का गर्मी का तापमान दर्शाया गया है । इसमें कई स्थानों का तापमान 30.0° से पाया गया एवं 30.0° से की समताप रेखा अधूरी बनाई गई है । क्या तुम उसे पूरी बना सकते हो ।

चित्र-4 भारत में गर्मी का तापमान
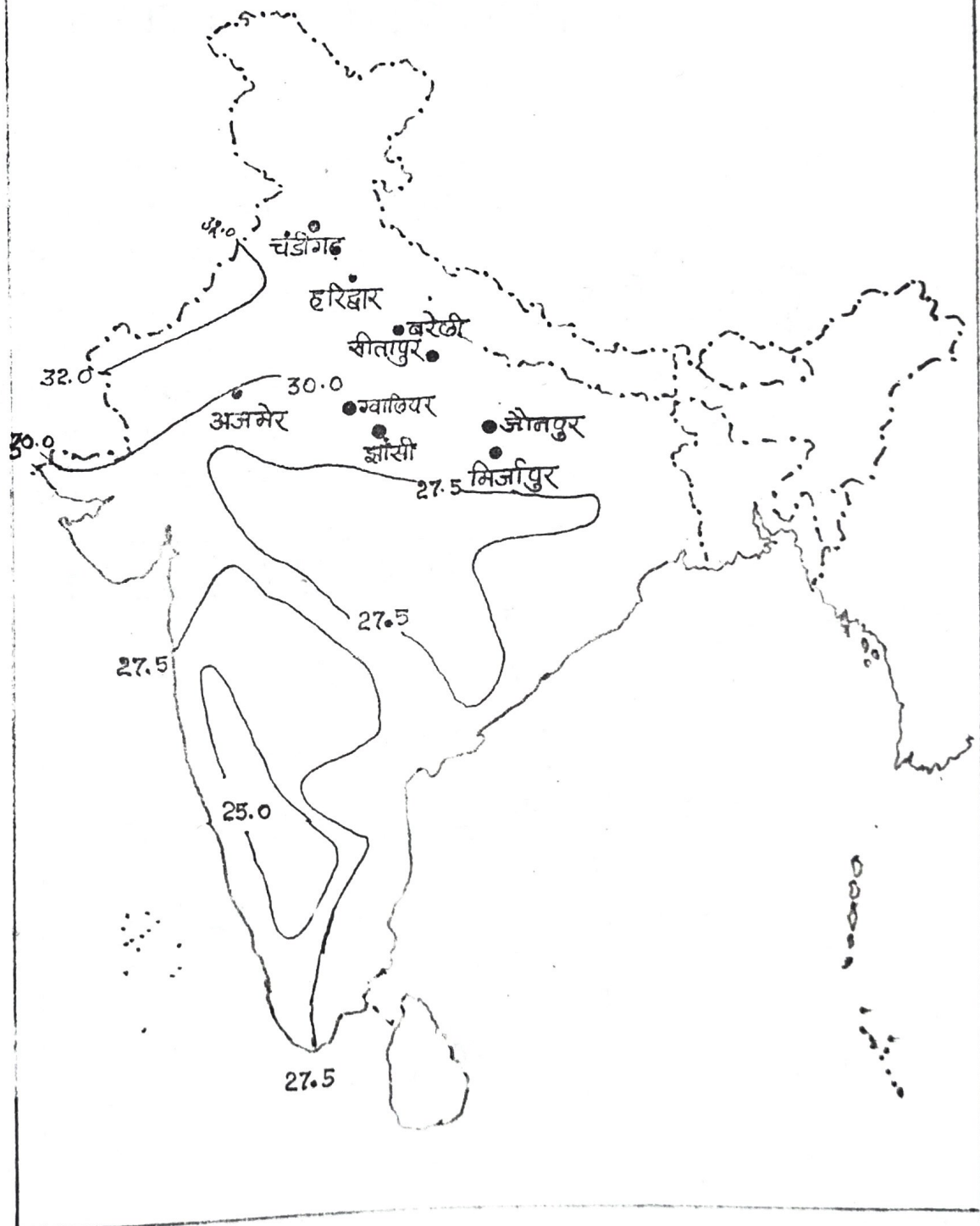
पाठ-3 उत्तरी अमेरिका खोजा गया - बसाया गया

अमेरिका महाद्वीप की खोज :

बहुत पुरानी बात नहीं है, केवल 500 साल पहले तक दुनिया के लोग समझते थे एशिया, यूरोप और अफ्रीका। तब यूरोप के लोग नहीं जानते थे कि पृथ्वी पर और भी कोई महाद्वीप है। उस समय हवाई जहाज तो थे नहीं कि उड़ कर देख लेते। जलयान भी छोटे-छोटे बनते थे, और पाल व पतवार से चलते थे। तब बड़े-बड़े सागर पार करना मुश्किल काम था। उस समय भारत का बड़ा नाम था। भारत की ओर समुद्री मार्ग की खोज में यूरोप के साहसिक नाविक निकल पड़ते थे। अंतत: सन् 1492 में कोलम्बस नामक नाविक

चित्र-1 कोलंबस अमेरिका पहुँचा
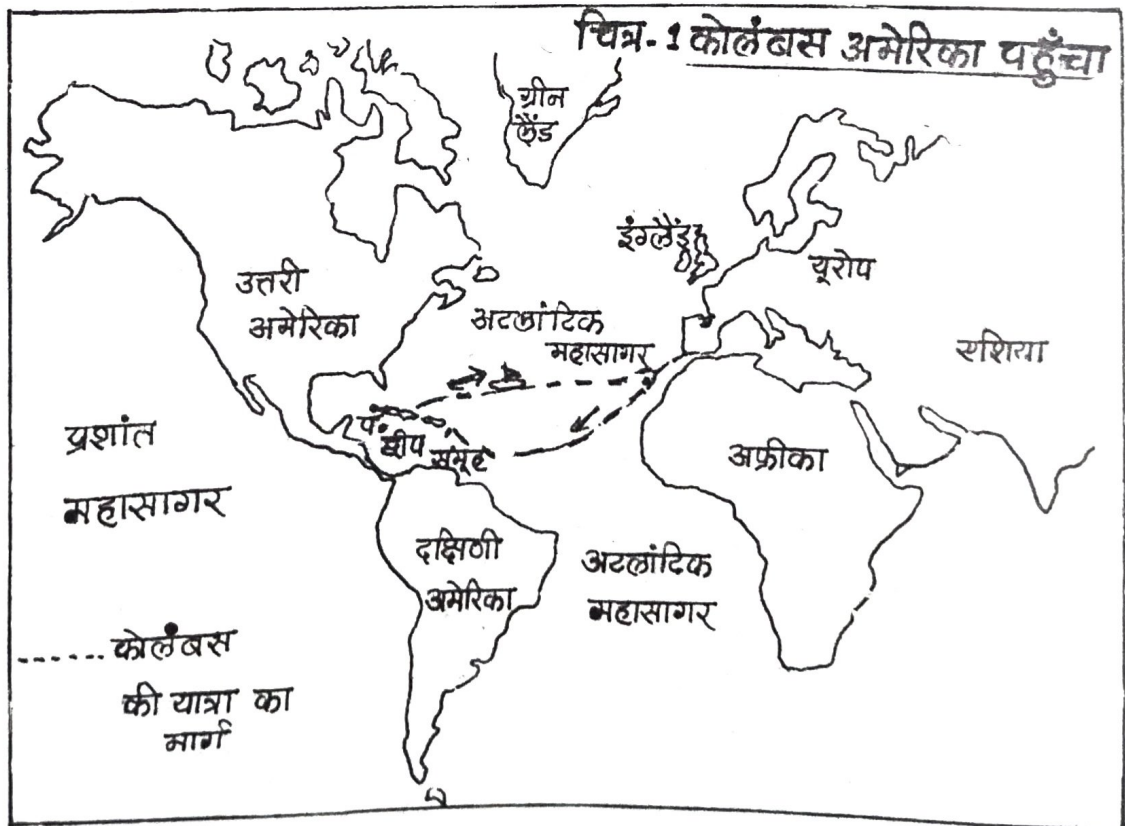
भारत ढूंढते हुए अमेरिका पहुंच गया । तब वह यह समझा था कि भारत पहुंचा है, जब कि उसने नया महाद्वीप खोजा था । अब उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका को लोग "नई दुनिया" कहने लगे ।

तुम सोचोगे कि अमेरिका की खोज कोलम्बस ने की, तो उन नये महाद्वीपों का नाम अमेरिका क्यों पड़ा ? सोलहवीं शताब्दी में एक अन्य खोजी अमेरिगो - वेसपुक्की ने अमेरिका के किनारों पर घूम कर उसका वर्णन किया । उसके आधार पर वाल्डीमुलर नाम के एक व्यक्ति ने 1507 में संसार का एक मानचित्र बनाया जिस में उन नए महाद्वीपों को दिखाया गया और उनको अमेरिका कहा । तब से इनका नाम पड़ा ।

तुम दीवार के मानचित्र या ग्लोब में इन महाद्वीपों को देखो :

1. क्या उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका उत्तरी ध्रुव से दक्षिण ध्रुव तक फैले हैं ?

2. भूमध्य रेखा इनमें से किस महाद्वीप से गुजरती है ?

3. कर्क तथा मकर रेखाएं अमेरिका के किन देशों से जाती हैं ?

4. यह दोनों महाद्वीप किन महासागरों के बीच हैं ?

अ- ....ब-.........

5. यूरोप तथा अफ्रीका से अमेरिका जाने के लिए कौन सा महासागर पार करना होगा ?

6. अमेरिका तथा एशिया के बीच कौन सा सागर है ?

इस तरह तुमने देख लिया कि अमेरिका महाद्वीप दोनों ओर से महासागरों से घिरा है । जैसे- अफ्रीका, एशिया और यूरोप के लोग

बिना समुद्र पार किए एक दूसरे महाद्वीप में आते जाते हैं । वैसे अमेरिका से दूसरे महाद्वीपों में आना-जाना संभव नहीं ।

अमेरिका की खोज के बाद लगभग सौ साल तक स्पेन, पुर्तगाल, फ्रांस आदि के अनेक नाविक और खोजी वहां आते रहे । अमेरिका के तट पर पाई जाने वाली खाड़ियों से हो कर वे अन्दर तक जाने की कोशिश करते थे । तुम जानते हो कि खाड़ियों में समुद्र का पानी भी शांत होता है- इसलिए वहां जहाज अच्छी तरह ठहर सकते हैं । कुछ लोग उत्तर में हडसन् की खाड़ी और सेन्ट

लोरन्स नदी की खाड़ी तक पहुंचे, कुछ अटलांटिक तट पर चीसपीक की खाड़ी तथा दक्षिण में मेक्सिको की खाड़ी तक पहुंचे । इन्हें मानचित्र में देखो ।

तब न सड़कें थीं, न पुल, न हर जगह बस्तियां थीं, जहां भोजन पानी मिले । इसीलिए भीतर के भागों में पहुंचना और लौटना बड़ा कठिन था । फिर भी अमेरिका की जानकारी बढ़ती रही ।

अमेरिका बसने लगा :

धीरे-धीरे यूरोप के लोग अमेरिका में आकर बसने लगे । तुम सोचोगे कि यहां लोग आकर बसने लगे तो क्या अमेरिका में लोग नहीं थे ? कोलम्बस जब अमेरिका आया तो समझता था कि वह भारत पहुंचा है तो यहां के निवासियों को "इंडियन्स" कहता था, बाद में यहां के लोगों को "रेड इंडियन्स" या आदिवासी इंडियन्स कहा जाने लगा । यहां के लोगों के अनेक छोटे-बड़े कबीले, अलग-अलग हिस्सों में रहते थे । ये लोग अमेरिका के आदिवासी थे । वे मुख्यत: "बाईसन" नाम के जंगली भैंसों का शिकार करके जीते थे । इस कारण वे एक जगह बसकर नहीं रहते थे । वे खेती भी नहीं करते थे ।

ऐसा अनुमान है कि उत्तरी अमेरिका

चित्र-2 यूरोपियन लोग कहाँ बसे
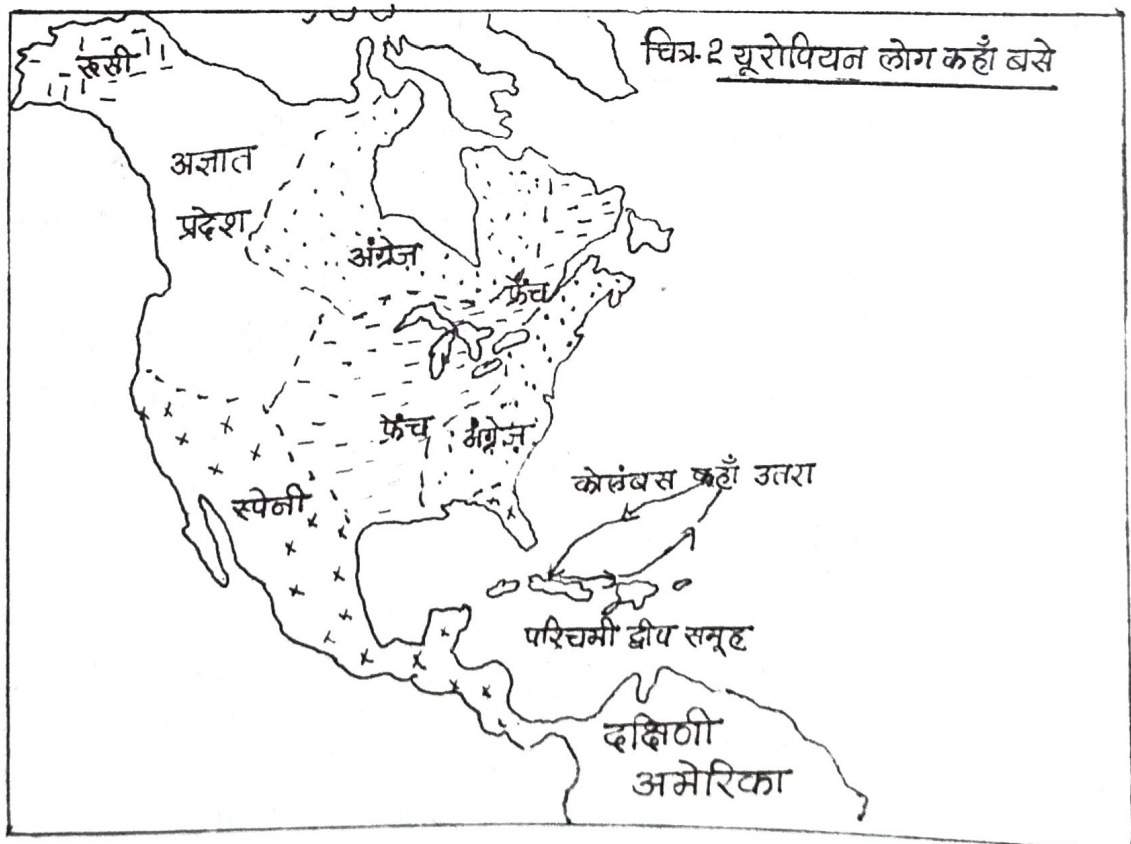
के अटलांटिक तट पर लगभग 125,000 लोग बसे थे । पूरे महाद्वीप में लगभग 20 लाख लोगों के रहने का अनुमान है । इस तरह अमेरिका में लोग तो थे पर फिर भी बड़े हिस्से खाली पड़े थे । इसके बावजूद यहां बसने के लिए यूरोप से आए लोगों को लड़ना पड़ा । क्योंकि जहां इंडियन्स शिकार करते थे वहां यूरोपियन बसने लगे। बहुत से स्थानीय कबीले मारे गए । यूरोपियन लोगों के पास बन्दूकें थी जिनसे वे जीत सके । और बचे हुए लोगों को रहने के लिए कुछ स्थान दे दिया गया । अधिकतर प्रदेश में यूरोप से आए लोग बसे जो 3-4 सौ साल में अब यहां के बाशिंदे हो गए हैं ।

सोचने की बात है कि लोग यूरोप में अपना घर-बार, देश छोड़ कर अमेरिका बसने के लिए क्यों आने लगे ? यूरोप में जनसंख्या अधिक हो गई थी, उसकी तुलना में खेतिहर भूमि कम थी । लोगों को पता चलता कि अमेरिका में खूब भूमि खाली पड़ी है जहां बड़े-बड़े फार्म बनाए जा सकते हैं । भूमि बहुत सस्ती भी थी । हजारों लोग खेतिहर भूमि के आकर्षण में यूरोप से अमेरिका आ गए । यूरोप में धार्मिक कट्टरता भी थी । सभी लोग अपने ढंग से धर्म के पालन में स्वतंत्र नहीं थे । यह सोचकर कि अमेरिका में धर्म पर कोई बंधन नहीं होगा, वे यूरोप में अपना देश छोड़ कर अमेरिका बसने चले आए । उन दिनों अमेरिका से व्यापार भी शुरू हो गया था तो अमेरिका की चीजें भेजने और यूरोप की चीजें मंगा कर व्यापार करने के लिए भी बहुत से लोग अमेरिका आ गए । अफ्रीका से हजारों लोगों को ज़बरन गुलाम बना कर लाया गया ।

उस जमाने में यह प्रसिद्ध हो गया था कि अमेरिका में सोना चांदी खूब मिलता है तो उसके लालच में भी लोग अमेरिका पहुंचे ।

1750 तक लगभग 20,000 फ्रेन्च, 15 लाख ब्रिटिश और स्पेन, जर्मनी, इटली तथा स्विट्ज़रलैंड नोर्वे, स्वीडन अफ्रीका के हजारों लोग जहाजों में भर कर उन उपनिवेशों में आने लगे जो बाद में संयुक्त राज्य अमेरिका बने ।

मानचित्र2में देखो अमेरिका के किन हिस्सों में कौन लोग बसे ।

अमेरिका में भूमि की कमी नहीं थी, मिट्टी उपजाऊ थी और जलवायु उपयुक्त थी । आए हुए लोग भूमि को धीरे-धीरे खेती के लिए साफ करते । धीरे-धीरे अटलांटिक तटीय मैदान में लोग फैलते गए । ऐसी ही एक शुरू-शुरू की बस्ती जेम्सटाउन थी ।

:: जेम्सटाऊन की कहानी ::

सन् 1610 के लगभग की बात है । एक छोटा सा जहाज ब्रिटेन से आकर चीसपीक की खाड़ी में पहुंचा । उसमें 120 लोग थे, जो अमेरिका में बसने आए थे । खाड़ी में उतरे और बसने के लिए वे कोई उपयुक्त स्थान ढूंढ रहे थे । अंत में उन्होंने एक छोटी नदी के निकट ऊंचा स्थान चुना । बाद में इसे जेम्स नदी पुकारने लगे और इस नई बस्ती का नाम जेम्स टाऊन पड़ा । मानचित्र में इन को देखो । सोच कर बताओ :

1. लोगों ने नदी के किनारे स्थान क्यों चुना ?
2. ऊंचा स्थान क्यों चुना गया ?

जेम्सटाऊन में बसने वाले अंग्रेजों के सरदारों का नाम स्मिथ तथा न्यूपोर्ट था । उन्होंने ब्रिटेन के राजा से अमेरिका में बसने के लिए अनुमति ले ली थी और सन् 1606 में उन्होंने एक कम्पनी भी बना ली थी जो अमेरिका गए लोगों के द्वारा किए काम और उपज से लाभ कमाएं । लोगों की बसाहट के मानचित्र को देखकर बताओ उन्हें ब्रिटेन के राजा की अनुमति क्यों लेनी पड़ी ?

जेम्सटाऊन में आए लोगों में बढ़ई, लोहार, दर्जी, नाई और ईसाई धर्म का प्रचार करने वाले पादरी थे । उन्होंने कम्पनी से यह साझा किया कि काम करके जो अनाज पैदा होगा वह कम्पनी का होगा और कम्पनी बदले में उन्हें खाना कपड़ा, औजार, बन्दूकें, हथियार आदि देगी । उन्होंने कम्पनी को अमेरिका तक आने का किराया भी नहीं दिया था । अमेरिका में खेती करके वे लोग अपने आने का किराया भी देते थे । इस तरह अमेरिका आए लोग एक तरह से कम्पनी के बन्धुआ मजदूर हो गए ।

सोचो वे लोग जहां उतरे। वहां न मकान, न सड़कें न गाड़ियां, न खेत और न उनकी उपज, वह तो बिल्कुल नई भूमि थी । फिर भी वह लोग पहले तम्बू गाड़ कर रहने लगे । उन्होंने पेड़ काट कर लकड़ी के मकान बनाए । चारों तरफ के

चित्र-3 जेम्स टाउन की स्थिति
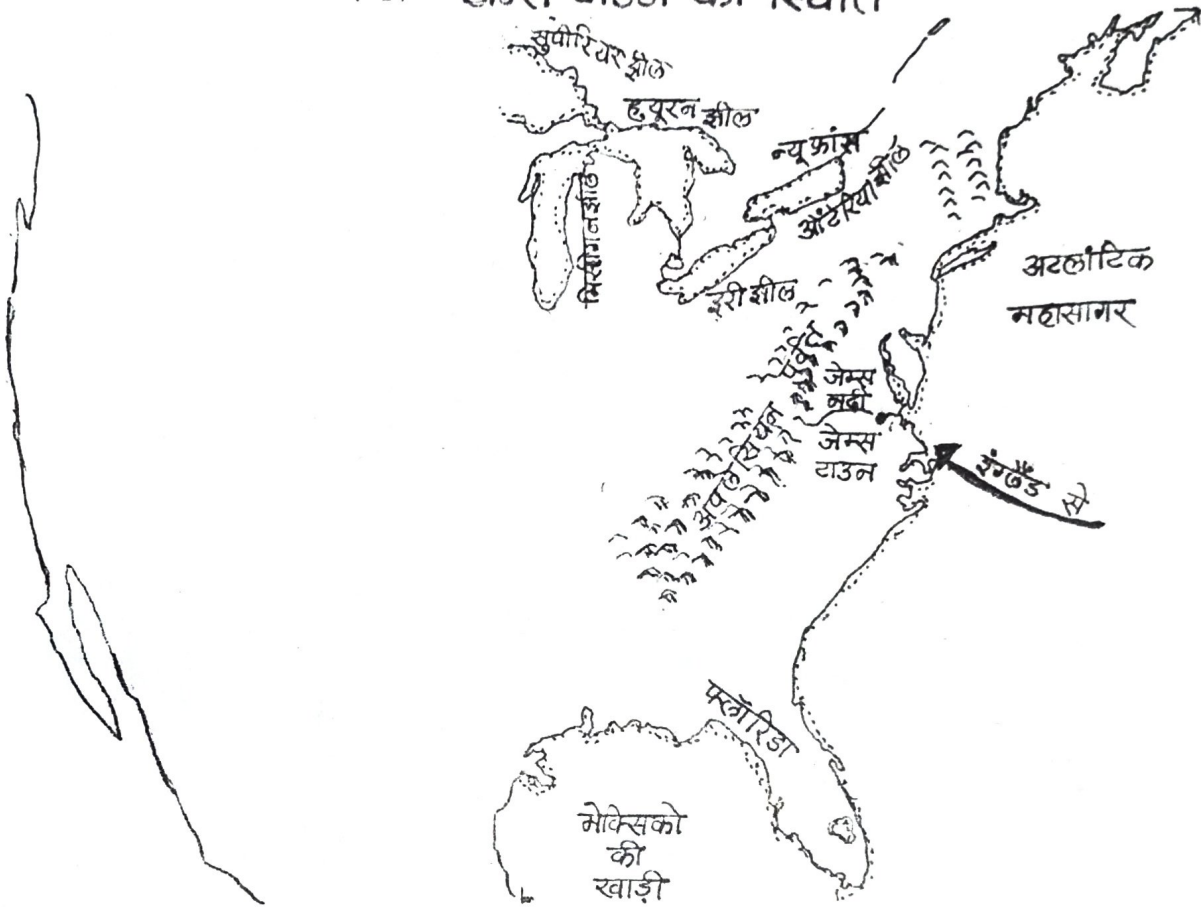
जंगल में जंगली पशु भी तो थे। उनसे बचाव के लिए आवश्यक था कि बस्ती के चारों ओर का जंगल साफ कर लें। वे लोग अपने साथ केवल दो महीने का भोजन लाए थे, उन्हें यह भी चिन्ता थी कि जल्दी भूमि साफ करके खेती के योग्य बनाएं, वरना दो महीनों के बाद वे लोग क्या खाते। उन दिनों पेड़ों को काटने के लिए शक्ति चलित आरा नहीं थे। कुल्हाड़ी से पेड़ काटते, उनको छोटे लट्ठों में करते, कुछ घर आदि बनाने के लिए इस्तेमाल करते छोटी लकड़ी जलाने के काम आती।

जेम्सटाउन पर आक्रमण :

चारों ओर के प्रदेश में रहने वाले लोग पोहटान कहलाते थे। उन्होंने जब नए लोगों को बसते देखा तो एक दिन जेम्सटाउन पर आक्रमण कर दिया। अंग्रेज़ों के पास बन्दूकें थीं, उनसे उन्होंने बचाव किया, फिर भी इस लड़ाई में कई अंग्रेज़ मारे गए। उनका सरदार स्मिथ सोचने लगा कि यदि हमें यहां बसना है तो पोहटान लोगों से दोस्ती

करना जरूरी है । वह पोहटान सरदार से मिला और कई चीजें उपहार में दीं । उसमें एक चुम्बकीय सुई थी । तुम जानते हो कि चुम्बकीय सुई उत्तर दिशा बताती है । पोहटान सरदार इन उपहारों से खुश हुआ । फिर वे लोग अंग्रेज़ों की बन्दूकों से डरते भी थे । इस तरह दोस्ती होने पर जब अंग्रेज़ों को भोजन की कमी भी हुई तो पोहटान लोगों ने बहुत खाने का सामान अंग्रेजों को दिया ।

जेम्सटाउन के बसने के बाद पहले जाड़े में ही, जाड़े और भूख से लोग मरने लगे । मच्छरों और गन्दे पानी से भी बीमारियां फैलीं । फिर भी वे जमीन साफ करके खेती करने लगे और भोजन मिलने लगा । शुरू में साल में लगभग 40 एकड़ भूमि साफ हुई जिसमें मक्का और सब्जियां पैदा की गईं । क्या सोच सकते हो कि इतनी कम भूमि खेती योग्य क्यों हुई ?

चित्र-4 केप्टन स्मिथ को रेड इंडियन ने खाने का तरह-तरह का सामान दिया
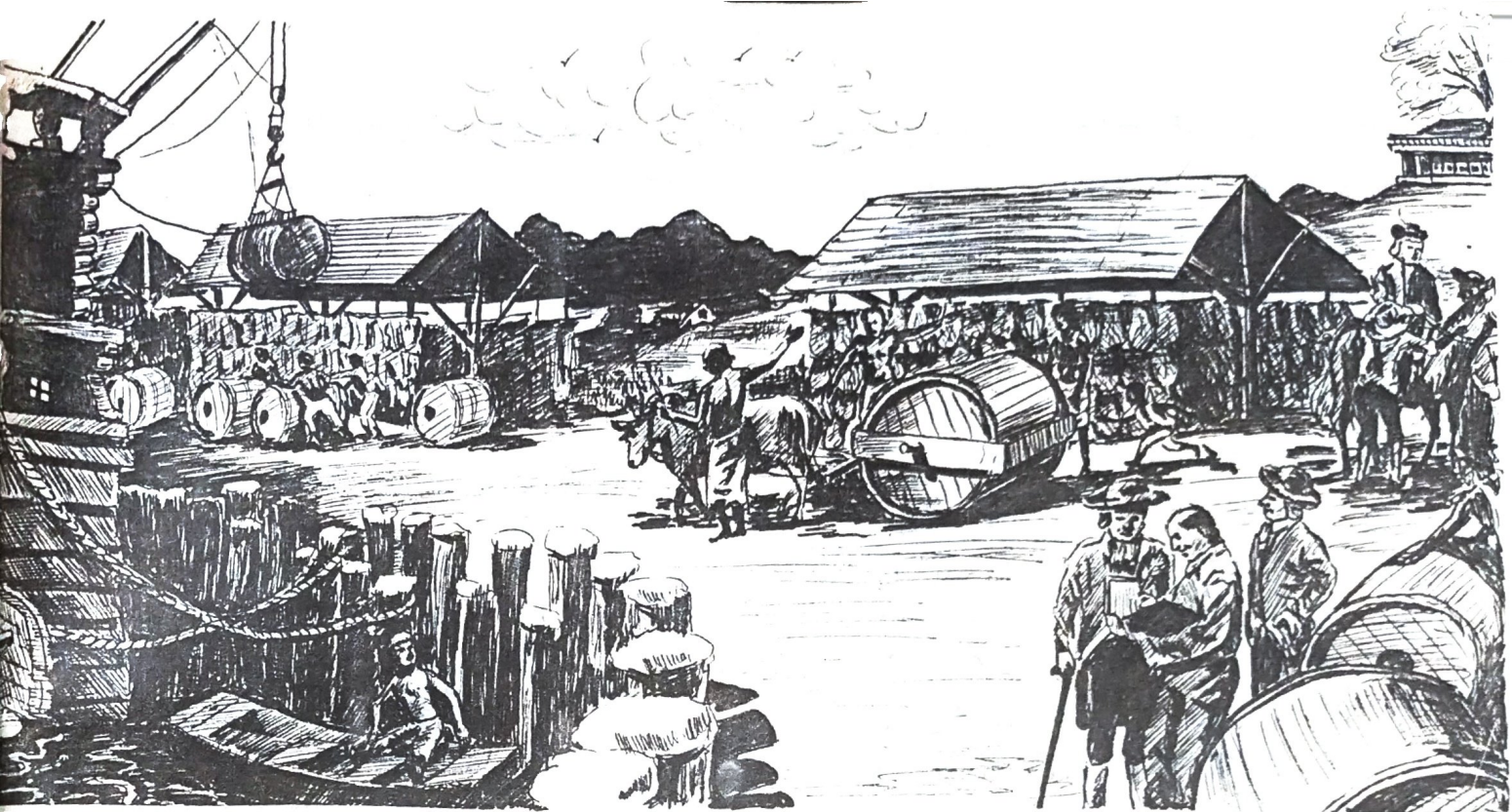
चित्र-5 यूरोप को जाने वाला सामान लादने के लिए तैयार शेड में तम्बाकू सुखाई जा रही है ।

स्मिथ एक बार आग से जल गया और इलाज के लिए इंग्लैंड चला गया । तब पोहटान लोगों ने फिर आक्रमण कर दिया । अंग्रेजों के पालतू सुअर भगा दिए, मजबूर होकर जेम्सटाऊन के लोगों ने पालतू घोड़े और कुत्तों को भी अपना भोजना बनाया । अन्त में वे इतने तंग आ गए कि ब्रिटेन वापस जाने लगे । तब तक उन्हें ब्रिटेन से आए और लोग मिल गए और सब मिलकर जेम्सटाऊन लौट आए ।

इस बीच नई बस्ती का नया गवर्नर ब्रिटेन से आया और उसने नए बसे लोगों को तीन-तीन एकड़ जमीन दे दी । इससे उन्हें साल भर का भोजन मिल जाता, कुछ उपज वे कम्पनी के गोदान को दे देते । पहले कम्पनी के साझे के अनुसार जितनी भूमि साफ होती, और उसमें जितनी भी उपज होती वह कम्पनी ले लेती थी ।

बताओ पहले के साझे की तुलना में अब लोग बहुत मेहनत से खेती का काम करते, ऐसा क्यों हुआ ?

ब्रिटेन से व्यापार :

जब जेम्सटाऊन बसा तब अमेरिका में कुछ न बनता था जैसे- कपड़ा, ओजार,

हथियार, दवाएं आदि । यह सब चीजें ब्रिटेन से आयात करनी पड़ती थी । इसके बदले जेम्सटाऊन के लोग लकड़ी और कुछ जड़ी बूटियां भेजते थे । लेकिन इससे मंगाए समान के दाम चुकता नहीं होते थे ।

तभी आसपास के प्रदेश में तम्बाकू की खेती शुरू की गई । फिर ब्रिटेन से इसका व्यापार शुरू हुआ । यह एक ऐसी फसल थी कि ब्रिटेन के मार्ग में खराब नहीं होती थी । तम्बाकू की ब्रिटेन में मांग भी खूब थी । जहाजों पर तम्बाकू जाती और दूसरी तरफ इंग्लैंड से आने वाले जहाजों पर नए लोग अमेरिका बसने आते ।

इस तरह अमेरिका में सब से पहले यूरोपीयन लोगों की जो बस्तियां बनी वे चीसपीक खाड़ी के पास वाले इलाके में ही थीं । यह इलाका आज अमेरिका का वर्जीनिया राज कहलाता है । इसे संयुक्त राज्य अमेरिका के मानचित्र में देखों । यहां आज भी तम्बाकू बहुत मात्रा में उगाई जाती है ।

तम्बाकू के खेत तो फैल गए थे लेकिन खेतों में काम करने वाले उतने नहीं थे । सन् 1619 में एक डच जहाज 20 अफ्रीकी दासों को लेकर जेम्सटाऊन आया । जहाज के अधिकांश दास मर चुके थे । केवल 20 बचे हुए थे । यहां बसे यूरोपियन लोगों लोगों ने उन्हें खरीद कर अपना दास

चित्र-6 प्रारंभिक दिनों में तम्बाकू के खेतों के बीच वृक्षों को छोड़ देते थे ।
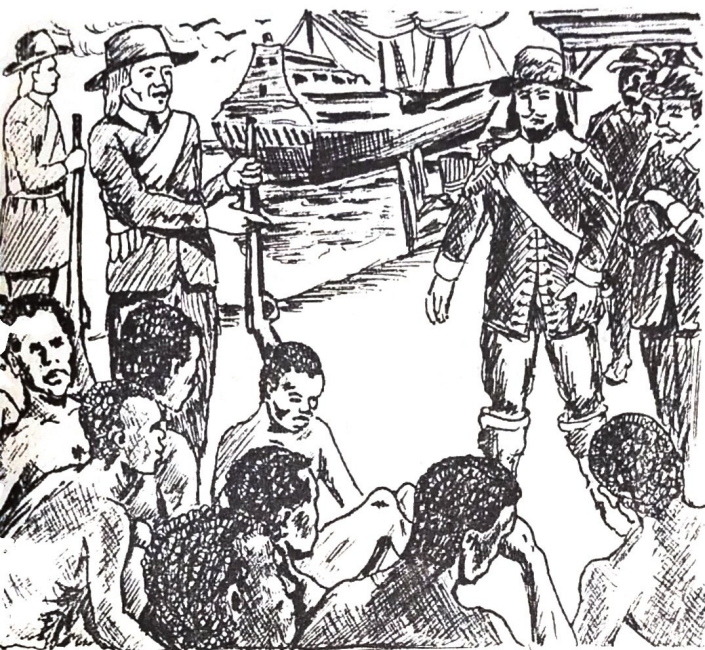
चित्र-7 प्रारंभ में आए दास- वर्जीनिया

बना लिया । उन्हें जबरन खेतों में काम करने को कहा गया । दासों के मालिक देखते-देखते धनी हो गए । फिर तो अफ्रीकी दासों की मांग बढ़ती गई ।

यूरोप के देशों- स्पेन, फ्रांस, हालैन्ड, इंगलैन्ड आदि की कम्पनियाँ दासों का व्यापार करने लगीं । वे लोग यूरोप से तरह-तरह का सामान अफ्रीका ले जाते और उसके बदले दासों को खरीद लेते । उन्हें बन्दी बना कर अमेरिका लाते । रास्ते में कितने ही लोग बीमार पड़ते, मर जाते । उनके भोजन, कपड़े का भी ठीक प्रबन्ध नहीं होता । अमेरिका लाकर बाजारों में दासों की नीलामी होती । जो यूरोपियन लोग खेती-हर भूमि लेते, वे दासों को भी खरीदते । उनको फार्म पर रख कर खेती का काम करवाते । उनकी औरतें फार्म में घरों का काम भी करतीं । उसके बदले उन्हें मजदूरी नहीं मिलती थी । केवल खाना और कपड़ा दिया जाता था । दासों की मारपीट, यातना देना और यदि भागें तो मार देना एक आम बात थी । दासों के जो बच्चे होते वे भी उसी मालिक के दास होते, या आवश्यकता न होने पर, उन्हें बाज़ार में बेच दिया जाता ।

उसी साल, यानी 1619 में ब्रिटेन से पहली बार औरतें और लड़कियां भी आईं जिनसे जेम्सटाउन के लोगों ने विवाह करके घर बसाए । इस तरह लोग यहां स्थायी रूप से रहने लगे ।

चित्र-8 खेतों पर काम करवाते अंग्रेज

जेम्सटाऊन में फिर सरकारी तंत्र भी विकसित हुआ । और गर्वनर के साथ जनता के प्रतिनिधि मिलकर कानून और व्यवस्था चलाने लगे । सन् 1776 में संयुक्त राज्य अलग देश बन गया , वह ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा नहीं रहा ।

आज जेम्सटाऊन नामक नगर या बस्ती तो नहीं है । वहां पार्क, और कुछ पुराने मकान बचे हैं

जेम्सटाऊन के बसने के बाद तो अमे- में नगर और बस्तियां बनते गए ।

तो अब तुम समझ गए होगे कि नई जगह बसने में क्या-क्या कठिनाइयां लोगों को उठानी पड़ी । लेकिन एक बार बसने के बाद तो वहां के प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से लोगों ने अपनी सुख-सुविधा के साधन भी बनाए और धन भी कमाया ।

अभ्यास के प्रश्न :

1. यूरोप के लोग अमेरिका आकर क्यों बसने लगे ?
2. अमेरिका के तट पर खाड़ियों से होकर भीतर जाने में क्या सुविधा थी ? वे किसी भी तट पर उतर कर भीतर क्यों नहीं जाते थे ?
3. स्थानीय कबीले बाहर से आए लोगों से क्यों लड़ते थे ?
4. जेम्सटाऊन के पास कौन से कबीले बसते थे ?
5. कोलम्बस अमेरिका के किस हिस्से में पहुंचा था ?
6. जेम्सटाऊन के लोगों को चारों ओर की 40 एकड़ जमीन साफ करने में बहुत समय लगा, ऐसा क्यों ?
7. जेम्सटाऊन के लोगों को ब्रिटेन से व्यापार करना क्यों जरूरी हो गया ?
8. जेम्सटाऊन के लोगों ने तम्बाकू की खेती करना क्यों पसंद किया ? उससे उन्हें क्या लाभ हुआ ?

पाठ-4 उत्तरी अमेरिका

17 वीं शताब्दी में उत्तरी अमेरिका के अटलांटिक तट और पूर्वी भागों में यूरोप से आए लोग बसने लगे। उनमें बहुत से लोग अधिक और उपजाऊ भूमि, प्राकृतिक संसाधन एवं बहुमूल्य धातुओं विशेषकर सोना और चांदी की खोज में भीतरी भागों में भी जाने लगे।

अमेरिका के पूर्वी हिस्से :

बहुत से लोग अपलेशियन पर्वत के दर्रों (पहाड़ के बीच रास्ता) से होते हुए पश्चिम की ओर के प्रदेश को खोजने लगे। इन लोगों की यात्राएं बड़ी कठिन होती थीं। जंगल को काट कर रास्ता बनाते, दलदलों को पार करते, यहां तक कि नदियों को

चित्र-1 पश्चिम की ओर जाने वाले लोगों की गाड़ियां तथा जानवर जानवर

चित्र 1 उत्तरी अमेरिका की प्राकृतिक बनावट
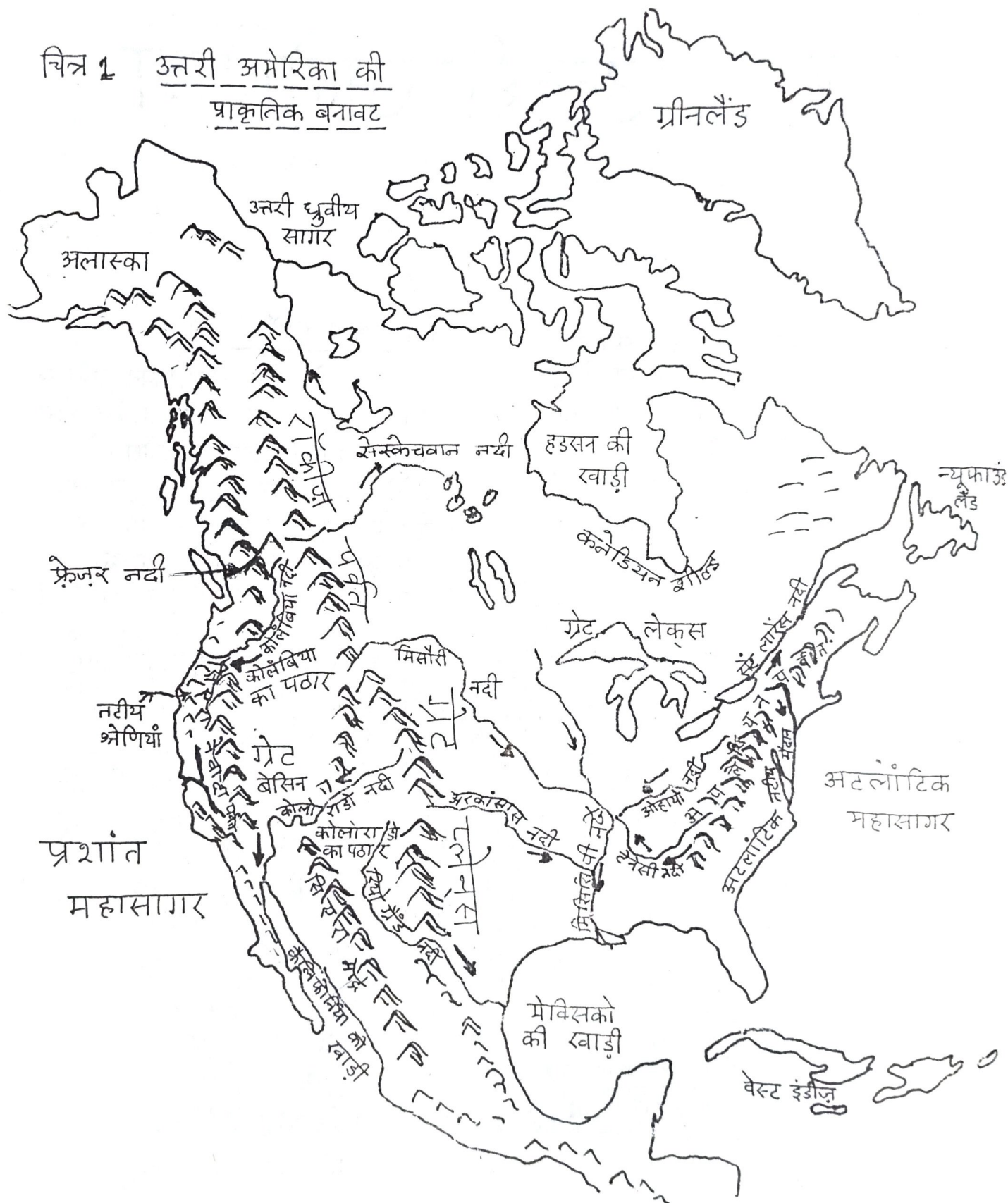
पार करने के लिए नावें बनाते ।
अधिकतर यात्रा घोड़ों, घोड़ा-गाड़ी पर या पैदल होती है ।

मानचित्र नं॰ 2 में अटलांटिक तटीय मैदान तथा अपलेशियन पर्वत देखो ।

मिसिसिपी नदी का मैदान :

अपलेशियन पर्वत पार करने पर एक बहुत बड़ा मैदान मिला और इसके बीच में एक बहुत बड़ी नदी । वहां के लोग उसे मिसिसिपी या "पानी का पिता" (फादार ऑफ वाटर्स)कहते थे । इसकी एक प्रमुख सहायक नदी है मिसौरी । उसकी अन्य बड़ी-बड़ी सहायक नदियां हैं,इनके मार्ग मानचित्र में देखो -

1. मिसिसिपी
2. मिसौरी
3. टेनिसी
4. ओहायो
5. अरकंसास

इन नदियों से बने मैदान को अमेरिका का मध्य का मैदान कहा गया। मिसिसिपी नदी के मैदान के उत्तर में अमेरिका की "ग्रेट लेक्स" या बड़ी झीलें हैं । इनके नाम हैं - सुपीरियर, मिशिगन, ह्यूरन इरी तथा ओन्टेरियो । मानचित्र में उन्हें देखकर पहचानो । ओन्टेरियो झील से उत्तर पूर्व में बहने वाली एक बड़ी नदी सेन्ट लौरेन्स को भी देखो ।

यह बड़ी झीलें चारों ओर के प्रदेश के बड़े काम की हैं, सोचो यह किस काम आती होगी ?

1. इन झीलों के किनारे बड़े-बड़े नगर बसे हैं जिनको पानी इनसे मिलता है ।

2. इन झीलों में जहाज़ चलते हैं जो चारों ओर की उपज को वितरित करते हैं । सेन्ट लौरेन्स नदी के द्वारा बहुत सा माल विदेशों को भी जाता है । तो यह झीलें सस्ता परिवहन देती हैं ।
यह वह नदी है जिससे यूरोप से आने वाले लोग अमेरिका के भीतर तक पहुंच गए और चारों ओर बस गए ।

3. इसके चारों ओर बसे हुए लोग बताते हैं कि जाड़ा शुरू होने पर यहां एकदम से तेज ठंड नहीं पड़ती, पाला साल की अन्त में पड़ता है । इसीलिए इरी और ओन्टेरियो झील के निकट फलों के बगीचे लगे हैं । फलों के उगने के लिए काफी समय तक पर्याप्त गर्मी मिलती है। याद करो जब धरती खूब ठंडी हो जाती है तब जल इतना ठंडा नहीं होता, उसका गर्म प्रभाव रहता है । तो इतनी बड़ी झीलों के गर्म प्रभाव के कारण ही आसपास के प्रदेश देर से ठंडे होते हैं । काफी समय यहां फलों के बगीचे पाले से बचे रहते हैं ।

अमेरिका के पश्चिमी हिस्से :

उस जमाने में सोने के सात बड़े नगरों की कहानी लोगों में प्रचलित थी। उनकी खोज में पश्चिम प्रदेशों में खोजी लोग बढ़े। किन्तु यहां पहाड़ी, पठारी, सूखा प्रदेश ही मिला। यह पहाड़ जो उत्तरी अमेरिका की पूरी लम्बाई में उत्तर से दक्षिण तक फैला है राकीज पर्वत कहलाया।

मानचित्र नं॰ 2 में इसे देखो। पश्चिम की ओर तीन अन्य श्रेणियां हैं - सियरा-नेवादा, सियरा माद्रे, तटीय श्रेणियां।

यह श्रेणियां बीच में बहुत चौड़े हिस्से में फैली हैं तथा इनके बीच में सूखे पठारी हिस्से हैं -

1॰ कोलम्बिया का पठार

2॰ ग्रेट बेसिन (इसके बीच में ग्रेट साल्ट लेक नामक झील है।)
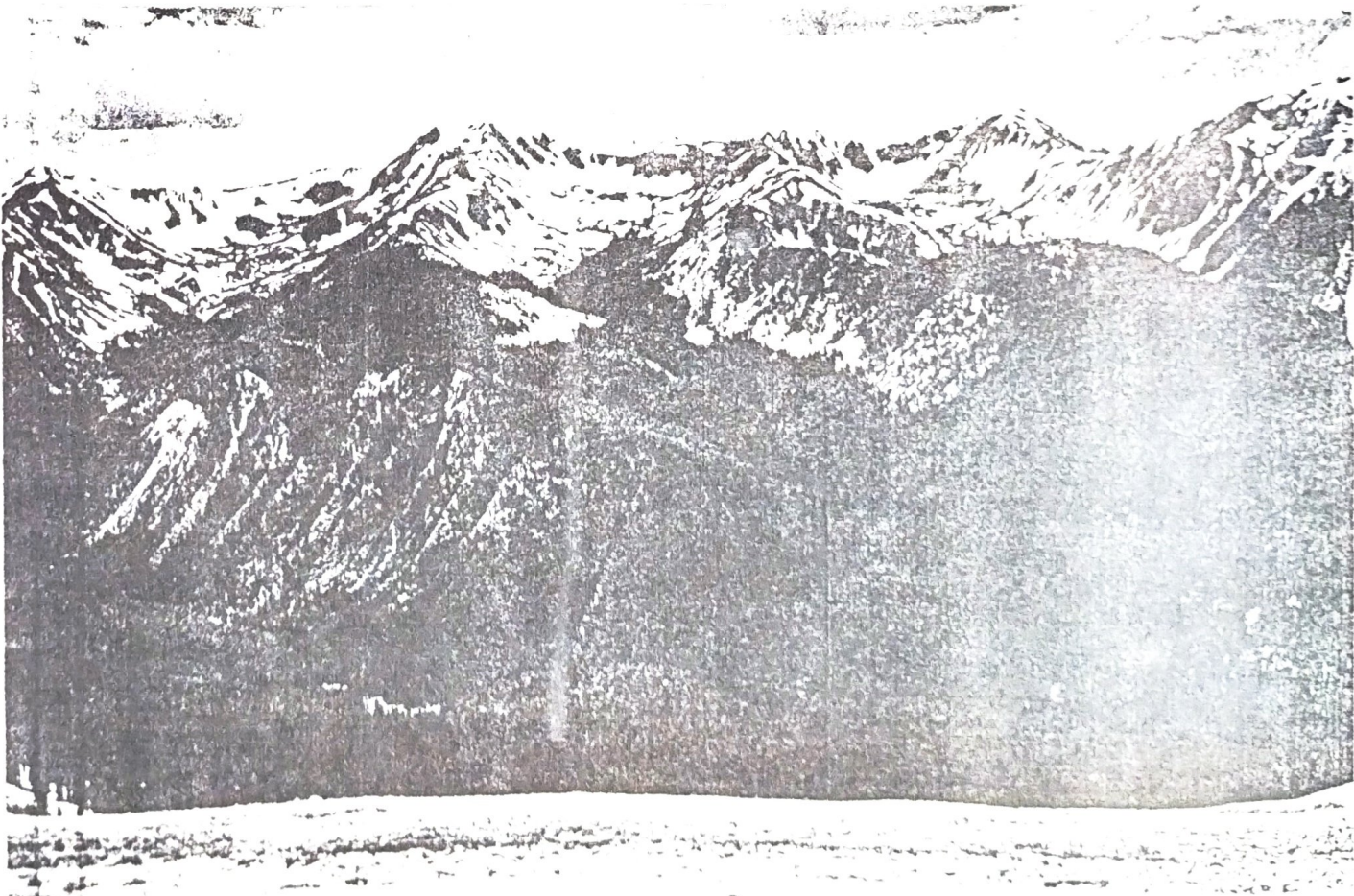
चित्र-3 उत्तरी अमेरिका का राकी पर्वत

3. दक्षिण में कोलोरेडो का पठार तथा

4. मैक्सिको का पठार ।

मानचित्र नं. 2 को ध्यान से देखो

क्या इन पठारों के चारों ओर कगार

हैं या ये पर्वत श्रेणियों से घिरे हैं ।

बताओ-

1. पूर्व की ओर कौनसा पर्वत है ?

---- - - - - - - -

2. पश्चिम की ओर कौनसी पर्वत श्रेणियाँ हैं ?

कोलम्बिया का पठार अपने प्रदेश के मालवा पठार के समान है । यह ज्वालामुखी से निकले लावा के ठंडे होने से बना है । और कोलोरेडो पठार की एक विशेषता यह है कि यहाँ कोलोरेडो नदी बहुत गहरी कन्दरा या ग्रेन्ड केनियन से होती हुई बहती है । कहीं कहीं तो यह कन्दरा 3 किलोमीटर तक गहरी है । ऊपर से देखने पर नदी का पानी दूर गहराई में झिलमिलाता हुआ दिखता है ।

इसे देखने अब हजारों पर्यटक आते हैं । यहाँ तक कि अब लोग कोलोरेडो नदी में भी उतर कर नाव से यात्रा करते हैं ।

ग्रेट बेसिन तथा कोलोरेडो का पठार अधिकतर सूखी जलवायु के प्रदेश हैं । यहाँ कुछ स्थानों पर नेशनल पार्क बनाए गए हैं जैसे इडाहो प्रान्त का येलोस्टोन नेशनल पार्क । यहाँ अनेक प्राकृतिक अजूबे मिलते हैं । जैसे गर्म पानी

कोलोरेडो नदी का महाखड्ड
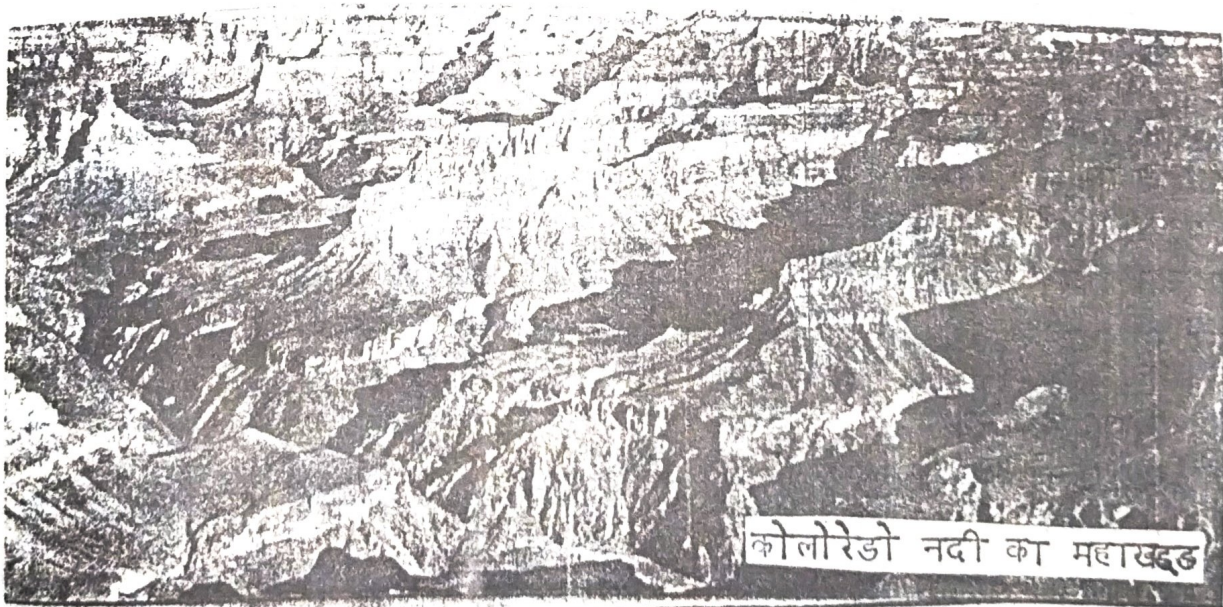
चित्र-4
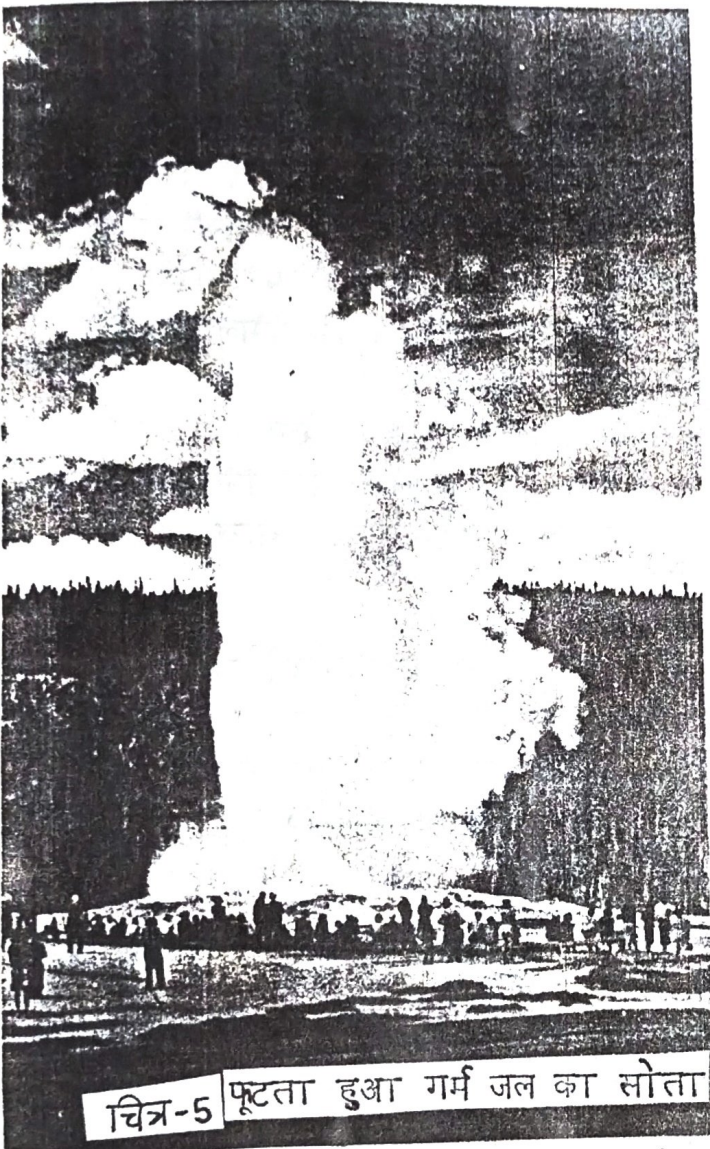
चित्र-5 फूटता हुआ गर्म जल का सोता

के सोते जो थोड़े-थोड़े समय बाद फव्वारे की तरह फूटते हैं । इन्हें गीज़र कहते हैं। यहां अनेक जल प्रपात भी हैं ।

पश्चिम की नदियां :

यदि पश्चिम की पठारी पहाड़ी नदियों को ध्यान से देखें तो साफ हो जाएगा कि यहां की नदियां पश्चिम की ओर बहती हुई प्रशांत महासागर में गिरती हैं । ऐसी प्रमुख नदियों के मार्ग ढूंढो :

1. कोलोरेडो 2. कोलम्बिया
3. फ्रेज़र

कनाडा :

इनके उत्तर में कनाडा में एक विशाल प्रदेश है जहां अनेक झीलें हैं और नदियां इन्हीं झीलों के बीच बहती रहती हैं, या दलदल में खो जाती हैं । सभी नदियां समुद्र तक नहीं पहुंचतीं । इस प्रदेश में नदियों के बहाव के मार्ग अभी निश्चित नहीं हुए हैं । यह प्राचीन चट्टानों का बना कटा फटा प्रदेश है । जिसे कनेडियन शील्ड कहते

अमेरिका में रेगिस्तान :

अब संयुक्त राज्य के दक्षिणी पश्चिमी हिस्से को देखो । वहां की नदियां भी बहते हुए कहीं बीच में सूख जाती हैं या साल्ट लेक में "गिरती हैं" । वे सागरों तक बह कर नहीं पहुंचतीं । सोच कर बताओ इसका क्या कारण हो सकता है ? क्या यह अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान के समान सूखा प्रदेश है ।?

मानचित्र नं. 1 देख कर पता लगाओ कि क्या संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिण में कोई रेगिस्तान है ?

इस तरह उत्तरी अमेरिका की प्राकृतिक बनावट के अनुसार चार हिस्सों में बांट सकते हैं ।

1. अपलेशियन पर्वत
2. मध्य का मैदान
3. पश्चिम का इलाका जिसमें कई पठार तथा पहाड़ हैं ।
4.

क्या अमेरिका के दीवार के मानचित्र में इन चार हिस्सों को अलग-अलग पहचान सकते हो ? इन्हें उगली फेर कर बताओ।

अमेरिका की जलवायु :

तुम जानते हो कि अमेरिका का अधिकतर भाग विषुवत रेखा से बहुत दूर है इसलिए यह यूरोप के समान ठंडा प्रदेश है । यहां की जाड़े की समताप रेखाओं का मानचित्र 6 देखो । 0° की रेखा संपूर्ण कनाडा और उत्तरी संयुक्त

चित्र- 6 उत्तरी अमेरिका का जनवरी का तापमान
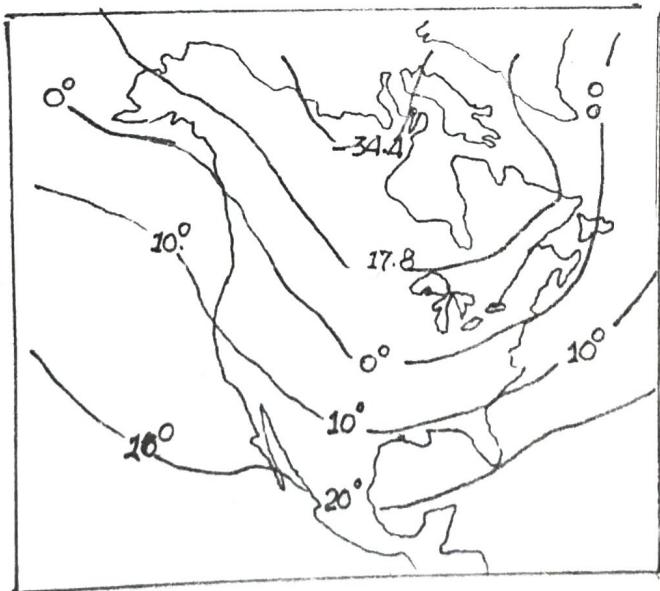
राज्य को घेरे है । मानचित्र में इस रेखा पर उंगली फेर कर बताओ । यहां कई महीने तापमान हिमांक के नीचे रहता है (यानी जितने डिग्री पर पानी बर्फ बन जाता है उससे भी अधिक ठंड रहती है ।) अमेरिका के दक्षिणी हिस्सों में भी अच्छी ठंड पड़ती है, पर उत्तर की तुलना में दक्षिण में तापमान कितने डिग्री अधिक है - मानचित्र देख कर पता लगाओ ।

हिमालय पर्वत अपने देश में उत्तर से आने वाली ठंडी हवाओं को रोके रखता है । लेकिन अमेरिका में रॉकीज़ और अप्लेशियन पर्वत उत्तर से चलने वाली हवाओं को नहीं रोक पाते । जाड़े में जब अमेरिका का उत्तरी भाग खूब ठंडा हो जाता है, वहां वायु का दबाव अधिक हो जाता है । वहां से ठंडी हवा चलने लगती है जो पूरे दक्षिणी हिस्से को ठंडा कर देती है ।

मानचित्र नं. 7 गर्मी की ऋतु की समताप रेखाओं को देखो ।

अधिकतम तापमान पश्चिम के भीतरी भाग में है, यह सूखे प्रदेश भी हैं । यहां अधिकतम तापमान कितना है ? समताप रेखा को उंगली से भी बताओ ।

उत्तर की ओर कनाडा में ताप-मान कितना कम है । वहां गर्मी में भी

चित्र-7 उत्तरी अमेरिका का जुलाई का तापमान
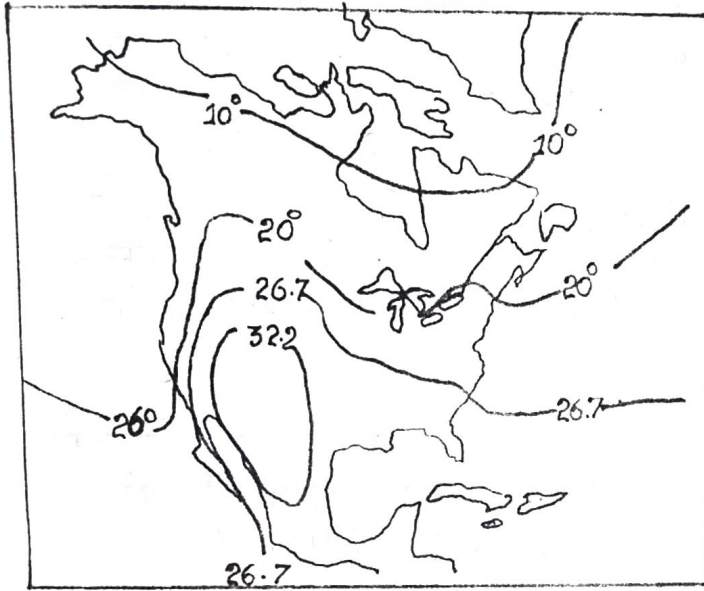
तापमान बहुत ऊंचा नहीं उठता, वहां हल्की गर्मी 3-4 महीने ही रहती है।

कनाडा की सबसे अधिक तापमान की रेखा कितनी डिग्री से. की है ? इस तापमान और अमेरिका के सबसे अधिक तापमान में कितने डिग्री का फर्क है ?

वर्षा :

अमेरिका में वर्षा का मानचित्र नं. 8 देखो। अधिकतम वर्षा दक्षिणी पूर्वी हिस्सों में होती है, वह भी गर्मी में। सोचो ऐसा क्यों है ? गर्मी में पश्चिमी हिस्सा जब गर्म हो जाता है, तो वहां वायुदाब कम होगा और उसकी तुलना में अटलांटिक महासागर में तापमान कम और वायुदाब अधिक होगा। तब अटलांटिक महासागर से उठने वाली हवाएं दक्षिणी हिस्सों में वर्षा करती हैं। अमेरिका के उत्तरी पूर्वी हिस्सों में जाड़े में भी खूब वर्षा होती है। प्रशांत महासागर से उठने वाली आंधियां या चक्रवात यहां तक चले आते हैं जिनसे अच्छी वर्षा होती है। चक्रवातों से क्यों वर्षा होती है यह तुम आगे की कक्षा में पढ़ोगे। मानचित्र देखकर बताओ कि पूर्वी हिस्सों में कितनी वर्षा होती है ?

लगभग 50 सेन्टीमीटर वर्षा जहां होती है वह सूखे प्रदेश हैं।

चित्र-8- उत्तरी अमेरिका में वर्षा का वितरण
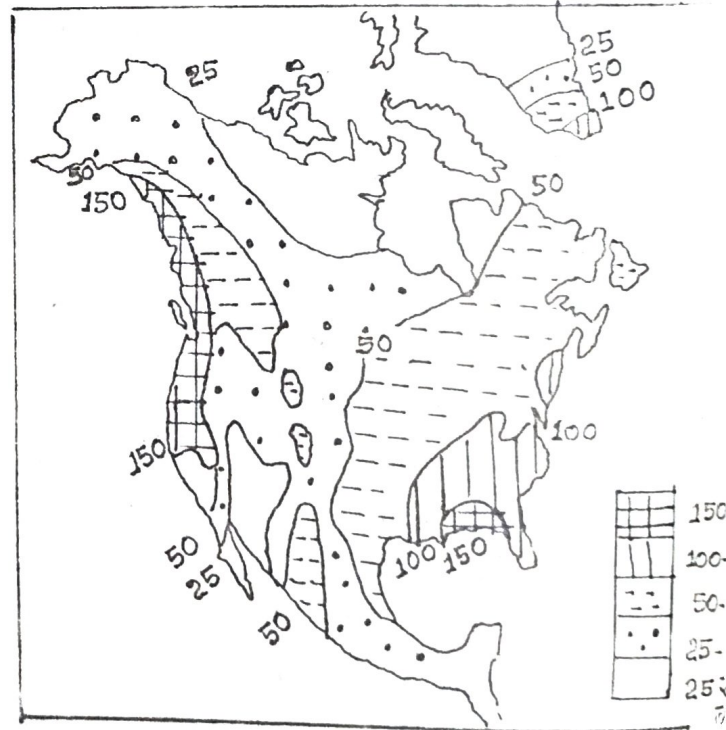
ऊंचे पर्वतों जैसे राकीज, सियरा नेवाडा, सियरा माद्रे तथा तटीय श्रेणियों में अधिक वर्षा हो जाती है।

मानचित्र नं• 8 में प्रशांत महासागर के पास अधिक वर्षा वाले प्रदेशों को देखो।

पश्चिम के सूखे हिस्से :

पश्चिमी हिस्से समुद्र से दूर हैं। वहां पहुंचते-पहुंचते अटलांटिक सागर से आने वाली हवाएं सूख जाती हैं। दूसरी ओर प्रशांत महासागर से आने वाली हवाएं पश्चिमी अमेरिका के तटीय हिस्सों में वर्षा करती हैं। पर भीतरी भागों में इन से अधिक वर्षा नहीं होती क्योंकि रॉकीज पर्वत सियरा नेवाड़ा आदि पर्वत हवाओं को रोक लेते हैं तो अमेरिका के मध्य के अधिकतर प्रदेश सूखे रह जाते हैं। मानचित्र में इन सूखे इलाकों को पहचानो।

अभ्यास के प्रश्न :

1• अमेरिका के दिए गए मानचित्र पर निम्नलिखित स्थान लिखो :

अ- हडसन की खाड़ी, मैक्सिको की खाड़ी
ब- मिसिसिपी नदी, सेन्ट लारेन्स नदी
स- रॉकीज पर्वत, अपलेशियन पर्वत
द- अटलांटिक महासागर, प्रशांत महासागर

2• बड़ी झीलों से अमेरिका में क्या लाभ हैं, कोई दो बातें बताओ ?

3• अ- कोलोरेडो नदी का कन्दरा.......... कि•मी• गहरी है।
ब- गर्म पानी के सोते जो थोड़े-थोड़े समय बाद फव्वारे की तरह फूटते हैं उन्हें ....कहते हैं। अमेरिका में यह कहां पाए जाते हैं ?

4• अमेरिका के तीन प्राकृतिक हिस्सों का नाम बताओ :

1•
2•
3•

5• उत्तरी अमेरिका के दक्षिणी पश्चिमी हिस्सों में नदियां बीच में ही क्यों सूख जाती है ?

6• उत्तरी अमेरिका के संपूर्ण उत्तरी भाग में जाड़े का तापमान हिमांक के नीचे रहता है, इसको सेलसियस में बताओ।

चित्र-9 उत्तरी अमेरिका

7. उत्तरी अमेरिका का पश्चिमी भाग अत्याधिक सूखा है, इसके दो कारण बताओ ।

8. पूर्वी अमेरिका में अधिक वर्षा होती है, चार वाक्यों में इसका कारण बताओ ।

9. क- उत्तर अमेरिका में जुलाई के महीने में उत्तर से दक्षिण की ओर आने में गर्मी बढ़ती है या कम होती है ?

ख- जनवरी में उत्तर से दक्षिण की ओर आने में ठंड बढ़ती है या कम होती है ?

ग- अमेरिका के उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ते में हम भूमध्य रेखा के पास जाते हैं या उत्तरी ध्रुव के पास ?
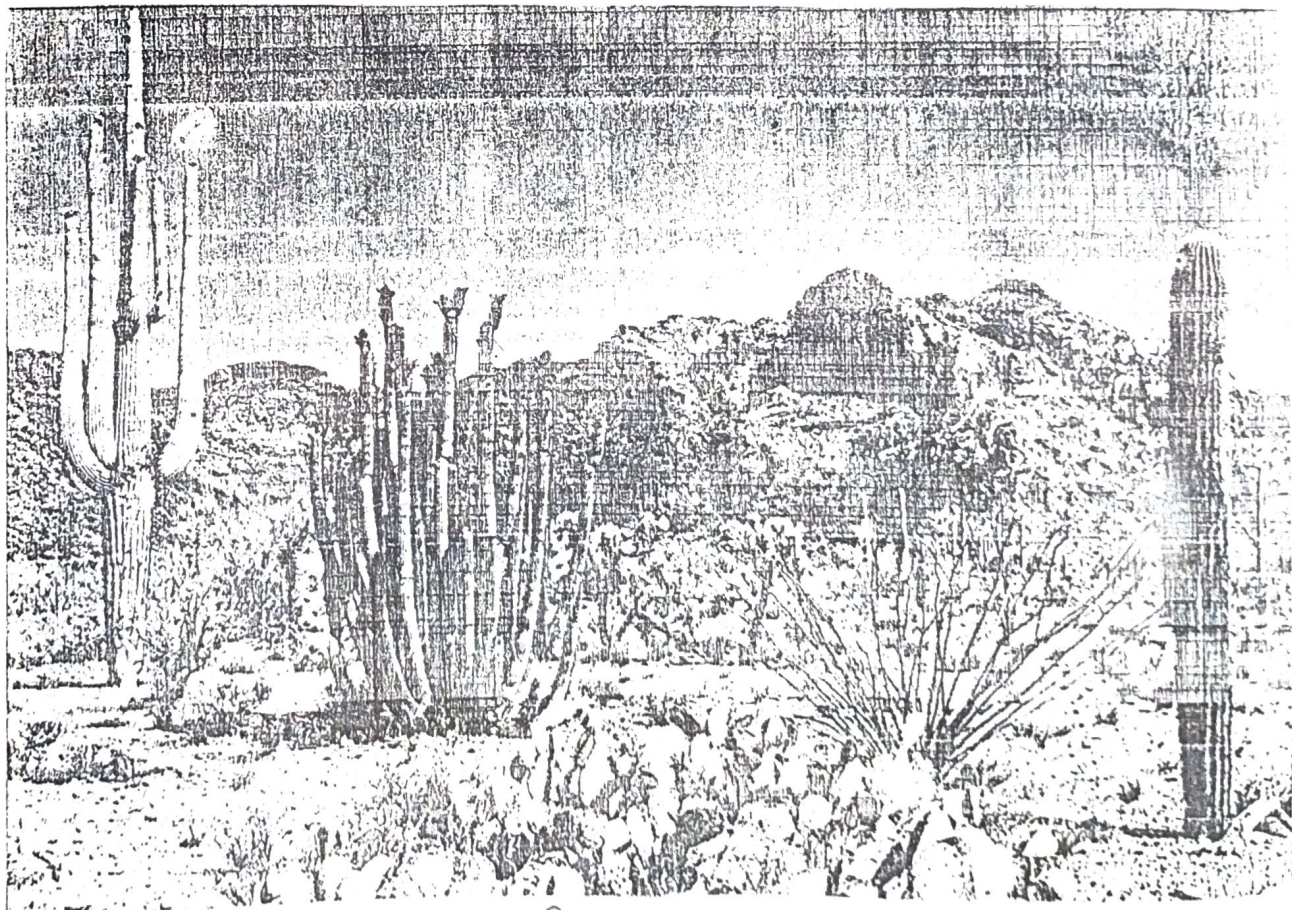
चित्र-10

:: अमेरिका के देश ::

साधारणत: उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका दो महाद्वीप माने जाते हैं । उत्तरी अमेरिका महाद्वीप का मानचित्र दिया गया है । लेकिन अब भूगोल वेत्ता इस भू-भाग के तीन हिस्से करते हैं ।

1• उत्तरी अमेरिका 2• मध्य अमेरिका 3• दक्षिणी अमेरिका

उत्तरी अमेरिका में केवल दो देश कनाडा तथा संयुक्त राज्य अमेरिका सम्मिलित किए जाते हैं । मध्य अमेरिका में मैक्सिको से पनामा तक के देश तथा पश्चिमी द्वीप समूह के देश । इनके नाम नक्शों में पढ़ कर जानो ।

उत्तरी अमेरिका में विशेष बात यह है कि इतने बड़े महाद्वीप में केवल दो बड़े देश हैं । यूरोप या अफ्रीका के समान अनेक छोटे-छोटे देश नहीं हैं । यह दोनों देश राज्यों में बंटे हैं । संयुक्त राज्य अमेरिका में अलास्का तथा हवाई द्वीप समूह भी राज्य हैं जो मुख्य भूमि से अलग हैं । इन्हें मानचित्र में देखो ।

कनाडा के उत्तर में उत्तरी ध्रुव तक अनेक छोटे-बड़े द्वीप हैं । इनमें ग्रीन लैन्ड एक बड़ा द्वीप है । यह यूरोप के डेनमार्क देश का हिस्सा है । इस द्वीप की विशेषता यह है कि इसका अधिकतर हिस्सा बर्फ की मोटी तह से ढका है ।

पनामा नहर का चित्र

उत्तरी तथा दक्षिणी अमेकिा के मध्य स्थल बहुत संकरा है यहीं पर पनामा नहर बनाई गई है । बताओ इस नहर से तुम किन दो महासागरों में आ-जा सकते हो ।
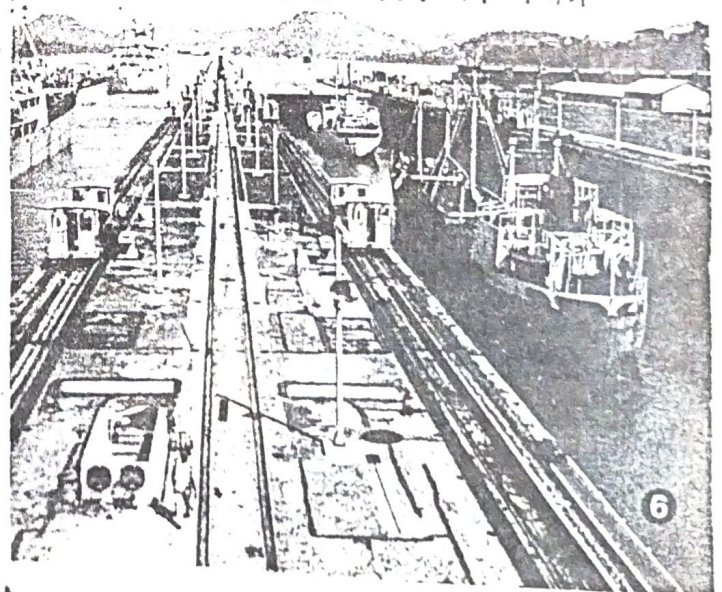
उत्तरी अमेरिका महाद्वीप
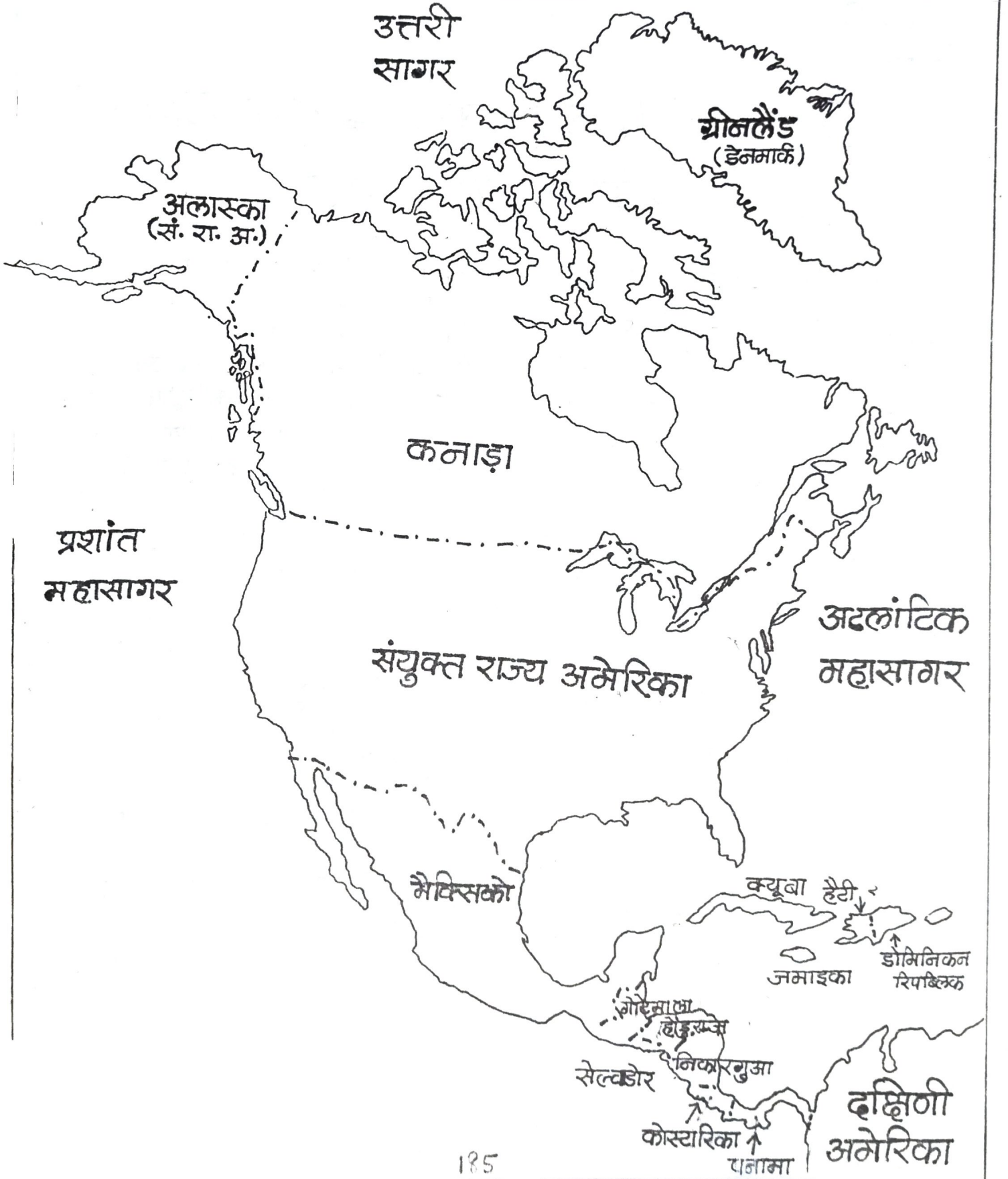
पाठ-5

उत्तरी अमेरिका का हृदय स्थल
उत्तरी पूर्वी संयुक्त राज्य

सन् 1789 में सैमुअल स्लैटर ग्रेट ब्रिटेन से अमेरिका आया, वह एक कपड़े के कारखाने में काम करता था लेकिन अमेरिका आया खाली हाथ। ब्रिटेन में यह कानून था कि वहां की बनी मशीनें या उनके पुर्ज़े या डिज़ाइन कोई अन्य देश में नहीं ले जा सकता था। नतीजा यह था कि स्वतंत्र होने के बाद भी अमेरिका को बनी हुई चीजें जैसे कपड़ा, मशीनें, इंजिन आदि के लिए यूरोप का मुंह ताकना पड़ता था। सैमुअल स्लैटर अपने दिमाग में कपड़ा बनाने की मशीन ले आया, उस पर तो कोई कानून नहीं था। फिर उसने अपनी स्मरण शक्ति से मशीन बना ली। इस तरह अमेरिका में कपड़ा बनाने की मशीनें बनना शुरू हुई।

अमेरिका में लोग अटलांटिक तट से भीतर की ओर बढ़ते जाते, जमीन साफ़ करते, खेती शुरू करते। अपनी जरूरत से अधिक जो गेहूं, तम्बाकू, कपास आदि होता उसे यूरोप को भेजते और बदले में बनी हुई चीजें मंगा लेते। लेकिन उद्योगों की शुरूआत के बाद तो अमेरिका धीरे-धीरे तरह-तरह की चीजें बनाने लगा : सूती और ऊनी कपड़ा, लोहा और स्पात, कृषि मशीन, इंजन, मोटर, रबर का सामान तथा अन्य रोज की आवश्यकता की चीजें।

यह चीजें पूरे देश में बराबर से नहीं बनती हैं। इन के अधिकतर कारखाने उत्तरी पूर्वी संयुक्त राज्य में लगे हैं। यहीं संयुक्त राज्य की सबसे सघन आबादी है। अनेकों विशाल नगर बसे हैं। अधिकतर जनसंख्या छोटे बड़े नगरों में रहती है। बड़ी संख्या में लोग इन्हीं कारखानों और उससे संबंधित कामों में लगे हैं। जैसे यहां सड़कें, रेलमार्ग, वायु परिवहन, जल परिवहन बहुत विकसित हैं, इन कामों में लाखों लोग लगे हैं। जो सामान बनता है उसका देश में तथा विदेशों में व्यापार होता है। उससे बड़ी संख्या में लोग जीविका पाते हैं। इस तरह उत्तरी पूर्वी क्षेत्र के

राज्य मिलकर संयुक्त राज्य का हृदय स्थल बन गए हैं। उत्तरी पूर्वी क्षेत्र के राज्य : न्यूयार्क, पेन्सलवेनिया, वर्जीनिया, वेस्ट वर्जीनिया, ओहायो, इलिनाय, कन्टकी, विसकासिन तथा मिशिगन ।

1. संसाधनों की खोज :

खेतिहर भूमि और वनों से प्राप्त चीजों से अमेरिका में बसे लोगों का काम चलता था, लेकिन मशीन, रेल और जहाज चलाने के लिए कोयला आवश्यक था। तब अमेरिका में संसाधनों की खोज शुरू हुई। पता चला कि अमेरिका में खनिजों का विपुल भंडार है। कोयले तथा खनिज तेल और गैस के विपुल भंडार मिले। फिर ग्रेट लेक्स के पास लोह अयस्क के बहुत विशाल भंडार मिले।

मानचित्र- 1 उत्तरी-पूर्वी औद्योगिक प्रदेश

इनके अतिरिक्त इस प्रदेश में प्राकृतिक नमक तथा रसायन, कांच बनाने के लिए सिलिका बालू, ईंट बनाने के लिए चिकनी मिट्टी, संगमरमर तथा घर बनाने के पत्थर भी मिलते हैं। यह सब खनिज उद्योगों के विकास में सहायक हुए।

बताओ किन-किन स्त्रोतों से उद्योगों

कच्चा माल मिला।
----

1. 2. 3.
----

2. उद्योग लगाने के लिए पूंजी :

उत्तरी पूर्वी प्रदेश के प्राकृतिक संसाधन उद्योगों के विकास का आधार हैं। लेकिन जब उद्योग लगाए गए तब कारखाने लगाने, कच्चे माल को कारखानों को पहुंचाने, उसके परिवहन के साधन के विकास आदि सभी के लिए पूंजी की आवश्यकता थी।

सन् 1793 में फ्रांस और ब्रिटेन के बीच युद्ध छिड़ गया। शुरू में तो अमेरिका से जहाज भर-भर कर अनाज, मांस, कपास, ऊन आदि यूरोप जाने लगा। इससे अमेरिका की व्यापार करने वाली कंपनियों को बहुत लाभ हुआ। फिर अमेरिका में कानून बना की लड़ने वाले देशों को अमेरिका सामान नहीं भेजेगा। सामान जाना बंद हुआ तो ब्रिटेन फ्रांस आदि से बना हुआ सामान आना भी बन्द हो गया। अब अमेरिका अपना सामान स्वयं बनाने को मजबूर हुआ।

कारखाने लगने लगे और जो पूंजी पहले विदेशी व्यापार में लगी थी इन उद्योगों में लगने लगी। सूती और ऊनी कपड़ा, कांच का सामान चीनी मिट्टी के बर्तन, छोटी-बड़ी मशीनें बनने लगीं। इन उद्योगों के लिए जिन चीजों की जरूरत थी वह न्यू इंगलैन्ड के राज्यों (मेन, न्यू हेम्पशायर, वरमान्ट, मेसाचुसेट्स तथा कनेक्टीकट) तथा उत्तरी पूर्वी प्रदेश में उपलब्ध थी।

चित्र-2 में देखो सुपीरियर झील के निकट खुली खदानों में लोह अयस्क मशीनों से कट कर निकाला जा रहा है। अधिकतर खदानें भूमि के भीतर कई सौ मीटर तक गहरी होती हैं उन तक सुरंगों से पहुंचा जाता है। यहां लोह अयस्क धरती की सतह के निकट मिलता है तो गढ्ढा खोद कर निकाला जाता है। यहां के प्राकृतिक संसाधनों तथा पूंजी की बात तुमने पढ़ी। अन्य चीजें जो उद्योगों के लिए यहां सहायक हुई वे निम्नलिखित हैं :

3. जल शक्ति :

तुमने यूरोप के विकास के पाठ
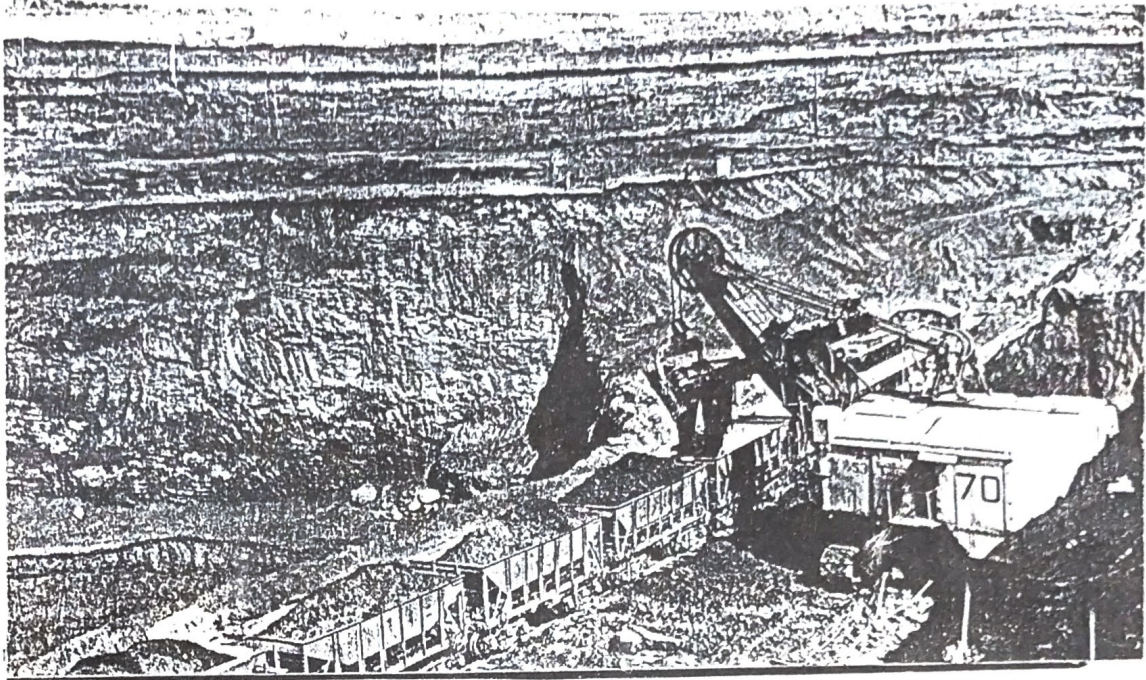
चित्र 2 सुपीरियर झील के निकट खुली खदान

में पढ़ा था कि शुरू में छोटी-छोटी मशीनें तेज चलने वाली नदियों के निकट लगीं वही यहां भी हुआ, कपड़ा बनाने औजार और हथियार आदि बनाने की मशीनें तेज बहने वाली नदियों के किनारे लगी । बाद में जब यहां कोयला मिला तो बहुत सी मशीनें कोयले से चलने लगीं । अब तो इस प्रदेश में जल विद्युत केन्द्र भी हैं जिनसे कारखानों को शक्ति मिलती है ।

4. अनेक अच्छे बन्दरगाह :

अटलान्टिक तट तथा ग्रेट लेक्स के बीच जल परिवहन की आवश्यकता थी । इसके लिए हडसन नदी और इरी झील को नहर द्वारा जोड़ दिया गया । इसी तरह ग्रेट लेक्स से दक्षिण में मिसिसिपी नदी के मुहाने तक जल मार्ग के लिए मिशिगन झील को मिसि-सिपी नदी से जोड़ा गया । इन नहरों को मानचित्र में देखो । इस तरह अटलांटिक तट ग्रेट लेक्स तथा मेक्सिको की खाड़ी के अनेक अच्छे बन्दरगाह देश के भीतरी भागों से जुड़ गए ।

यह बन्दरगाह कनाडा तथा दक्षिणी अमेरिका एवं मध्य अमेरिका के तरह-तरह का कच्चा माल जैसे खनिज, कपास, लकड़ी आदि मंगाते हैं और यहां का बना हुआ माल संसार के अनेक देशों को भेजते हैं ।
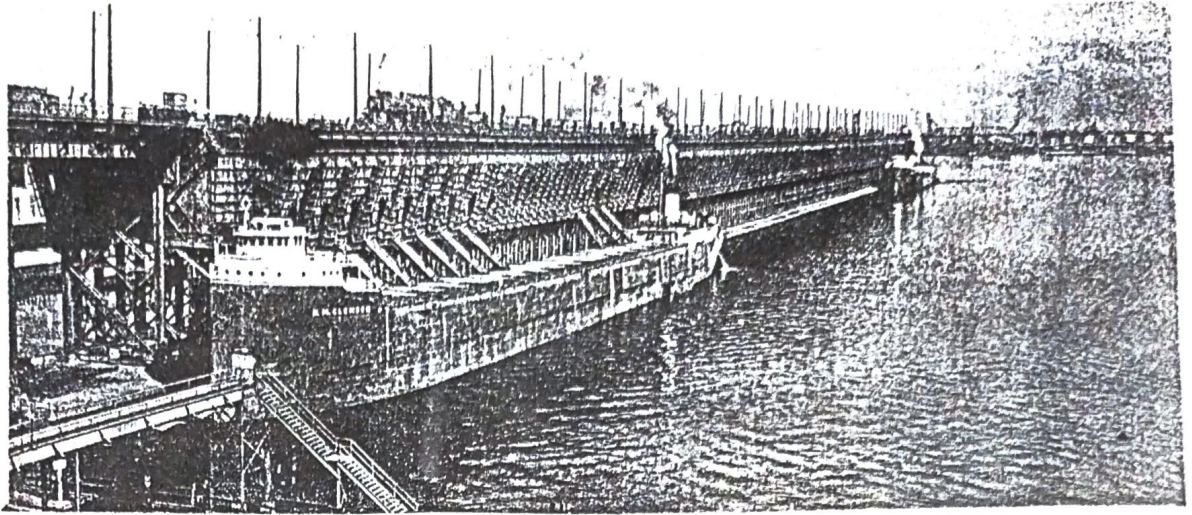
चित्र 3 झीलों में चलने वाले जहाज़ों से लौह अयस्क का परिवहन

झील में चलने वाले जहाजों का चित्र-3 देखो ये खनिज को इरी तथा मिशिगन झीलों के किनारे तक ले जायेंगे।

मानचित्र में अटलांटिक तट के कुछ बन्दरगाह तथा ग्रेट लेक्स के बन्दरगाहों को देखो और उनके नाम लिखो।

1. ______ 2. ______

3. ______ 4. ______

5. ______ 6. ______

7. ______ 8. ______

5. रेलमार्ग तथा सड़कें :

बन्दरगाहों तथा औद्योगिक केंद्रों को सड़कों और रेल मार्गों से जोड़ा गया है। यहां का समतल या हल्का ऊंचा नीचा प्रदेश इन मार्गों के बनाने में सुविधाजनक हुआ।

दीवार के मानचित्र में देखो :

1. न्यूयार्क नगर से किन नगरों को मार्ग गए हैं ?

2. शिकागो से रेल परिवहन किन नगरों के लिए है ?

6. वन :

उत्तरी पूर्वी क्षेत्र में चौड़ी पत्ती के वन हैं, इसके उत्तर में कोणधारी वनों का एक बड़ा प्रदेश कनाडा तक फैला है। खेती के लिए बहुत से प्रदेशों के वन काट दिए गए हैं, फिर भी यहां कागज का उद्योग वनों पर आधारित है। कनाडा से भी लकड़ी और लुगदी आती है।

7. कृषि :

यह प्रदेश कृषि की दृष्टि से भी बहुत विकसित है । इसके बारे में तुम आगे पढ़ोगे । उत्तरी हिस्से में डेरी के लिए पशुपालन बड़ा उद्योग है । यहां दूध की तरह-तरह की चीजें बनती हैं । चमड़े का सामान बनता है । भेड़ों की ऊन से ऊनी कपड़ा बनता है ।

पहले यहां सूती कपड़े का भी बड़ा उद्योग था । संयुक्त राज्य के दक्षिण में कपास की खेती का बड़ा प्रदेश है, अब वहां सूती कपड़े के कारखाने लग गए हैं । फिर भी न्यू इंगलैन्ड में कपड़ा बनाने की परंपरा है । सघन आबादी के कारण कपड़े की मांग भी बहुत है । इसलिए अब भी यहां महीन किस्म का सूती कपड़ा बनता है ।

8. मजदूर :

कारखानों में काम करने के लिए कामगारों की भी तो आवश्यकता होती है । यूरोप से आकर बसे बहुत से लोग खेतों के बजाय कारखानों में काम करने लगे । मजदूरों की कमी को दूर करने के लिए स्त्रियाँ और बच्चे भी कारखानों में काम करने लगे । फिर भी जितने कारखाने लग रहे थे उन सबके लिए मजदूर नहीं मिलते थे ।

मजदूरों की कमी को पूरा करने के लिए धीरे-धीरे स्वचालित मशीनों का आविष्कार हुआ । बहुत सा काम जो मजदूर करते थे अब शक्ति से चलने वाली मशीनों से होने लगा। इससे बहुत सा सामान थोड़े समय में बन जाता । और उसका मूल्य भी कम होता ।

उत्तरी पूर्वी क्षेत्र के औद्योगिक प्रदेश :

यह पूरा प्रदेश उद्योगों के लिए जाना जाता है और अनेक औद्योगिक नगर हैं । मानचित्र में महत्वपूर्ण औद्योगिक नगर दिखाए गए हैं । लेकिन कुछ प्रदेशों में उद्योग बहुत
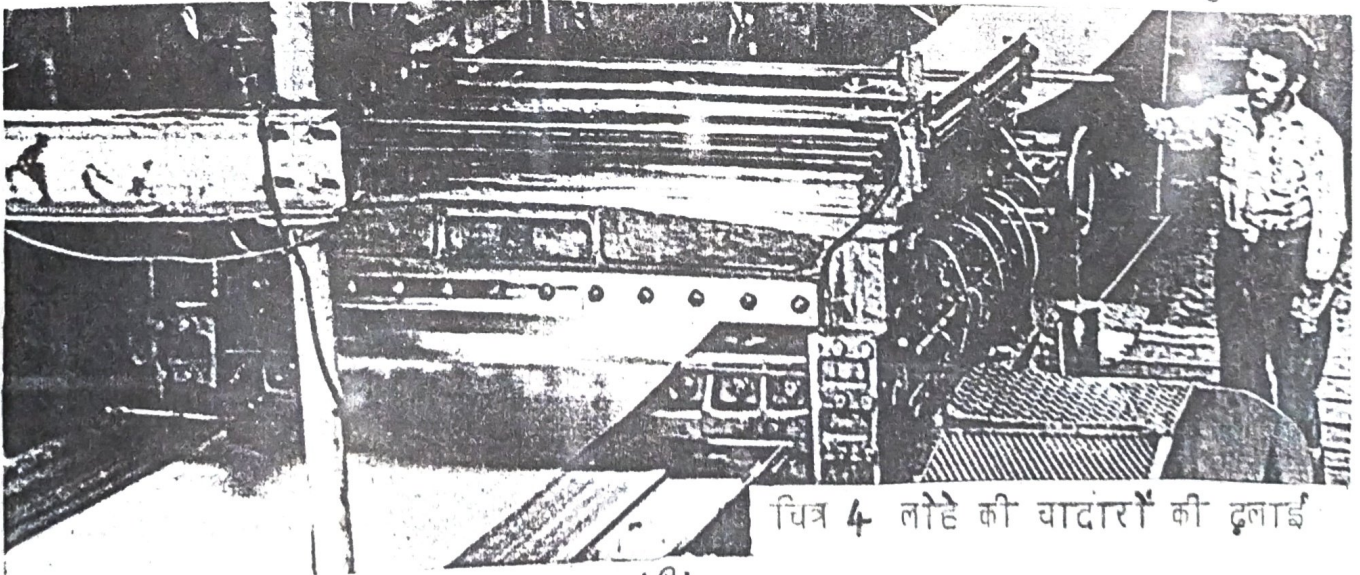
चित्र 4 लोहे की चादरों की ढलाई

अधिक हैं । उनके नाम नीचे दिए गए है :

1. पिट्सबर्ग-क्लीव लैन्ड प्रदेश :

यह लोहा-स्पात तथा मशीनें बनाने का बड़ा केन्द्र है । चित्र में देखो कितनी भीमकाय भट्टियों में लोहा गलाया जाता है । बड़ी-बड़ी टंकियों में ले जाकर उसे गर्डर छड़े , तथा चादरों में ढाला जाता है । या उसकी सिल्लियाँ बनाकर अन्य कारखानों में सामान बनाने के लिए भेज दिया जाता है ।

2. न्यूयार्क-फिलेडेल्फिया-बाल्टिमोर

ये विशाल नगर अनेकों उद्योगों के लिए जाने जाते हैं । यहां के कुछ महत्वपूर्ण उद्योग हैं : लोहा स्पात,
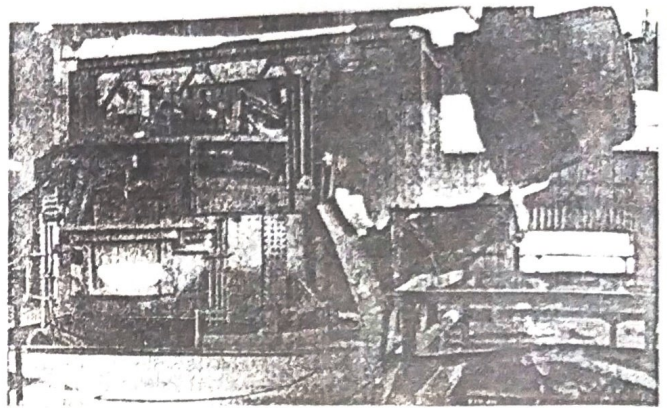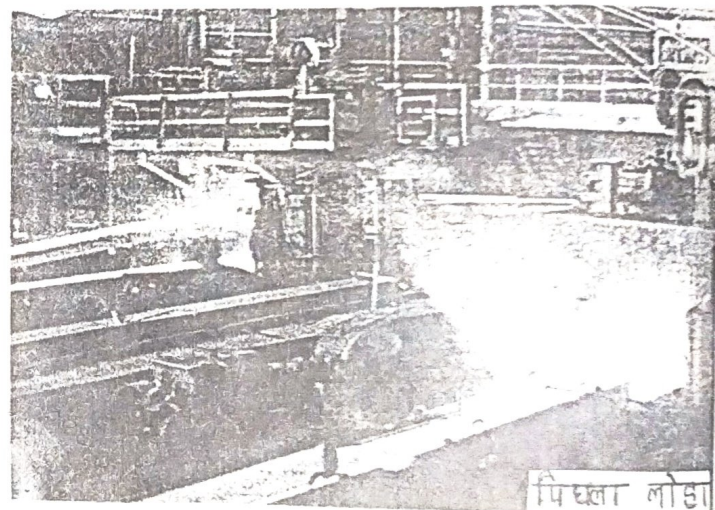
चित्र 5 भट्टियों में गलाया गया लोहा,

चित्र 6 न्यूयार्क
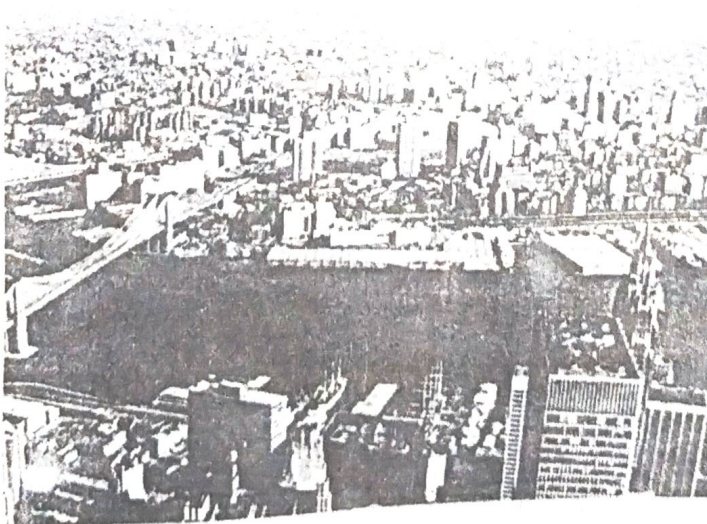
कपड़ा बनाना, परिधान, कागज, रसायन आदि । न्यूयॉर्क संयुक्त राज्य का प्रमुख नगर तथा प्रमुख बन्दरगाह है । चित्र में देखो । 25-26 मंजिल ऊंची इमारतें हैं । हडसन नदी के मुहाने और खाड़ी पर बने बन्दरगाह पर संसार भर के जहाज आकर रुकते हैं और तरह-तरह का सामान लाते ले जाते हैं । वाशिंगटन संयुक्त राज्य अमेरिका की राजधानी है, इसे मानचित्र में देखो।

3. ओहियो-इंडियाना क्षेत्र :

राज्यों में कई महत्वपूर्ण औद्योगिक नगर हैं जिनमें से सिनसिनाटी तथा इंडियाना पोलिस उल्लेखनीय है । इनमें बिजली का सामान, कागज की चीजें, रेडियो, साबुन, उत्खनन की मशीनें, हवाई - जहाज, मांस तथा सब्जियों को डिब्बों में बन्द करने के उद्योग महत्वपूर्ण है ।

4. शिकागो-मिल्वाकी :

मिशिगन झील के किनारे स्थित यह दोनों नगर चारों ओर की आबादी के प्रमुख औद्योगिक, व्यापारिक तथा परिवहन केन्द्र हैं । मांस को शीतलन करने और डिब्बों में बन्द करने, कृषि मशीनें बनाने के ये बड़े केन्द्र हैं ।
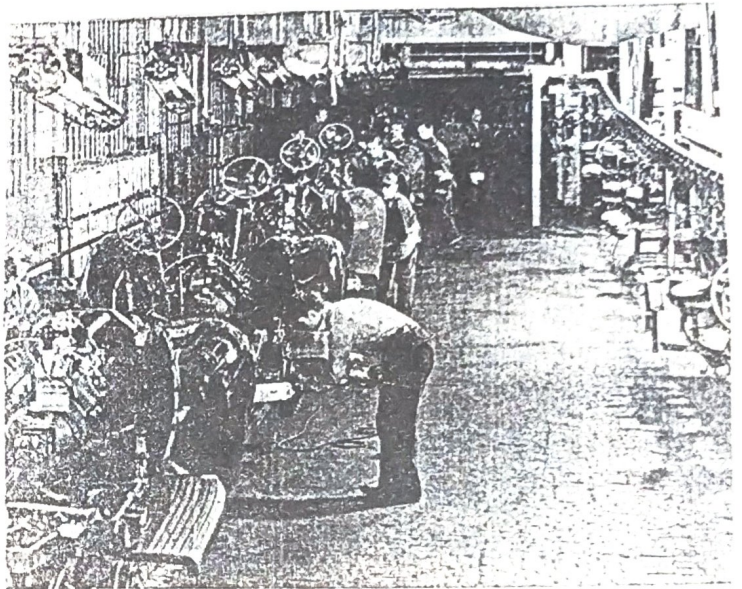
चित्र 7 मोटरगाड़ी का इंजन जोड़ना,

स्टील प्लांट
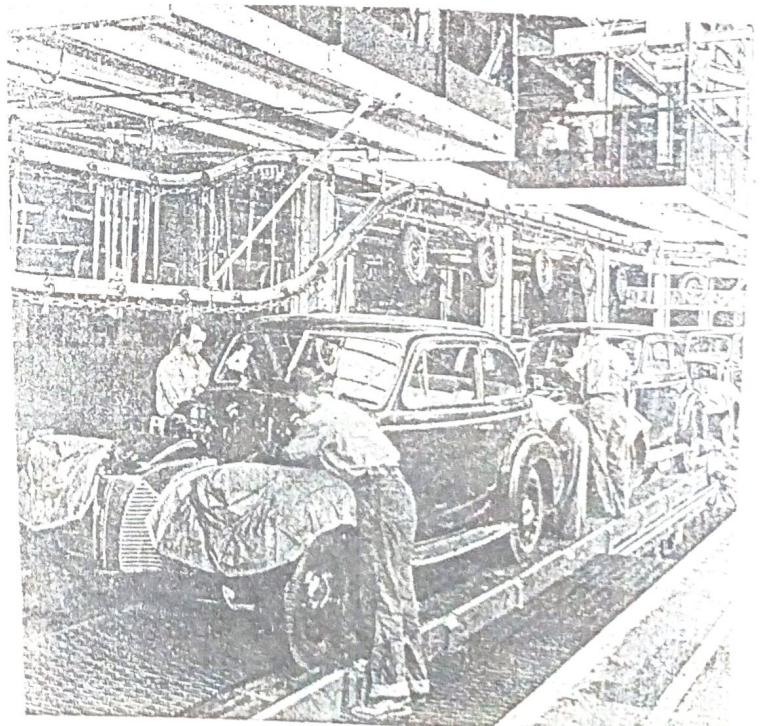
डिट्रायट तथा इरी झील के : तटीय नगर

इरी झील के किनारे अनेक नगर मोटर गाड़ियाँ बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं। जिनमें डिट्रायट नगर प्रमुख है। चित्र में देखो मोटर गाड़ी का इंजन जोड़ा जा रहा है, फिर मोटर गाड़ी के ऊपरी हिस्से को पेन्ट करके इंजिन बैठा दिया जायेगा।

दिए गए मानचित्र में ऊपर दिए गए नगरों के निकट उनके उद्योगों को दिखाओ। उद्योगों के लिए चिन्ह चुनकर पहले मानचित्र के नीचे उनकी सूची बनाओ।

उत्तरी पूर्वी प्रदेश में खेती :

तुमने पिछले पृष्ठों में पढ़ा कि खेती तथा पशुपालन पर आधारित कई उद्योग उत्तरी पूर्वी संयुक्त राज्य में विकसित हुए हैं। लेकिन खेती अपने आप में एक महत्वपूर्ण धन्धा है।

अमेरिका की जलवायु के बारे में पढ़ कर तुम यह जान गए हो कि उत्तरी पूर्वी प्रदेश जाड़े में तो खूब ठंडा हो जाता है लेकिन गर्मी का मौसम खेती के उपयुक्त है। यहाँ वर्षा भी पर्याप्त होती है और साल भर होती रहती है। अधिकतर हिस्सा समतल मैदान है और मिट्टी उपजाऊ है। इस तरह यहाँ खेती के लिए सभी उपयुक्त बातें हैं। यही कारण है कि यह प्रदेश लोगों के बसने के बाद से कृषि के लिए महत्वपूर्ण रहा है।

प्रारंभिक दिनों के फार्म का एक चित्र दिया गया है। वहाँ किसान के रहने के घर के अलावा किन कामों का प्रबंध है ?

1. ______ 2. ______

3. ______ 4. ______

परिवहन के क्या साधन हैं ?

1. ______ 2. ______

इस फार्म पर क्या फसलें होती हैं ?

1. ______ 2. ______

3. ______ 4. ______

चित्र- 8 प्रारंभिक दिनों का एक फार्म

चित्र- 9 एक आधुनिक फार्म

चित्र-10 उत्तरी पूर्वी क्षेत्र के कृषि प्रदेश
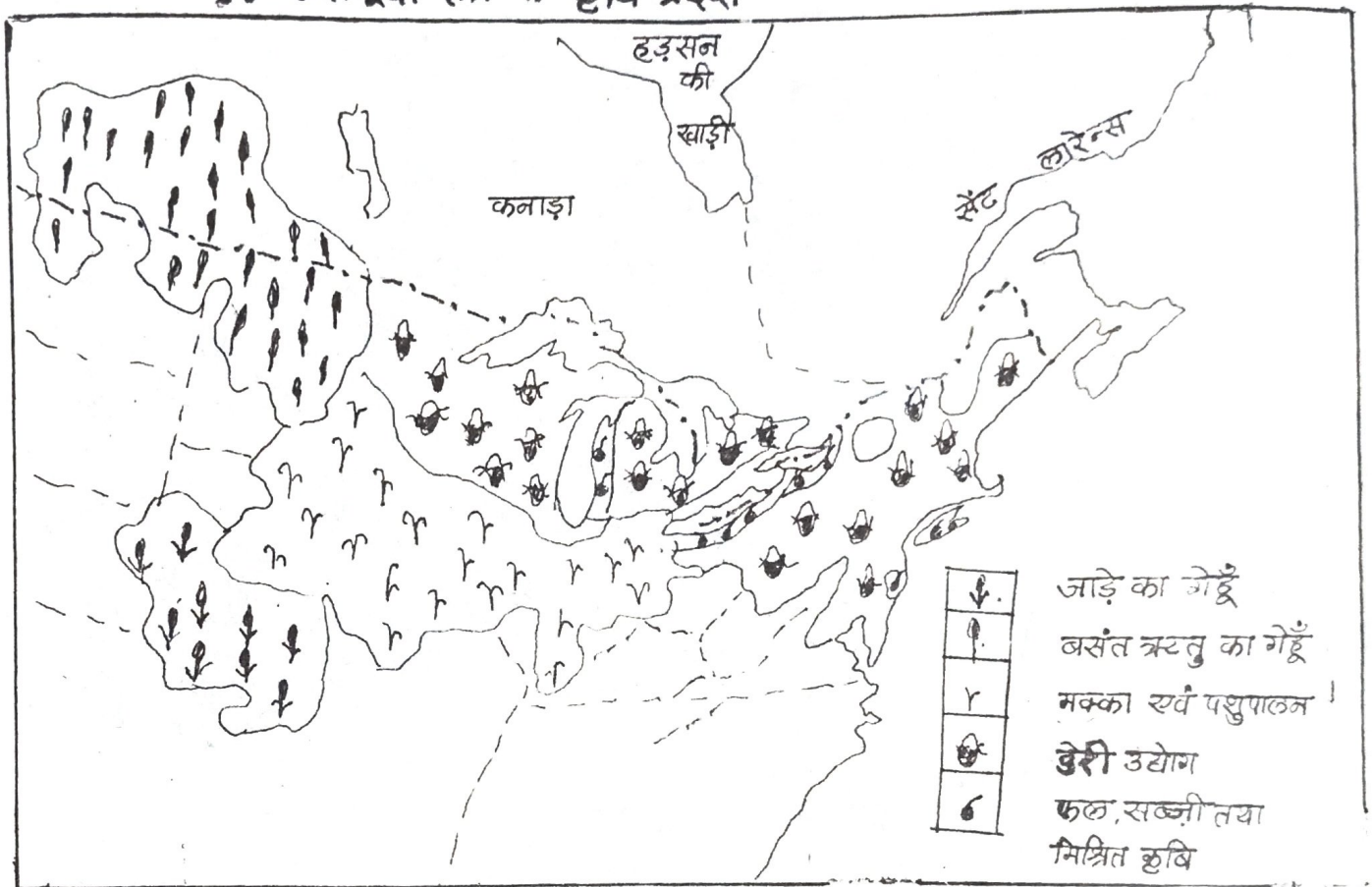
इस तरह पुराने फार्मों पर जरूरत की काफी चीजें पैदा की जाती थीं, घास और चारे की फसलों से जानवर पलते थे जिनसे दूध और मांस मिल जाता था। घोड़े परिवहन का साधन थे।

इसी क्षेत्र के एक आधुनिक फार्म का चित्र देखो। कितने बड़े-बड़े खेत हैं। ये मशीनों से जोते बोए और काटे जाते हैं। यहां मुख्यत: ओट्स, राय, जौ, मटर, तथा मक्का पैदा होता है। इस उत्पादन का बहुत सा भाग यहां पाले जाने वाले जानवरों को खिलाया जाता है। यहां बड़ी संख्या में दूध के लिए गायें पाली जाती है। एक ऊंची मीनार दिखती है जिसमें अनाज का भंडार है।

इस तरह अब फार्म पर परिवहन और खेती के काम के लिए घोड़े नहीं पाले जाते, दास रखे नहीं जाते। यहां मशीनों का गैराज है जहां फार्म मशीनें रखी जाती है। गायों के शेड हैं।

क्या तुम बता सकते हो यहां दूध का

धंधा इतना क्यों है, दूध कहां बिकता होगा ?

इन डेरी फार्मों के अतिरिक्त यहां विस्तृत प्रदेश में गेहूं और मक्का भी होती है । मक्का के प्रदेश में बड़ी संख्या में मांस के लिए पशु पाले जाते हैं । सघन जनसंख्या के कारण यहां मांस की बहुत खपत है ।

मानचित्र में यहां के खेती के प्रदेशों को देखो ।

अभ्यास के प्रश्न :

1. उत्तरी पूर्वी संयुक्त राज्य में शक्ति के कौन से साधन हैं ?
   1. 2. 3.
2. उद्योगों के लिए खनिजों की आवश्यकता क्यों होती है ? दो खनिजों के उदाहरण देकर बताओ उनसे क्या बनता है ?
3. उद्योगों को खेती से कौन से कच्चे माल मिलते हैं उनसे कौन से उद्योग लगते हैं ?
4. वनों से प्राप्त कच्चे माल से कौन से उद्योग लगाए जाते हैं ?
5. उद्योगों में पूंजी किस काम आती है ? शुरू में उत्तरी अमेरिका में जब उद्योग लगे तब पूंजी कहाँ से आई ?
6. उद्योगों में परिवहन के साधन किस काम आते हैं ?
7. उत्तरी पूर्वी क्षेत्र में परिवहन के कौन-कौन से साधन हैं ?
8. उत्तरी पूर्वी क्षेत्र में उद्योगों में मजदूरों की कमी को कैसे पूरा किया गया ?
9. उत्तरी पूर्वी क्षेत्र में खेती के मुख्य उत्पादन कौन-कौन से हैं ?
   1. 2. 3.
   4. 5. 6.
10. दिये गये मानचित्र में संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तरी पूर्वी क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण औद्योगिक क्षेत्र दिये गये है । उनके निकट चिन्हों से उनके महत्त्वपूर्ण उद्योग दर्शाओं ।

उत्तरी पूर्वी क्षेत्र के प्रमुख औद्योगिक नगर
ग्रेट लेकस
कनाडा
सेंट लारेंस नदी
मांट्रियल
मिनियापोलिस
मिलवाकी
शिकागो
डिट्रायट
यंगटाउन
क्लीवलैंड
बफेलो
पिट्सबर्ग
बोस्टन
न्यूयार्क
फिलेडेलफिया
बालटीमोर
वाशिंगटन
इंडियाना-पोलिस
सिनसिनेटी
कंसासिटी
सेंटलुईस
लुइसविल
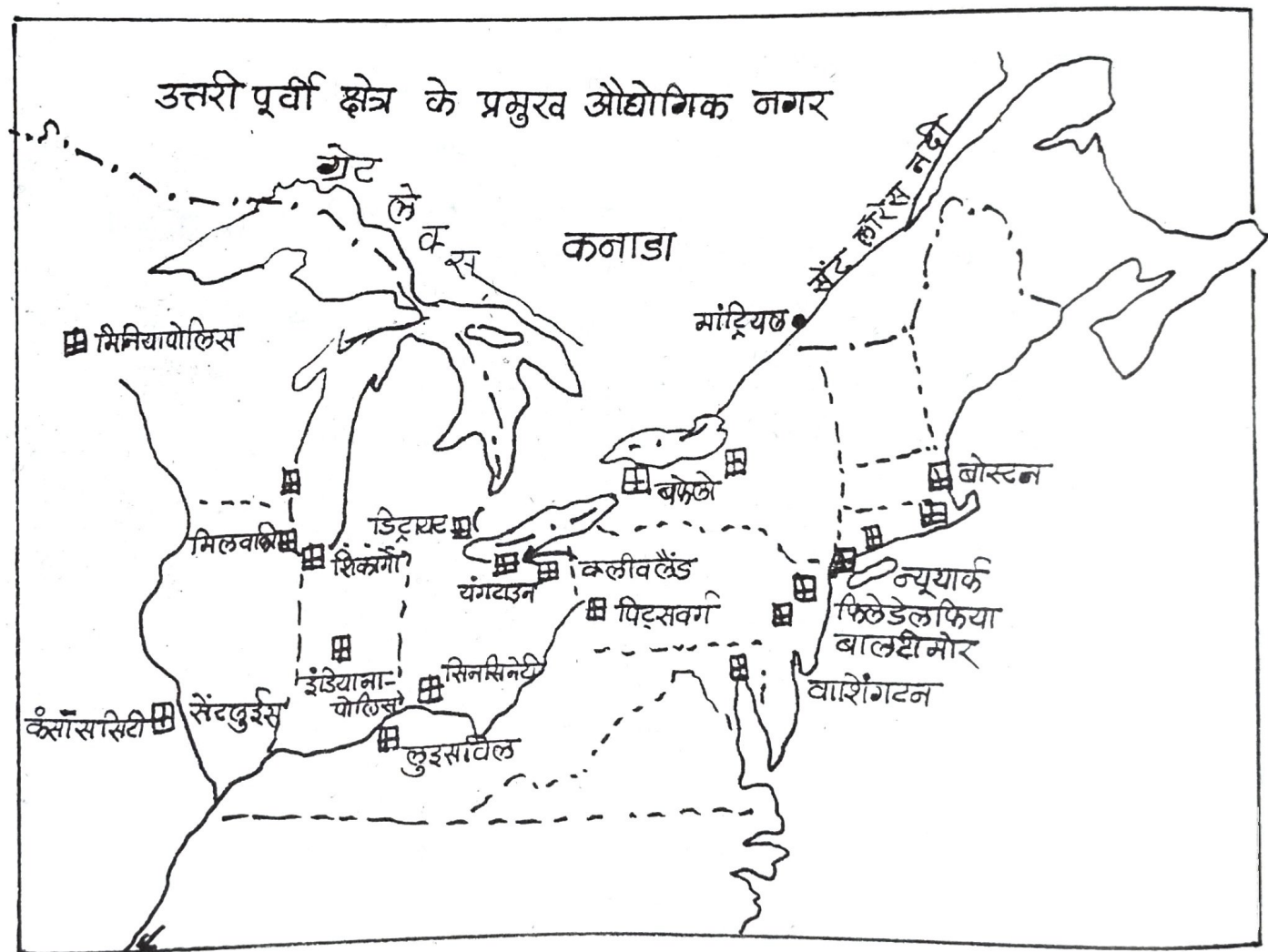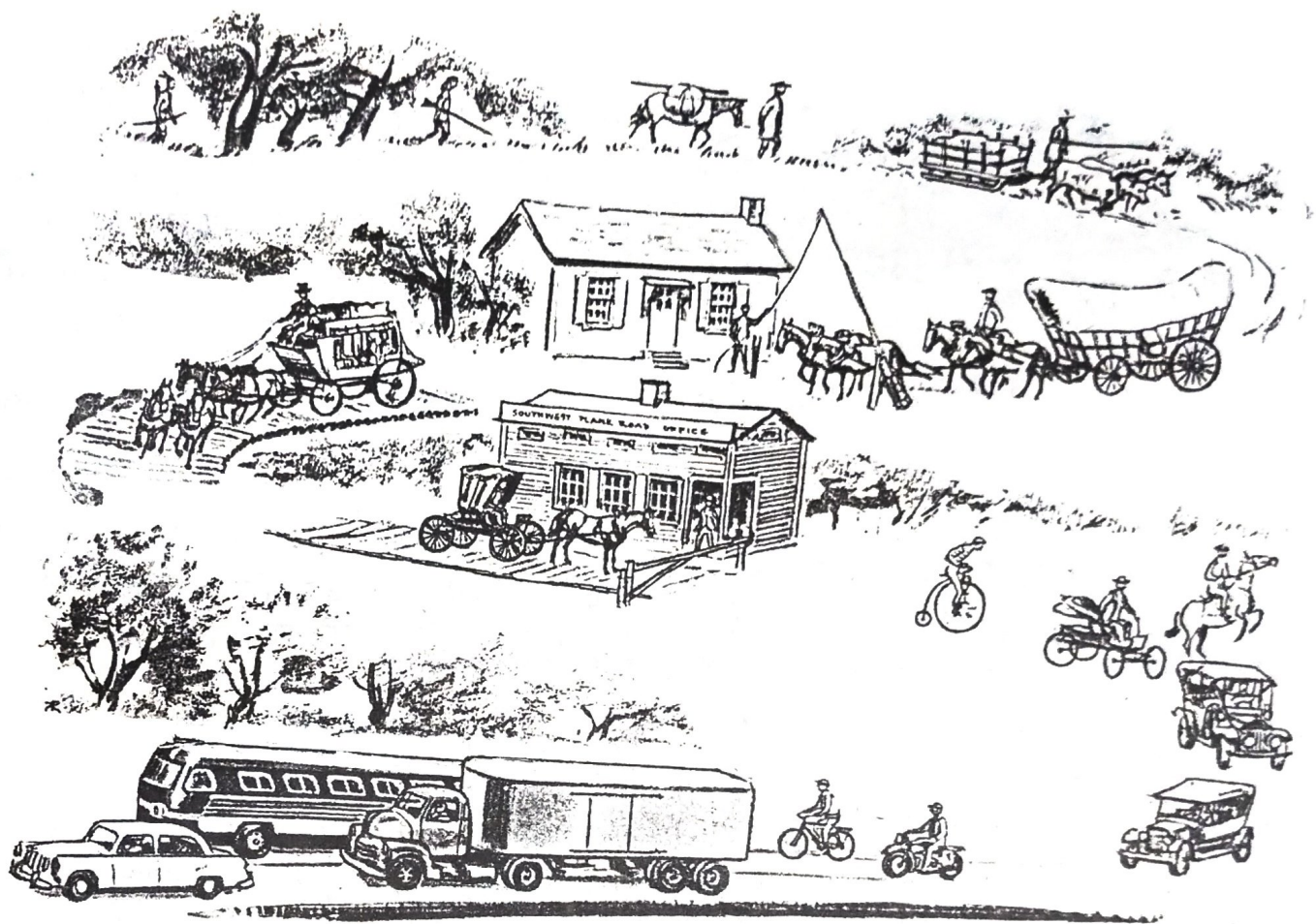
परिवहन की कहानी

उत्तरी अमेरिका के जन साधारण के पास भी मोटर गाड़ियां हैं कि उन्हें दूर के स्थानों को जाने के लिए सार्वजनिक परिवहन की आवश्यकता नहीं होती। हवाई जहाज का भी उपयोग खूब लोग करते हैं ।

औद्योगिक प्रदेशों में तो परिवहन मार्गों का जाल बिछा है, सामान के लाने-ले जाने के अतिरिक्त कारखानों में काम करने वाले भी दूर-दूर रहते हैं और रोज इनसे आते-जाते हैं ।

इस तरह पहले की तुलना में लोगों का आना-जाना बहुत अधिक हो गया है । दूर-दूर का भारी सामान भी सस्ते में बाजारों तक शीघ्र पहुंच जाता है जो पहले नहीं पहुंच पाता था । यह परिवहन पहले की तुलना में कहीं अधिक तेज है । थोड़े समय में लम्बा सफ़र तय कर लिया जाता है ।
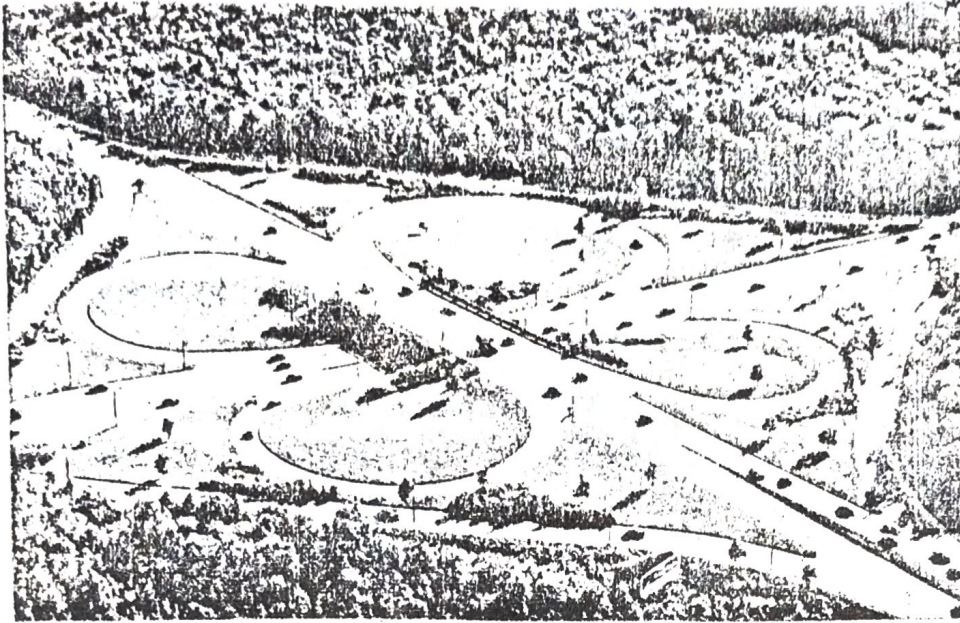
यहां की सड़कों का चित्र चौराहा न बनाकर सड़कें किस प्रकार मोड़ी गई हैं । रेल मार्गों का जाल तो ऐसा बना है कि पता नहीं चलता कौन लाईन कहां जा रही है । समय की बचत भी होता है।

आदमी के विकास का इतिहास परिवहन के साधनों से जुड़ा है । इतिहास में तुमने पढ़ा है कि ईरान, अफगानिस्तान और तुर्किस्तान से बादशाह घोड़ों पर सेना लेकर भारत पर बार-बार आक्रमण करते रहे हैं । सोचो, न पुल, न

सड़के कैसे इतनी बड़ी सेनाएं आती होंगी । कुछ इसी तरह की बात
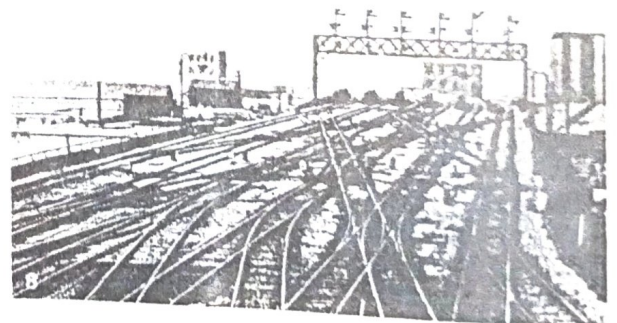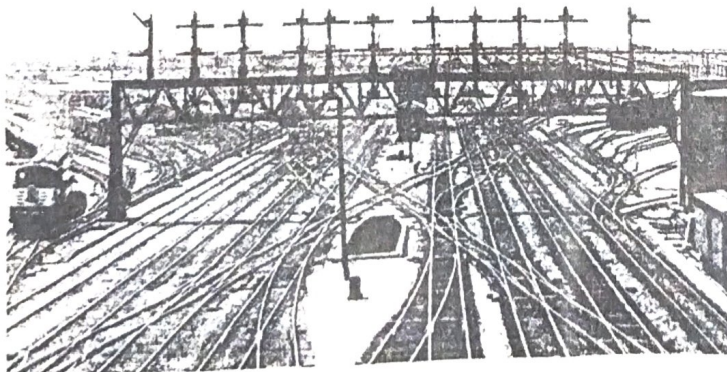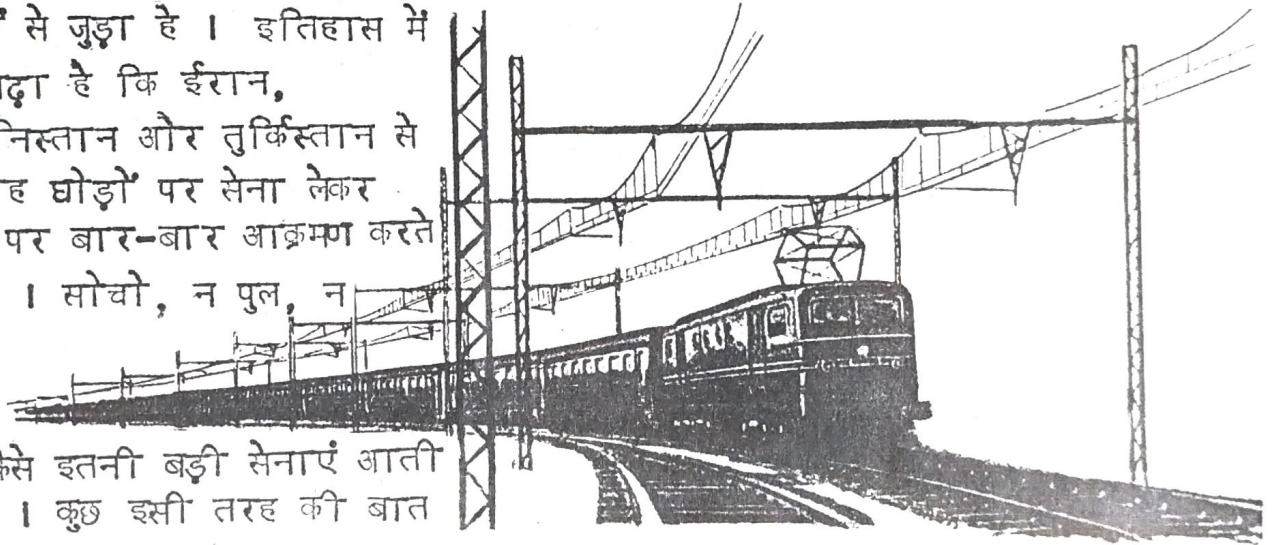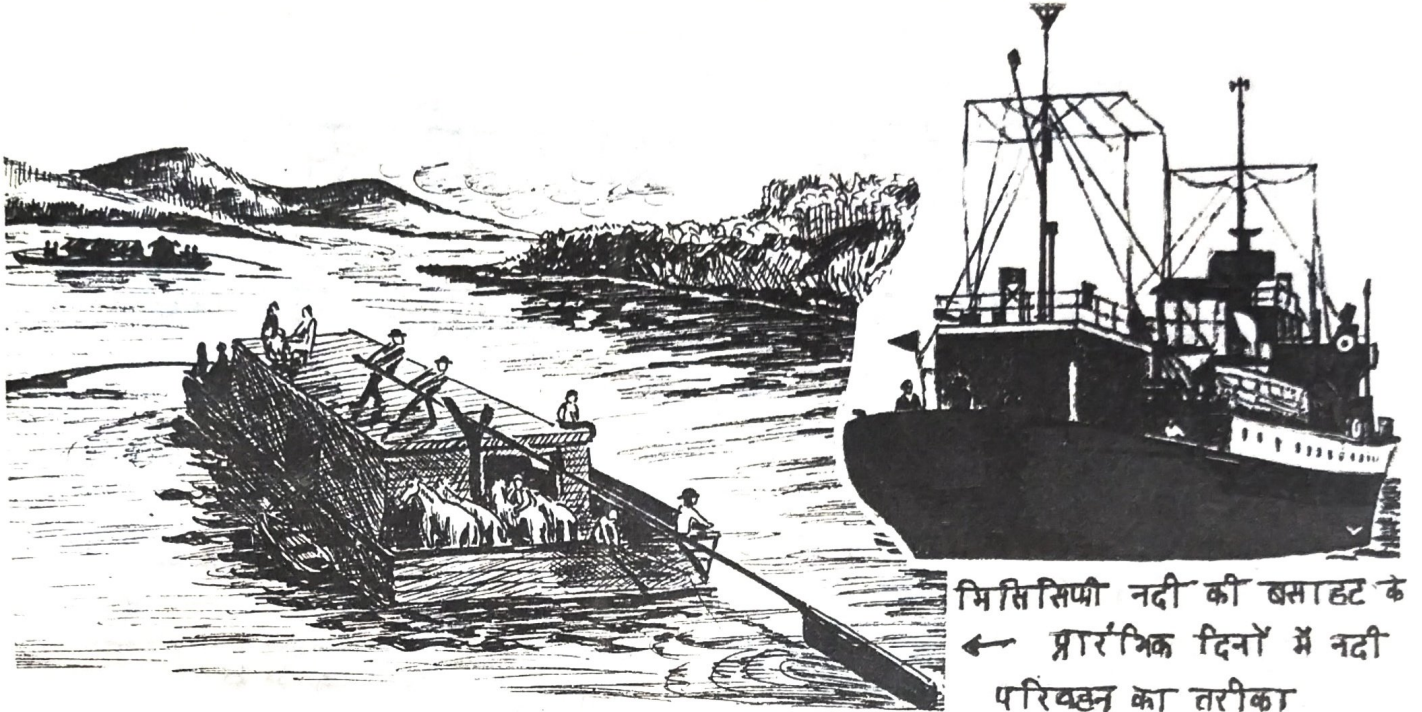
मिसिसिप्पी नदी की बसाहट के ← प्रारंभिक दिनों में नदी परिवहन का तरीका

अमेरिका के विकास और उसके बसाहट के साथ जुड़ी हैं । अमेरिका के लम्बे चौड़े इलाके को खोजना और वहां जा-जाकर बसने के लिए लोगों ने घोड़ा-गाड़ी या घोड़े पर सवार लोग हजारों मील की यात्राएं कर लेते । लेकिन कोयले और खनिज तेल ने तो परिवहन नें क्रांति ला दी । अब तेज चलने वाली, रेलें, मोटरें, हवाई जहाज, जलयान, इन्हीं से संयुक्त राज्य के सभी हिस्सों में थोड़े समय में लोग पहुंच सकते थे । संयुक्त राज्य के दूर-दूर के हिस्सों से खनिज, मशीनें अनाज, फल, सब्जी, मछली, मांस उस देश के कोने तक पहुंच जाता है । इतना विशाल देश इन्हीं परिवहन के साधनों से आपस में जुड़ा है ।
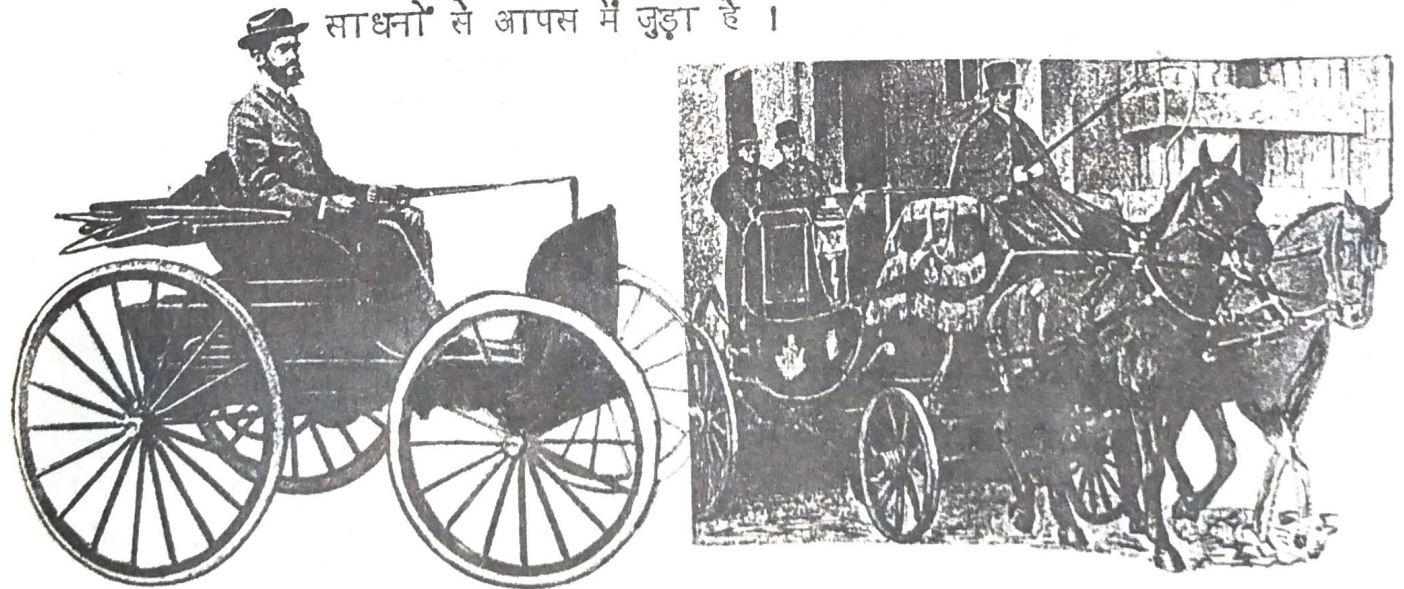
पाठ-6 ग्रेट प्लेन्स

प्रेरीज- उत्तरी अमेरिका के घास के प्रदेश

मिसिसिपी नदी तथा राकीज पर्वत के बीच उत्तर से दक्षिण तक फैला मैदान ग्रेट प्लेन्स कहलाता है । उत्तर में कनाडा के मध्य के प्रान्तों तक इसका विस्तार है । बिलकुल सपाट या हल्का ऊंचा-नीचा सैकड़ों मील तक फैला यह प्रदेश मुख्यत: घास का प्रदेश है । शुरू में आए लोगों में एक छोटी बच्ची ने लिखा है कि यह घास का प्रदेश इतना सपाट है जैसे समुद्र हो, और यहां पेड़ तक नहीं हैं जिनके पीछे छुपा जा सके ।

अमेरिका के ग्रेट प्लेन्स ठंडी जलवायु के घास के प्रदेश हैं । इन्हें प्रेरीज़ कहते हैं ।

तुमने अफ्रीका में सवाना नामक घास के प्रदेशों की बात पढ़ी थी । वो भूमध्य रेखा के निकट हैं, इसलिए गर्म प्रदेश हैं । उत्तरी अमेरिका के मानचित्र में देखो, प्रेरीज प्रदेश भूमध्य रेखा से दूर हैं । वे कर्क रेखा से बहुत उत्तर में फैले हैं इसलिए ये ठंडे प्रदेश हैं ।

मानचित्र में देखो मिसिसिपी की कई सहायक नदियां इस मैदान में बहती हुई मिसिसिपी में मिल जाती दीवार के मानचित्र पर निम्नलिखित नदियों के मार्गों को उंगली फेर कर बताओ ।

1• मिसौरी 2• प्लेट
3• अरकन्सास 4• रेड नदी

उत्तर में कनाडा के हिस्से में

5• सस्केचवान नदी को भी ढूंढो ।

ग्रेट प्लेन्स की जलवायु :

ग्रेट प्लेन्स में वर्षा लगभग 50 से• मी• या उससे भी कम होती है । तुम जानते हो कि इतनी कम वर्षा में घास ही उग पाती है । पेड़ केवल नदियों
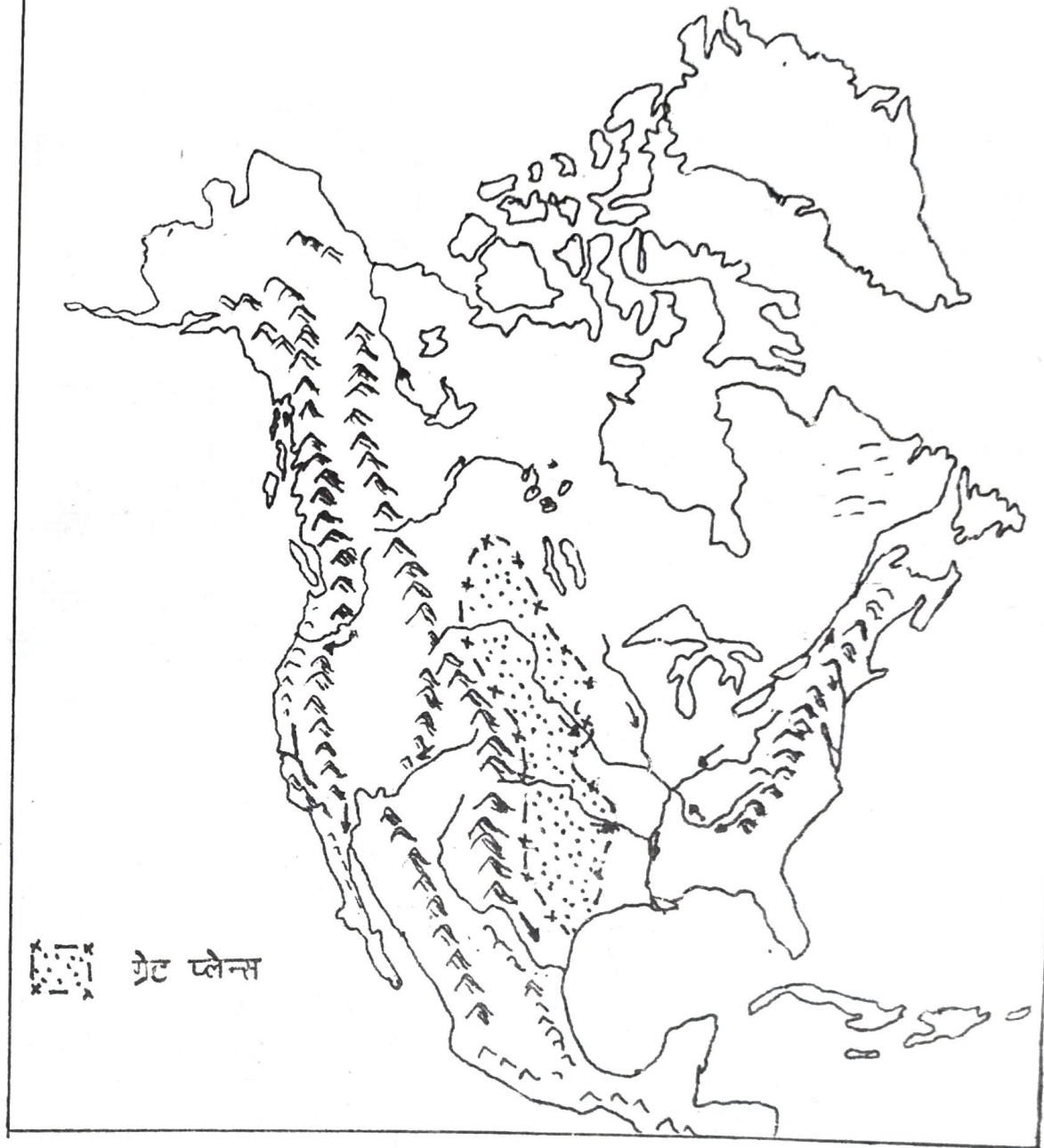
के किनारे अगते हैं । यह घास 3 फीट तक ऊंची मिलती है, और भी ज्यादा सूखे हिस्सों में काफी छोटी रह जाती है ।

1. अटलांटिक महासागर से उठने वाली हवाओं में यहां पहुंचने तक वाष्प बचेगी ?

2. प्रशान्त महासागर से उठने वाली भाप भरी हवाओं को कौन से

पर्वत रोक लेंगे ?

ग्रेट प्लेन्स महासागरों से दूर है और पर्वत की आड़ में हैं इसी लिए यहां इतनी कम वर्षा होती है ।

सागरों से दूरी ग्रेट प्लेन्स के तापमान पर भी असर डालती है । यहां ठंड में तापमान बहुत गिर जाता है । यहां तक कि हिमांक(0° से॰)से भी कम हो जाता है । गर्मी के मौसम में तापमान बढ़ जाता है, यहां तक कि 40° से॰ से ऊपर चला जाता है । जाड़े गर्मी का यह अत्यधिक अन्तर महाद्वीपीय जलवायु की विशेषता है । ऐसा उन प्रदेशों में पाया जाता है जो महासागरों से बहुत दूर महाद्वीप के मध्य में हैं ।

इसके विपरीत तटीय प्रदेशों में जहां समुद्री प्रभाव मिलता रहता है, जाड़े गर्मी के बीच इतना ज्यादा अन्तर नहीं होता । तुमने पश्चिमी यूरोप के विषय में पढ़ते समय देखा था कि समुद्री हवाओं के कारण तटीय भागों में जाड़ा बहुत कठिन नहीं होता और गर्मी हल्की होती है । वह समुद्री जलवायु की विशेषता है ।

ग्रेट प्लेन्स में लोग आकर बसे :

जब संयुक्त राज्य में लोग आकर बसे तब ग्रेट प्लेन्स उन्हें आकर्षक नहीं
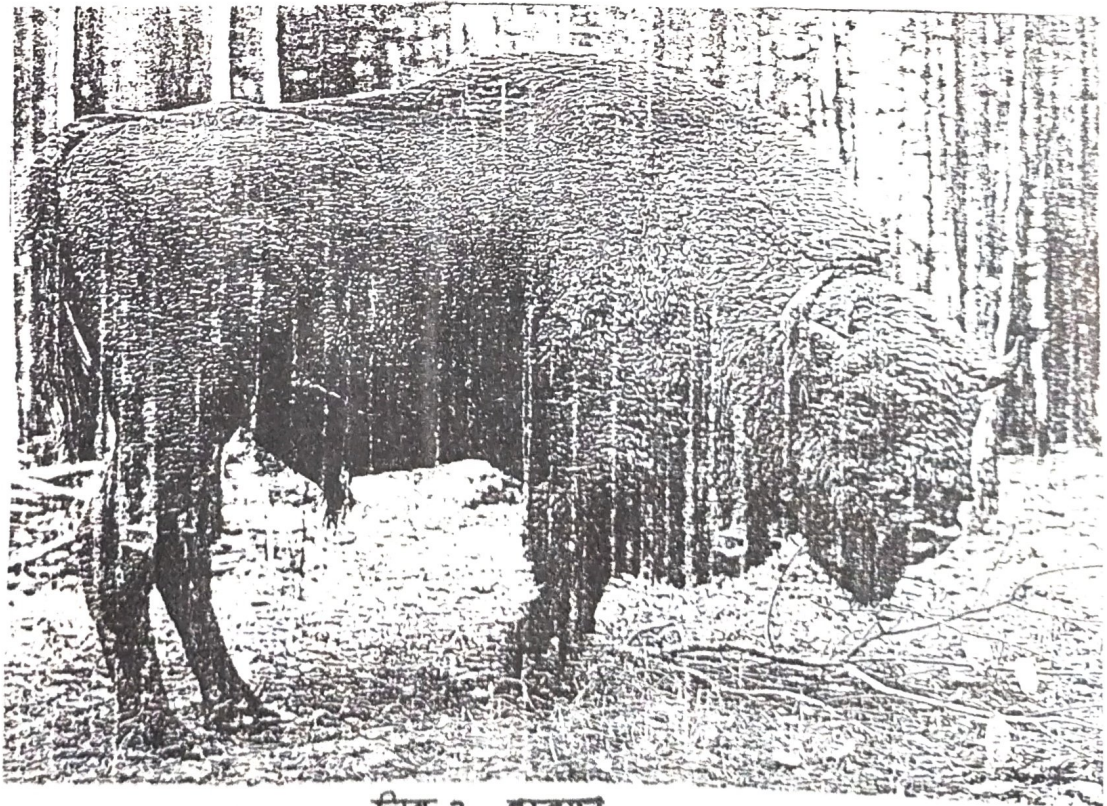
चित्र 2 बाइसन

लगता था और खेती के उपयुक्त भी नहीं लगता था । यहां सब जगह पानी भी नहीं मिलता था । लोग प्रेरीज़ प्रदेश को पार करके और पश्चिम में चले जाते थे ।

उन दिनों यहां सैकड़ों की संख्या में जंगली भैंसे या बाइसन के झुंड के झुंड चरते रहते थे । यहां आदिवासी इंडियन्स के कुछ कबीले रहते थे । जो जो इन जानवरों को मार कर भोजन बनाते थे । भैंसों की खाल के ही कपड़े और तंबू बनाते थे । पाठ के अन्त में दी गई चित्रावली में अमेरिका के आदिवासी इंडियन्स के बारे में चित्र दिए गए हैं ।

उन दिनों संयुक्त राज्य में एक विज्ञापन निकाला गया कि जो लोग ग्रेट प्लेन्स में आकर बसेंगे उन्हें 10 डॉलर मूल्य चुकाने पर सरकार 160 एकड़ भूमि देगी ।

सोचो यह भूमि किसकी थी ? यहां ------------------------------

कौन लोग रहते थे ? ---------------

धीरे-धीरे यूरोपियन लोग ग्रेट प्लेन्स में भी बसने लगे । और यहां की जमीन पर कब्जा करने लगे । उन्होंने यहां के यूरोपियन आदि - वासियों को खत्म करने की कोशिश की । यहां आकर बसने वाले यूरो - पियन लोगों को भगाने के लिए आदिवासी इन्डियन्स भी कई बार आक्रमण करते और बड़ी संख्या में मारे जाते । धीरे-धीरे इनकी संख्या कम होती गई और ग्रेट प्लेन्स यूरोप के आने वालों ने हथिया लिया ।

जब लोगों ने खेती प्रारंभ की तो पाया कि यहां की भूमि बहुत उपजाऊ है । पर यहां भूमि बहुत ज्यादा थी और उसकी तुलना में काम करने वाले लोग बहुत कम पड़ने लगे । एक परिवार अकेला 160 एकड़ भूमि तोड़ कर जोत, बो नहीं पाता था । फिर फसल काट कर इतना अनाज निकालना कठिन हो जाता था । तब सब काम हाथों से होता था । इसलिए लोग अपने बड़े-बड़े खेतों का पूरा फायदा भी नहीं उठा पा रहे थे ।

कृषि मशीनें आईं :

इस समस्या का समाधान मशीनों से किया गया । अमेरिका में खेती के छोटे बड़े सब कामों के लिए कई तरह की मशीनें सोची गईं और बनाई जाने लगीं । पहले छोटी मशीनें बनीं, जो घोड़ों से चलाई जातीं, फिर ट्रैक्टर, थ्रेशर आए और फिर कम्बाईन हारवे-स्टर । चित्र में देखो हारवेस्टर कितने बड़े हिस्से में कटाई करके गेहूं निकाल कर, एलिवेटर में भर देता है ।
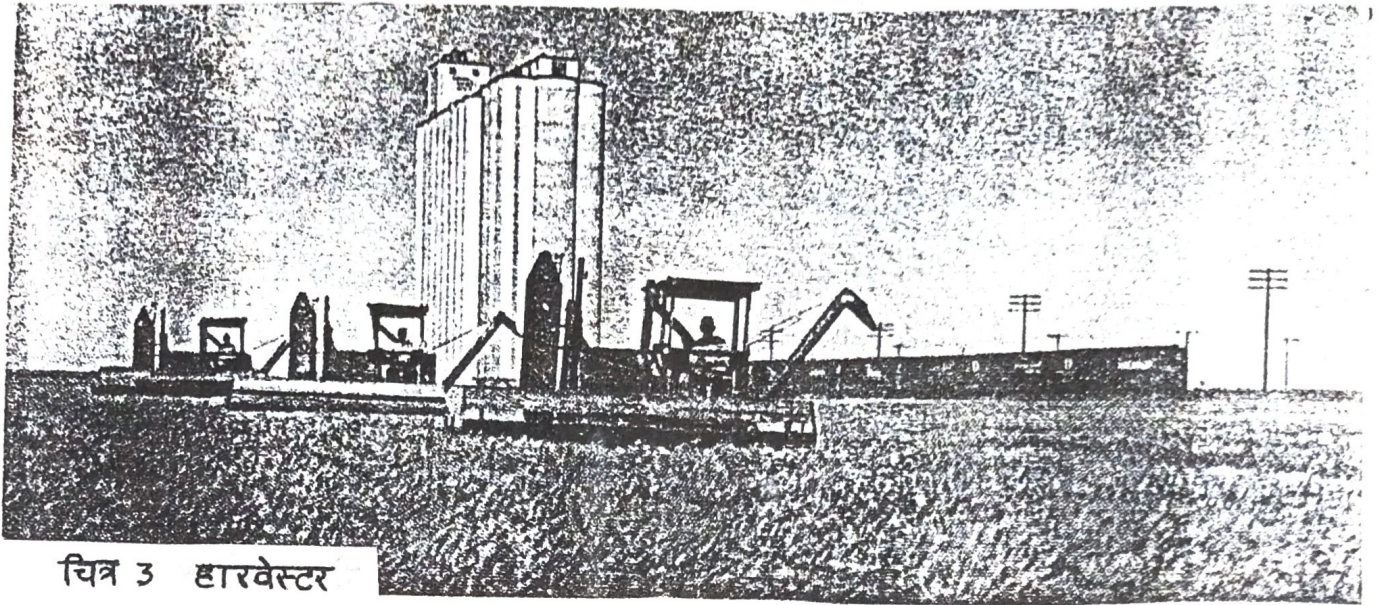
चित्र 3 हारवेस्टर

एलिवेटरस वहां के ऊंचे-ऊंचे गोदाम होते हैं। गणना से पता चलता है कि एक एकड़ में गेहूं पैदा करने में मनुष्य का 61 घंटे का श्रम लगता है, जबकि मशीनों से यह काम 3 घंटे में हो जाता है।

जब आदमी का काम मशीने करने लगीं तो मजदूरी की समस्या हल हो गई और बहुत बड़े फार्म बनने लगे। यहां औसत फार्म 650 एकड़ के हैं। बड़े फार्म 1000-2500 एकड़ तक के हैं। चूंकि ग्रेट प्लेन्स के विशाल फार्मों पर सब काम मशीनें करती हैं, इसलिए यहां मजदूरों व अन्य काम करने वालों की जरूरत बहुत कम है। ग्रेट प्लेन्स की आबादी इसी कारण बहुत घनी नहीं है। इस लम्बे-चौड़े मैदान में कम ही लोग रहते हैं। हां यह तो है कि मशीनों को चलाने के लिए लोगों की जरूरत होती है। इसलिए बोवाई और कटाई के समय यहां खास तौर से बहुत लोग फार्मों पर काम करने आते हैं।

क्या इतने बड़े फार्मों का उत्पादन किसान स्वयं इस्तेमाल कर सकते हैं? यदि बड़े भंडारों में भर कर रख भी लें तो भी बेचना होगा। यहां आबादी कम है, यह अनाज यहां खप नहीं सकता। अमेरिका के पूर्वी हिस्सों में जहां आबादी अधिक है, अनाज भेजा जाता है या विदेशों को भेजा जाता है।

शुरू में जब लोग बसने लगे तो यहां मकान बनाने के लिए लकड़ी मिलना भी कठिन था, तब मिट्टी के मकान बनाते थे, चित्र में देखो। बाद में नदियों के किनारों से पेड़

काट कर लकड़ी लाने लगे ।

पहले यहां ज़रूरत की और चीजें, जैसे- बर्तन, जूते, फार्म के औजार, हथियार आदि भी नहीं मिलते थे । यह सब सामान पर्वी राज्यों से आता था । सामान वहां के कारखानों में बनता था या वहां के बन्दरगाहों पर विदेश से आता था । बताओ इन चीजों को खरीदने के लिए ग्रेट प्लेन्स के किसान क्या बेचते थे ?

चूंकि ग्रेट प्लेन्स में रहने वाले लोग मुख्य रूप से खेती करते थे उनका जीवन पूर्वी राज्यों के साथ चीजों के लेन-देन पर बहुत निर्भर करने लगा । शुरू-शुरू में उन्हें ये लेन-देन करने में बहुत कठिनाई आती थी क्योंकि यातायात के साधन जैसे- रेल लाईनें, सड़कें, नहरें नहीं थीं । ग्रेट प्लेन्स के लोगों की जरूरत के कारण संयुक्त राज्य अमेरिका में बहुत तेजी से सड़कों और रेलों का निर्माण हुआ । सोच कर बताओ यहां रेल मार्ग और सड़के क्यों बनाई गई ? उन मार्गों से ग्रेट प्लेन्स को क्या सुविधा हुई होगी ?

1. 2. 3.

ग्रेट प्लेन्स में अनाज की खेती :

इन सूखे प्रदेशों में खेती के लिए सबसे उपयुक्त फसल गेहूं है । इसके अतिरिक्त मक्का, सोरगम तथा सोया-बीन आदि भी पैदा की जाने लगी है । दक्षिणी हिस्सों में कपास भी होती है ।

खेतों में गेहूं का अधिकतर काम मशीनों से हो जाता है । उसका बाज़ार भी बड़ा है । ग्रेट प्लेन्स के दक्षिणी हिस्सों में जाड़े का गेहूं होता है । इसकी बात तुम यूरोप में पढ़ चुके हो । यह जाड़ा आने के पहले बो
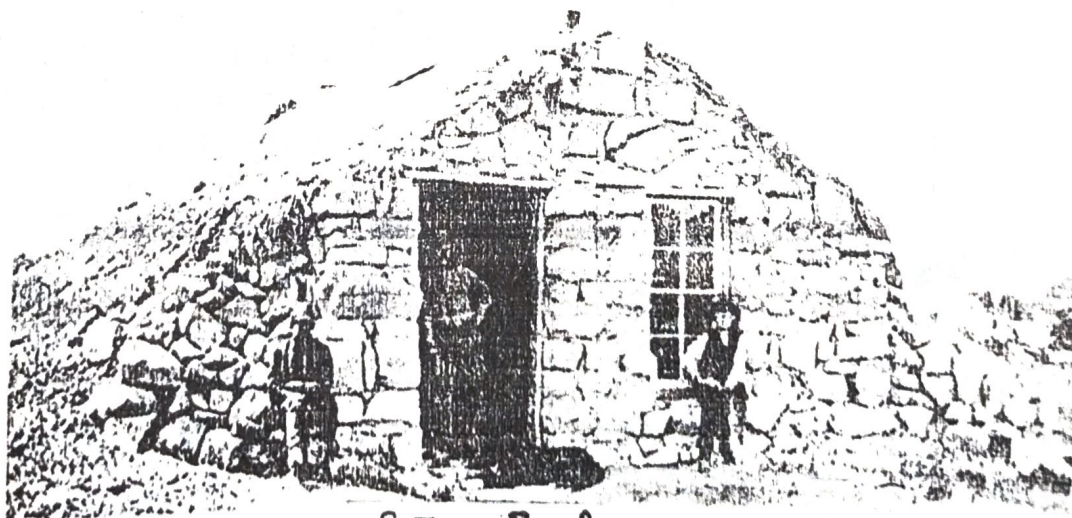
चित्र 4 मिट्टी का मकान
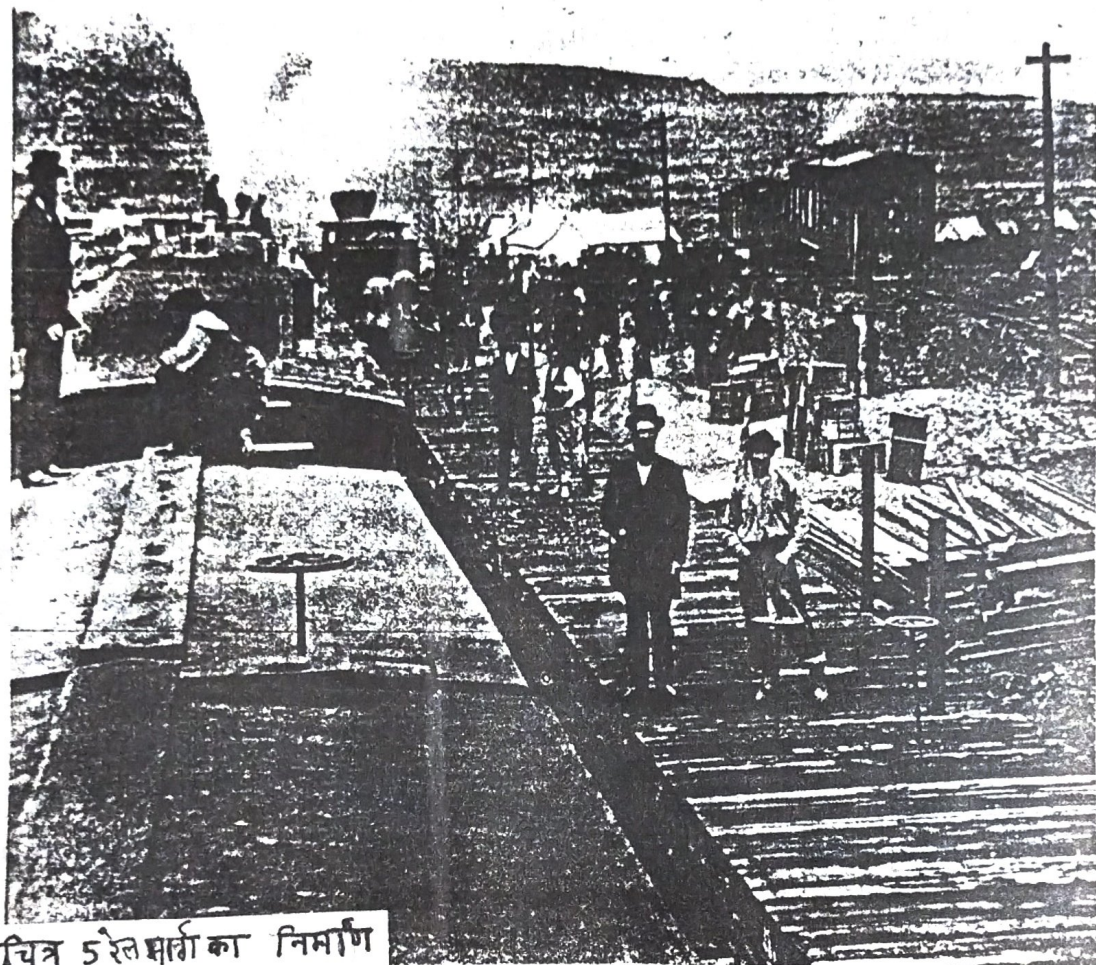
चित्र 5 रेलमार्ग का निर्माण

दिया जाता है और गर्मी आने पर काट लिया जाता है ।

उत्तरी हिस्सों में, जिसमें कनाडा का ग्रेट प्लेन्स का हिस्सा भी शामिल है, बसंत ऋतु आने पर गेहूँ बोया जाता है । इसके बारे में आगे के पृष्ठ में पढ़ोगे ।

प्रारंभिक दिनों में ग्रेट प्लेन्स में खेती बिलकुल जुआ थी क्योंकि यहां बारिश कम होती थी और उसका हर साल भरोसा नहीं किया जा सकता था । वर्षा अच्छी हुई तो फसल अच्छी हुई, वर्षा कम हुई तो बीज उग नहीं पाते । पौधे उग भी जाते तो सूख जाते । इसी तरह ओले, आंधी से भी फसल खराब होती ।

अब बहुत से प्रदेश में सिंचाई के साधन हो गये हैं। इससे प्रति वर्ष पर्याप्त उत्पादन होने लगा । कई तरह की फसलें भी होने लगीं जो कम वर्षा में नहीं हो पाती थीं ।

ग्रेट प्लेन्स में एक और बहुत बड़ी

समस्या थी । वर्षा की कमी के कारण यहां की मिट्टी बहुत सूखी और भुर-भुरी थी । जब यहां बहुत बड़े-बड़े खेत बनाए गए तो घास साफ कर दी गई । अब यह हुआ कि खाली खेतों में सूखी भुर-भुरी मिट्टी रह गई ।

यहां बीच-बीच में बहुत तेज हवाएं चलती थीं । तेज हवा के साथ भारी मात्रा में उपजाऊ मिट्टी उड़ जाती । खेत के खेत इस तरह नष्ट होने लगे । इस तरह बहुत बड़ा क्षेत्र मिट्टी के कटाव से बर्बाद हुआ ।

अब मिट्टी के कटाव की समस्या को दूर करने के लिए कई तरह के उपाय किए गए हैं । खेतों के किनारे पेड़ों की कतारें लगाई गई हैं ताकि मिट्टी उनकी जड़ों से बंधी रहे और हवा की तेजी भी पेड़ों के कारण कुछ थम सके ।

खेत ढाल के आड़े बनाए जाते हैं, जिससे कटाव रुके । कई फसलें पट्टियों में बोते हैं ।

खेतों में बंधान भी बनाए जाते हैं ताकि खेतों में से बहता हुआ पानी मिट्टी बहा कर न ले जाए ।

यह भी कोशिश की गई है कि कुछ जगहों पर खेत न बनाए जाएं । खासकर ऊंची-नीची जमीन पर खेत बनाने से मिट्टी के बहुत मात्रा में बहने व उड़ने का खतरा रहता है ।
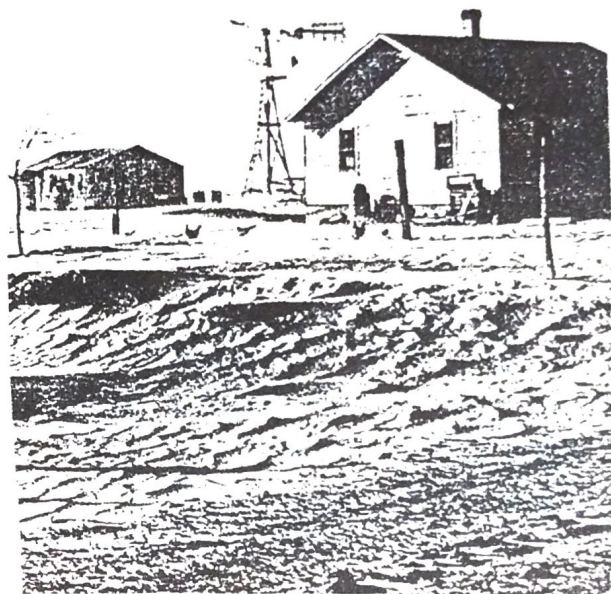
चित्र 6 मिट्टी का कटाव

ऐसी ऊंची-नीची भूमि पर खेती नहीं की गई है और वहां प्राकृतिक घास आदि ही उगा करती है ।

इस तरह खेती में आई समस्याओं का समाधान किया गया । इससे खेतिहर भूमि बर्बाद होने से बच गई और किसानों को प्रतिवर्ष अच्छा उत्पादन मिलने लगा **मिट्टी के कटाव की समस्या पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है ।**

कनाडा के प्रेरी प्रदेश :

कनाड़ा के प्रेरीज़ मुख्यत: ... . राज्यों में हैं । दीवारें के मानचित्र में देखो । यहां प्राचीन काल में एक झील थी उसमें जमीन बहुत महीन मिट्टी यहां बिछी मिल मिलती है जो बहुत उपजाऊ है ।

मानचित्र में देखो कनाडा का यह भीतरी भाग समुद्र से कितने दूर है । उत्तर ध्रुव के भी निकट है । इसीलिए यहां अक्टूबर से मार्च तक विकट जाड़ा पड़ता है । कई महीने तापमान हिमांक के नीचे रहता है, हिमपात होता है, मिट्टी तक जम जाती है । लेकिन लगभग 120 दिन या चार महीने यहां ऐसे मिल जाते जब पाला नहीं पड़ता । तुम जानते हो कि पाले से फसलें नष्ट हो जाती हैं । बसंत ऋतु आने पर हिम पिघलती है । उससे मिट्टी गीली हो जाती है, इस मौसम में यहां पानी भी बरसता है । खेत जोते बोए जाते हैं। यह मुख्यत: बसंत ऋतु के गेहूं उत्पादन का प्रदेश है । यहां जाड़े का गेहूं नहीं बोया जाता क्योंकि ठंड बहुत ही अधिक रहती है । संयुक्त राज्य के समान ही यहां फार्म बड़े-बड़े हैं और खेतों का सभी काम मशीनों से होता है ।

जुलाई तक गेहूं की बालों में दाना पक जाता है । अगस्त तक खेत काटे जाते हैं तथा गेहूं एलिवेटरस में भर कर रखा जाता है या वेनकूवर तथा विनिपेग नगरों की मंडियों को चला जाता है । कनाडा का बहुत सा गेहूं विदेशों के बाजारों को जाता है ।

इन नगरों को मानचित्र में देखो ।

क्या वे रेल मार्गों से समुद्री बंदरगाहों से जुड़े हैं ।

बन्दरगाहों तक रेल गाड़ियों से गेहूं आता है फिर जहाजों में लाद कर विदेशों को, विशेषकर यूरोप के देशों को जाता है ।

ग्रेट प्लेन्स में पशु पालन :

ग्रेट प्लेन्स का बहुत से हिस्से जहां खेती नहीं होती, प्राकृतिक चरागाह की तरह उपयोग में आते हैं । विशेषकर ग्रेट प्लेन्स के पश्चिमी हिस्से, जहां वर्षा कम होती है और जो सूखे हैं । यहां पशुपालन के बड़े-बड़े फार्म है, जिन्हें "रेन्च" कहते हैं । ये फार्म सैकड़ों एकड़ या उससे बड़े होते हैं । यहां अधिकतर गाय-बैलों की ऐसी नस्लें पाली जाती हैं, जिनका उपयोग मांस खाने के लिए किया जाता है । ये रेन्चों में चरने के लिए छोड़ दी जाती है । पहले ये रेन्च खुले रहते थे । अब उनको कंटीले तारों से घेर दिया गया है । इससे अलग-अलग नस्ल और उम्र के जानवरों के बाड़े बन जाते हैं । कंटीले तारों के बाड़े के कारण दूसरे रेन्चों के जानवर अन्दर नहीं घुस पाते ।
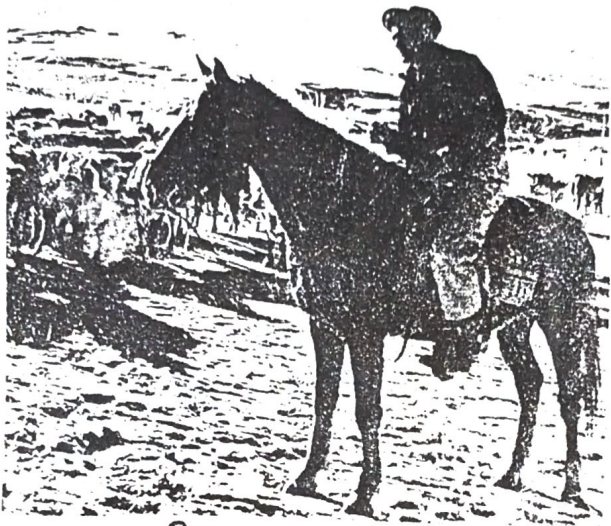
चित्र 7 काउ बॉय

फार्मों के मालिक इन्हीं फार्मों के बीच घर बनाकर अपने परिवार के साथ रहते हैं । रैन्च पर उनके नौकर भी रहते हैं । जिन्हें "काउ बॉय" कहते हैं । रैन्चों में घूमने और निगरानी रखने के लिए सड़कें बनी रहती हैं । इन पर घोड़े या जीप से काउ बॉय जाते हैं । बहुत बड़े रैन्चों में तो हवाई जहाज भी होते हैं ।

रैन्चों के बीच नलकूप बनाकर पवन चक्की लगा देते हैं जिससे पानी खिंचता रहे और टैंकों में जानवरों के पीने के लिए भरता रहे । काऊ बॉय निगरानी रखते हैं कि जानवरों को पानी मिलता रहे, जंगली पशु उन पर आक्रमण न करें, कंटीले तार कहीं टूट न गए हों इत्यादि ।

साल में दो बार जानवरों को इकट्ठा किया जाता है । उन्हें पहचान के लिए दागा जाता है तथा गाड़ियों में भर के कान्सास तथा शिकागो नगरों के बाजारों को भेज दिया जाता है । इस तरह यहाँ का पशु पालन एक बड़ा व्यापार है । अमेरिका में प्रत्येक भोजन में मांस खाया जाता है इसलिए यहाँ मांस की बहुत मांग है । मांस ताजा भी बाजारों को जाता है और डिब्बों में बंद करके सुरक्षित भी कर लिया जाता है । डिब्बों में किया मांस कुछ दिनों बाद तक इस्तेमाल होता रहता है ।

यहाँ पहले जब पशु पालन विकसि हुआ तो हजारों जानवरों को बाज़ार तक पहुंचाना ही बड़ा काम था । फिर

चित्र 8 पशुओं का रेल से परिवहन
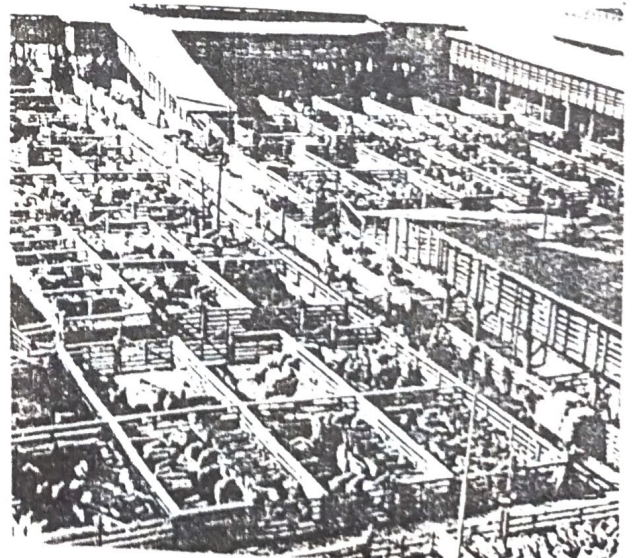
रेल मार्ग हुए, तब रेलगाड़ियों में भर भेजा जाना सुविधाजनक हो गया ।

फार्म तथा रेन्चों का जीवन :

कई फार्म हाउज तथा रैन्च पास के नगरों से 100 मील तक दूर होते हैं । किसान, उनके परिवार तथा अन्य लोग अपनी ज़रूरतों के लिए बीच-बीच में पास के नगर में आते रहते हैं । खाने-पीने की अधिकतर ज़रूरतें फार्म पर ही पूरी हो जाती हैं । इन फार्मों और रैन्चों पर आधुनिक सुख-सुविधा के साधन, जैसे- टी॰वी॰, रेडियो, गैस, रेफ्रीजिरेटर आदि सभी होते हैं । फिर भी यहां का जीवन अकेला सा होता है । यहां के लोग अकेलेपन के अभ्यस्त हो जाते हैं । कुछ किसान पास के नगर में रहने लगते हैं और देखरेख के लिए आते रहते हैं, विशेषकर जोतने, बोने और काटने के समय ।

क्या तुम बता सकते हो कि अपने देश में किसान गांव में इकट्ठे होकर क्यों रहते हैं । जबकि ग्रेट प्लेन्स में किसान दूर-दूर अपने फार्म पर मकान बनाकर रहते हैं ?

अभ्यास के प्रश्न :

1॰ रिक्त स्थानों की पूर्ति करो

अ- ग्रेट प्लेन्स .... पर्वत तथा नदी ..... नदी के मध्य है ।

ब- ग्रेट प्लेन्स की मुख्य वनस्पति .... है ।

स- ग्रेट प्लेन्स में बसाहट के पहले .... नामक जंगली पशु पाए जाते हैं ।

द- ग्रेट प्लेन्स में आबादी .... (सघन/विरल) हैं ।

2॰ ग्रेट प्लेन्स की जलवायु महाद्वीपीय है क्योंकि यहां जाड़े में अधिक जाड़ा और गर्मी में तेज गर्मी होती है ।

या

जाड़ा कम और गर्मी भी हल्की होती है ।

3. ग्रेट प्लेन्स में बहुत बड़े फार्मों के काम किन सुविधाओं से हो पाते हैं ?

4. ग्रेट प्लेन्स में भूमि के कटाव की समस्या क्यों हो गई ? उसकी रोक-थाम के क्या उपाय किए गए ?

5. ग्रेट प्लेन्स में कुछ वर्षों में फसल किन प्राकृतिक विपदाओं के कारण नष्ट हो जाती है ?

6. ग्रेट प्लेन्स में सड़कों और रेल मार्गों से क्या सुविधा है ?

7. ग्रेट प्लेन्स में बड़े पैमाने पर पशुपालन क्यों विकसित हुआ है ?

8. जानवरों की रखवाली करने वाले क्या कहलाते हैं? वे मुख्यत: क्या काम करते हैं ?

9. जानवरों के पालक किन बाज़ारों में इन्हें बेचते हैं ? बाज़ारों को जानवर कैसे भेजे जाते हैं ?

10. कनाडा के ग्रेट प्लेन्स में बसंत ऋतु का गेहूं क्यों होता है ?

चित्र-9 पट्टियों में खेती
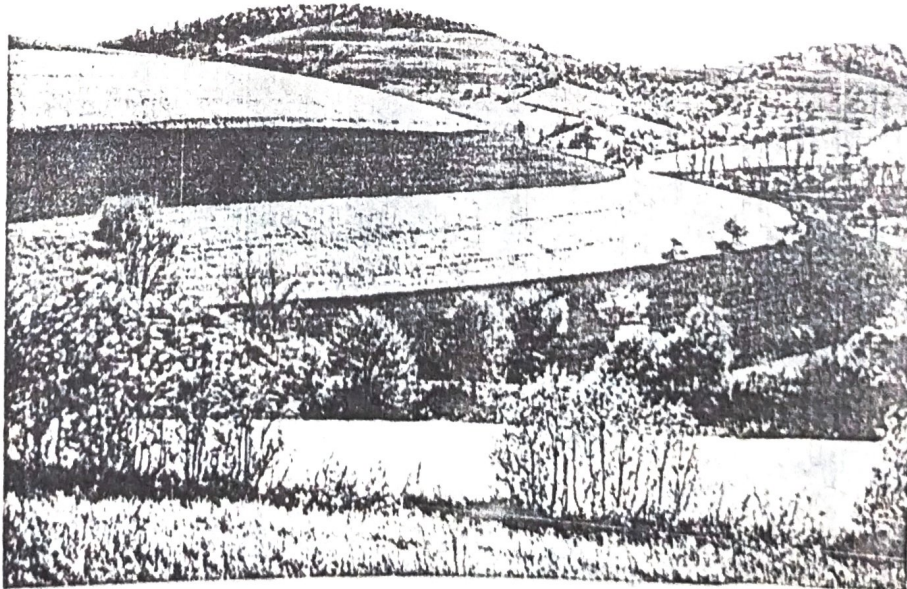
नचेज़ सूर्य मंदिर

आदिवासी अमेरिकन

: चित्रावली :

कबीले का सरदार

कबीले का सरदार

एक ज़माना था जब अमेरिका में छोटे-छोटे कबीले रहते थे—पूर्वी तट पर पोहटान, ग्रेट लेक्स के उत्तर में मिकमेक, दक्षिणी मैदान में अपाचे, दक्षिणी पश्चिमी सूखे प्रदेश में पुएब्लो, नवाहो तथा होपी एवं उत्तर के ठंडे इलाकों में एस्किमो । इनमें से कोई भी कबीले खेती नहीं करते थे । आसपास की चीजों से झोपडियां बना लेते थे । अधिकतर नदियों के किनारे रहते थे जहां उन्हें भोजन पानी दोनों मिल जाता । यहां जंगली पशु भी खूब थे, इनसे भी भोजन मिल जाता ।

यूरोप से जब लोग आकर बसे तब कुछ लोगों ने इन जनजातियों को भी पास से देखा समझा, उससे पता चलता है कि उनकी अपनी संस्कृति और धर्म था । बोडमेर नामक चित्रकार ने इनके चित्र भी बनाए जो वह अपने साथ जर्मनी ले गया था । तब लोगों ने उनका महत्व नहीं समझा। अब 1962 में यह चित्र ओमाहा में प्रदर्शित किए गए हैं । आदिवासियों के वंशज इन्हें बहुत रूचि के साथ देखने आते हैं । जार्ज काटलिन ने भी इन आदिवासियों के संबंध में
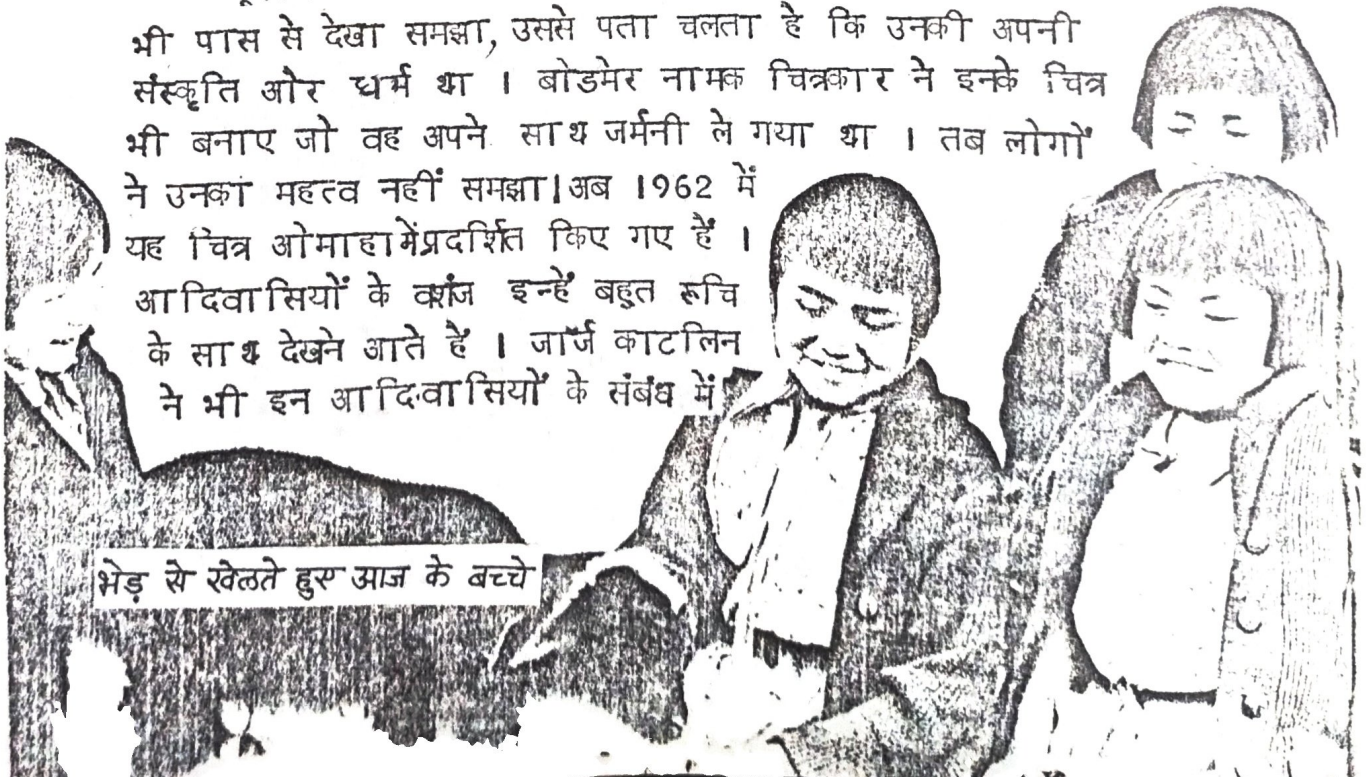
भेड़ से खेलते हुए आज के बच्चे

डबल रोटी सेकने का तंदूर

क

पात्ती का लॉज

ख

नवाहो का होगन

रेड इंडियन की वेशभूषा

घ

ग

पोहटान का विगवाम

इरोक्वोइस का घर
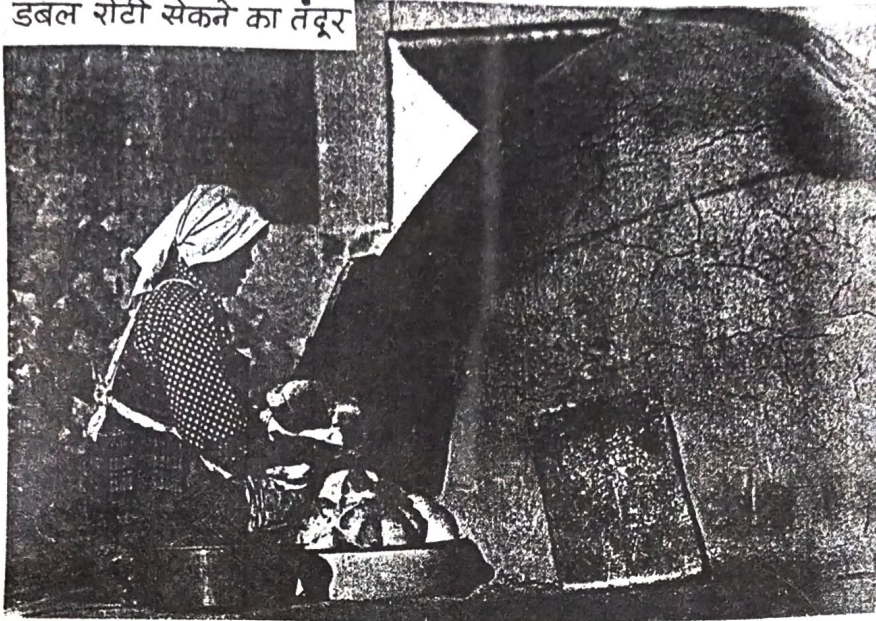
नवाहो के चांदी के ज़ेवर
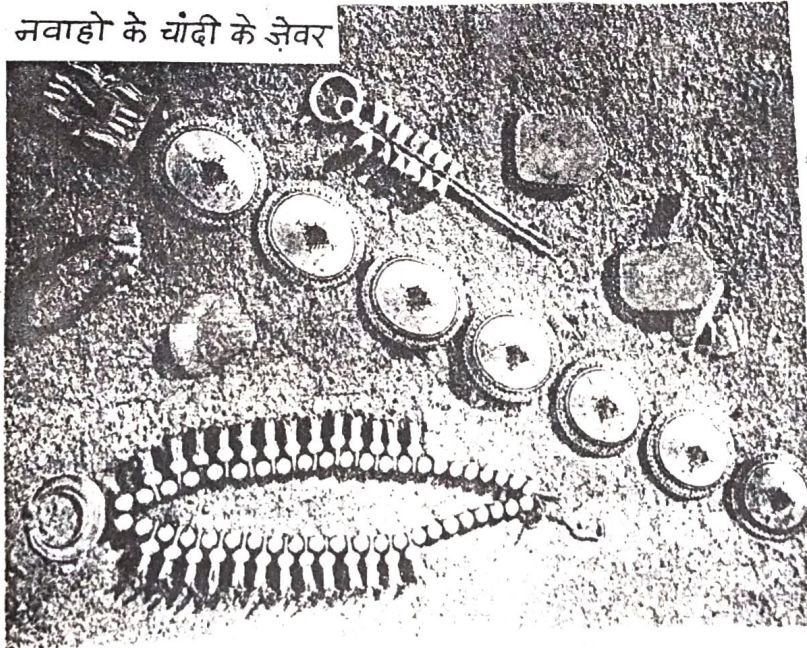
लिखा था और चित्र बनाए थे। इनमें से कुछ चित्र दिए गए हैं। इन चित्रों से उस समय के आदिवासियों के वस्त्र तथा आभूषणों का अन्दाजा लगाया जा सकता है।

यूरोप से आए लोगों के साथ हुए युद्धों में अधिकतर आदिवासी अमेरिकन मारे गए। जो बच गए उन्हें पश्चिमी संयुक्त राज्य के कुछ
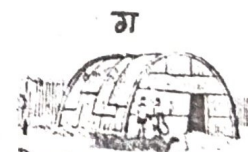
च

ब्लेकफुट का विगवाम

जमीन पर चित्र बनाते हुए आज के नवाहो

कपड़ा बुनती महिला

सुनिश्चित संरक्षित प्रदेशों में बसा दिया गया है । अब भी वे परंपरागत तरीकों से रहते हैं । आजकल न्यू मेक्सिको तथा एरिजोना आदि के सूखे इलाकों में रहने वाले नवाहों इंडियन्स के कुछ चित्र देखो । अधिकतर ये लोग जानवर, विशेषकर भेड़ें पालते हैं । उनके ऊन से कपड़े बनते हैं, और भोजन के लिए मांस मिलता है । ऊन से कालीन भी बना लेते हैं । चित्र में देखो । तन्दूर में रोटी पकाना और चांदी के जेवर बनाना इन लोगों ने मेक्सिको में बसे स्पेनी लोगों से सीखा है । ये लोग मिदटी के सुन्दर बर्तन भी बनाते हैं ।

होपी का पुएब्लो

सेमिनोल का चिकी

अपाचे का विगवाम

पाठ -7 कैलिफोर्निया

पिछले पाठों में तुमने पढ़ा कि यूरोप से आए लोग अमेरिका में बसते रहे और पश्चिम की ओर बढ़ते गए । अंत में वे मिसिसिपी के मैदान, ग्रेट-प्लेन्स, रॉकीज पर्वत बेसिन और रेंज कन्ट्री पार करके अमेरिका महाद्वीप के पश्चिमी किनारे पर पहुंच गए ।

यह किस महासागर का किनारा है ?

पश्चिम का यह हिस्सा पहले मैक्सिको देश का हिस्सा था । 1848 में एक युद्ध के बाद पश्चिम के कई राज्य कैलिफोर्निया, नेवादा कोलोरेडो, एरिजोना, न्यू मैक्सिको संयुक्त राज्य अमेरिका के हिस्से हो गये और मैक्सिको एक छोटा देश रह गया । दीवार के मानचित्र में इन राज्यों और मैक्सिको को देखो ।

1850-60 के मध्य लोग घोड़ा-गाड़ियों और घोड़ों पर सवार होकर आते थे । दिए गए मानचित्र में इन मार्गों को देखो, कितने पहाड़, पठार, नदियां पार करके महीनों में लोग यहां तक पहुंचते थे । रास्ते में कितने ही लोग भूख, प्यास, बीमारी से मरते, आदिवासी अमेरिकन आक्रमण कर देते तो युद्ध में लोग मारे जाते ।

बाद में पूर्वी हिस्सों से यहां तक रेल मार्ग बने, सड़कें बनीं, तब लोगों का आना और बढ़ा ।

यहां प्रशांत महासागर के तट
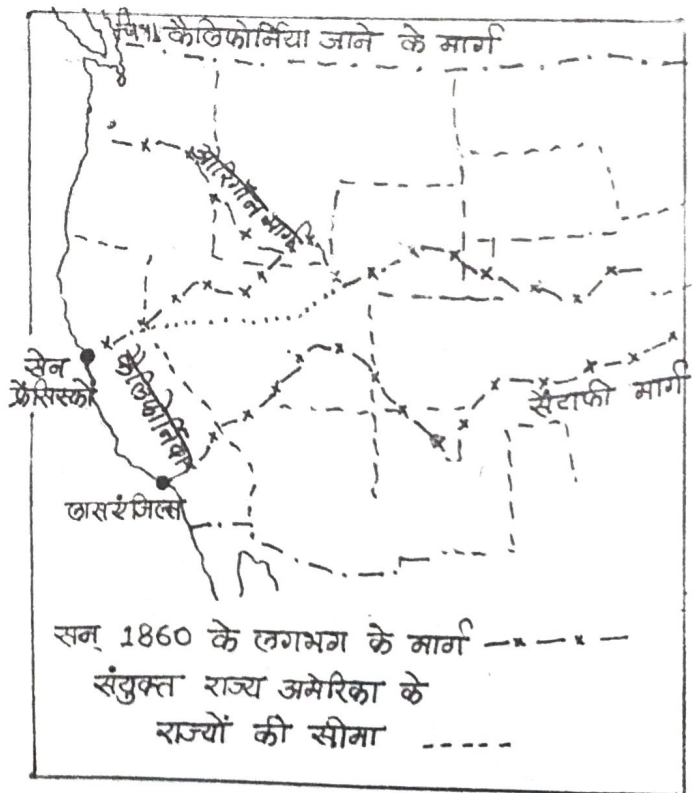
पर एक राज्य केलिफोर्निया है, यहीं अधिक लोग बसे । आओ देखें यहाँ क्या सम्पदा है जो आज भी संयुक्त राज्य के अन्य भागों से तथा संसार के अन्य देशों से लोग यहां आकर बसते हैं ।

सोना एक बड़ा आकर्षण :

यह उस जमाने की बात है जब केलिफोर्निया में बसाहट शुरू ही हुई थी, लगभग 1848 के आसपास । जहां आज सेक्रेमेन्टो नगर है, उसके पास सटर नामक व्यक्ति का अपना रैन्च था । वहां वह एक आरा मशीन लगाने के लिए खुदाई कर रहा था तो पास की नदी में उसे चमकते हुए कुछ पिन्ड दिखे, जैसे मटर के दाने । वह सोचने लगा क्या यह सोना है ? उसकी पत्नी साबुन बना रही थी, उसने दाने साबुन के घोल में डाल दिए। जब बर्तन खाली किया तो वे चमकते हुए दाने निकल आए, तब सटर समझा कि वह सोना ही है ।

सटर का परिवार चाहता था कि सोना मिलने की बात छुपी रहे, लेकिन सोना मिलने की बात छुपती कैसे ? वह तो देश में ही क्या, यूरोप तक फैल गई । फिर तो सैकड़ों लोग सोने की खोज में आने लगे । पश्चिमी संयुक्त राज्य में सोना तो कई जगह मिला, लेकिन इतना नहीं, जितने
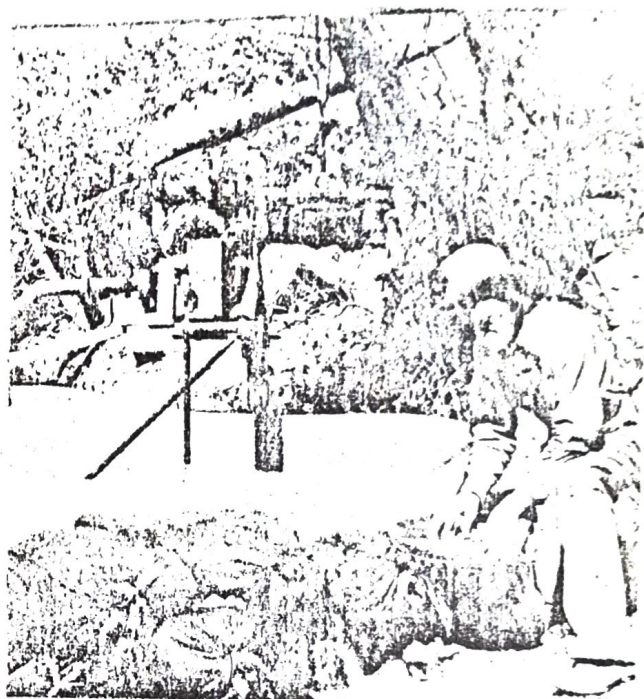
चित्र 2 पानी छानकर सोना निकालना

लोग उसके लालच में सैकड़ों मील का सफर करके आए और उसमें से कितने ही बर्बाद हुए ।

आए हुए लोगों में से अधिकतर केलिफोर्निया में बसते गए क्योंकि उन्होंने पाया कि यहां सोने के अलावा अन्य संपदाएं भी हैं, विशेषकर उपजाऊ मिट्टी, अच्छे चारागाह और जंगल, आराम देह जलवायु ।

केलिफोर्निया कहां पर है ?

यदि तुम संसार का मानचित्र देखोगे तो एक बात विशेष पाओगे । यूरोप के दक्षिण में भूमध्य सागर है, लगभग उसी पेटी में केलिफोर्निया

भी है । यहां की विशेषता यह है कि गर्मी में अधिक गर्मी और सूखा मौसम होता है । जाड़े में हल्का जाड़ा और वर्षा होती है । बीच-बीच में अच्छी धूप भी निकलतीहै। कभी-कभी पाला भी पड़ता है । पहाड़ों पर जाड़े में हिमपात होता है मगर निचले हिस्सों और मैदानों में बर्फ नहीं गिरती ।

यूरोप महाद्वीप के बारे में पढ़ते वक्त तुमने भूमध्य सागर के बारे में पढ़ा था । भूमध्य सागर के चारों ओर यह जलवायु मिलती है इसीलिए इसे भूमध्य सागरी जल-वायु कहते हैं । कैलिफोर्निया में भी ऐसी ही जलवायु यानी भूमध्य सागरी जलवायु है ।

कैलिफोर्निया में जाड़े में वर्षा तो होती है लेकिन सब जगह समान वर्षा नहीं होती । उत्तरी हिस्सों में अधिक, जहां 70 से॰मी॰ तक वर्षा हो जाती है तथा दक्षिण की ओर कम होती जाती है । कैलिफोर्निया के दक्षिणी हिस्से रेगिस्तान हैं जहां केवल 25 से॰मी॰ के लगभग पानी बरसता है ।

कैलिफोर्निया की बनावट :

कैलिफोर्निया के तट को ध्यान से देखो, वह अधिकतर सीधा है । मानचित्र में देखो एक बड़ा बन्दरगाह तथा नगर है सेनफ्रांसिस्को, वह इसी नाम की खाड़ी पर बसा है । मान-चित्र को ध्यान से देखो तो इस खाड़ी के महत्व को समझ सकोगे । समुद्री तट के निकट तटीय श्रेणियां हैं ।

1• तटीय श्रेणियां :

तटीय श्रेणियां होने के कारण तट के हर हिस्से से भीतर पहुंचना कठिन है । जबकि यह खाड़ी भीतर जाने का प्राकृतिक मार्ग है । यह कैलिफो-र्निया की मध्य की घाटी का भी प्राकृतिक मुहाना है । चारों ओर से यह घाटी पहाड़ों से घिरी है ।

2• मध्य की घाटी :

तटीय श्रेणियों के पूर्व में उत्तर से दक्षिण तक फैली मध्य की घाटी है । यह घाटी लगभग 600 कि॰मी॰ लम्बी तथा 75 कि॰मी॰ चौड़ी है । देखो इनमें कौन सी दो प्रमुख नदियां हैं ?

1• 2•

क्या इनकी कई सहायक नदियां हैं ?

यह सहायक नदियां पूर्व में किस पर्वत

श्रेणी से निकलती हैं ? नाम लिखो ।

कैलिफोर्निया - प्राकृतिक बनावट

सियरा नेवादा की श्रेणी इतनी ऊंची हैं कि इसकी चोटियां हिम से ढकी रहती हैं। वर्षा भी अधिक होती है। इसी से नदियां बहती हुई मध्य की घाटी में आती है।

दक्षिण में कैलिफोर्निया का रेगिस्तान है। यहां डेथ वेली संसार का सबसे गर्म हिस्सा है। यहां कोलोरेडो नदी से इंपीरियल घाटी में सिंचाई कर बड़े पैमाने पर खेती की जाती है। दीवार के मानचित्र में इस नदी को देखो।

इस तरह केलीफोर्निया के चार हिस्से हुए उनके नाम लिखो :
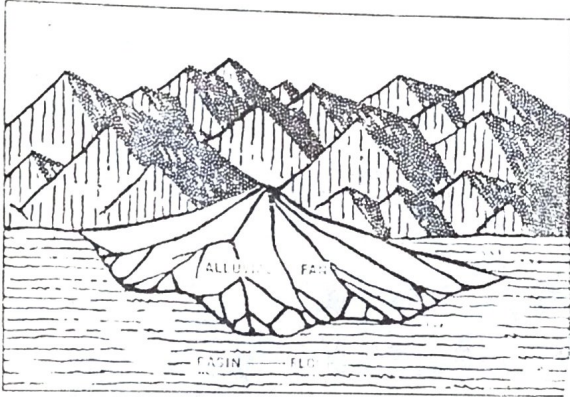
चित्र 4 नदियाँ कंकड़, पत्थर, बालू मिट्टी लाकर मैदान में बिछाती है

1. 2.

3. 4.

कैलिफोर्निया की मध्य की घाटी में पानी का प्रबन्ध

कैलिफोर्निया की मध्य की घाटी में जब लोग बसने लगे और खेती शुरू की तो उन्होंने पाया कि यहां की जलवायु खेती के उपयुक्त है और मिट्टी भी उपजाऊ है। पहाड़ों से उतरने वाली छोटी नदियां अपने साथ कंकड़, पत्थर और दोमट मिट्टी बिछा देती हैं। तुम जानते हो कि दोमट मिट्टी बहुत उपजाऊ होती है।

इस उपजाऊ मिट्टी को पानी की आवश्यकता थी। इन्हीं छोटी नदियों पर बांध बनाकर रोका गया और नहरें निकाल कर, सिंचाई होने लगी। मानचित्र में मध्य की घाटी के बांध तथा नहरों को देखो।

इस घाटी में तुम पढ़ चुके हो की दक्षिणी हिस्से अधिक सूखे हैं। इसलिए नहरें इस प्रकार बनाई गईं कि उत्तर की नदियों का पानी नहरों द्वारा दक्षिण के हिस्सों तक पहुंच जाए।

कुएं और नलकूप भी बड़ी संख्या
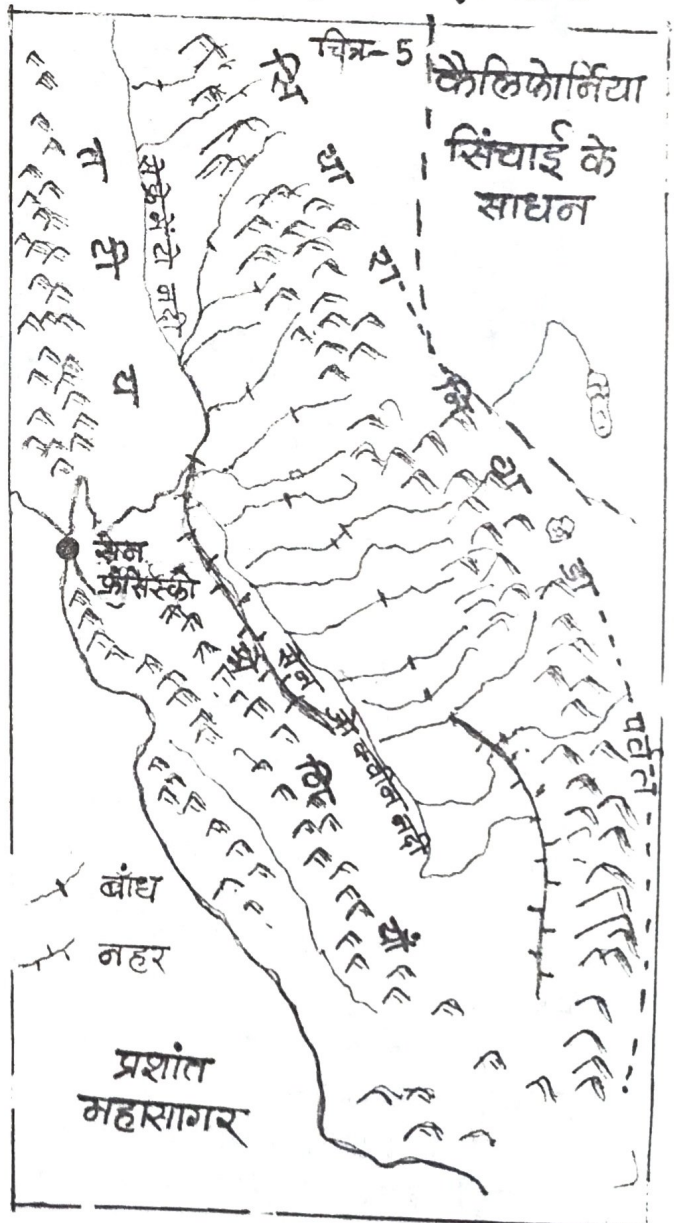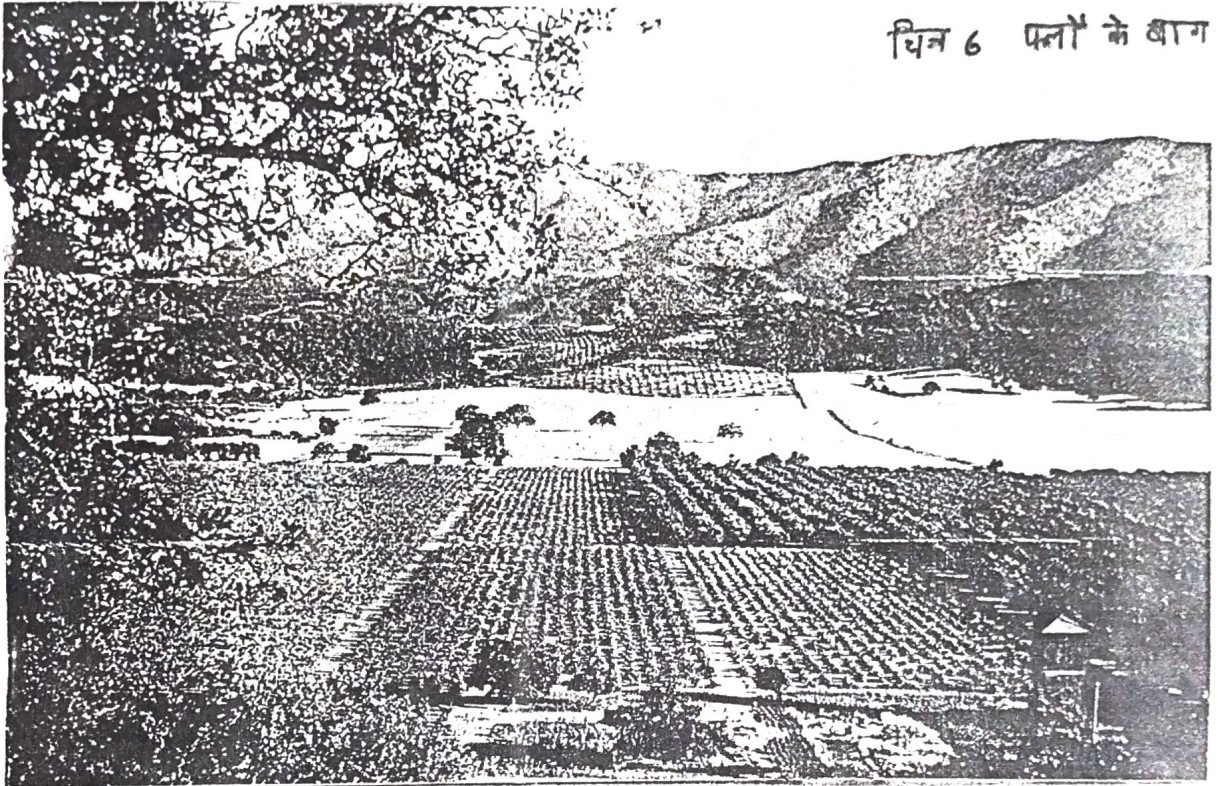
केलिफोर्निया की मध्य की घाटी में फल और सब्जी की खेती

में खोदे गए जिनसे भी सिंचाई के लिए पानी मिलने लगा ।

केलिफोर्निया की मध्य की घाटी में फल और सब्जी के बड़े-बड़े फार्म हैं । जैसे- बेकर्स फील्ड फार्म 5000 एकड़ का है । अपने देश के एक गांव के बराबर । कछ 5-10 एकड़ के भी फार्म हैं बड़े फार्मों को फार्म फैक्ट्ररी भी कहते हैं ।आओ देखें कि ये फार्म, फैक्ट्ररी-क्यों हैं ?

बेकर्स फील्ड फार्म में हजारों पेड़ आड़ू और खुबानी के हैं । याद है ये फल तुमने फ्रांस में भी देखे थे । इतने पेड़ों के फल तोड़ने के लिए लगभग 1500 लोग लगाए जाते हैं । प्रतिदिन कई रेल गाड़ी और ट्रकों में भरकर फल पूर्वी संयुक्त राज्य के बाजारों को जाता है । इन गाड़ियों और ट्रकों को बाजार तक पहुंचने में कई दिन लग जाते हैं । फलों को सड़ने से बचाने के लिए पूरी गाड़ी या ट्रक का शीतलन किया जाता है । ठंड के कारण फल सुरक्षित रहते हैं ।

फिर भी पूरा फल बाजार तक नहीं पहुंच पाता । बहुत सा बच जाता है । इसलिए फार्म के निकट
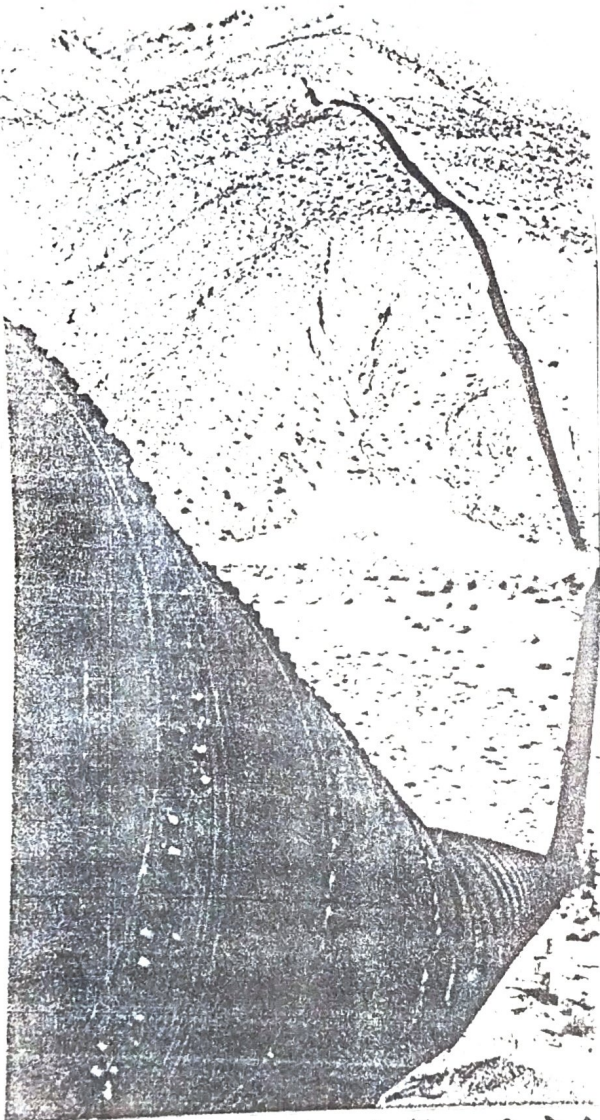
चित्र 7 इंपीरियल घाटी में पानी भेजने की पाइप लाइन

एक फेक्टरी लगाई गई जिसमें फल डिब्बों में बन्द किए जाते हैं। हिमांक के नीचे तापमान पर रखे जाते हैं, या उनका रस निकाला जाता है। मुरब्बा बनाया जाता है। यह है फार्म-फेक्टरी का संयुक्त आयोजन।

अन्य फसलें :

मध्य की घाटी में अन्य फल सेब, नाशपाती, आलू बुखारा, मेवे (जैसे अखरोट बादाम) होते हैं। तरह-तरह की सब्जियां भी खूब उगाई जाती हैं और पूर्वी संयुक्त राज्य के बाजारों को फलों के समान ही भेजी जाती हैं। इसके अलावा जैतून, चुकंदर कपास, तथा अनाज (जैसे गेहूं और जौ) भी पैदा किया जाता है। यहां की तेज गर्मी और धूप में अंगूर को सुखा कर किशमिश और मुनक्का भी बनाया जाता है।

दक्षिणी कैलिफोर्निया की खेती :

मध्य की घाटी के समान दक्षिणी कैलिफोर्निया में भी दोमट मिट्टी मिलती है। पहले इस सूखे रेगिस्तानी हिस्से में कुछ अधिक नहीं होता था। फिर कोलोरेडो नदी को बांध कर इंपीरियल घाटी में बड़े-बड़े पाइपों द्वारा पानी पहुंचाया गया और बड़े प्रदेश में सिंचाई के लिए पानी मिलने लगा।

इंपीरियल घाटी की जलवायु संतरा, नींबू, आदि फलों के लिए बहुत अच्छी है। अब तो धीरे-धीरे इन फलों के बाग सैकड़ों एकड़ के प्रदेश में फल गए हैं। इनकी सिंचाई होती है। पहले अच्छी किस्म के
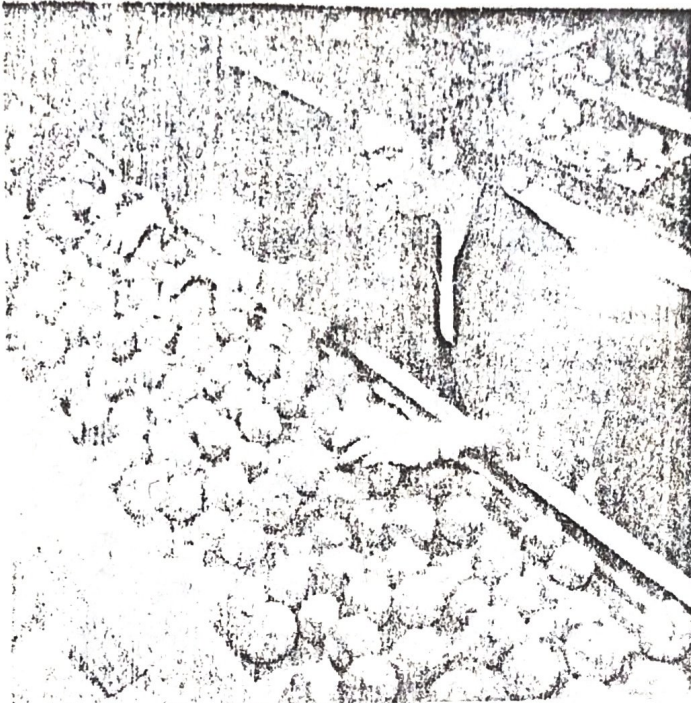
चित्र 8 संतरा छांटना और पैक करना
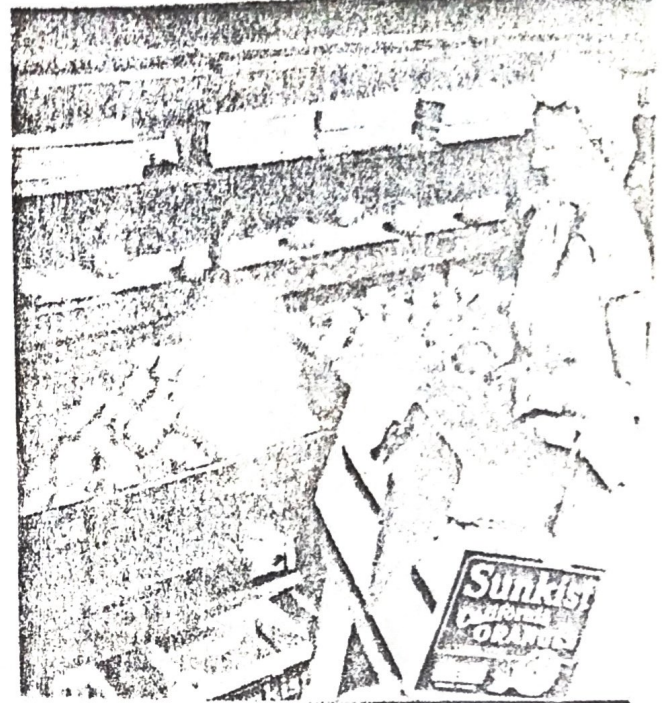
फल यहां नहीं होते थे, फिर मीठे, रसदार, कम बीजों वाले संतरे के बीज यहां बोए गए, जिनकी बहुत मांग है ।

इम्पीरियल घाटी में इन फलों की खेती की एक गंभीर समस्या है, जाड़े ऋतु में पाला या तुषार पड़ता है । पाला नीबू, संतरे के फलों को बहुत नुकसान पहुंचाता है । पाला पड़ने का जैसे ही पूर्वानुमान होता है, रेडियो पर बार-बार प्रसारित करते हैं । फलों को बचाने के लिए किसान पेड़ों के बीच-बीच में हीटर
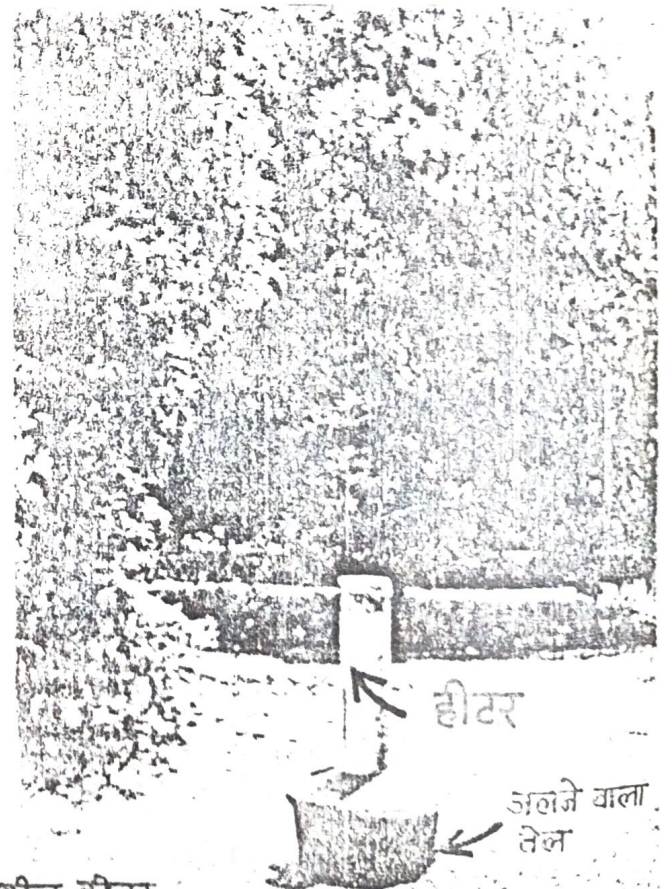
चित्र 7 फलों के बागों के बीच हीटर

जलाते हैं इससे तापमान हिमांक के नीचे नहीं गिरता । वातावरण में गर्मी बनी रहती है ।

यहां का अधिकतर फल भी पूर्वी संयुक्त राज्य के बाजारों को जाता है या इसका रस निकालकर डिब्बों में सुरक्षित रख लिया जाता है ।

दक्षिणी केलिफोर्निया में सिनेमा तथा पर्यटन का केन्द्र लास एंजिल्स:

दक्षिणी केलिफोर्निया का नगर लास एंजिल्स कोई बहुत पुराना नहीं है । पिछली शताब्दी के अन्तिम वर्षों में 1880-1890 में तेजी से बसना शुरू हुआ । तब चारों ओर के रेगिस्तानी हिस्से में सिंचाई के कारण नीबू, नारंगी और संतरे के बाग लगाए जा रहे थे । सन् 1891 में खनिज तेल मिल गया, फिर तो खनिज तेल के आकर्षण में लोग बसने लगे ।

तुम जानते हो कि संयुक्त राज्य के पूर्वी हिस्सों से लास एंजिल्स बहुत दूर है, लेकिन जैसे ही 1868-69 में यहां तक रेल मार्ग बना, यहां तक आना सरल हो गया, तथा लोग आकर बसने लगे । याद करो, पहले लोग यहां तक कैसे पहुंचते थे ।

लास एंजिल्स क्योंकि सूखे प्रदेश में है । वहां बहुत दिनों तक लगातार धूप और रोशनी रहती है । इसलिए पास ही हालीवुड में फिल्म बनाने का उद्योग विकसित होने लगा । उस जमाने में फिल्म उतारने का काम खुले में होता था, जिससे अच्छी रोशनी मिले । बाद में जब स्टूडियो के अन्दर फिल्म बनने लगी तब भी यह उद्योग यहीं फैलता गया, क्योंकि फिल्मों में काम करने वाले कलाकार, स्टूडियों में काम करने वाले तकनीकी विशेषज्ञ यहां बसे हुए हैं । यहां फिल्म बनाने की परम्परा है । आज भी हालीवुड फिल्म बनाने का एक बड़ा केन्द्र है । तुम जानते हो कि इसी तरह बम्बई में फिल्म बनाने का उद्योग पुराने समय से है और आज भी अपने देश का यह इस उद्योग का महत्वपूर्ण केन्द्र है ।

चित्र 10 फिल्म बनाने का दृश्य
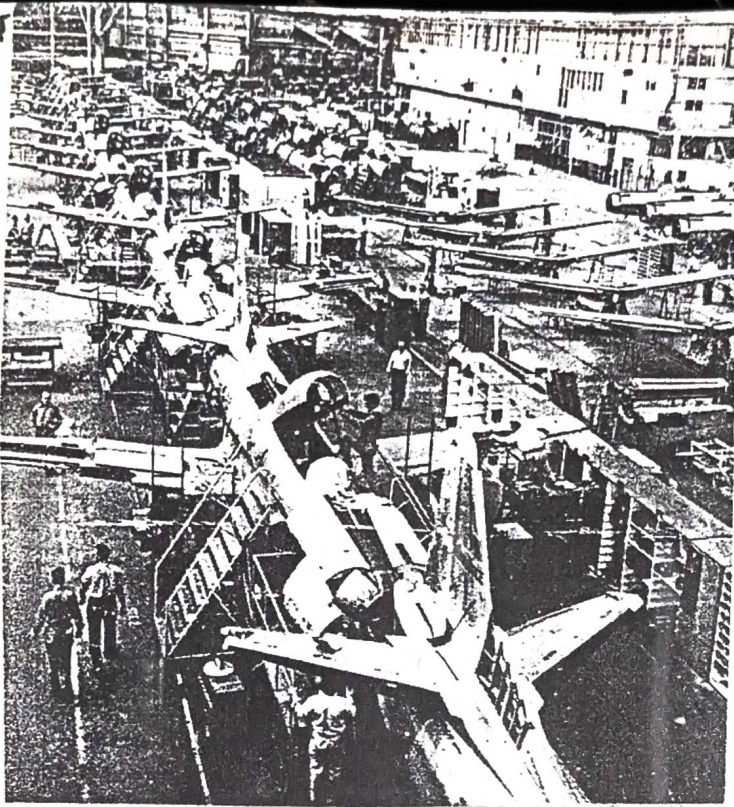
चित्र 11 वायुयान बनाने का उद्योग

चित्र में कैमरा कहां है क्या पहचान सकते हो ? घोड़ा, गाड़ी, लोग क्या कर रहे हैं ।

दक्षिणी कैलिफोर्निया की सूखी जलवायु के कारण यहां बुरबैंक नगर में हवाई जहाज बनाने का उद्योग विकसित हुआ, क्योंकि बहुत सा काम खुले में हो जाता है, हर काम के लिए फेक्टरी नहीं बनानी पड़ती । अब तो यहां जेट हवाई जहाज भी बनने लगे हैं ।

दक्षिणी कैलीफोर्निया में अब लड़ाई के लिए अस्त्र-शस्त्र बनाने का उद्योग भी बड़े पैमाने पर विकसित हो गया है ।

कैलिफोर्निया का समुद्री किनारा अपनी सुहावनी जलवायु के कारण पर्यटन का बड़ा क्षेत्र है । यहां संयुक्त राज्य क्या, अन्य देशों से बड़ी संख्या में लोग छुट्टी मनाने आते हैं । जाड़ा तो यहां हल्का होता है, गर्मी में भी समुद्र की ओर से आने वाली ठंडी हवाओं के कारण गर्मी बढ़ नहीं पाती । धूप भी खिली रहती है । अब तो पर्यटन पूरा उद्योग है ।

चित्र 12 रेड वुड वृक्ष

लोगों के रुकने के लिए होटल, घूमने के लिए परिवहन की सुविधा, खाने पीने का स्थान, सभी विकसित हो गए ।

बहुत से पर्यटक सियरा नेवादा पर्वत पर भी घूमने जाते हैं । यहां के बर्फ से ढके पहाड़ों का मज़ा लेते हैं और यहां के रेड वुड के विशाल वृक्ष देखने भी आते हैं । ये रेड वुड वृक्ष 'बिगट्रीज़' कहलाते हैं । इनकी ऊंचाई 100 मीटर तक ऊंचे हैं, चित्र में देखो, वृक्ष की तुलना में गाड़ी कितनी छोटी दिखती है ।

आज कैलिफर्निया संयुक्त राज्य का एक समृद्ध राज्य है । संयुक्त राज्य तथा विदेशों से भी लोग आकर यहां बसते हैं ।

अभ्यास के प्रश्न:-

1. पिछली शताब्दी में लोग कैलिफोर्निया में क्यों आए ।

2. राज्य के किन मार्गों से यात्रा करके आये थे ।

   1. 2. 3.

3. कैलिफोर्निया सोने के अलावा और कौन सी प्राकृतिक सम्पदायें हैं?

   1. 2. 3. 4.

4. कैलीफोर्निया के पहाड़ों से क्या लाभ है ?

5. कैलिफोर्निया में फलों और सब्जी की खेती के लिये क्या प्राकृतिक सुविधायें हैं ?

6. कैलिफोर्निया के फल और सब्जी क्या वहीं के बाज़ार में खप जाते हैं ?

7. खाने के अलावा फलों से क्या बनाया जाता है?

8. कैलिफोर्निया के फल और सब्जी बिना सड़े बाजार तक पहुंचे इसका क्या प्रबंध किया गया है ?

9. लास इन्जिल्स में फिल्म उद्योग क्यों विकसित हुआ ?

10. कैलिफोर्निया में बड़ी संख्या में पर्यटक क्यों आते हैं ?

पाठ 8

जिम: कनाडा का लम्बर जैक

जिम के खेत कट गए, अनाज अधिकतर बेच दिया, फिर भी पैसे की कमी है, इस वर्ष फसल अच्छी नहीं हुई। जिम कनाडा के मैनीटोबा प्रान्त का एक किसान है। यह प्रान्त कनाडा के बीच में सागरों से दूर है। यह उत्तरी ध्रुव के भी बहुत निकट है। इसलिए यहां सर्दी का मौसम 7-8 महीने का होता है। भयंकर सर्दी, बीच-बीच में आंधियां और हिमपात, यहां की जलवायु की मुख्य बातें हैं। गर्मी के लगभग 3 महीनों में एक फसल ली जाती है। इस बार गर्मी के मौसम के के बीच आंधी आई और ओले गिरे, जिससे जिम की फसल खराब हो गई।

जिम ने पास की दुकान के सामने एक इश्तहार देखा कि नगर के उत्तर में लकड़ी काटने के लिए लम्बर जैक (लकड़ी काटने वाले मजदूर) लिये जाते हैं। जिम को पैसा कमाने का यह अच्छा साधन दिखा तो उसने अपना नाम लिखवा दिया। वैसे भी जाड़े में खेतों में कुछ काम नहीं होता। जमीन बर्फ से ढक जाती है, मिट्टी जम जाती है। दिन भी छोटे होते हैं।

जिम ने घर आकर लम्बर जैक का काम करने की बात अपनी पत्नी लिज़ा को बताई। लिज़ा घबरा गई और बोली- "तुम क्या रोज जंगल जाओगे"? अगर वहीं रहोगे तो कहां पर ? क्या खाओगे" ? तब जिम ने बताया - नहीं, मैं रोज घर नहीं लौटूंगा, तीन महीने वहां कैम्प में रहूंगा, वहीं खाने-रहने का प्रबन्ध होता है।"

वनों के बीच एक कैम्प का चित्र देखो। यहां रहने के कुछ मकान हैं, खाना बनाने का अलग स्थान है, उसी के साथ स्टोर (गोदाम) है। लकड़ी से लदी गाड़ियां खड़ी हैं। यहीं से सड़कें वनों के भीतर जाने के लिए बनाई गई हैं। कैम्प के पीछे वन शुरु हो जाता है।

ध्यान से देखो और बताओ यह नुकीली पत्ती के बने हैं या चौड़ी पत्ती के ?
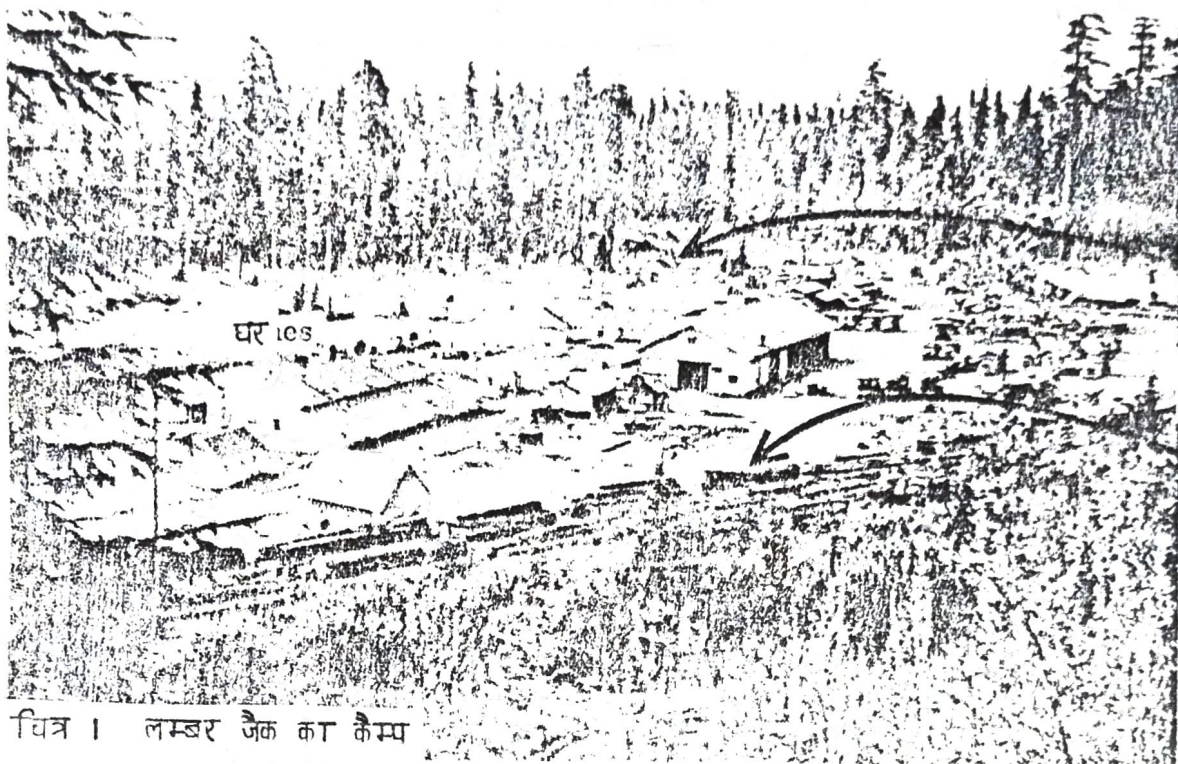
चित्र । लम्बर जैक का कैम्प

उत्तरी अमेरिका के उत्तर के देश कनाडा का सैंकड़ों मील लम्बा चौड़ा हिस्सा नुकीली पत्ती के कोण-धारी वनों से ढका है । क्या संयुक्त राज्य का भी कोई हिस्सा इस पेटी में है ? इसमें कई तरह के वृक्ष होते हैं । उनके नाम इस प्रकार हैं--पाइन, स्प्रूस, बर्च विलो, एस्पिन, पोपलर इत्यादि ।

कनाडा के और उत्तरी हिस्सों में

पेड़ नहीं होते । बताओ क्यों ?

जब लोग कनाडा के दक्षिणी हिस्से में बसे तो उन्होंने बहुत से पेड़ घर बनाने, लकड़ी का घरेलू सामान कुर्सी-मेज तथा औजार, घोड़ा-गाड़ी आदि बनाने के लिए काटे । सर्दी के कई महीने गुजारने के लिए जलाऊ लकड़ी भी चाहिए थीं । बाद में जब रेल गाड़ियाँ चलीं तो इंजिन में भी लकड़ी जलाई जाती थी ।

लिज़ा सोचने लगी पुराना जमाना तो अब है नहीं । घर बिजली से गर्म किए जाते हैं । रेल-गाड़ियाँ डीजल से चलती हैं तो अब जंगलों की कटाई किस लिए होती है ? जिम ने बताया कि हमारे यहाँ के वनों की लकड़ी मुलायम और हल्की होती है इससे कागज बनता है ।

चित्र-2 उत्तरी अमेरिका कोणधारी वनों की पेटी
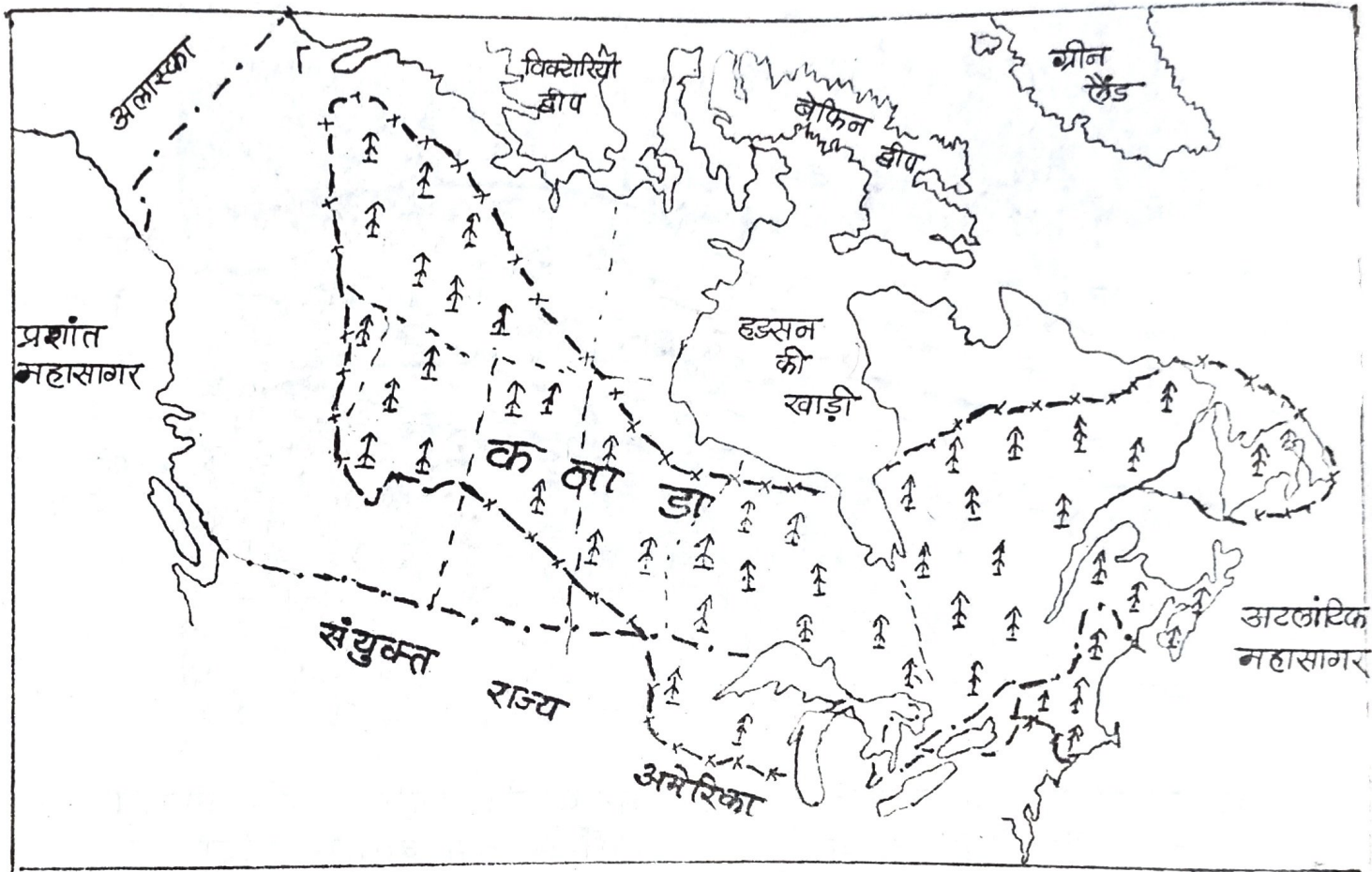
और अन्य चीजें, जैसे कपड़ा बनाने के लिए कृत्रिम रेशे बनाये जाते हैं।

जिम कैम्प में गया :

लिज़ा ने जिम के कपड़े वगैरह तैयार कर दिये और कम्पनी का ट्रक आकर जिम को लम्बर कैम्प ले गया। जिम के साथ और भी कई लोग थे। प्रतिदिन नये लोग आते गए। जिम को कैम्प में कोई कठिनाई नहीं थी। कम्पनी ने खाने का प्रबंध किया था, स्टोर से उन्हें कपड़े, लिखने का कागज तथा और जरूरत की चीजें मिल जाती थीं। पास ही घुड़साल था तथा लोहार की वर्कशॉप भी थी। लकड़ी की कटाई, दुलाई आदि में कई मशीनें लगती थीं तो लोहार की वर्कशॉप में उनकी मरम्मत का प्रबंध भी था।

जिस कम्पनी के लिए जिम काम कर रहा है वह कई लोगों की पूंजी साधन लगाकर बनाई है। इस कम्पनी के कागज के कारखाने हैं जिनके लिए लकड़ी चाहिए होती है। इसलिए यह कम्पनी कैम्प लगा कर
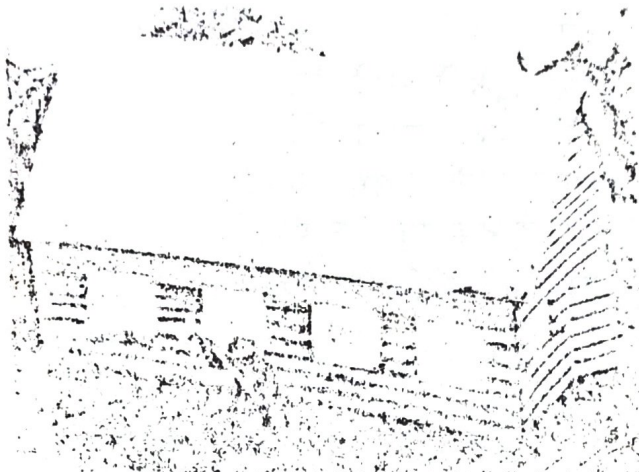
चित्र 3 लकड़ी के लट्ठों से बना मकान

मजदूरों को रखती है और जंगल से लकड़ी कटवाकर अपने कारखानों को भेजती है। कारखानों का बना कागज संयुक्त राज्य तथा यूरोप के देशों को जाता है।

दो तीन दिन में जब सब तैयारी हो गई तो एक सुबह जल्दी सारे लम्बर जैक नाश्ता करके घोड़ों से खिंचने वाली स्लेज में जंगल जाने के लिए तैयार हो गए। रास्ता बर्फ से भरा था, उस पर पानी छिड़का गया जिससे बर्फ कठोर हो जाये वरना भुरभुरी बर्फ पर से स्लेज का व अन्य वाहनों का निकलना कठिन था।

तुमने टुंड्रा प्रदेश के लोगों को भी स्लेज पर आते-जाते पाया था। वहां की तरह कनाडा के लम्बर जैकों की सवारी भी स्लेज क्यों थी ?

दिन भर वृक्ष काटे गए :

दिन भर के काम के बाद जिम

चित्र 4 पेड़ गिराना, लट्ठे ले जाना

जब खा-पीकर लेटा तो उसे लिज़ा की याद आई, उसने लिज़ा को चिट्ठी भी नहीं लिखी थी वह झट से लिखने बैठ गया ।

"आज सुबह हम कई लोग कैम्प से साथ निकले थे । जंगल के बीच सड़कें बनाई गई थीं, थोड़ी-थोड़ी दूरी पर दो-तीन लोगों के समूह छोड़ दिए गए । उनके साथ एक-एक सुपरवाइज़र था । उसने आसपास के जंगल में से पुराने वृक्षों को चुना । पहले के दिनों के समान अब पूरा जंगल एक साथ नहीं काटा जाता, छोटे पेड़ भविष्य के लिए छोड़ दिए जाते हैं । हम शक्ति चलित आरी से पेड़ों को गिराते, उनकी शाखें काट कर अलग करते और फिर उनके लट्ठे बनाते थे । यह काम जोखिम का है । कई बार सावधान न रहने पर लट्ठे के नीचे पैर आ जाता है या सिर पर लट्ठा गिर जाता है । शाम होने के पहले लकड़ी के लट्ठे को ट्रेक्टर या ट्रक पर लाद कर पास की नदी में छोड़ दिया ।

नदियां बहीं :

कई महीने बीत गए, जिम देख रहा था कि लकड़ी भी खूब कट गई है । वह भी अब घर लौटना चाहता था । एक दिन सुबह तेज धूप निकली और बर्फ के चटकने और टूटने की आवाज़ें आने लगीं । जिम समझ गया कि अब बसंत ऋतु दूर नहीं है । नदियों की बर्फ पिघलेगी और वे

चित्र-5 लट्ठों से लदी ट्रक ↓
चित्र-6 लट्ठे नदी में बहाये जा रहे हैं →
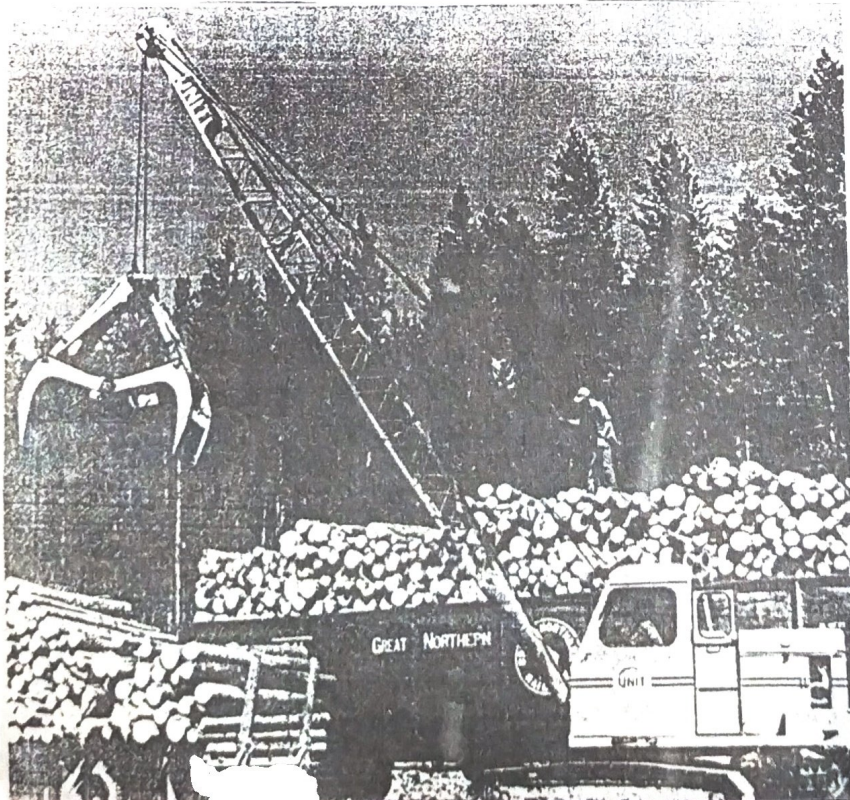
बह निकलेगी ।

तीन चार दिन में नदी की बर्फ पिघली और बहने लगी । जिम तथा उसके साथियों ने नोकदार तले के जूते पहने और हाथ में लट्ठे लेकर नदी पर चल दिये । अब नदी कल-कल बह रही थी । बहुत से लट्ठे अपने आप धार में बहते जाते लेकिन कुछ आपस में उलझ जाते या नदी में पत्थरों पर अटक जाते । जिम व दूसरे लम्बर जैक उनको खींच कर या लट्ठों से धकेल कर धार में बहाते थे । यह काम बड़ी जोखिम का है । चोट लगने पर हाथ या पैर टूट सकता है । धीरे-धीरे लम्बर जैक इस काम में कुशल हो जाते हैं । जिम बहुत सावधानी से लट्ठों को

नदी अभी तो जमी हुई है । आज का काम पूरा हुआ अब आगे देखो कैसा चलता है ।"

अगले रोज शाम को जिम अपने साथियों सहित जब खाना खाने गया तो कैम्प का मैनेजर भी साथ था । जिम ने उससे पूछा हम लोग लकड़ी के लट्ठे जिस नदी पर इकट्ठा कर रहे हैं वह लट्ठों को आखिर कहाँ ले जाएगी ? मैनेजर ने बताया कि नदी के निचले भाग में कम्पनी की एक पेपर मिल है वहाँ यह लट्ठे इकट्ठे कर लिए जायेंगे ।
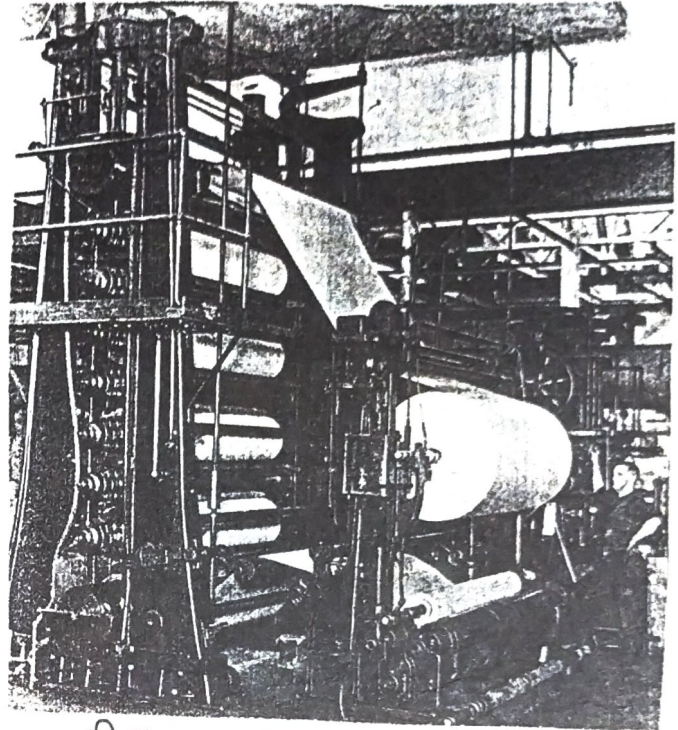
चित्र -7 कागज का कारखाना

उनके छोटे-छोटे टुकड़े करके लुगदी बनेगी फिर उसका कागज ।

चित्र में देखो, कागज के कारखाने

मैनेजर ने बताया कि कनाडा लुगदी और कागज के निर्यात में संसार के देशों में बहुत आगे है । यहाँ की नदियाँ जल विद्युत उत्पादन के काम भी आती हैं और परिवहन के भी । कारखानों को पानी भी इन्हीं नदियों से मिलता है ।

खिसकाता रहा ।

इस जोखिम भरे काम के लिए लम्बर जैकों को पर्याप्त मजदूरी मिलती है ।

कारखानों में लट्ठे पहुंचे :

कुछ मील नीचे नदी के किनारे कागज का कारखाना है । वहां जैक लैडर नामक मशीन से ये लट्ठे नदी में से खींच लिए गए । कारखाने में बिजली से चलने वाली मशीनों से कुछ मिनट में एक लट्ठा छोटे-छोटे टुकड़ों में कट जाता और लुगदी बनने आगे बढ़ जाता । कारखाने में पानी इसी नदी से मिलता है । नदी पर जल विद्युत केन्द्र भी है । जिससे कारखाने को बिजली मिलती है ।

जिम घर लौटा :

जिम ने भी तीन महीने कैम्प पर काम करके पर्याप्त पैसे कमाए फिर वह घर पहुंचा तो लिज़ा भी खुश हुई । शाम को जिम ने सोचा वह लिज़ा के साथ किसी जगह अच्छा खाना खाएगा, फिर वे अपने लिए कुछ कपड़े खरीदेंगे ।

अभ्यास के प्रश्न :

1. कनाडा के वनों की लकड़ी पहले किन कामों में आती थी ? अब लकड़ी का क्या बनता है ?

2. लम्बर जैक जाड़े में पेड़ काटने का काम क्यों करते हैं ? दो कारण बताओ ।

3. लम्बर जैक कैम्पों में क्यों रहते हैं ? वे किस साधन से जंगलों में पहुंचते हैं ?

4. जंगलों की लकड़ी कारखानों तक कैसे पहुंचती है ?

5. कागज के उद्योग में नदियां किन कामों में आती हैं ?

   1.　　　　2.　　　　3.

6. कनाडा का बना कागज किन देशों को जाता है ।

:: कनाडा की कुछ बातें ::

कनाडा की वनों की पेटी का भविष्य तुमने पढ़ा और वहां की कठिन ठंड की बात भी पढ़ी । ऐसी ठंड में यदि लोग वनों को काटकर भूमि साफ भी कर लें फिर भी खेती संभव नहीं है । खेती केवल कनाड़ा के दक्षिणी हिस्से में होती है, मानचित्र में देखो । पहले वनों में लोग रोंएदार या समूरदार जानवरों का शिकार करने जाते थे । इनकी खाल के बहुत पैसे मिलते थे ।

कनाडा का बहुत सा उत्तरी हिस्सा पथरीला है, दलदल है, अनेक छोटी-बड़ी झीलें हैं । ऐसे हिस्से आदमी के किस काम के ? अधिकतर हिस्से निर्जन पड़े हैं । वनों के उत्तर का हिस्सा टुन्ड्रा प्रदेश है, वहां कुछ एस्किमों कबीले रहते हैं । उन प्रदेशों के रहने वालों के बारे में तुम पढ़ चुके हो ।

कनाडा में खोज के बाद कई खनिज मिले । मानचित्र में इन खनिजों के स्थान देखो । इस कठिन प्रदेश में खदानें खोद कर खनिज निकालना, उन्हें कारखानों तक भेजना, भी आसान काम नहीं है । फिर भी खनिजों की मांग के कारण कुछ खनिजों का उत्खनन होने लगा है । जिससे कनाडा के कारखानों को धातुएं तथा अन्य खनिज मिलने लगे हैं ।

कनाडा की अधिकतर आबादी बड़े नगरों में रहती है । कनाडा के दक्षिणी हिस्से में- सेन्ट लारेन्स नदी की घाटी, ग्रेट लेक्स के किनारे तथा मध्य के मैदानों में ही अधिकतर लोग रहते हैं । कुछ लोग प्रशान्त महासागर के तटीय हिस्से में रहते हैं । यहीं अधिकतर उद्योग लगे हैं, और परिवहन मार्ग हैं । वहां पशु-पालन और खेती भी होती है ।

चित्र-8 कनाडा के खनिज
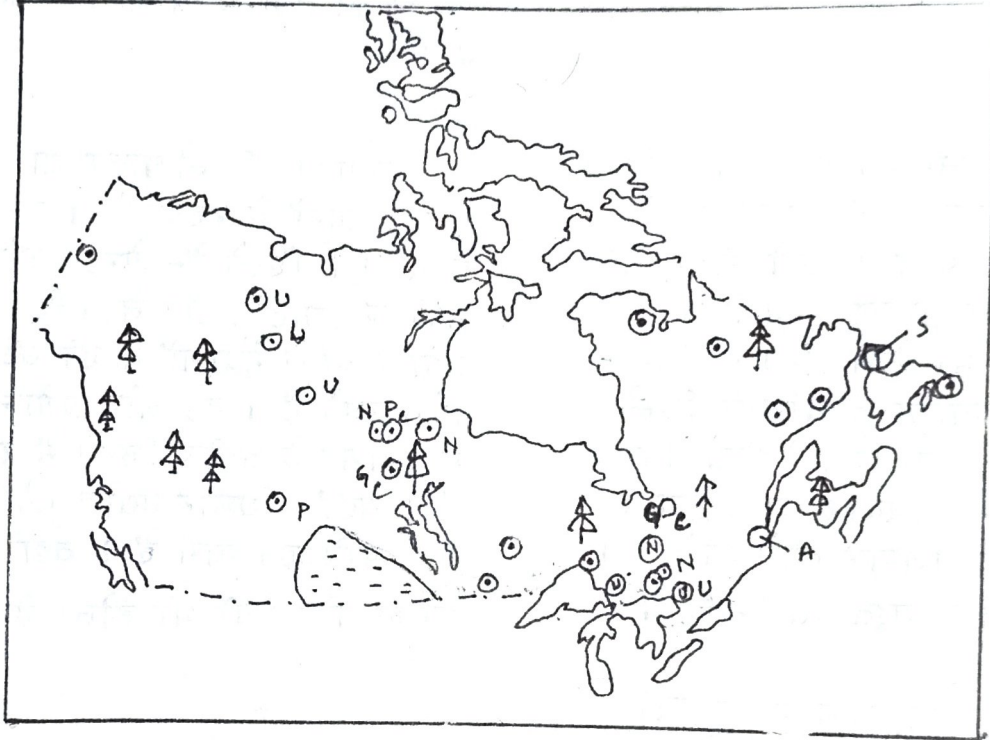
लोहा - ⊙ चाँदी - S निकल - N पोटेशियम - P

यूरेनियम - U एस्बस्टस A ताँबा C ☷ कृषि प्रदेश